पंचसखा महापुरुषों द्वारा रचित

भविष्य मालिका



भास्वत चक्रबर्ती

मंगलाचरण

श्रीगणेशाय नमः।
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

सरस्वत्यै नमः।
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् । देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

भूमिका

सर्वप्रथम मैं भगवान श्रीकृष्ण तथा माता-पिता के चरणों में प्रणाम अर्पित करता हूँ। उन्हीं की कृपा से इस ग्रन्थ की अनुवाद सम्भव हो सका है। इस पुस्तक का उद्देश्य केवल और केवल मालिका प्रचार एवं लोककल्याण है। यह ग्रन्थ ओड़िशा के संत महापुरुषों की वाणी से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित है। इसमें यदि कहीं कोई त्रुटि हो तो वह मेरी अल्पबुद्धि का दोष है, न कि शास्त्र अथवा संत महापुरुषों के वाणी का। इस पुस्तक के माध्यम से पाठकगण मालिका के वाणी को सरल रूप में समझ सकें और अपने जीवन को सत्पथ की ओर अग्रसर कर सकें — यही मेरी विनम्र अभिलाषा है।

डिस्क्लेमर

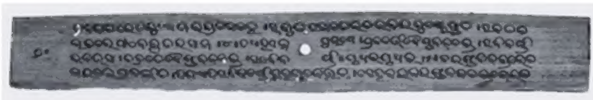
इस पुस्तक का उद्देश्य केवल ओड़िशा के संत महापुरुषों द्वारा लिखित 'मालिका' ग्रंथों में उल्लिखित वाणियों को साझा करना और उनका प्रसार करना है। लेखक इस पुस्तक में वर्णित सामग्री के संबंध में किसी भी प्रकार की त्रुटि, चूक के लिए उत्तरदायी नहीं होगा। लेखक का उद्देश्य किसी भी व्यक्ति, समाज, जाति अथवा समुदाय की भावनाओं को आहत करना या ठेस पहुँचाना नहीं है।

संस्करण : २०२५
संपर्क: [bhavishyamalika7@gmail.com]

विषयसूची

अध्याय १ : मालिका एवं पंचसखा सहित अन्य महापुरुषों का परिचय

मालिका का परिचय



महापुरुष अच्युतानंद दास जी द्वारा लिखित "शून्य संहिता" पोथी का फोटो चित्र



महापुरुष बलराम दास द्वारा लिखित "बिराट गीता" पोथी का फोटो चित्र

आज से ५०० साल पहले के आसपास (१६वीं शताब्दी में), ओडिशा के पंचसखा संतों— महापुरुष अच्युतानंद दास, महापुरुष बलराम दास, महापुरुष जगन्नाथ दास, महापुरुष यशोवंत दास और महापुरुष शिशु अनंत दास ने अनेक भविष्यवाणी से संबंधित ग्रंथों की रचना की थी, जिन्हें ग्रंथों की माला "मालिका" कहा जाता है। इन मालिका ग्रंथों में भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का विस्तृत वर्णन है, इसलिए इन्हें "भविष्य मालिका" भी कहा जाता है। यह ग्रंथ ताड़ के पत्तों पर ओड़िआ लिपि में लिखा गया था। मालिका में भविष्यवाणी, भक्तों के नाम, ज्ञान, योग, भक्ति, मंत्र, यंत्र, तंत्र, मनुष्य के जीवन जीने के सही मार्ग, कर्म के सिद्धांत, आत्मा, परमात्मा और मोक्ष के बारे में गहन शिक्षाएं का व्यापक ज्ञान मिलता है। पंचसखाओं ने कई मालिका ग्रंथों की रचना की थी, जिनमें महापुरुष संत अच्युतानंद दास जी के पास भूत और भविष्य को देखने की अद्वितीय क्षमता थी, और उन्होंने लगभग तीन सौ अठारह खण्ड मालिका ग्रंथ लिखे थे। पंचसखाओं के अलावा, कुछ अन्य महान संतो और कवियों ने भी मालिका ग्रंथों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और उन्होंने भी कुछ मालिका ग्रंथों की रचना की थी। इन महान विभूतियों में बालिगा दास, सालबेग, दिनकृष्ण दास, शिखर दास, शिशु दास, बाईकृष्ण दास, निराकार दास, हाड़ी दास, भीम भोई, अभिराम परमहंस, अरक्षित दास, और आर्ता दास शामिल हैं।

मालिका ग्रंथ का उद्देश्य

मालिका ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य मानव समाज को आने वाले समय की चेतावनी देना और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है। इन ग्रंथों में समाज, कल्कि लीला, प्राकृतिक आपदाओं, युद्धों और कलियुग के अंत में होने वाले खण्ड प्रलय के बारे में सटीक भविष्यवाणियां की गई हैं।

केवल मालिका ग्रन्थों में ही नहीं, अपितु महाभारत, भविष्य पुराण तथा अन्य अनेक शास्त्रों में भी अवतारों के विषय में भविष्यवाणियाँ तथा भविष्य से सम्बंधित घटनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। हमारे शास्त्रों में बुद्ध अवतार एवं श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन की भी भविष्यवाणी की गई थी। ठीक उसी प्रकार भगवान् जगन्नाथ महाप्रभु की इच्छा से पंचसखा महापुरुषों ने मालिका ग्रन्थों की रचना की। इन ग्रन्थों की प्रत्येक वाणी आज सत्य सिद्ध हो रही है। विशेष रूप से इन महापुरुषों ने कल्कि लीला और इस कलियुग में घटित होने वाली घटनाओं का अत्यंत विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है।

पृथ्वी दुइफाल हेले होइब पूर्बसूर्य्य अबा पश्चिमे जिब
पर्बत शिखरे फुटिब कइँ अच्युती बचन मिथ्या नुहँइ
अच्युतीर बाणी अटे पथरर गार आनकरिबाकु नाहिँ शकति काहार ।

अर्थात – यदि पृथ्वी दो भागों में विभाजित हो जाए तो होगा, सूर्य पूर्व की बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है, पर्वत के शिखर पर भी कमल खिल सकते हैं, पर अच्युत वचन मिथ्या नहीं हो सकता। अच्युत वाणी पत्थर की लकीर है, इसे बदलने की शक्ति किसी में भी नहीं है।

(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युत)

हेतु मने रख द्वादश बालके गुपतु गुपत अति
मूर्खंकु कहिले उपहास हेब तेणु लागुअछि भीति ।
चेतुआ भकतमानंक निमन्ते तिनिश अठर खण्ड
भबिष्य लेखिला पामर अच्युत न जाणन्ति दुरुदण्ड ।५०।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास अपने द्वादश गोपाल शिष्यों से कहते हैं कि — "कारण स्मरण रखो, द्वादश बालक! यह अत्यन्त गुप्त, गुप्ततम वाणी है। यदि इसे मूर्खों से कहोगे तो उपहास का कारण बनेगा, अतः भय उत्पन्न होता है। केवल चेतनाशील भक्तों के लिए ही मैंने भविष्य मालिका ग्रन्थ के तीन सौ अठारह खण्ड लिखे हैं। **(शिव कल्प, महापुरुष अच्युत)**

मालिका ग्रन्थ में भक्तों के नामों का विस्तृत वर्णन मिलता है तथा प्रमुख भक्तों के विषय में यह भी उल्लिखित है कि वे किस युग में और कौन थे। विशेषकर कलियुग के सम्बन्ध में इसमें भक्तों के नामों और उनके जन्म स्थान का उल्लेख किया गया है। इस ग्रन्थ में जलप्रलय, खाद्य संकट, महाभारत का बचा हुआ युद्ध — जो कलियुग के अन्त में कलिभारत युद्ध के रूप में घटित होगा — का वर्णन किया गया है। साथ ही विश्वयुद्ध, महामारि, दुर्भिक्ष, धूमकेतु का प्रादुर्भाव, कल्कि लीला, स्थलों के माहात्म्य का वर्णन, पापकर्मों के कारण कलियुग की आयु-क्षय, प्रभु की विविध दिव्य लीलाएँ, कलियुग में मनुष्यों के लक्षण तथा अनेक रहस्यमय दिव्य तथ्यों का भी वर्णन इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

पंचसखा साहित्य सृजन में योगदानः पंचसखाओं ने अपने धर्म के प्रचार, प्रसार और सामाजिक जीवन के कल्याण के लिए अनेकों पुराण, संहिता, चौतिशा, कोइली, ओगाल, भजन, जनाण, स्तुति, महात्म्य, पटल, मालिका, सम्बाद आदि की रचना की थी। ये रचनाएँ धर्म-दर्शन की पृष्ठभूमि पर आधारित थीं, इसलिए जनसमाज का कल्याण ही इनका मुख्य उद्देश्य था।

पंचसखाओ का परिचय

भारत देश में स्थित ओडिशा राज्य के पवित्र भूमि में बोहोत सारे साधु संतो ने जन्म लिया है और समय समय पर संस्कृति और अध्यात्मिकता को मजबूत किया है विभिन्न महान आत्माओ में सबसे प्रमुख पंचसखा (पांच मित्र) है। पंचसखा - अच्युतानंद दास, यशोवंत दास, बलराम दास, जगन्नाथ दास और शिशु अनंत दास।



महापुरुष संत अच्युतानंद दास



महापुरुष संत बलराम दास



महापुरुष संत यशोवंत दास



महापुरुष संत शिशु अनंत दास



महापुरुष संत जगन्नाथ दास

अच्युत बोलिण कलियुगे नाम सुदाम सखा अटन्ति,
प्रभुंक श्रीअंग कटीरु संभूत शुणि रामचन्द्र स्थिति ।
मुखु यशोवंत हृदरु अनन्त दक्ष भुजु बलराम,
राधांक हास्यरे जगन्नाथ दास कहिलु गुप्त मरम ।

अर्थात – प्रभु श्री कृष्ण के सखा सुदाम कलियुग में अच्युतानंद दास थे, जो की प्रभु के श्रीअंग के कटी अर्थात कमर से उत्पन्न हुए थे। वैसे ही प्रभु के मुख से यशोवंत दास, हृदय से अनंत दास। और दक्षिण भुजा(दांया हाथ) से बलराम दास का उत्पन्न हुआ। और माँ राधारानी के हसी से जगन्नाथ दास उत्पन्न हुए। (इससे यह समझना चाहिए की ये पंचसखा कोई साधारण मानव नहीं थे, ये साक्षात परब्रम्ह के अंश थे) **(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युत)**

आगम भाव जाणे यशोवंत । गारकटा यन्त्र जाणे अनन्त ॥
आगत नागत अच्युत भणे । बलराम दास तत्त्व बखाणे ॥
भक्तिर भाब जाणे जगन्नाथ । पञ्चसखा ए ओड़िशा महन्त ।।

अर्थात – यशोवंत दास आगम भाब को जानते थे। रेखाओ और आकृतिओ का उपयोग करने वाले यंत्र शिशु अनंत दास जानते थे। अच्युतानंद दास भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जानते थे। बलराम दास तत्व ज्ञान मै पारंगत थे। जगन्नाथ दास भक्ति कि गभीर भाव को जानते थे। इसीलिए ये पंचसखा ओडिशा के महंत है। **(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युत)**

सुबल सखा अटन्ति बलराम दास सुबाहु सखा जे यशोबन्त परकाश ।२८।
दास सखा अनन्त ग्ये शिशु पुण जाण सुदाम सखा गोपरे अच्युत निपुण ।२९।
अनन्त शिशु नारद मुनि सत्ये होइ यशोबन्त गार्गब ग्ये मुनि बोलि कहि ।३०।
मारकण्ड ऋषि बलराम दास होइ अच्युत दास जे कृपाजल ऋषि मुइँ ।३१।
त्रेतया युगरे रामचन्द्र संगे जात बलराम दास जे सुषेण होइ जात ।३२।
जाम्बेव होइब यशोबन्त हेले नाम अनन्त शिशुधरिले नील बोलि नाम ।३३।
नल बोलि अच्युत ग्ये नाम होए तुहि चारियुगे चारि अबतार सार होइ ।३४।
सत्ये नारायण त्रेतयारे रामचन्द्र द्वापररे नाम होए श्रीकृष्ण जे चन्द्र ।३५।

श्रीचैतन्य कलियुगे कृष्ण हेले जात तांक संगे चारिसखा होइछि ग्ने जात ।३६।
अनन्त ग्ने शिशु अभिराम पुण होइ गउरी दास पण्ड़ित बलराम कहि ।३७।
सुबाहु अटन्ति पुण उद्धब जे दत्त सुन्दरानन्द ग्ने मुहिँ अटइ अच्युत ।३८।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास कह रहे हैं कि द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के गोपाल मित्रों में सुबल - बलराम दास थे; सुबाहु - यशोबन्त दास थे; दाम - शिशुअनंत दास थे; और सुदाम - महापुरुष अच्युतानंद दास थे। सत्ययुग में शिशुअनंत - नारद मुनि थे; यशोबंत दास - गार्गव मुनि थे; बलराम दास - मार्कंडेय ऋषि थे; और महापुरुष अच्युतानंद - कृपाजल ऋषि थे। त्रेतायुग में, जब प्रभु श्रीरामचंद्र अवतरित हुए, तब बलराम दास - सुषेण थे; यशोबन्त दास - जाम्बवंत थे; शिशुअनंत दास - नील थे; और महापुरुष अच्युतानंद दास - नल थे। महापुरुष आगे कहते हैं — चारों युगों में हमने विभिन्न रूपों में प्रभु की सेवा की। सत्ययुग में नारायण के साथ, त्रेतायुग में श्रीराम के साथ, द्वापर युग में श्रीकृष्ण के साथ, और कलियुग में, जब श्रीकृष्ण ने चैतन्य के रूप में अवतार लिया, तब हम चारों मित्र भी उनके साथ जन्मे। शिशुअनंत - अभिराम गोपाल ठाकुर थे; बलराम दास - गौरी दास पंडित थे; सुबाहु - उद्धव दत्त थे; और मैं - सुंदरानंद था।

(गुरुभक्ति गीता, एकत्रिंश छान्द, प्रथमखण्ड़, २८ पदसे ३८ पद)

अच्युतानंद दास — सत्ययुग – कृपाजल, त्रेतायुग – नल, द्वापर युग – सुदाम, कलियुग – सुंदरानंद।

यशोबंत दास — सत्ययुग में गार्गव मुनि, त्रेता युग में जाम्बवंत, द्वापर युग में सुबाहु, और कलियुग में उद्धारण दत्त।

शिशु अनंत दास — सत्ययुग में नारद मुनि, त्रेता युग में नील, द्वापर युग में दाम, और कलियुग में अभिराम गोपाल ठाकुर।

बलराम दास — सत्ययुग में मार्कंडेय ऋषि, त्रेता युग में सुषेण, द्वापर युग में सुबल, और कलियुग में गौरी दास पंडित।

जगन्नाथ दास — सत्ययुग में स्वयम्भु, त्रेता युग में हनुमान, द्वापर युग में श्रीवत्स, और कलियुग में अतिबड़ी जगन्नात दास।

एहा शुणिण अच्युत कहन्ति, कहिबा शुणरे गोप सन्तति ।
सत्ययुगे आम्भे ब्राह्मण हेलु, तपय़ोगरे ऋषि बोलाइलु ।
त्रेतया क्षत्रिय शाप युगर, रुक्षकपि बर्ण्ण अटे आम्भर ।
क्षत्रिय युगरे क्षत्रिय रसे, युग कटाइलु श्रीराम पाशे ।
द्वापरयुगरे गोपाल हेलि, नित्य लीलामान प्रकाश कलि ।
बैश्ययुगरे बाणिज्य आचार, गोरस बाणिज्य आम्भर सार ।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने गोपाल शिष्यों को बताते हैं कि पंचसखा सत्ययुग में ब्राह्मण थे और तपस्या एवं योग के कारण ऋषि कहलाए। त्रेतायुग, जो क्षत्रियों का युग था, में पंचसखा ऋक्ष (रीछ) और कपि (वानर) वर्ण के थे। क्षत्रिय युग में, पंचसखाओं ने प्रभु श्रीराम के साथ रहकर क्षत्रिय भाव में युग व्यतीत किया था। द्वापरयुग में पंचसखा गोपाल (ग्वाले) थे और उन्होंने अपनी नित्य लीलाओं का प्रकाश किया था। वैश्ययुग में उनका आचरण व्यापार से संबंधित था तथा उनका मुख्य कार्य गौरस (गाय के दूध) का व्यापार करना था।

(उदय काहानी, प्रथम सुरस, महापुरुष अच्युतानंद दास)

ईश्वर दास जी के श्री चैतन्य भागवत में लिखा हैं कि पंचसखा भगवान के सखा हैं और स्वयं भगवान विष्णु के समान हैं –

शुण राजन मन थिर । पञ्च सखांक अबतार ।२१।
से अटे बिष्णुर समान । सखांक आपे भगबान ।२२।

(श्री चैतन्य भागवत, ईश्वर दास, अध्याय १७, श्लोक २१–२२)

महापुरुष अच्युतानंद दास जी की शून्यसंहिता में यह उल्लेख मिलता है कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने इन पाँच महापुरुषों को पंच-आत्मा के रूप में स्वीकार किया—

तुम्भे मोर पञ्च आत्मा अट पाञ्चजण अबतार श्रेणी जेते तुम्भपाइँ शुण।
जाअ अच्युत अनन्त यशोवन्त दास बलराम जगन्नाथ कर जा प्रकाश।

अर्थात् — चैतन्य महाप्रभु पंचसखा से कहते हैं – हे अच्युत, अनंत, यशोवन्त, बलराम और जगन्नाथ दास! तुम पाँच जन मेरे पाँच आत्मा हो। जितने भी अवतारों की श्रेणी है, वह सब तुम्हारे (भक्तों के) लिए होते हैं। **(शून्यसंहिता, अध्याय ११, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

बलराम जे जगन्नाथ ॥ अनन्त अच्युत यशोवन्त ।१४४।
ए पाञ्च प्रभु पाशे मिलि ॥ कीर्त्तन रसे मति ड़ालि ।१४५।
बोइले प्रभु थय हुअ ॥ सदा तु आम्भ तुले थाअ ।१४६।

अर्थात – बलराम, जगन्नाथ, अनंत, अच्युत और यशोवन्त — ये पाँचों श्रीचैतन्य महाप्रभु के चारों ओर एकत्र हुए, और कीर्तन-रस में अपनी चित्तवृत्ति को डुबो देते हैं। तब महाप्रभु ने भावपूर्वक प्रार्थना की कि वे सदा उनके सन्निकट रहें। **(वैष्णव लीलामृत, सप्तम अध्याय)**

पंचसखाओं के मंत्र और समाधि

बलराम जे अजपा जपिले । योग समाधिरे सिद्धि लभिले ॥
ध्यान समाधि जे शिशु अनन्त । एकाक्षर अटे एहाङ्क मत ॥
अबना मन्त्र सम समाधिरे । यशोबन्त मिले कृष्णपयरे ॥
जगन्नाथ अणाक्षर भजन । ज्ञान समाधिकु कले ध्यायिण ॥
तुरीय समाधि शून्य मन्त्रकु । अच्युत आश्रय बट पुटकु ॥

- महापुरुष बलराम दास — अजपा जप — योग समाधि
- महापुरुष शिशु अनन्त — एकाक्षर — ध्यान समाधि
- महापुरुष यशोबन्त दास — अबना मन्त्र — सम समाधि
- महापुरुष जगन्नाथ दास — अणाक्षर भजन — ज्ञान समाधि
- महापुरुष अच्युतानंद दास —शून्य मन्त्र — तुरीय समाधि

(उदय कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)



श्रीजगन्नाथ महाप्रभु, पूरी



अच्युतानंद दास गादी, नेमाल



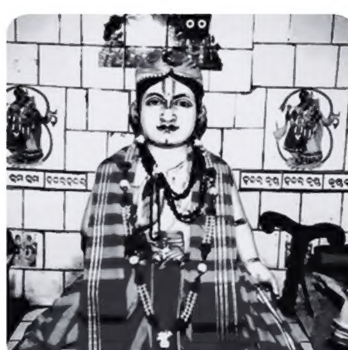
शिशु अनंत दास गादी - बालिपाटणा



यशोवंत दास गादी - अढंग, जगतसिंहपुर



बलराम दास गादी - गोप, पूरी



जगन्नाथ दास गादी - कपिलेश्वर, पूरी

शून्य पुरुष –

नाहि ताहार रूप वर्ण, अदृस्ह अवर्ण ता चिन्ह।
ताहाकु ब्रह्मा बोलि कहि, शून्य ब्रह्महति से बोलाइ

अर्थात – उनका न कोई आकार है, न कोई रंग; वे।अदृश्य और निर्गुण है। उन्हें 'शून्य ब्रह्म' कहते हैं। पंचसखा भगवान कि अवधारणा को शून्य के रूप मै मानते थे जिसे शून्य पुरुष या शून्य ब्रह्म कहा जाता है। महापुरुष अच्युतानंद दास जी के अंतिम कार्य को शून्य संहिता कहा जाता है जहा वेह इस दर्शन पर गहराई से चर्चा करते है।

ज्ञान मिश्र भक्ति मार्ग –

पंचसखा विचारों से वैष्णव थे, लेकिन वे चैतन्य महाप्रभु के भक्ति मार्ग से भिन्न थे और उन्होंने ज्ञान के मिश्रण के साथ भक्ति का प्रचार किया। चैतन्य महाप्रभु के भक्ति मार्ग को रागानुगा भक्ति मार्ग के रूप में जाना जाता था, जो कहता है कि भगवान तक पहुँचने के लिए सभी को प्रेम (भक्ति) की आवश्यकता है। पंचसखाओं का मानना था कि ईश्वर तक पहुँचने के लिए प्रेम (भक्ति) और ज्ञान दोनों का मेल होना आवश्यक है। यदि कोई अपने ज्ञान से शुद्ध प्रेम (भक्ति) प्रकट करता है, तो वह निश्चित रूप से शून्यात्मा तक पहुँच सकता है।

पिंड ब्रह्मांड तत्व –

पिण्ड-ब्रह्माण्ड की अवधारणा यह है कि शरीर (पिण्ड) ब्रह्माण्ड की एक प्रतिकृति है — अर्थात सूक्ष्म जगत, स्थूल जगत का प्रतिबिंब है। पंचसखाओं की कई योग संबंधी शिक्षाएँ इसी मूल सिद्धांत पर आधारित हैं। उनकी शिक्षाओं में यह वर्णित है कि ब्रह्माण्ड के अनेक बाह्य स्थान, शरीर के भीतर ऊर्जा रूप में विद्यमान हैं।

शब्द ब्रह्मांड –

शब्द ब्रह्म की अवधारणा यह है कि ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की सृष्टि ध्वनि से की, और सभी वस्तुओं का सार रूप ध्वनि स्पंदन (वाइब्रेशन) है। पंचसखाओं के लेखन मंत्रों और ध्वनि से जुड़ी गूढ़ अवधारणाओं से भरे हुए हैं, जो चेतना पर उनके प्रभावों को दर्शाते हैं।

महापुरुष अच्युतानंद दास



दशमास दशदिबस मध्यरे शुक्ल माघ एकादशी
जनम लभन्ते पिता मो देखन्ते अपुत्रिक दोष ध्वंसि ।
तिलकणारे मुँ जनम लभिलि केहि न चिह्निले मोरे
अगणित बोलि माता भाबुथान्ति अन्न न मिलइ घरे ।

अर्थात – माघ मास शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन, जब दस महीने और दस दिन पूरे हुए, तब मेरा जन्म हुआ, जिससे मेरे पिता को अपुत्र दोष से मुक्ति मिली। तिलकणा में मेरा जन्म हुआ, लेकिन मुझे किसी ने नहीं पहचाना। मेरी माँ मुझे 'अगणि' कहकर संबोधित करती थीं, और घर में अन्न की कमी थी।
(जन्म विवरण, महापुरुष अच्युत)

अच्युतानन्द दास नाम मोहर नेमाल ग्रामरे घर
शुद्र कुले मुहिं जनम लभिछि आज्ञा घेनि प्रभुंकर ।

अर्थात – मेरा नाम अच्युतानंद दास है और मेरा घर नेमाल गांव में है। प्रभु से आज्ञा लेकर मैं शूद्र कुल में जन्मा हूं।
(शून्य संहिता, महापुरुष अच्युत)

महापुरुष संत अच्युतानंद दास जी का जन्म १४८२ से लेकर १५१० के बीच मै माघ मास शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि में ओडिशा राज्य के नेमाल(कटक) ज़िला के तिलकणा नामक ग्राम में हुआ था। महापुरुष संत अच्युतानंद दास द्वापर युग मै भगवान श्री कृष्ण के सखा सुदाम थे, त्रेतायुग में नल और सत्ययुग में कृपाजल ऋषि थे। महापुरुष अच्युतानंद दास जी के पिताजी का नाम दिनबंधु खूंटिया और माताजी का नाम पद्मावती था। और उनके दादाजी का नाम गोपीनाथ मोहंती था, जो कि जगन्नाथ पूरी मंदीर मै एक मुंशी थे।

महापुरुष अच्युतानंद के जन्म के संदर्भ में एक कथा प्रचलित है कि दीनबंधु और पद्मावती कई वर्षों तक संतानहीन थे, जिससे उनके मन में गहरा दुख था। वे एक दिन श्रीक्षेत्र पुरी गए और अपना दुःख जगन्नाथ महाप्रभु को बताया। उसी रात जगन्नाथ महाप्रभु ने दीनबंधु को स्वप्न में कहा कि अगले दिन सुबह गरुड़ स्तंभ के पीछे खड़े होकर दर्शन करते समय जो बालक उनकी दृष्टि में आएगा, वह उनका पुत्र होगा। स्वप्न की बात जानकर दीनबंधु बहुत प्रसन्न हुए। अगले दिन सुबह, गरुड़ स्तंभ के पीछे खड़े होकर श्रीजगन्नाथ का दर्शन करते समय दीनबंधु ने महाप्रभु के समक्ष एक बालक को खेलते देखा। परंतु कुछ क्षणों बाद वह बालक अदृश्य हो गया। प्रसन्न मन से वे अपने गांव लौट आए। ठीक दस महीने दस दिनों के बाद उनके घर में महापुरुष अच्युतानंद का जन्म हुआ। उनका कोई विशेष नाम नहीं रखा गया। लोग उन्हें विभिन्न नामों से पुकारते थे। उनके माता-पिता ने पहले पुत्र का नाम 'अगणि' रखा; बाद में दीक्षा ग्रहण के पश्चात् उनका नाम 'अच्युतानंद' रखा गया।

उनके पिता, दिनबंधु, बाद में दो पुत्रों और एक पुत्री के पिता बने। महापुरुष अच्युतानंद जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में शुरू की, जब वे केवल पाँच वर्ष के थे। हालांकि, वे अक्सर विचारमग्न रहते और पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता। खेलकूद में और दोस्तों के साथ समय बिताने में उन्हें आनंद आता, जिससे उनके शिक्षक और पिता उन्हें डांटते थे।

समय के साथ, अच्युतानंद का एकांतप्रिय स्वभाव बढ़ता गया, और वे अक्सर अकेले बैठकर चिंतन

करते। उनके माता-पिता उनकी इस स्थिति से परेशान थे। एक दिन, उनके माता-पिता उन्हें लेकर पुरी गए, जहां उस समय श्री चैतन्य महाप्रभु उपस्थित थे। पिता के कहने पर अच्युतानंद जी ने चैतन्य महाप्रभु के चरणों में प्रणाम किया। इस दौरान, उन पर दिव्य ज्योति का अनुभव हुआ।

इसके बाद, श्री चैतन्य ने सनातन गोस्वामी को आज्ञा दिया कि वे महापुरुष अच्युतानंद को मंत्र प्रदान करें। सनातन गोस्वामी महापुरुष अच्युतानंद को श्रीमंदिर के अंदर ले गए और दक्षिण की ओर बरगद के वृक्ष के नीचे उन्हें श्याम पंचाक्षर महामंत्र सिखाया, और पंचतिलक का स्थान बताया।

दीक्षा लेकर महापुरुष अच्युतानंद अपने गाँव तिलकणा लौट आए और नेमाल गाँव के निकट एक प्राचीन बरगद के वृक्ष के नीचे वे हरिनाम स्मरण के लिए स्थान निर्धारित करते। इसी दौरान उनका कवित्व भी प्रकट होने लगा। नेमाल में इस एकांत साधना के माध्यम से महापुरुष अच्युतानंद ने ईश्वर की महिमा का गान करना सीखा। उन्होंने भक्ति गीतों, कविताओं, काव्यों और पदावलियों की रचना की और अपना अधिकांश समय इन्हें गाने तथा ईश्वर की स्तुति में बिताया। धीरे-धीरे उनका ज्ञान क्षेत्र अद्भुत रूप से विस्तार पाने लगा, और उन्होंने अपने इस ज्ञान को अपने गोपाल शिष्यों में वितरित करना आरंभ किया।

कुजंग के राजकुमार और उनके प्रधान शिष्य रामचंद्र और भरत के साथ बारह गोपाल शिष्यों में - मुकुंद, अनंत, वत्स, पवन, सुदाम, यादव, बालक, मधु, मधुरी, उत्थान, गोविंद, वृंदावन - के बीच ज्ञान का वितरण किया। भक्त शिष्यों और उनके शिष्यों को लेकर, उन्होंने श्रीक्षेत्र में भगवान जगन्नाथ की परिक्रमा की और श्रीगौरांग से मृदंग और करताल प्राप्त किए, साथ ही कौपीन भी प्राप्त किया। इसके बाद दक्षिण की ओर रामेश्वर की यात्रा पर निकले, जहाँ चित्रकूट, द्वारका, अयोध्या, काशी, प्रयाग, मथुरा का दर्शन किया और वृंदावन में एक परिक्रमा पूरी करने के बाद पुरी लौट आए। बड़ दांड पर उनका पुनः चैतन्य महाप्रभु से मिलन हुआ, और श्रीगौरांग के आदेश पर, बलराम, जगन्नाथ दास और अन्य शिष्यों के साथ मिलकर उन्होंने उद्दंड कीर्तन में भाग लिया।

महापुरुष अच्युतानंद श्रीक्षेत्र पुरी में अपने सखाओं के संग कई वर्षों तक भजन-कीर्तन में लगे रहे। परम गुरु श्री चैतन्य के आज्ञा से वे तीर्थ यात्रा के लिए निकले। उन्होंने रामेश्वर, चित्रकूट, अयोध्या, गोप, मथुरा, वृंदावन, काशी, वाराणसी आदि स्थानों की यात्रा की। वृंदावन में उन्होंने दो वर्ष बिताए और गंगा व गौतमी तीर्थों में स्नान किया। रथयात्रा के समय वे पुरी लौट आए। उस समय पुरी में कई वैष्णव एकत्र हुए थे। उनके बीच कुछ समय बिताकर अच्युतानंद जी ने स्वयं को धन्य महसूस किया।

रणपुर में निवास – महापुरुष संत अच्युतानंद जी भगवान जगन्नाथ के परम भक्त थे। इसलिए वे हर वर्ष रथयात्रा के समय पुरी जाया करते थे। उस समय तक वे अत्यंत प्रसिद्ध हो चुके थे और संपूर्ण उत्कल में उनकी ख्याति फैल चुकी थी। पुरी में एक बार उनकी भेंट रणपुर के राजा पद्मनाभ नरेंद्र से हुई। राजा ने महापुरुष अच्युतानंद जी से रणपुर आने का अनुरोध किया। राजा का आग्रह वे अस्वीकार नहीं कर सके और रणपुर जाकर कुछ समय तक वहां रहे।

राजा ने उनके भरण-पोषण की संपूर्ण जिम्मेदारी स्वयं उठा ली। ऐसा कहा जाता है कि राजा पद्मनाभ नरेंद्र निःसंतान थे। उन्होंने श्रद्धा एवं भक्ति भाव से अच्युतानंद जी की सेवा की। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर अच्युतानंद जी ने राजा की मनोकामना पूर्ति के लिए 'हरिवंश पुराण' की रचना की। राजा और रानी ने श्रद्धापूर्वक 'हरिवंश' का श्रवण किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इसके पश्चात, ओडिशा में यह मान्यता प्रचलित हो गई कि जो निःसंतान दंपत्ति श्रद्धापूर्वक 'हरिवंश' का श्रवण करते हैं, उन्हें संतान सुख की प्राप्ति होती है।

महापुरुष अच्युतानंद जी की परीक्षा – उत्कल के स्वार्थी ब्राह्मण पंडित, पंचसखा द्वारा प्रचारित वैष्णव धर्म और गजपति राजा प्रतापरुद्र देव के अनुग्रह को देखकर अत्यंत क्रोधित थे। वे सभी जातियों की समानता के सिद्धांत को सहन नहीं कर सके और महापुरुष अच्युतानंद जी की लोकप्रियता को देखकर, उन्होंने राजा को उकसाकर उनकी परीक्षा लेने का षड्यंत्र रचा। एक दिन, ब्राह्मणों ने राजा प्रतापरुद्र को महापुरुष अच्युतानंद जी से उनके इष्ट मंत्र और भजन की विधि के बारे में पूछने के लिए उकसाया। जब राजा ने उनसे यह प्रश्न किया, तो उन्होंने उत्तर दिया, "मेरा मंत्र निराकार है और मेरा भजन शून्य भजन है।" यह उत्तर ब्राह्मणों को संतुष्ट नहीं कर सका, इसलिए उन्होंने इसकी परीक्षा की मांग की। राजा, मंत्र पूछना भूल गए और प्रदर्शन पर केंद्रित हो गए। इसके बाद अच्युतानंद जी को पुरी के बाहरी क्षेत्र बांकी मुहानी ले जाया गया, जहाँ एक कुआँ खुदवाया गया था। वहीं उन्होंने शून्य भजन का अद्भुत प्रदर्शन किया—उन्होंने ध्यानस्थ होकर अपने प्राणों को ऊपर उठाया और कुएँ के ऊपर हवा में स्थिर हो गए। यह देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गए और ब्राह्मण निरुत्तर हो गए। राजा ने प्रसन्न होकर उन्हें गले लगाया और वहीं भजन कुटिया बनाकर रहने का अनुरोध किया। आज भी बांकिमुहानी में महापुरुष अच्युतानंद जी का मठ स्थित है, जिसे गोपाल मठ के नाम से जाना जाता है। इसी मठ में उन्होंने अष्टगुज्जरी, बयालीस चौपदी, दूतीबोध चउतिसा सहित कई भजन ग्रंथों की रचना की।

महापुरुष अच्युतानंद जी का विवाह – पंचसखा में से एक महापुरुष यशोवंत से मिलने के लिए, महापुरुष अच्युतानंद एक बार अढ़ंग जिले के नंदी ग्राम गए थे। वहाँ उन्होंने अपने साथ ले जाए गए गोपालों के साथ सात दिनों तक रासलीला का आयोजन किया। जब अढ़ंगगढ़ के राजा रघुराम को यह बात पता चली, तो वे वहाँ पहुँचे और रासलीला देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। अच्युतानंद जी के रास कीर्तन से उनकी पुत्री चंपावती इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने उनसे विवाह करने की इच्छा जताई। राजा रघुराम ने अपनी बेटी के इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। इसके बाद चंपावती ने अपने पिता को अपने पूर्वजन्म की कथा सुनाई। द्वापर युग में, अच्युतानंद सुदाम नामक गोपाल थे, और चंपावती श्यामा नाम की गोपी थीं। भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें वरदान दिया था कि कलियुग में सुदाम अच्युतानंद के रूप में जन्म लेंगे और श्यामा गोपी उनकी पत्नी चंपावती के रूप में जन्म लेंगी। जब चंपावती अपनी माता के साथ महापुरुष यशोवंत के मठ गई, तब यशोवंत जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनका विवाह अच्युतानंद से होगा। यह सुनते ही चंपावती ने यह बात राजा और रानी को बताई, और इस विवाह प्रस्ताव पर रानी ने प्रसन्न होकर अपनी स्वीकृति दे दी। राजा और रानी दोनों मठ में उपस्थित हुए और अच्युतानंद जी से अनुरोध किया कि वे उनकी पुत्री से विवाह करें। इस प्रस्ताव से महापुरुष अच्युतानंद आश्चर्यचकित हो गए और विचलित होकर ध्यान में भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया तथा उनसे परामर्श मांगा।

भगवान श्रीकृष्ण से आज्ञा प्राप्त करने के बाद, महापुरुष अच्युतानंद ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और बाद में चंपावती से विवाह कर नेमाल में निवास किया।

महापुरुष अच्युतानंद जी के पुत्र ब्रज गदाधर – नेमाल स्थित पद्मवन धाम में निवास के दौरान महापुरुष अच्युतानंद जी और माता चंपावती के एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम ब्रज गदाधर रखा गया। वह रूप और गुणों में अत्यंत उत्तम था। महापुरुष अच्युतानंद और माता चंपावती के पुत्र ब्रज गदाधर दास (भाविया दास) एक महान तांत्रिक साधक थे। एक बार अच्युतानंद जी ने अपने इष्टदेव गोपीनाथ महाप्रभु की पूजा के लिए एक विशेष ककड़ी बेल बोया था, जिससे प्रतिदिन एक ही ककड़ी फलता था। एक दिन जब ककड़ी नहीं मिला, तो जाँच के बाद पता चला कि ब्रज गदाधर ने ही ककड़ी खा ली थी और अपनी तांत्रिक शक्ति से दो नई ककड़ियाँ प्रकट कर दी थीं। अच्युतानंद जी ने तब समझाया कि उनके और ब्रज गदाधर के मार्ग अलग हैं, इसलिए दोनों का एक ही आश्रम में रहना उचित नहीं। अंततः अच्युतानंद जी के निर्देश पर ब्रज गदाधर ने चित्रोत्पला नदी में प्रवाहित बटपत्र के अनुसार कापड़ चंडी में आश्रम स्थापित किया और वहीं रहकर साधना द्वारा लोक कल्याण किया।

महापुरुष अच्युतानंद की शून्य-समाधि – सन् १५९० अथवा १६१८ ईस्वी में, १०८ वर्ष की आयु में महापुरुष अच्युतानंद ने नेमाल के वटवृक्ष-मूल में शून्य-समाधि ली थी।

महापुरुष अच्युतानंद ने अपने अंतिम जीवनकाल में शरीर त्यागने की इच्छा व्यक्त करते हुए अपने प्रिय शिष्य रामचंद्र को बुलाकर कहा – "मैं जीवित अवस्था में इक्कीस दिनों तक समाधिस्थ रहूँगा। मुझे कोई भी इस समाधि स्थान पर खोजने का प्रयास न करे।"

किन्तु उनके परम प्रिय शिष्यों और प्रशिष्यों ने जब लगभग १५-१६ दिनों के उपरांत गुरुदेव की अनुपस्थिति को हृदय में अत्यंत वेदनापूर्ण विछोह के रूप में अनुभव किया, तब वे अत्यधिक व्यथित हो उठे। वे चिंता करने लगे कि गुरु अनाहार में किस प्रकार रह रहे होंगे, इस सोच में वे व्यथित और व्याकुल हो उठे।

ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन सभी शिष्यगण गुरु के दर्शन हेतु एकत्रित होकर समाधि खोलने का निश्चय किए।

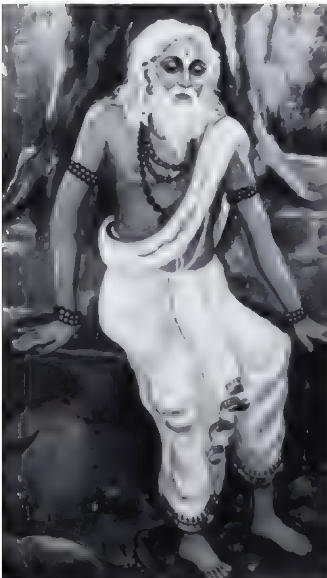
किन्तु जब समाधि खोली गई, तो वहाँ जो दृश्य उपस्थित हुआ, वह आश्चर्यजनक था—

गुरुदेव का कोई भी शारीरिक चिन्ह अथवा अवशेष वहाँ उपस्थित न था।

वह स्थान पूर्णतः रिक्त था; केवल मिट्टी शेष थी। हड्डी-मांस अथवा किसी प्रकार के भौतिक शरीर का कोई प्रमाण वहाँ नहीं मिला।

महायोगी महापुरुष अच्युतानंद इच्छाविहारी थे। उन्होंने इच्छामृत्यु का वरण किया और अपने दिव्य शरीर सहित किसी अचिंत्य, अनिर्वचनीय धाम की ओर प्रस्थान कर गए—जो साधारण मानव-बुद्धि की पहुँच से परे है।

उसी क्षण यह समाचार फैल गया कि महापुरुष अंतर्धान हो गए हैं। भजन और कीर्तन सब कुछ रुक गया — भक्तों के करुण क्रंदन से नेमाल की भूमि और आकाश भाराक्रांत हो उठे। वह दिन ज्येष्ठ मास की पवित्र देवस्नान पूर्णिमा की तिथि थी।



साधना पीठ नेमाल – एक बार महाप्रभु जगन्नाथ ने महापुरुष अच्युतानंद जी को निर्देश दिया— "अच्युत! मेरी यह पद्मपुष्पों की आज्ञामाला लो, और जहाँ यह गिरे, वही तुम्हारा साधना स्थल होगा।" ओड़िआ भाषा में इसे कहा जाता हैं — "ने (लो) माल (माला)", और इन्हीं दो शब्दों से 'नेमाल' नाम की उत्पत्ति मानी जाती है। यह स्थान 'पद्मवन' (कमल का वन) के नाम से भी प्रसिद्ध है।

महापुरुष संत अच्युतानंद दास जी ने उस स्थान पर अपनी साधना द्वारा भक्तों के उद्धार हेतु अनेक शास्त्रों और पुराणों की रचना की। उन्होंने उस दिव्य स्थान पर ध्यान करके १ लाख से अधिक ग्रंथों की रचना की। इनमें से ३६ संहिताएँ, ७२ गीता, २७ वंश चरित्र, २४ उपवंश चरित्र और १०० मालिका ग्रंथों की रचना की। महापुरुष अच्युतानंद दास जी योग, अनुष्ठान, यंत्र, तंत्र, मंत्र और अन्य विभिन्न विषयों में अपने विशाल ज्ञान के लिए महापुरुष के रूप में प्रसिद्ध हुए।

उनकी प्रमुख रचनाओं में हरिबंश, कैवर्त गीता, गोपाल उगाल, गुरु भक्ति गीता, अणाकार संहिता, छयालिस पटल आदि शामिल हैं।

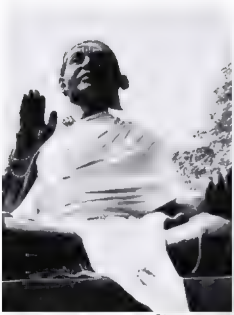
लक्षे पञ्चाशि करिला ग्रन्थ तिनिश अठर मालिका शेष शुण रामचन्द्र
तुहि मुर्खंकु एकथा बुझाइ कहिले मोते तु पाइबु नाहिं।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कह रहे हैं —

"मैंने एक लाख पचासी हज़ार ग्रंथों की रचना की है, जिनमें तीन सौ अठारह मालिका ग्रंथ हैं। सुनो रामचंद्र! यह बात मूर्ख लोगों को समझाकर कहने से तुम मुझे नहीं पाओगे।"

(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युत)

महापुरुष बलराम दास



ओड़िआ रामायण के प्रथम रचयिता महापुरुष बलराम दास के जन्म तथा वंशावली संबंधी कोई प्रमाणिक ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध नहीं है। महापुरुष अच्युतानंद जी की उदय कहानी के अनुसार, उनका जन्म ईस्वी सन् १४८४ में हुआ था, जबकि कुछ मतों के अनुसार ईस्वी सन् १४७४ में माना गया है। उनके पिता का नाम सोमनाथ महापात्र तथा माता का नाम यमुना देवी था।

"छत्तीस गुप्त गीता" में बलराम दास जी ने उल्लेख किया है कि उनके पिता प्रतापरुद्र देव के एक प्रमुख सभासद (दरबारी पात्र) थे।

गीता में बलराम दास स्वयं लिखते हैं –

महापात्र सोमनाथ तनये बलराम दास गीतारे कहे।

रामायण लंका कांड में बलराम दास जी स्वयं अपने विषय में लिखते हैं –

सोमनाथ महापात्र कोले होइली संभवुत जहुँ पिता मोर विष्णुर भगत
तेणु जगन्नाथ मोते दया कले रामायण ग्रंथ मो मुखे बखाणिले।

××××

महामंत्रीबर सोमनाथ महापात्र बलराम दास मुँ जे ताहांकर पुत्र।

अर्थात – सोमनाथ महापात्र की गोद में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिता भगवान विष्णु के भक्त थे। इसी कारण श्रीजगन्नाथ ने मुझ पर कृपा की, और रामायण ग्रंथ को मेरे मुख से प्रकट कराया।

××××

महामंत्री पद पर आसीन सोमनाथ महापात्र, मैं बलराम दास उन्हीं का पुत्र हूँ।

सबसे पहले उन्होंने लोकभाषा में रामायण की रचना की थी, जिसके कारण ब्राह्मण पंडितों द्वारा उनका तिरस्कार किया गया। ईश्वर दास द्वारा रचित चैतन्य भागवत में वर्णित है कि उनका जन्म जाजपुर के निकटवर्ती चंद्रपुर में हुआ था। 'दार्ढ्यता भक्ति' नामक ग्रंथ में उल्लेख है कि वे अपने परिवार सहित पुरी में निवास करते थे। चूंकि उन्होंने लोकभाषा में ग्रंथों की रचना की थी, इसलिए जैसे सारला दास को अनेक परीक्षाओं का सामना करना पड़ा, वैसे ही महापुरुष बलराम दास को भी दाण्ड़ि रामायण की रचना करने के कारण परिक्षाओं से गुजरना पड़ा।

मध्यकालीन परंपरा में ब्राह्मण पंडितों का ब्राह्मणेतर जातियों के प्रति हीन मानसिकता और सामाजिक भेदभाव का जो रूप था, उसके विरुद्ध बलराम दास का यह साहसी कदम वास्तव में उस युग के सामाजिक क्रांति का प्रतीक था। जब मुक्तिमंडप में भागवत गीता पर चर्चा हो रही थी, तब बलराम दास भी उपस्थित थे। ब्राह्मण पंडितों ने उन्हें अपमानित किया और राजा प्रतापरुद्र देव को समझाकर उन्हें बहिष्कृत करने का प्रयास किया। किन्तु बलराम दास ने एक अज्ञानी बाऊरी हरिदास के मुख से वेद गायन करवाने का आवाहन किया। पंडितों ने उस हरिदास को पकड़कर दंडित किया। लेकिन जैसे ही बलराम दास ने अपना हाथ हरिदास के सिर पर रखा, वह व्यक्ति वेदों का निर्बाध उच्चारण करने लगा, जिससे सभी लोग चकित रह गए। बलराम दास इस अग्नि परीक्षा में सफल हुए। उन्होंने ब्रह्मविद्या को तथाकथित कुछ गिने-चुने पंडितों के चक्रव्यूह से मुक्त कर आम जनमानस तक सरल भाषा में पहुँचाया। समूचे मध्यकालीन साहित्य में बलराम दास का साहित्य एक प्रकार की आध्यात्मिक और सामाजिक

क्रांति का प्रेरणास्वरूप प्रतीक बन गया।

उनके ग्रंथ जैसे— भागवत गीता, वेदांत सार गुप्तगीता, गुप्त गीता, छत्तीस गुप्त गीता, बट अबकाश, ब्रह्मांड भूगोल। वे पंचसखा में आयु में सबसे वरिष्ठ और तत्वज्ञान में परिपक्व माने जाते हैं।

बलराम दास ने अपने जीवनकाल में अनेक ग्रंथों की रचना की। उनके द्वारा रचित प्रमुख और प्रमाणित कृतियों में –

(१) जगमोहन बा दाण्ड़ि रामायण (२) ब्रह्मपुराण (३) महाभारत (४) चण्ड़ी पुराण (8) लक्ष्मीपुराण (७) कुराल पुराण (७) नामरत्नगीता (८) मृगुणी स्तुति (९) दुर्गा स्तुति (१०) कान्त कोइलि (११) कमललोचन चउतिशा (१२) बारमासी (१३) भाबसमुद्र (१४) बट अबकाश (१५) भकति रसामृत सिन्धु (१६) सभा बिनोद (१७) राम बिभा (१८) कृष्ण लीला (१९) रसकेली (२०) ब्रह्माण्ड़ भूगोल (२१) शरीर भूगोल (२२) बेढ़ा परिक्रमा (२३) अर्जुन गीता (२४) गज निस्तारण (२५) भगबत गीता (२६) अमरकोष गीता (२७) गुप्त गीता (२८) छतिश गुप्त गीता (२९) गरुड़ गीता (३०) बिराट गीता (३१) गणेश बिभूति गीता (३२) गीता सार (३३) नील सुन्दर गीता (३४) कलि भागबत (३५) बउल अध्याय और (३६) पणस चेरी जैसे ग्रंथ सम्मिलित हैं।

महापुरुष बलराम दास द्वारा रचित सभी ग्रंथों में दाण्ड़ि रामायण साहित्यिक रस और सौंदर्य की दृष्टि से उच्च कोटि की कृति मानी जाती है, जबकि उनके अन्य ग्रंथ गूढ़ तत्वों से परिपूर्ण हैं। उन्होंने वाल्मीकि रामायण की कथा का यथावत अनुसरण न करते हुए अपनी मौलिक प्रतिभा और काव्यशक्ति द्वारा ओड़िआ रामायण को एक नवीन रूप प्रदान किया। इसमें लोक परंपरा, जनश्रुतियाँ, समाज के विविध आचार-व्यवहार और ओडिशा की नदियों आदि का सुंदर वर्णन किया गया है। लोकचरित्रों के प्रभावी वर्णन में बलराम दास सिद्धहस्त माने जाते हैं।

महापुरुष बलराम दास के विषय में प्रमाण मिलता है कि वे कभी वेश्यासक्त थे। जब वे वेश्यासक्त थे, तभी एक दिन भगवान जगन्नाथ के रथयात्रा की घंटाध्वनि उनके कानों में पड़ते ही वे भावविभोर होकर हल्दी लगे मैले वस्त्र और असंवरे केशों के साथ मतवाले होकर रथ की ओर दौड़ पड़े। वे उसी असज्जित वेशभूषा में रथ पर चढ़कर उन्होंने भगवान जगन्नाथ को आलिंगन किया। यह देखकर पंडितों ने उनकी वेशभूषा पर कटाक्ष किया और उन्हें रथ से धक्का देकर नीचे गिरा दिया। अपमान और लज्जा से व्यथित होकर बलराम दास वहाँ से चक्रतीर्थ गए, जहाँ बालू से रथ बनाकर उसमें भगवान जगन्नाथ की मूर्ति स्थापित की और अभिमान में डूबे भावसमुद्र में रहने लगे। कहते हैं, उसी बालू के रथ में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा ने ज्ञाननेत्र से भक्त को दर्शन दिया। भक्तिभाव से अभिभूत होकर बलराम दास ने भगवान के साथ एक नई गुंडिचा यात्रा की रचना की। इधर बड़ दांड मार्ग में रथ अनेक प्रयासों के बाद भी नहीं चल पा रहा था। तब राजा प्रतापरुद्र देव को भगवान जगन्नाथ ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि एक भक्त ने मुझे अपने अभिमान में बाँध रखा है, जब तक उसका मानभंजन नहीं होगा, रथ आगे नहीं बढ़ेगा। तब प्रतापरुद्र देव स्वयं छत्र और काहली लेकर बलराम दास का मानभंजन करने पहुंचे। बलराम दास को सम्मानपूर्वक रथ पर बैठाया गया और तभी जाकर रथ चल सका। जहाँ यह बालू का रथ था, वह स्थान चक्रतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके ग्रंथ "भावसमुद्र" में इस घटना का विस्तृत वर्णन मिलता है।

अतिबड़ी जगन्नाथ दास



ओड़िआ जाति की सांस्कृतिक आत्मा के प्रतिष्ठापक, भागवतकार महात्मा जगन्नाथ दास मध्ययुगीन संत परंपरा के एक प्रमुख साधक थे। संपूर्ण भारतवर्ष में जैसे संत कबीर, संत नानक, गोस्वामी तुलसीदास ने जनसाधारण को आध्यात्मिक चेतना से प्रभावित किया, वैसे ही उन्होंने ओड़िशा की जनता को चैतन्य से भर दिया। ओड़िशा के प्रत्येक गाँव में स्थापित भागवत गद्दी, प्रतिदिन का भागवत पाठ, भागवत सप्ताह, हरिहाट आदि परंपराएँ, जो पिछले पाँच सौ वर्षों से अनवरत चली आ रही हैं, उनकी अपार प्रतिभा का प्रमाण देती हैं।

लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व, पुरी क्षेत्र से थोड़ी दूर स्थित कपिलेश्वरपुर नामक गाँव में भाद्रपद शुक्ल अष्टमी तिथि को कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण भगवान दास के पुत्र रूप में और पद्मावती के गर्भ से महापुरुष जगन्नाथ दास का जन्म १४६६ से १४९९ ईस्वी के बीच, राधा अष्टमी के दिन में हुआ था। गजपति कपिलेंद्र देव के काल से ही जगन्नाथ मंदिर के बट गणेश के पास बैठकर संस्कृत भागवत का पाठ करके भक्तों को सुनाना उनके वंश की पारंपरिक परंपरा रही थी। उनके पिता भगवान दास की विद्वत्ता से प्रभावित होकर तत्कालीन गजपति महाराज पुरुषोत्तमदेव ने उन्हें "पुराण पण्डा" की उपाधि प्रदान की थी। पिता के सत्संग का लाभ पाकर बचपन से ही महापुरुष जगन्नाथ दास के भीतर भक्ति का भाव जागृत हुआ और मोह-माया का बंधन टूट गया। वेद, वेदांत, षड्दर्शन और अठारह पुराणों में पारंगत हो गए थे; उनके पिता ने उन्हें विवाह बंधन में बाँधने का प्रयास किया लेकिन वे सांसारिक बंधनों में नहीं बंधे। अंततः उन्होंने श्रीजगन्नाथ महाप्रभु को ही अपना आश्रय बना लिया और उन्हीं के चरणों में स्थिर हो गए।

एक दिन श्रीमंदिर में महापुरुष जगन्नाथ दास भक्तमंडली से घिरे हुए विष्णुचक्र, वैकुंठधाम और राधाकृष्ण की लीलाओं को अत्यंत प्रांजल भाव से समझा रहे थे। वे श्रीकृष्ण की मुस्कान से श्रीचैतन्य और राधा की मुस्कान से अपने जन्म के तत्त्व की व्याख्या कर रहे थे। पास ही श्रीचैतन्य महाप्रभु उस तत्त्व की व्याख्या सुनकर तन्मय हो गए। उसी क्षण उन्होंने महापुरुष जगन्नाथ दास को आलिंगन किया, और अढ़ाई प्रहर तक भावाविष्ट रहे, तथा उन्हें 'अतिबड़ी' उपाधि से विभूषित किया। इस प्रकार जगन्नाथ दास गोसाईं को श्री चैतन्य महाप्रभु से 'अतिबड़ी' उपाधि प्राप्त हुई, और उनके संप्रदाय को आगे चलकर 'अतिबड़ी संप्रदाय' के रूप में जाना गया। यह देखकर कि चैतन्य महाप्रभु ने एक ऐसे व्यक्ति को यह उपाधि दी है जिसने दीक्षा नहीं ली थी, उनके बंगीय सहयोगी अत्यंत नाराज हो गए। तब चैतन्य महाप्रभु ने कहा कि जगन्नाथ दास एक ब्राह्मण हैं और भक्ति से परिपूर्ण शरीरधारी हैं, इसलिए वे अछूत नहीं हैं। इससे क्षुब्ध होकर बंगीय सहयोगी जाजपुर चले गए। चैतन्य

चंद्र स्वयं जगन्नाथ दास को साथ लेकर उन्हें वापस लाने जाजपुर पहुँचे, लेकिन वहाँ भी जब उन्होंने जगन्नाथ दास को 'अतिबड़ी दास' कहकर संबोधित किया, तो वे और भी क्रोधित होकर वृंदावन चले गए। महापुरुष जगन्नाथ दास दीक्षा नहीं लेने के कारण चिंतित हो उठे, और चैतन्य महाप्रभु के निर्देश पर उन्होंने अपने से आयु में बड़े बलराम दास से दीक्षा ली। जगन्नाथ दास द्वारा लिखित ओड़िआ नवाक्षरी छंद में 'भागवत' आज ओडिशा के हर घर में प्रसिद्ध है। 'भागवत' के अलावा उन्होंने दारुब्रह्म गीता, कोइली, मृगुणी स्तुति, ध्रुव चरित, परिचय बोधिनी, आदि कई ग्रंथों की रचना की। वे सदैव पुरी में निवास करते थे। अपने दिव्य ज्ञान से उन्होंने अपनी मृत्यु का समय जानकर यह निर्देश दिया कि उनके देहावसान के बाद उनकी पादुकाओं को लकड़ी के गादी (मठ) पर रखा जाए, और फिर वे योगासन में बैठकर लगभग ६० वर्ष की आयु में १५६० ईस्वी में माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि को शरीर त्याग कर गए। उनका सूक्ष्म शरीर विद्युत की भांति भगवान जगन्नाथ महाप्रभु के शरीर में विलीन हो गया। वे भले ही आज भौतिक रूप में नहीं हैं, परंतु उनकी अमर कीर्ति ओड़िआ भागवत के रूप में एक स्तंभ की तरह ओड़िआ जाति की साहित्य और संस्कृति की मेरुदंड स्वरूप आज भी विद्यमान है।

महापुरुष जगन्नाथ दास की रचनाएं - १- भागबत, २–शैबागम भागबत, ३- श्रीनाम चन्द्रिका, ४- अनामय कुण्ड़ली, ५- दूतीबोध, ६- तुलाभिणा, ७- नित्य नीलाद्रि बिलास, ८- नीलगिरि ध्यान, ९- ब्रह्मगीता, १०– पद्मपाद सुधानिधि, ११– शून्य भागबत, १२– उषा परिणय, १३– प्रमोद चिन्तामणि, १४ - गज निस्तारण, १५- पाहान्ति अबकाश, १६– हरिणी स्तुति, १७– अक्रूर बोलि, १८- दीक्षा सम्बाद, १९– उद्धब जणाण, २०- माला निर्ण्णय, २१– गोपीभाषा अर्थ, २२– कलि मालिका, २३– इन्द्र मालिका, २४– छोट, २५- पशापर्ब, २६– पद्मकल्पटीका, २७– भबिष्य मालिका, २८- गुप्तगीता, २९– ऋकुणी मालिका, ३०- कालीय दलन, ३१– भक्ति चन्द्रिका, ३२- गुण्ड़िचा बिजे, ३३- ब्रह्मगीता, ३४- मनशिक्षा, ३५– अलंकार बोलि, ३६– पञ्चभूतगीता, ३७– पाषाण्ड़ दलन, ३८- कषन सागर गीता, ३९ – नाम सम्पन।

संस्कृत ग्रंथ १- बैष्णब आचरण, २- कृष्ण भक्ति कल्पलताफल, ३- नित्य गुप्तचिन्तामणि, ४- उपासनाशतक, ५- प्रेमसुधानिधि, ६– नित्याचार, ७- दीक्षासहितोपासना, ८- नीलाद्रिशतक, ९- श्रीजगन्नाथ चरिताम्भोधि सरणी।

महापुरुष यशोवंत दास



महापुरुष यशोवंत दास का जन्म सन् १४७७ से १५०० के बीच कटक ज़िले के अढ़ंग नाइलो ग्राम में क्षत्रिय कुल के बलभद्र मल्ल के घर हुआ था। अढ़ंग क्षेत्र के राजा रघुराम चंपत्ति के अधीन वे ग्राम चौकीदार अर्थात कटुआल के रूप में कार्यरत थे। एक बार कुसंगति में पड़कर धान की चोरी करने गए। धान काटते समय उन्होंने राम नाम सुना, जिससे वे प्रेमविभोर हो गए और राम नाम का कीर्तन करने लगे। उनकी एकाग्र भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं भगवान जगन्नाथ प्रकट हुए, उन्हें आलिंगन किया और हरिनाम के प्रचार का आदेश दिया। इसके बाद उन्होंने अनेक अलौकिक कार्य किए, जिन्हें उनके अंतरंग भक्त सुदर्शन गोस्वामी ने लिपिबद्ध किया, जो 'चौरासी आज्ञा' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसी दौरान जब महापुरुष यशोवंत चोरी के आरोप में पकड़े गए और राजा रघुराम के सामने लाए गए, तो 'रक्षक होकर भक्षक बनने' के अपराध में उन्हें शूली देने का हुक्म दिया गया। महापुरुष यशोवंत की करुण प्रार्थना पर भगवान जगन्नाथ ने सुदर्शन को आज्ञा दी कि सभा में जितने लोग हैं, उन्हें ढांक दे और वे स्वयं यशोवंत के शरीर में मूर्तिमान होकर रघुराम को अपना स्वरूप दिखाएँगे। ऐसा कहकर महाप्रभु जगन्नाथ महापुरुष यशोवंत के शरीर में प्रकट हो गए। रघुराम ने चतुर्धा मूर्ति के दर्शन कर महापुरुष यशोवंत के चरणों में गिरकर क्षमा माँगी।

महापुरुष यशोवंत दास ने जनसाधारण को अनेक अद्भुत लीलाएँ दिखाई हैं, जो उनकी चौरासी आज्ञा में वर्णित हैं। एक बार वे पुरी गए थे, लेकिन लौटते समय उनके पास यात्रा व्यय के लिए पैसे नहीं थे। तब उन्होंने भगवान जगन्नाथ से करुण प्रार्थना की। महाप्रभु ने स्वयं अपने कान का रत्नकुंडल महापुरुष यशोवंत को अर्पित कर दिया। जब सेवकों ने देखा कि प्रभु के कान से कुंडल गायब है, तो उन्होंने राजा प्रतापरुद्र देव को इसकी जानकारी दी। अंततः महापुरुष यशोवंत से वह रत्नकुंडल वापस ले लिया गया और उन्हें चोरी के आरोप में पकड़कर कारागार में डाल दिया गया। तभी भगवान जगन्नाथ ने राजा प्रतापरुद्र को स्वप्न में दर्शन देकर बताया कि उन्होंने ही अपने भक्त को पाथेय के लिए वह कुंडल दिया था। इसके बाद उन्होंने महापुरुष यशोवंत को शीघ्र कारागार से मुक्त करने का आदेश दिया। राजा स्वयं कारागार कक्ष में जाकर महापुरुष यशोवंत को सम्मानपूर्वक मुक्त कर क्षमा मांगा।

गोविंदा चंद्र, शिव सारोदया, षष्ठी माला, प्रेम भक्ति ब्रह्म गीता, आत्म परिचय गीता, मालिका और कई भजन उनके प्रमुख ग्रंथों में शामिल हैं। लोहिदास उनके सबसे समर्पित शिष्य थे। उन्होंने मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी के दिन समाधि ली।

महापुरुष शिशुअनंत दास





महापुरुष शिशु अनंत दास जी का जन्म १४८६ ईस्वी में हुआ था। वे क्षत्रिय कुल के सूर्यवंश में, पुरी ज़िले के भुवनेश्वर के निकट स्थित बालिपाटणा ग्राम में जन्मे थे। उनके पिता का नाम कपिल महांति और माता का नाम गौरी देवी था। उनका संप्रदाय 'शिशु संप्रदाय' के नाम से प्रसिद्ध है। उनके प्रमुख शिष्य सिद्धबारंग थे। सिद्धबारंग ने 'ब्रह्मकुंडली' ग्रंथ की रचना की थी। खंडगिरि महापुरुष शिशु अनंत दास की प्रमुख साधना पीठ थी, जिसे अब 'तपोवन आश्रम' कहा जाता है। उनकी एक अन्य गादी जगतसिंहपुर के बारंग पीठ के निकट चंद्रग्राम के अनंत कूड़ा नामक स्थान पर स्थित है। उनके जन्मस्थान बालिपाटणा में उन्हें समाधि दी गई, जो 'शिशु अनंत गादी' के नाम से प्रसिद्ध है। वहीं एक अन्य मठ भी है जिसे 'शिशु मठ' कहा जाता है। महापुरुष शिशु अनंत की कृति 'हेतुदय भागवत' एक ब्रह्मज्ञान से युक्त ग्रंथ है। 'गुप्त टीका' या 'यंत्र टीका' भी एक ब्रह्मज्ञान प्रधान ग्रंथ है। 'धामछत्र' ग्रंथ में साधना की विधियाँ वर्णित हैं। इसमें भी उन्होंने अपने वैष्णव मत, देवता, गुरु परंपरा आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। 'उदेबाखर' एक मालिका ग्रंथ है।

उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ हैं – कल्कि भागवत, अनंतंक बारमात्रा, शिशु अनंतंक मालिका, भक्ति प्रदायन, आगत भविष्य चौतिसा, कुमारबोध (गद्य), सुप्रकाश, प्रेमषोडशी, प्रणव ब्रह्मकुंडली, शिशु वेद टीका, धर्मक्षेत्र, गुप्त टीका, वैष्णव आचरण, सिद्धगुरु प्रणाली, शिशु मंत्र विचार, चंद्रकल्प टीका आदि।

उनके नाम पर अनेक स्तुतियाँ और चौतिसा (गीतिकाव्य) भी मिलते हैं — हेतुदय भागवत, उदेबाखर या गरुड़-केशव संवाद, आगत भविष्य मालिका, चुम्बक मालिका, भक्ति-मुक्तिदायक गीता, अणाकार संवाद, दिबि-दिबि ढोला, पिंड-ब्रह्मांड गीता इनमें प्रमुख हैं।

अपनी रचनाओं में उन्होंने गुरु-महिमा, पंचमन (पाँच मन), पच्चीस प्रकृति, ब्रह्मांड की सृष्टि-तत्व, चौदह लोक, गायत्री तत्त्व, पिंड-ब्रह्मांड सिद्धांत और अवधूत चरित आदि का विस्तार से विवेचन किया है। उनके समाज संबंधी भविष्यवाणियाँ सरल और जन-सुलभ भाषा में होती थीं, जिससे ओडिशा की आम जनता उन्हें सहजता से समझ पाते थे।

महापुरुष हाड़ि दास

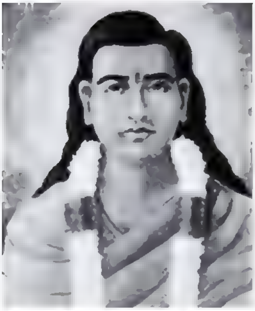


कटक ज़िले के जाजपुर उपखंड के अंतर्गत छतिआ के समीपवर्ती चंपापुर ग्राम में सन् १७७२ ईस्वी में पवित्र मकर संक्रांति के दिन हाड़ीदास कमार (लोहार) कुल में उनका जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम चेमेई ओझा और माता का नाम देवकी था। बाल्यकाल में इन्होंने सामान्य अक्षर ज्ञान के अतिरिक्त कोई विशेष शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। ईश्वर की कृपा से इनमें काव्य-लेखन की अद्भुत प्रतिभा का विकास हुआ। पश्चिमी दिशा से आए मस्तराम नामक एक साधु ने इन्हें दीक्षा दी थी। जीविकोपार्जन में कठिनाइयाँ आने के कारण उन्होंने जन्मस्थान त्यागकर छतिआ की ओर प्रस्थान किया और वहाँ एक पहाड़ी पर स्थित वटवृक्ष के नीचे में रहकर साधना और भजन में लीन हो गए। वे एक गृहस्थ वैष्णव थे और इक्कीस वर्ष की आयु में चंपापुर निवासी दामोदर महाराणा की कन्या पद्मावती से विवाह किया था। इनका जीवन अत्यंत दरिद्रता और उत्पीड़न से युक्त था, यही इनके चिरसाथी रहे। अपनी साधना-शक्ति के बल पर इन्होंने अपनी माता को छतिआ में जगन्नाथ महाप्रभु के दर्शन कराए और जाति, धर्म तथा वर्ण की भिन्नता को त्यागकर विभिन्न वर्गों के लोगों को शिष्य रूप में स्वीकार किया। इन्होंने जिन ग्रंथों की रचना की उनमें भावनाबर, लक्ष्मीधर विलास, क्षेत्रमाहात्म्य, नीलमाधव गीता, गृहसंग्रह, शंखनाभि, व्यासविशेष, तथा अनेकों भजन, जनाण, चौतिशा और मालिका विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उत्कल की सनातन धर्म परंपरा में इनकी गहरी आस्था थी। मार्गशीर्ष मास की त्रयोदशी तिथि को महापुरुष छतिआ वटवृक्ष के नीचे ध्यान-साधना में लीन रहते हुए पूर्णिमा के दिन इच्छामृत्यु का वरण किया था। महापुरुष हाड़ि दास जातिस्मर (पूर्व जन्म का स्मरण) थे और ऐसा वर्णन किया गया है कि वे कई जन्मों पूर्व स्वयं महापुरुष अच्युतानंद थे। महापुरुष अच्युतानंद ने स्वयं अपने ग्रंथ 'कलि कल्प गीता' में इस विषय में लिखा है —

चम्पापुरे जन्म हेबि छतिआरे बास
कमार घरे मुँ हेबि हाड़िबन्धु दास ।

अर्थात – चंपापुर में मेरा जन्म होगा और मैं छतिआ में निवास करूँगा। कमार (लोहार) के घर में मेरा नाम हाड़िबंधु दास होगा।

संतकवि भीम भोई



संत कवि भीम भोई का जन्म १८५० ईस्वी में ओडिशा राज्य के सम्बलपुर ज़िले के रेढ़ाखोल क्षेत्र के मधुपुर गाँव में एक कंध जाति के परिवार में हुआ था। जनश्रुति के अनुसार, बाल्यकाल में वे जन्मांध (जन्म से अंधे) थे। महापुरुष अच्युतानंद दास जी ने अपने ग्रंथ 'अनादि संहिता' में संत कवि भीम भोई के विषय में लिखा था —

ए नित्य राधा महासती। मर्त्य होइब उत्पत्ति ॥
पुंलिंग प्रकाश ता काये। अति दरिद्रावस्था देहें ॥
केवल मुठि भिक्षा करी। ग्रामे गोवत्सा पढ़िहारी ॥
चक्षु बिहीने हीन बपु। घटे प्रकृति नोहे रिपु ॥
कुलशीलता अटे कंध। से भक्तकुले द्वितीचांद ॥

अर्थात – यह नित्य राधा महासती पृथ्वी पर नर शरीर धारण कर जन्म लेंगी। वे अत्यंत दरिद्र अवस्था में होंगी, केवल मुट्ठी भर भिक्षा माँगकर जीवनयापन करेंगी, और गाँव में बछड़े चराएँगी। वे नेत्रहीन और दुर्बल शरीर से युक्त होंगी। उनका जन्म कंध जाति में होगा।

संत कवि भीम भोई ओड़िशा के एक प्राचीन कवि और समाज सुधारक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवता, दर्शन, जीवन और कार्य की धारा को अत्यंत सरल और सहज भाषा में वर्णन किया है। वे महिमा धर्म के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाए और उनकी रचनाओं में महिमा दर्शन की स्पष्ट झलक मिलती है, इसी कारण वे 'संतकवि' के रूप में प्रसिद्ध हुए।

जनश्रुति के अनुसार, संत कवि भीम भोई बचपन में कंकणपड़ा नामक गाँव के चैतन्य प्रधान नामक व्यक्ति के घर में गाय चराया करते थे। एक दिन, जब वे गाय चरा रहे थे, तब अज्ञानवश कंदरागाँव में स्थित एक परित्यक्त कुएँ में गिर पड़े। चूँकि उन्हें यह ज्ञान था कि वे स्वयं आद्य शक्ति हैं और प्रभु भी अवतरित हो चुके हैं, उन्होंने प्रभु को स्मरण किया: "हे प्रभु, मैं कुएँ में गिर गया हूँ, कृपा करके मेरा उद्धार कीजिए।" उस समय प्रभु महिमा स्वामी कपिलास की गुफाओं में तपस्या कर रहे थे, और उनके साथ उनके शिष्य गोविंद बाबा भी थे। शून्य के मार्ग से गति करके प्रभु वहाँ पहुँचे और भीम भोई का उद्धार किया। उद्धार के पश्चात प्रभु महिमा स्वामी ने भीम भोई से कहा, "तुम्हें चक्षु की आवश्यकता है, मैं तुम्हें नेत्र प्रदान करता हूँ।" इस पर भीम भोई ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मुझे चर्मचक्षु नहीं चाहिए; मुझे दिव्य चक्षु प्रदान कीजिए, जिससे मैं बाह्य जगत को भी देख सकूँ और अंतर जगत को भी।" तब प्रभु ने उन्हें दिव्य चक्षु प्रदान किए और यह आज्ञा दी कि "तुम मेरी लीलाओं के विषय में भजन लिखो, ताकि मेरे भक्त उन्हें पढ़कर मेरी लीलाओं को जान सकें।"

उनकी प्रसिद्ध कविताओं में "प्राणींक आरत दुःख अप्रमित देखु देखु केबा सहु । मो जीबन पछे नर्के पड़िथाउ जगत उद्धार हेउ ॥" (अर्थात,– प्राणियों का दुःख और पीड़ा अपरिमेय है, उसे देखकर कौन सहन कर सकता है? मेरा जीवन चाहे नर्क में पड़ा रहे, किंतु यह जगत का उद्धार हो।) अत्यंत चर्चित है। जहाँ उनके समकालीन कवि प्रेम, प्रकृति वर्णन, युद्ध की चर्चा आदि विषयों पर कविता करते थे, वहीं भीम भोई ने तत्कालीन समाज में प्रचलित जातिप्रथा, ऊँच-नीच और छुआछूत भेदभाव तथा अन्य धर्मांध कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने सामाजिक समता की स्थापना हेतु छंद, चौपदी और चौतिशा जैसी पारंपरिक विधाओं में रचनाएँ कीं।

उनके द्वारा रचित ग्रंथों में स्तुति चिंतामणि, हलिआ गीत, डालखाई, रस रकेलि, जाइफुल, ब्रह्म निरूपण गीता, आदिअंत गीता, अष्टक बिहारी गीता, निर्वेद साधना, श्रुति निषेध गीता, मनुसभा मंडल, गृहधर्म और महिमा विनोद प्रमुख हैं।

भक्त बालिगा दास (दासिआ बाउरी)

भक्तकवि दासिआ बाउरी का जन्म सोलहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में श्रीक्षेत्र (पुरी) के निकटवर्ती सातशंख गाँव के पास स्थित बालिगाँव नामक ग्राम में एक गरीब तंतुकार (बुनकर) परिवार में हुआ था। वे कृषि कार्य तथा कपड़ा बुनाई करके अपनी जीविका चलाते थे। ग्रंथों में वर्णित विवरणों से प्रमाण मिलता है कि उनकी पाँचसखाओं से भेंट हुई थी और उन्होंने उनकी भक्ति देखकर आश्चर्य व्यक्त किया था। जगन्नाथ दास ने उन्हें गुरु रूप में प्रेममय भक्तितत्व की शिक्षा दी और एकाक्षर मंत्र



का जाप करने का निर्देश दिया। ऐसा कहा जाता है कि एक बार श्रीगुंडिचा यात्रा देखकर लौटने के बाद, दासिआ अपनी पत्नी से साग और चावल खाने गए। भोजन में जब उन्होंने देखा कि उसमें जगन्नाथ महाप्रभु का प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है, तो वे भक्ति भाव में विह्वल हो गए। लोगों ने जब यह दृश्य देखा, तो उन्हें पागल समझा; किंतु वे ध्यान में अटल रहे। तब भगवान स्वयं उनके कुटीर में आकर दर्शन दिए। इसी प्रकार, भक्त दासिआ द्वारा भेजे गए नारियल को भगवान जगन्नाथ स्वयं अपने हाथों से स्वीकार किए थे, और भगवान के भोग हेतु भेजे गए आमों के टुकड़े एक-एक करके अदृश्य हो जाते थे — ऐसी अनेक कथाओं से उनकी निष्कपट भक्ति भावना का परिचय मिलता है।

भक्त दासिआ को जगन्नाथ भजन और जनाण (भक्ति गीत) लिखने में विशेष रुचि थी। इसके अलावा उन्होंने भागवत, चउतिसा, भक्ति मालिका और आगत भविष्य जैसे ग्रंथों की भी रचना की। वर्तमान में बालिगांव में मेलण पड़िआ नामक स्थान पर भक्त दासिआ की एक समाधिपीठ स्थित है।

संत अरक्षित दास



संत अरक्षित दास का जन्म गंजाम ज़िले के बड़खेमुण्ड़ि राजघराने में गंगा वंश के एक शाही परिवार में सन १७७२ से १७८२ ईस्वी के मध्य हुआ था। यह जानकारी स्वयं संत अरक्षित दास द्वारा रचित आत्मचरित में प्राप्त होती है। उनके पिता का नाम पद्मनाभ देव था और उनका पारिवारिक नाम बलभद्र देव था। उन्होंने जीवनभर जनसमाज को सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन किया। बाल्यकाल से ही श्रीअरक्षित को संन्यास जीवन के प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण था। लगभग १७ वर्ष की आयु में उन्होंने गृह त्याग कर संन्यासी जीवन की शुरुआत की। सबसे पहले वे गंजाम ज़िले के केरांडिमाल क्षेत्र गए और फिर ओडिशा के विभिन्न गुफा, पर्वत एवं तीर्थ स्थलों की यात्रा कर साधना की। अपनी अटूट भक्ति और परमात्मा को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण वे सिद्धि प्राप्त कर सके। इसके पश्चात उन्होंने श्रीजगन्नाथ महाप्रभु के दर्शन किए और ओडिशा के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। जीवन के अंतिम चरण में वे ओलाशुणी गिरिकंदर (गुफा) में निवास करने लगे। केंद्रापड़ा के ज़मींदार से अनुमति लेकर उन्होंने वहाँ एक गुफा-आश्रम की स्थापना की। ओलाशुणी या सिद्ध गुफा में उन्होंने ॐकार योग का अभ्यास किया और एक सिद्ध ब्रह्म अवधूत बन गए। संत अरक्षित दास ने ओलाशुणी क्षेत्र में ॐकार ब्रह्म के साक्षात्कार एवं प्रचार-प्रसार किया और वहाँ ९३ अध्यायों में रचित 'महीमंडल गीता' की रचना की, जो आज भी ताड़पत्र पांडुलिपि रूप में संरक्षित है और ओलाशुणी गुफा के ऊपर निर्मित कक्ष में पूजित हो रही है। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाल्यबोध, शकाब्द, ब्रह्मांड गीता, अवधूत संहिता, भक्ति टीका, महागुप्त पद्मकल्प, गुप्तटिका जैसे

भक्ति भाव से परिपूर्ण ग्रंथों की रचना कर ओडिशावासियों के हृदय में भक्ति की ज्योति प्रज्वलित की। आज भी ओडिशा के संतमहापुरुषों के बीच सिद्धपुरुष श्री अरक्षित द्वारा रचित 'महिमंडल गीता' भगवत् चर्चा में एक प्रमुख भूमिका निभाती है।

भक्त आर्त्त दास

साधक, भक्त और धर्म प्रचारक सन्तकवि आर्त्तदास का जन्म अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ओडिशा के पुरी जिले के पडागुआतिरा गाँव में हुआ था। उनकी आजीविका का एकमात्र साधन कृषि कार्य था। किशोरावस्था से ही उनमें अलौकिक शक्तियों के लक्षण प्रकट होने लगे थे। जनश्रुति के अनुसार, जब वे खेत में हल चलाते थे, तो मेघ उनके ऊपर छाया बनाकर ढँक लेते थे। वे पैंतीस वर्ष की उम्र में सन्यासी बन गए और दिसरपुर गाँव में एक गादी की स्थापना कर वहीं निवास करने लगे। क्रमशः उनके द्वारा दामदेईपुर, अंडरा, बिजीपुर जैसे विभिन्न स्थानों पर कुल ७५२ गादीयाँ स्थापित की गईं। आर्त्तदास के समय से ही 'गादीब्रह्म' शब्द ओडिशा में प्रसिद्ध हो गया। एक बार स्वप्नविष्ट होकर वे तेलांग के निकटवर्ती बेनुपड़ा गाँव गए और वहाँ बाइदास को गुरु रूप में स्वीकार कर रहने लगे। आर्त्तदास वचनसिद्ध थे, अतः वे कई लोगों को रोग और दुःख-यातनाओं से मुक्त करने में सक्षम थे। उनमें उत्कल का गहरा स्वाभिमान था। कई भजनों और मालिकाओं में उन्होंने स्वयं को 'ओड़िआ कुमार' के रूप में संबोधित किया है। वे वास्तव में एक सच्चे उत्कलवासी वैष्णव थे। अपनी अनुभूतिप्रवण अंतरात्मा की भावनाओं को उन्होंने स्पष्ट और सरल शैली में कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। बाहुड़ा एकादशी की संध्या को नाम जाप करते हुए वे बेनुपड़ा मठ में समाधिस्थ हो गए थे।

भक्तकवि शिखर दास

अज्ञात। वे संभवतः सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में थे। मालिका और तत्त्वाश्रयी वर्णन उनकी रचनाओं का मुख्य आधार थे। पांडव गीता और नील सुंदर गीता उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

भक्तकवि दीनकृष्ण दास

भक्तकवि दीनकृष्ण दास का जन्म ओडिशा के बालेश्वर जिले के सुवर्णरेखा नदी के तटवर्ती जलेश्वर ग्राम में १६५० से १७१० ईस्वी के बीच हुआ था। वे बाल्यकाल में ही श्रीक्षेत्र (पुरी) चले गए थे। ब्राह्मणी नदी के किनारे ढेंकानाल जिले के एकघरिआ ग्राम में रहकर वे भक्ति साहित्य का अध्ययन करते थे। उनके जीवन का अधिकांश भाग पुरी में, जगन्नाथ मंदिर और अन्य मठों में बीता। उनकी प्रमुख कृतियों में रसविनोद, रसकल्लोल, मधुमंगल, जगमोहन छांद, नामरत्न गीता, प्रस्तावसिंधु, गुण सागर आदि शामिल हैं। वे रसकल्लोल नामक कृष्णलीला-संबंधी छांदकाव्य के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनकी कुछ मालिका रचनाओं में मुग़ल आक्रमण के समय की ओडिशा की तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है।

भक्तकवि सालबेग

भक्त सालबेग ओडिशा के भक्तिकालीन कवियों में एक प्रमुख स्थान रखते हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भगवान जगन्नाथ को समर्पित कर दिया था। भक्तकवि सालबेग का जन्म लगभग १६०७-१६०८ ईस्वी के बीच हुआ था। सालबेग मुग़ल सूबेदार लालबेग के पुत्र थे। एक सैन्य अभियान

के दौरान, लालबेग की मुलाकात दाण्ड़मुकुन्दपुर नामक स्थान से हुई। वहाँ उसने एक सुंदर ब्राह्मण विधवा ललिता को देखा, जो नदी में स्नान कर लौट रही थी। लालबेग ने उसे बलपूर्वक अपने साथ ले जाकर अपनी पत्नी बना लिया। सालबेग उन्हीं दोनों का एकमात्र पुत्र थे। जैसे ही सालबेग बड़े हुए, उन्होंने अपने पिता के युद्ध अभियानों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। एक बार युद्ध में वे बुरी तरह घायल हो गए। जीवन के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी माँ की सलाह मानी और भगवान विष्णु का नाम जपना शुरू किया, जिससे वे चमत्कारिक रूप से ठीक हो गए। भगवान विष्णु के प्रति अत्यंत कृतज्ञता अनुभव करते हुए, वे हिंदू धर्म के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक हुए। उनकी माँ ने उन्हें महाप्रभु जगन्नाथ के बारे में बताया। चकित और अभिभूत होकर वे पुरी गए, परंतु जन्म से मुस्लिम होने के कारण उन्हें जगन्नाथ मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली। इसके बाद वे पैदल ही वृंदावन गए, जहाँ उन्होंने साधुओं के साथ रहकर तपस्वी जीवन बिताया और भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में भजन गाना शुरू किया। एक वर्ष वृज में बिताने के बाद वे पुरी लौटे, ताकि रथयात्रा उत्सव में भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर सकें, लेकिन रास्ते में ही वे अचानक बीमार पड़ गए। असहाय अनुभव करते हुए और यह समझते हुए कि वे समय पर पुरी नहीं पहुँच पाएंगे, उन्होंने भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की कि कृपया वे तब तक उनकी प्रतीक्षा करें। रथयात्रा के बहुड़ा यात्रा के दिन, भगवान जगन्नाथ का रथ नन्दिघोष तब तक नहीं चला जब तक सालबेग वहाँ नहीं पहुँचे।
जिस स्थान पर रथ ठहर गया था और जहाँ सालबेग ने भगवान के दर्शन किए, वहीं बैठकर उन्होंने भगवान की स्तुति में अनेक भजन की रचना की। उनका भजन 'आहे नील शइल' भगवान जगन्नाथ को समर्पित सबसे प्रसिद्ध प्रार्थनाओं में से एक है। उनका अंतिम संस्कार भी उसी स्थान पर हुआ था। आज भी पुरी के बड़दांड (मुख्य सड़क) पर इस महान भक्त की समाधि विद्यमान है। हर वर्ष रथयात्रा के समय भगवान जगन्नाथ का रथ उनकी समाधि के पास कुछ समय के लिए रुकता है, यह उन्हें सम्मान देने की परंपरा है। भक्तकवि सालबेग भगवान श्रीजगन्नाथ के महान भक्त थे। उनके भजन आज भी जगन्नाथ भक्तों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। उन्होंने अनेकों भक्तिगीतों की रचना की थी, हालाँकि उनमें से सभी सुरक्षित नहीं रह सके हैं। उनकी अधिकतर रचनाएँ भगवान जगन्नाथ और कृष्ण की स्तुति और प्रार्थना से संबंधित हैं। इन रचनाओं में कई गीत राधा और गोपियों के साथ भगवान श्रीकृष्ण की प्रेम-लीलाओं पर आधारित हैं, जबकि कुछ गीतों में माता यशोदा की वात्सल्य भावना को दर्शाया गया है जो उन्होंने बालकृष्ण के प्रति अनुभव की थी।

शिशु दास

ओड़िआ साहित्य में महापुरुष शिशु अनंत जी के अनुसरण में जो शिशु संप्रदाय की स्थापना हुई थी, उसके परिणामस्वरूप कई कवियों ने स्वयं को 'शिशु' की उपाधि से विभूषित किया। शिशु शंकर, शिशु बनमाली दास, शिशु दाम दास, शिशु अर्जुन दास तथा शिशु प्रतापराय इस संप्रदाय के प्रमुख सदस्य थे। उसी शिशु समुदाय में से शिशु दास की रचना 'कल्कि भागवत' तथा 'अष्टादश पटल' उल्लेखनीय हैं।

ठाकुर श्री अभिराम परमहंस

सन् १९०४ में माघ मास की त्रिवेणी अमावस्या के दिन ठाकुर श्री अभिराम परमहंस का जन्म ओडिशा के पुरी ज़िले के करमला गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम सत्यवादी पट्टनायक एवं



माता का नाम राधादेवी था। कुछ समय के लिए पड़ोसी अर्जुन और उनकी पत्नी सुब्रता ने उन्हें पालक पुत्र के रूप में स्वीकार किया था, लेकिन उनके निधन के बाद वे पुनः अपने माता-पिता के पास लौट आए। बचपन से ही वे आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और साधु-संतों को प्रिय मानते थे। कई बार जब वे ध्यान या शून्य समाधि में लीन हो जाते थे, तो उनके माता-पिता भयभीत और चकित हो जाते थे। ब्रह्मगिरि के निकट खांडव वन, ठाकुर श्री अभिराम जी की तपस्थली थी। सन् १९२३ में खांडव वन में उनके भाव समाधि में लीन होने के बाद देवी पूर्णमासी ने उन्हें दर्शन देकर गुरु रूप में एकाक्षर मंत्र के प्रचार का निर्देश दिया। सनातन धर्म के प्रचार उद्देश्य से उन्होंने कुछ समय तपस्या की और फिर करमला गाँव में 'शाढ़ि आनन्दाश्रम' की स्थापना कर वहीं रहने लगे। इसी समय १९३४ में उनकी प्रसिद्ध रचना 'कलि भागवत' ग्रंथ की रचना हुई। ३०-०४-१९४३ को तत्कालीन मद्रास सरकार ने इस ग्रंथ को राजद्रोह के अपराध में निषिद्ध घोषित कर दिया और ठाकुर श्री अभिराम को एक वर्ष का सश्रम कारावास दिया। पंडित नीलकंठ दास और उस समय के कलकत्ता विश्वविद्यालय के ओड़िआ प्रोफेसर पंडित विनायक मिश्रा ने इस राजद्रोह मामले में साक्ष्य देकर ग्रंथ में वर्णित बातों की यथार्थ व्याख्या और अनुवाद प्रस्तुत किया। अब तक ठाकुर श्री अभिराम जी की जितनी भी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, उनमें अमृतगीता, चैतन्यटीका, वैष्णवगीता, आनंदलहरी, भावकल्लोल, सनातन गीता और अध्यात्म महापुराण प्रमुख हैं। ठाकुर अभिराम जी का धर्मदर्शन और साधना पद्धति सनातन हिंदू धर्म के मौलिक सिद्धांतों और परंपराओं पर आधारित है। यद्यपि कुछ लोगों ने उनके प्रति अनुचित आलोचना की, फिर भी समाज उन्हें एक दिव्य पुरुष, सद्गुरु, त्यागी और सनातन धर्म के प्रचारक के रूप में स्वीकार करता है। २७-११-१९६३, कार्तिक शुक्ल एकादशी, ठाकुर श्री अभिराम परमहंस का अप्रकट दिवस माना जाता है। महापुरुष श्री अच्युतानंद दास जी ने लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व अपने मालिका ग्रंथ 'शिव कल्प' में ठाकुर श्री अभिराम परमहंस के विषय में भविष्यवाणी करते हुए लिखा था कि—

तांक गुरुंकर जनम कहिबा चिलिकार उत्तररे अभिन्न सुन्दर नाम होइथिब हेतु करिबु कुमरे ।
लक्ष्य शिष्य जेउँदिन पूर्णहिब सेदिन छाड़िब देह बीर सिंह देब हेतु तांकु देब ऋतु पञ्चभूते थुअ ।
पाञ्चजण शिष्य मुकति पाइबे सर्बे ग्रिबे खपररे करमला नाम बिख्यात होइब श्रीक्षेत्र होइब थरे ।
अभिरामाष्टक सकल पढ़िबे नाम हेब बड़ टेक मूल पदार्थरु अनेक सरिब न जाणिबे अबिबेक ।
अनेक शाहास्त्र पुराण लेखिब सिद्धान्त बचन तार परमहंस जे नाम भणाइब सर्बे ड़ाकिबे ठाकुर ।३०।

अर्थात – उनका जन्म चिलिका के उत्तर में होगा, तथा उनका नाम 'अभिन्न सुन्दर' होगा। जिस दिन उनके एक लाख शिष्य पूर्ण हो जाएंगे, उसी दिन वे अपने देह का त्याग करेंगे। उनके शिष्यों में से केवल पाँच शिष्य ही मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे। श्री क्षेत्र पुरी में करमला नाम विख्यात होगा। समस्त 'अभिरामाष्टक' का पाठ करेंगे और उनका नाम अत्यंत आदर व सम्मान के साथ लिया जाएगा। वे अनेक शास्त्रों और पुराणों की रचना करेंगे तथा उनका सिद्धांत वचन होगा। उन्हें परमहंस नाम से पुकारा जायेगा और सभी श्रद्धाभाव से उन्हें ठाकुर कहकर पुकारेंगे। **(शिव कल्प, महापुरुष अच्युतानंद)**

अध्याय २ - कलियुग का आयु वर्णन

सनातन धर्म में सृष्टि की समय-गणना को 'चतुर्युग' के आधार पर व्यवस्थित किया गया है, जिसमें चार युग होते हैं — सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, और कलियुग। प्रत्येक युग की एक निश्चित अवधि होती है और उसमें धर्म, अधर्म, सद्गुण व दुर्गुण की सापेक्षता धीरे-धीरे परिवर्तित होती है। इन युगों की गणना 'दिव्य वर्षों' में की जाती है, जहाँ एक दिव्य वर्ष मनुष्यों के ३६० वर्षों के बराबर होता है।

चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तत् कृतं युगम् ।
तस्य तावत्शती सन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः ॥ ६९ ॥

अर्थात – कृतयुग (देवों के) चार हजार वर्षों का होता है। उसके पूर्व ४०० देव-वर्षों की संध्या होती है और उसके पश्चात ४०० देव-वर्षों की संन्ध्यांश होती है।

इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्यांशेषु च त्रिषु ।
एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ ७० ॥

अर्थात – शेष तीनों युग (त्रेता, द्वापर और कलि) का परिमाण क्रमशः एक-एक हजार देवी वर्ष तथा उनकी सन्धाएं और सन्ध्यांश क्रमशः एक सौ दैवी वर्ष न्यून हैं। (अर्थात त्रेता युग का परिमाण ३००० देव-वर्ष है, द्वापर का २००० देव-वर्ष और कलि का १००० देव-वर्ष। इसी प्रकार इनकी संध्याएँ क्रमशः ३००, २०० और १०० देव-वर्ष की होती हैं।)

यदेतत् परिसङ्ख्यातमादावेव चतुर्युगम् ।
एतद् द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ॥ ७१ ॥

अर्थात – मनुष्यों का चार युग का कुल परिमाण १२ हजार देव-वर्ष है। वह देवताओं का एक युग कहलाता है। **(मनुस्मृति – १.६९-१.७१)**

युग	मुख्य युग अवधि	संध्या + संध्यांश	कुल दिव्य वर्ष	कुल मानव वर्ष
सतयुग	4000	800 (400+400)	4800	17,28,000 वर्ष
त्रेतायुग	3000	600 (300+300)	3600	12,96,000 वर्ष
द्वापरयुग	2000	400 (200+200)	2400	8,64,000 वर्ष
कलियुग	1000	200 (100+100)	1200	4,32,000 वर्ष

विशेष जानकारी:

• हम अभी २८वें चतुर्युग के कलियुग में हैं।

• हर मनु के शासनकाल में ७१ चतुर्युग होते हैं।

• यह वैवस्वत मनु का काल चल रहा है।

देबतामानंक बरष । बारश बरषरे शेष ॥१७५॥
मनुष्य बरषरे शेष । चारिलक्ष सस्र बतिश ॥१७६॥

महापुरुष श्री जगन्नाथ दास कृत 'ओड़िआ भागवत' के द्वितीय अध्याय में भी स्पष्ट प्रमाण है कि — कलियुग का देवताओं के लिए काल १,२०० वर्ष है, जो कि मनुष्यों के अनुसार ४,३२,००० वर्षों के समतुल्य है। (१,२०० × ३६० = ४,३२,०००)

यजन्ते नाश्वमेधेन राजानः शूद्रयोनयः। स्त्रीवधं गोवधं कृत्वा हत्वा चैव परस्परम्।
उपहन्युस्तदान्योन्यं साधयन्ति तथा प्रजाः ।। ५८.६७ ।।
दुःखप्रचारतोऽल्पायुर्देशोत्सादः सरोगता। मोहो ग्लानिस्तथासौख्यं तमोवृत्तं कलौ स्मृतम् ।। ५८.६८ ।।
प्रजा तु भ्रूणहत्यायामथ वै सम्प्रवर्त्तते। तस्मादायुर्बलं रूपं कलिं प्राप्य प्रहीयते।
दुःखेनाभिप्लुतानां वै परमायुः शतं नृणाम् ।। ५८.६९ ।।

शूद्र कुल में उत्पन्न होनेवाले राजा अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान नहीं करते। उस कलियुग में प्रजावर्ग स्त्री हत्या, गोहत्या, परस्पर मारपीट एवं एक दूसरे का वध करके किसी प्रकार जीवनयापन करता है। इन सब घोर पापों से होनेवाले दुःखों की अधिकता से लोग अल्पायु होते हैं देश का विनाश हो जाता है, अनेक प्रकार की व्याधियाँ, रुग्णता, अज्ञान, ग्लानि, कृत्रिम सुख की अभिलाषा और तामसिक मनोवृत्ति, इन सब की कलियुग में प्रधानता कही गई है । प्रजावर्ग में गर्भहत्या का घोर पाप अन्धाधुन्ध होता है, इन्हीं सब घोर पापों के कारण उस युग में आयु, बल, एवं रूप, इन सब का विनाश हो जाता है। उस समय अनेक दुःखों से पीड़ित लोगों की अधिक आयु सौ वर्ष की होती है। (स्वायम्भुव मन्वंतर)

(वायु पुराण– ५८.६७-५८.६९)

वायु पुराण में वर्णित है कि कलियुग में घोर पाप करने से मनुष्य की आयु घटती है, उसी प्रकार ओडिशा के पंचसखा महंतों ने उल्लेख किया है कि कलियुग में विभिन्न प्रकार के पापों के कारण युग की आयु भी घट जाती है तथा चार लाख बत्तीस हजार वर्ष की निश्चित अवधि में से केवल दस हजार वर्ष की आयु ही भोगी जा सकेगी। महापुरुष यशोबंत दास द्वारा रचित 'नीलसुंदर गीता' में भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य हुए संवाद के माध्यम से यह जानकारी दी गई है, जिसमें अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं कि –

अर्जुन बोइले शुण चक्रधर आबर पुच्छइ तोते ।
केउँ पापकु केते युग कटिब एहा बुझाइब मोते ।

अर्जुन उवाच — हे चक्रधर! मैं आपसे एक और प्रश्न करना चाहता हूँ। कृपया यह बताइए कि किस–किस प्रकार के पापों के कारण युग की आयु में कितना क्षय होगा; कृपा कर मुझे इसका विवेचन कीजिए।

श्रीकृष्ण बोइले शुणरे अर्जुन जाहा पचारिलु मोते ।
केउँ पापे केते बरष कटिब बुझाइ कहिबा तोते ।
मिच्छ पाप जोगे पाञ्च सस्र बर्ष युगाब्द तुटिजिब ।
गंगारे उलग्ने स्नाहान करन्ते दशसस्र क्षय हेब ।
ब्राह्मणी संगते पीरति करन्ते त्रिंशसस्र बर्ष क्षये ।
मइत्र कपट अबिश्वासी ग्नोगे षड़ सस्र तुटिग्नाए ।

बिश्वासघातकी चालिश सहस्र बरष तुटिब जाण ।
मातृ हरणरे पाञ्चसस्र बर्ष तुटिजिब ए प्रमाण ।
स्तिरी हत्यारे ग़े बतिश सहस्र गोदण्ड़ा चाषे चालिशि ।
बालहत्या दोषे सात सस्र तुमे शुण तु इन्द्रर वत्सि ।
एकादश सस्र जन्तुबधे क्षये नीचे पीरति द्वादश ।
बिधबा कामिनी हरन्ते तुटिब चबिश सस्र बरष ।
गोहत्या दोषेण लक्षेक बरष तुटिग्रिब युगाबद ।
पर दान ग़ेउँ आपणे बारिले तुटिब सस्र चउद ।
अभक्ष भक्षिले आठ ग़े सहस्र बरष होइब क्षये ।
पर धन जेबे अन्य हरिनिए दशसस्र क्षयहुए ।
सोदरे निराश करिले ग़ेहेतु तुटे चालिश सहस्र ।
अतिथिकु अन्न ग़ाचिण न देले षड़सस्र जिब नाश ।
तुलसी लगाइ सेबा ग़े न कले पाञ्चसस्र क्षय ग़ाइ ।
बिष्णु प्रतिमा ग़े अपूजा रहिले सतर सस्र तुटइ ।
एमन्त ग़े चारिलक्ष दुइ बिंश सस्र बर्ष हेब क्षये ।

श्रीकृष्ण उवाच – हे अर्जुन! तुमने मुझसे यह प्रश्न किया है कि किन-किन पापों के कारण युग की आयु में कितने वर्षों का क्षय होगा। अब मैं तुम्हें विस्तारपूर्वक समझाता हूँ—

• असत्य भाषण (झूठ बोलने) से — ५,००० वर्ष
• गंगा में उलग्न स्नान से — १०,००० वर्ष
• ब्राह्मणी के साथ पापाचार से — ३०,००० वर्ष
• मित्रों के साथ कपट एवं अविश्वास से — ६,००० वर्ष
• विश्वासघात करने से — ४०,००० वर्ष
• मातृ-हरण से — ५,००० वर्ष
• स्त्रीहत्या से — ३२,००० वर्ष
• गायों की सहायता से हल जोतकर खेती करने से — ४०,००० वर्ष
• बाल-हत्या से — ७,००० वर्ष
• जीव-हत्या से — ११,००० वर्ष
• नीच संग के साथ प्रीति करने से — १२,००० वर्ष
• विधवा-हरण से — २४,००० वर्ष
• गौ-हत्या से — १,००,००० वर्ष
• दूसरों के दान का अनुचित उपयोग करने से — १४,००० वर्ष
• अभक्ष्य (वर्जित भोजन) खाने से — ८,००० वर्ष
• परधन-हरण से — १०,००० वर्ष
• सहोदर (सगे) को निराश करने से — ४०,००० वर्ष
• अतिथि को भोजन न देने से — ६,००० वर्ष
• तुलसी का रोपण कर उसकी सेवा न करने से — ५,००० वर्ष
• विष्णु प्रतिमा की पूजा न करने से — १७,००० वर्ष

इस प्रकार कुल ४,२२,००० वर्षों की युग-आयु का क्षय होगा।

(नीलसुंदर गीता, महापुरुष यशोबंत दास)

कलियुगरे नृपबर । होइछि धर्मर कुमर ॥
दश सहस्र जे बरष । कलिर हेलाणि आयूष ॥
युधूष्ठि स्तम्भीभूत होइ । मुखरु बाक्य न स्फुरइ ॥
मनरे बड़ भय कले । अधर्म कथाकृ ड़रिले ॥

अर्थात् — अतिबड़ी जगन्नाथ दास अपने ग्रंथ गुप्त गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण और राजा युधिष्ठिर के संवाद का उल्लेख प्रस्तुत करते हैं, जहाँ स्वयं भगवान श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर से कहते हैं कि कलियुग की आयु दस हज़ार वर्ष है। **(गुप्त गीता, अतिबड़ी जगन्नाथ दास)**

ब्राह्मण वेदकु बिकिब । कर्मेण ज्ञानलोप जिब ॥१२५
कुलस्त्री अन्याय करिबे । परपुरुषे मन देबे ॥१२६
कुलधर्मकु न रखिबे । वर्ण्णभेदकु से छाड़िबे ॥१२७
बेभारे जातिभेद नाहिं । समस्ते एकाकार होइ ॥१२८
ए भाबे कलियुग शेष । थिब दशसस्र बरष ॥१२९

भावार्थ् — अतिबड़ी जगन्नाथ दास ओड़िआ भागवत में भी प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि ब्राह्मण वेदों को बेचेंगे, कुलवधुएँ अन्याय करेंगी तथा परपुरुषों में मन लगाएंगी। जो-जो धर्मपरंपराएँ, आचार-विचार और नियम समाज को बाँधकर रखते थे, वे सब टूट जाएँगे। वर्णाश्रम धर्म का पालन समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार कलियुग का अंत होगा और उसकी आयु दस हज़ार वर्ष रहेगी।
(ओड़िआ भागवत, जगन्नाथ दास)

चारिलक्ष बतिश सस्र बरष, ए कलि युगर अटे आयुष ।
बिधाता वेदरे प्रमाण कला, तेणु मो मनरे सन्देह हेला ।
बारंग वचन गुरु शुणिण, बोलन्ति बारंग वचन शुण ।
बिधाता वेदरु युग लेखिछि, एबे ताहा तोते कहिबा बाछि ।
नानादिपातक कलिरे हेब, तेणुसिना युग क्षय होइब।
दशहजार जे करिब भोग, पापरे सकल क्षय होइब ।

अर्थात् — महापुरुष शिशु अनन्त दास जी के शिष्य बारंग महापुरुष से पूछते हैं कि विधाता ने वेदों में तो कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हज़ार वर्ष प्रमाणित की है, इस कारण मेरे मन में संदेह उत्पन्न हुआ। बारंग का वचन सुनकर महापुरुष शिशु अनन्त दास कहते हैं कि विधाता ने जो वेदों में प्रमाणित किया है, वह सही है। अब मैं तुम्हें समझाकर कहता हूँ—कलियुग में नाना प्रकार के पाप होंगे, जिनके कारण युग की आयु क्षय होगी और केवल दस हज़ार वर्ष ही भोगे जाएँगे; शेष सब पाप के कारण क्षय हो जाएगा। **(कलियुग पुराण, ५म अध्याय , महापुरुष शिशुअनंत दास)**

कलियुग प्रमाण चारि लक्ष बतिश सहस्र मनरे रख ।
सबु भोग पूर्णरे न होइ अठाइश सहस्र त रहिब ।
ता मध्यरु दश हजार बर्ष पूर्ण्णरे कलियुग हेब शेष ।
पाप भारा पृथ्वी सहि नपारि मो आगरे कलाबेगे गुहारि
कल्की अबतार मुहिँ होइबि दुष्ट प्राणीमानंकु बिनाशिबि ।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद को प्रस्तुत करते हैं, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कलियुग की आयु चार लाख बत्तीस हज़ार वर्ष है, किन्तु उसका सम्पूर्ण भोग पूर्ण नहीं होगा। केवल दस हज़ार वर्ष पूरे होने पर ही कलियुग का अन्त हो जाएगा। पाप का भार पृथ्वी सहन नहीं कर पाएगी और मेरे समक्ष गुहार करेगी, तब मैं कल्कि अवतार होकर दुष्ट प्राणियों का विनाश करूँगा। **(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद)**

इस प्रकार पंचसखा महापुरुषों ने अपने ग्रन्थों में प्रमाण दिया है कि कलियुग की आयु विभिन्न पापों

के कारण क्षय होकर केवल दस हज़ार वर्ष ही भोगी जाएगी। परंतु इस दस हज़ार वर्षों की आयु में भी एक तथ्य छिपा है, जिसे हमें समझना होगा।

कलि पाञ्चसहस्र बरष भोग हेब, सेहिदिनु सत्यकलि प्रकाश पाइब ।

अर्थात् — कलियुग के पाँच हज़ार वर्ष का भोग होगा, और उसी दिन से सत्यकलि प्रकाश पाएगा।

(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)

उपर्युक्त पंक्ति के अनुसार क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि कलियुग का अन्त हो चुका है और हम अभी सत्य कलि युग में प्रवेश कर चुके हैं? नहीं, क्योंकि पूर्ण रूप से किस समय सत्यकलि युग का आगमन होगा और उसके क्या-क्या लक्षण दिखाई देंगे, इसके विषय में महापुरुष ने कालनिर्घण्ट मालिका में विस्तार से उल्लेख किया है।

कलिशेष होइब जे षड़ जे चालिश । सत्यकलि जे प्रबेश अठ ग्ने चाळिश ।४।
निशारे जे जनमाने शयनरे थिबे । रात्र जे पाहिले सत्यबचन कहिबे ।५।
सत्य कलि प्रबेश जाणिबु सत्य सर्ब । प्रभुंकर आज्ञा से जे मेण्टण होइब ।६।
सत्य ग्ने कहुण थिबे संसाररे पुणि । सत्यरु बहुत शस्य उपुजिब पुणि ।७।
सत्य्र जे देखिण इन्द्र करिब पालना । राजा दृष्टि न रहिब न होइबे बणा ।८।
भक्तमानङ्कर कष्ट जिब से दिनरु । आनन्द होइबे शुणि आम्भ श्रीमुखरु ।९।
शस्य धान बहुत संपद ग्ने लभिबे । प्रभुंकर नामकु जे आनन्दे गाइबे ।१०।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द अपने ग्रन्थ 'कालनिर्घण्ट' में प्रमाण देते हैं कि कलियुग ४६(५०४६) में समाप्त होगा और ४८ (५०४८) में सत्यकलि का प्रवेश होगा। रात्रि में जब लोग निद्रा में होंगे, रात के समाप्त होते ही प्रातःकाल लोग सत्य वचन कहेंगे। जब सत्यकलि का प्रवेश होगा, तब यह जान लेना कि सब कुछ सत्य होगा और यह प्रभु की आज्ञा से ही पूर्ण होगा। संसार में लोग सत्य वचन बोलेंगे और सत्य के प्रभाव से अन्न एवं शस्य प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होंगे। सत्य को देखकर इन्द्र पालन करेंगे। उसी दिन से भक्तों का कष्ट दूर हो जाएगा। लोग अन्न, धान और अनेकों सम्पत्तियाँ प्राप्त करेंगे तथा सभी आनन्दपूर्वक प्रभु के नाम का गान करेंगे।

(कालनिर्घण्ट, महापुरुष अच्युतानंद)

तो जब सत्यकलि युग का प्रारम्भ होगा, तब उपर्युक्त लिखित लक्षण दिखाई देंगे। परन्तु आप कहेंगे कि आज सन् २०२५ में ५१२६ युगाब्द चल रहा है, अतः सत्यकलि युग का आरम्भ तो हो जाना चाहिए था। दरअसल, महापुरुषों ने यहाँ देव अंक ५००० का उल्लेख किया है। इसका प्रमाण कालनिर्घण्ट ग्रन्थ तथा अन्य मालिका ग्रन्थों से भी प्राप्त होता है।

बारहात हात खण्ड़ा जेउँ दिन ठिक् हेब । फिरिंगी पठाण आसि चहल करिब ।११।
देब अंक जाण पाञ्चसस्र अठाइशे । महायुद्ध होइब जे छतिआ निबासे ।१२।
बारहात खण्ड़ाकु ग्ने प्रभु निजे धरि । मारिबे जे गोड़ाइण करिण संहारि ।१३।

अर्थात् — जिस दिन बारह हाथ का खड्ग ठीक होगा, उस दिन फिरंगी (यूरोपीय) और पठान आकर कोलाहल करेंगे। देवअंक पाँच हज़ार अट्ठाईस(५०२८) में छतिआबट में महायुद्ध होगा। प्रभु स्वयं बारह हाथ का खड्ग धारण कर उनका पीछा करके संहार करेंगे। **(कालनिर्घण्ट, महापुरुष अच्युतानंद)**

चहटिब लीला तु चारिरे मिशा एक चड़ा तिनि शुन्य तहिँ जेते हेला ठिक।
चलिजिब घोर कलि दलि देबे मिलि चेताइण गीते कहे अच्युत ग्ने भालि ।६।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास अपने भविष्य चौतिशा ग्रन्थ में लिखते हैं कि लीला का प्रकाशन होगा। तुम चार में एक मिलाओ (४+१ = ५) और तीन शून्य जोड़ो (५०००), उसके बाद घोर कलियुग चला जाएगा और उसका मिलकर दलन किया जाएगा। **(भविष्य चौतिशा, अच्युतानंद दास)**

पाञ्च सहस्र जेतेबेल हेब सम्पूर्ण लीला प्रकाश होइब ।
मधुमास त्रयोदशी दिनरे लक्ष लक्ष नाश होइबे नरे ।

अर्थात् — जब पाँच सहस्र होंगे, तब सम्पूर्ण लीला प्रकाशित होगा। मधु मास की त्रयोदशी तिथि के दिन लाख–लाख नरों का नाश होगा। **(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष शिशुअनंत दास)**

पञ्च समस्र दश बर्ष । कलिर् तुटिब आयुष ॥
आबर अछइ गुपत । गोबिन्द शुणिथाअ तथ्य ॥
सुर असुर नर नाग । ए चारिकुले अंकभोग ॥
प्रकाशि कहिबा तुम्भङ्कु । गुपत ए चारि युगकु ॥
चित्तरे थाअ दृढ़े धरि । कहिले अनादि श्रीहरि ॥
स्वर्गरे सुर लोकंकर । शकाब्द अंकटि ताहार ॥
असुरंकर हिसाबटि । नागलोकरे अछि घोटि ॥
ए भाबे युगे युगे खटि । नर लोकरे युगाब्दटि ॥
ए भाब न जाणन्ति केहि । एका जाणन्ति शारदाई ॥
स्वर्गरे बृहस्पति जाणे । गोबिन्द कहिलु प्रमाणे ॥

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास अपनी चौंबीस पटल मालिका में प्रमाण देते हैं, जहाँ प्रभु अनादि श्रीहरि और गोविन्द बाबा के संवाद प्रस्तुत करते हैं। प्रभु अनादि श्रीहरि कहते हैं कि ५०१० वर्ष में कलियुग की आयु टूट जाएगा। इसमें और भी एक गुप्त तथ्य है कि देवताओं का युगाब्ध अंक नरलोक में घटित हो रहा है। इसका भाव कोई नहीं जानता, इसका भाव केवल शारदा देवी और स्वर्ग में बृहस्पति ही जानते हैं। **(चौंबीस पटल, महापुरुष अच्युतानंद)**

पञ्च समस्र दश बर्ष । कलिर तुटिब आयुष ॥

अर्थात् — ५०१० वर्ष में कलियुग की आयु टूट जाएगा। **(ब्रह्म संहिता, महापुरुष अच्युतानंद)**

अंकरे अंक भेद रहिथिब । मनुष्य एहा केहि न जाणिब ॥

अर्थात् — अंकों में अंक का भेद छिपा रहेगा, मनुष्य इसे कोई जान नहीं पाएगा।
(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)

पञ्चसस्रटि पूर्ण्ण होइजिब, सेदिन यबन धाड़िटि देब ।

अर्थात् — महापुरुष शिशु अनन्त दास कहते हैं कि जिस दिन पाँच हज़ार वर्ष पूर्ण हो जाएँगे, उस दिन यवन (मुस्लिम) आक्रमण करेंगे। **(कलियुग पुराण, महापुरुष शिशु अनंत दास)**

युगाब्दरे पाञ्च हजार तिनि, मुकुन्ददेब अणतिरिश जाणि ।

अर्थात् — महापुरुष शिशु अनन्त दास अपने 'कलियुग पुराण' में प्रमाण देते हैं कि युगाब्द ५००३ में मुकुन्द देव का २९ अंक भोग होगा।

मिलण पुरुष गणुथिबे दिन, पाञ्च हजार जे होइब पूर्ण्ण।
तिनि बरष नबे दिन अन्तरे दुष्ट म्लेच्छ न रहिबे संसारे।

अर्थात् — भगवान के भक्त निम्न होकर उस समय की प्रतीक्षा करेंगे कि पाँच हज़ार तीन वर्ष और नब्बे दिन के अंत में इस संसार में दुष्ट और म्लेच्छ लोग नहीं रहेंगे।
(कलियुग पुराण, महापुरुष शिशु अनंत दास)

सत्ययुगे नारायण मन्त्र अटे सार । त्रेतया युगरे सार तारक मन्तर ।१०७।
द्वापर युगरे सार गोपाल मन्त्रहिं । कलियुगे षोड़श जे मन्त्रसार कहि ।१०८।
आदि जे अनन्त युगे एकाक्षर सार । एकाक्षर क्षरु अछि ए पाञ्च अक्षर ।१०९।
सत्य कलियुगे सार समाधि भजन । अणक्षर क्षरिला जे समाधिर स्थान ।११०।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास अपनी गुरुभक्ति गीता में प्रमाण देते हैं कि जैसे सत्ययुग में नारायण-मन्त्र सार है, त्रेतायुग में राम-तारक मन्त्र सार है, द्वापरयुग में गोपाल-मन्त्र सार है तथा कलियुग में सोलह नाम बत्तीस अक्षरों का मन्त्र सार है, वैसे ही आदि सत्ययुग/अनन्त युग में एकाक्षर मन्त्र ही सार है। एवं सत्य-कलियुग में भजन एवं समाधि ही सार होगा।

(गुरुभक्ति गीता, प्रथम खंड, महापुरुष अच्युतानंद दास)

दिव्य केशरी राजा हेब । तेबे से सत्य युग हेब ॥

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द दास अपनी अमर जुमार संहिता में प्रमाण देते हैं कि जब दिव्य अनन्त किशोर देव राजा होंगे, तभी आदि-सत्ययुग/अनंत युग का आरम्भ होगा।

(अमर जुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

मालिका में महापुरुष प्रमाण देते हैं कि कलियुग की सम्पूर्ण आयु (कलियुग, संध्या तथा संध्यांश सहित) ४,३२,००० वर्ष मानी गई है। किन्तु पाप के कारण इसमें से केवल १०,००० वर्ष ही भोगे जाएँगे। इस १०,००० वर्षों में ५,००० वर्ष कलियुग का भोग होगा तथा शेष ५,००० वर्ष कलियुग की संध्या और संध्यांश के रूप में व्यतीत होंगे। इन्हीं के मध्य प्रभु के द्वारा स्थापित 'आद्य सतयुग' अथवा 'अनन्त युग' का आगमन होगा। उसके उपरान्त, उस कालखण्ड के व्यतीत हो जाने के बाद संध्यांश में पुनः घोर कलि की स्थिति आ जाएगी। उस समय लोग दुःख और पीड़ा में निमग्न होकर निर्वेद की स्थिति को प्राप्त करेंगे, और तब अपने स्वभाव से ही सत्ययुग का आरम्भ होगा — यह किसी अन्य प्रकार से नहीं होगा। यदि आप इस ग्रन्थ के 'कल्कि अवतार अध्याय' का अध्ययन करेंगे, जहाँ पुराण-आधारित प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं, तो आपको और अधिक स्पष्टता प्राप्त होगी तथा मन में कोई भी सन्देह शेष नहीं रहेगा।

जगन्नाथ पुरी धाम से संकेत



लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व पंचसखा महापुरुषों ने चार धामों में से एक श्रीजगन्नाथ धाम — जो भगवान जगन्नाथ, उनके भ्राता बलराम और बहन सुभद्रा को समर्पित है, साथ ही सुदर्शन (जो भगवान विष्णु के प्रमुख आयुध का दैवी स्वरूप है) की उपस्थिति से सुशोभित है — से जुड़े अनेक संकेतों का उल्लेख किया। यह धाम भारत के पूर्वी तट पर स्थित ओडिशा राज्य के पुरी नगर में स्थित है। उन्होंने भविष्यवाणी के माध्यम से भगवान जगन्नाथ के श्रीमंदिर के त्याग से संबंधित संकेत, राज्य में होने वाले संकटों के संकेत तथा युग परिवर्तन के लक्षणों के संकेत प्रकट किए।

लीला खेला चाड़ि आम्बे ग्निबु जेउ काले रत्न चान्दुआरे
अग्नि लागिब से बेले निशाकाले नीलाचलु चोरिहेब बारे ।२८।
बड़ देउल उपरु खसिब पथर गृध्र पक्षी
बसिब अरुण खम्बर बतासरे नीलचक्र बक्रहेब ।२९।
समुद्र उठि असिब बतास बहिब श्रीकल्पबटकु मोर
भांगि पकाइब सत हेब साल अनेश्बत कर ठाब ।३०।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं— जब मैं नीलाचल (जगन्नाथ मन्दिर, पुरी) से लीला-खेला छोड़कर जाऊँगा, उस समय रत्न छत्र (रत्न चाँदुआ) में अग्नि लग जाएगा। रात्रिकाल में नीलाचल (श्रीजगन्नाथ मन्दिर) में चोरी की घटनाएँ घटित होंगी। (श्लोक २८) श्रीमन्दिर के ऊपर से पत्थर गिरेंगे, अरुण स्तम्भ पर गिद्ध पक्षी आकर बैठेगा, और प्रचण्ड वायु के प्रभाव से नीलचक्र (श्री मन्दिर के शिखर स्थित चक्र) टेढ़ा हो जाएगा। (श्लोक २९) समुद्र उठेगा, प्रचंड वायु चलेगी, और वह मेरी श्रीकल्पबट को तोड़कर गिरा देगा।साल उननब्बे (९९) को स्मरण करके रखो। (श्लोक ३०)

(हरि अर्जुन चउतिशा, महापुरुष अच्युतानंद दास)

बड़ देउलरु मोर पथर खसिब । सेहिदिनठारु सखी बिपद पड़िब ।

भगवान श्रीकृष्ण देवी रुक्मिणी से कहते हैं — हे सखी! जिस दिन मेरे श्रीजगन्नाथ मन्दिर से पत्थर गिरेगा, उसी दिन से विपत्ति का प्रारम्भ हो जाएगा। **(रुक्मिणीगीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

पुरुषोत्तम क्षेत्र भग्न हेब । कलपबट छेदन होइब ॥

पुरुषोत्तम क्षेत्र विध्वस्त होगा और कल्प वृक्ष का छेदन होगा।

(कलिमालिका, महापुरुष जगन्नाथ दास)

आकाशरे जेउँदिन, देब ध्वजा पड़ि थिबटि जाण लो जाइफुल सेहिदिन प्रभु हेबे जन्म ।९५।

आकाश में से जिस दिन देवध्वजा गिरेगा, जान लो उसी दिन प्रभु का जन्म होगा।

(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)

बड़ देउँलु पथर, खसुथिब थरकु थर लो जाइफुल तुहि देखिबु बेनि नेत्रर ।८२।

श्रीमंदिर से बारंबार पत्थर गिरेंगे। **(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

मुहिं नीलाचल छाड़ि जिबि हो अर्जुन। मोहर भण्ड़ार घरे थिब जेते धन ॥
तहिँरे कलंक लागि जिब क्षय होइ । मोहर सेबके न्याय बाटरे न जाइ ॥
बहुत अन्याय करि अरजिबे धन । तहिँरे ताहांक दुःख नोहिब मोचन ॥
खाइबाकु न मिलिब किछि न अण्टिब । मोहर बड़पण्ड़ाकु अन्न न मिलिब ॥
मोर बड़ देउलरु खसिब पथर । श्रीक्षेत्र राजन मोर न सेबि पयर ॥
राज्य जिब नाना दुःख पाइबटि सेहि। ताकु मान्य न करिबे आन राजा केहि ॥

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — हे अर्जुन! जब मैं नीलाचल (श्रीजगन्नाथ धाम) को छोड़कर चला जाऊँगा, उस समय मेरे भंडार-गृह में जितना भी धन होगा, वह कलंकित (दाग) होकर नष्ट हो जाएगा। मेरे सेवक न्याय के मार्ग पर नहीं चलेंगे और बहुत अन्याय करके धन का अर्जन करेंगे, जिस कारण उनका दुःख दूर नहीं होगा। उन्हें खाने को पर्याप्त नहीं मिलेगा। मेरे बड़पंडा (मुख्य पुजारी) को भी अन्न नहीं मिलेगा। मेरे श्रीमंदिर से पत्थर गिरेंगे। श्रीक्षेत्र का राजा मेरी सेवा नहीं करेगा। राज्य छिन जाएगा और वह अनेक प्रकार के दुःख भोगेगा और उसको अन्य कोई राजा मान्य नहीं करेगा।

शुण बिपरीत बरज बसि । आगत भबिष्य ग़्याहा कहुछि ॥
नारी पुष्पबती तिनि बरषे । पुरुष रहिबे नारींक बशे ॥
रामचन्द्र दास नहँ बिमन । कहिबा पद्म भ्रमरर स्थान ॥
शाशुघरे बोहू हेब नायक । पुत्र मुख चाहिँ जननी शोक ॥
भारिय़ाकु ड़रे न कहि बाणी । माताकु बोलिबे ग़्याग़्या ड़ाएणी ॥
पुत्र दुहितांकु मारिबे माता । दुहिता पुत्रे न चाहिँबे पिता ॥
बिबाह स्तिरीक छाड़िबे पति । भाउजकु घेनि हेबे गेरस्ति ॥
द्वितीय स्तिरी ब्यापिबे संसार । कन्याके आबोरिबे पाञ्च बर ॥
अश्वत्थ बरुण बेल जालिबे । अन्य कीर्त्ति भांगि कीर्त्ति तोलिबे ॥
दाम्भिक कपटी खण्ट लब्धक । उदर पोषिबे देखाइ भेक ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद आने वाले भविष्य के संबंध में अपने शिष्यों से कहते हैं कि — नारी तीन वर्ष की आयु में पुष्पवती (रजस्वला) होगी। पुरुष, नारियों के वश में रहेंगे। सास के घर में बहुएँ नायिका बनकर राज करेंगी, और पुत्र के मुख की ओर देखकर जननी शोक से व्यथित हो जाएगी। पति, भयवश पत्नी को कुछ नहीं कह सकेंगे, और पुत्र माता से कहेगा — "जा जा डायनी।"
माताएँ अपने पुत्रों और पुत्रियों को मार मारेंगी, और पिता न पुत्र को चाहेंगे, न पुत्री को। पति अपनी धर्मपत्नी को छोड़कर, अपनी भाभी के साथ गृहस्थ जीवन व्यतीत करेगा। संसार में द्वितीय स्त्री का प्रचलन व्यापक हो जाएगा। एक कन्या को पाँच वर घेरेंगे। पीपल, वरुण और बेल जैसे पवित्र वृक्षों को लोग जला देंगे। दूसरों की कीर्ति को नष्ट कर, लोग अपनी कीर्ति को ऊँचा उठाने का प्रयास करेंगे। अहंकारी, कपटी, चोर और ठग—केवल पेट भरने के लिए झूठा वेश धारण कर लोगों को धोखा देंगे। **(अनन्तबट गीता, महापुरुष अच्युत)**

अतिहिँ निष्ठुर प्राणीमाने हेबे दयापद न बहिबे। लोभीक होइण बिनता नन्दन नाना रोगरे मरिबे ।१।

अर्थात – भगवान श्रीकृष्ण गरुड़ जी से कहते हैं — हे बिनता पुत्र! प्राणी अत्यंत निष्ठुर हो जाएँगे, उनके भीतर दया का भाव प्रवाहित नहीं होगा। वे लोभी हो जाएँगे और नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त होंगे। **(महा गुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अच्युत)**

बार बरषर झिअ माआ बोलाइबे ।
एहि हेतु नारीमाने हेबे हीनबल । जनमि मरिबे शिशु हजार हजार ॥
ग़्रेउँमाने भाग्यबलु बञ्चेटि जाण । नाना रोग घोटिग़्रिब तांक देहे पुण ।
एहि दोष हेतु सर्बे हेबे अल्पायुष । मूढ़जन न जाणिबे एथर सन्देश ॥
जेतेबेले कलिकाल होइब लाघब । ए बिबाह प्रथामान देशे न रहिब ॥
नूआ नूआ आइन ग़्रे चलिब देशरे । एपरि बिबाह दण्ड़नीय राजद्वारे ॥
भक्तमाने सेतेबेले एपरि देखिबे । निकटरे सत्ययुग बोलिण जाणिबे ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं — बारह वर्ष की कन्याए माता कहलाएंगी। इसी कारण स्त्रियाँ दुर्बल और क्षीणशक्ति वाली हो जाएँगी। हजारों नवजात शिशु जन्म लेते ही मर जाएँगे। जो कुछ सौभाग्यवश बचेंगे, उनके शरीर में भी विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाएँगे। इन सभी दोषों के कारण सभी अल्पायु हो जाएँगे। मूढ़ और अज्ञानी लोग इस संदेश को नहीं समझ पाएँगे। जब कलिकाल लाघब होगा, तब देश में यह विवाह की प्रथाएँ समाप्त हो जाएँगी। देश में

नये-नये कानून चलाए जाएँगे और इस प्रकार के विवाह को राजदरबार में दंडनीय अपराध माना जाएगा। जब भक्तगण यह सब देखेंगे, तब वे समझ जाएँगे कि सत्ययुग निकट आ गया है।

(मोहकल्प, महापुरुष अच्युत)

अकाले नदी हेब बढ़ि । अकाले आसिब कुहुड़ि ॥
अकाले इन्द्र बरषिब । अकाले फलपुष्प हेब ॥
अकाले घोटिजिब । अकाले भोजन होइब ॥
अकाले करिबे स्नाहान । अकाले करिबे शयन ॥
अकाले जेणु हेब खोजा । अकाले घोटिब हइजा ॥

××××

अकाले जेहि हुए प्रिय । कलि कहे मो सेहि प्रिय ॥

अर्थात – असमय नदियाँ बाढ़ लाएँगी, असमय कुहासा छा जाएगा, असमय इन्द्र वर्षा करेगा, और असमय ही वृक्षों पर फल और पुष्प आने लगेंगे। असमय में ही सभी कार्य संपन्न होंगे — भोजन भी असमय होगा, लोग असमय ही स्नान करेंगे, असमय ही शयन करेंगे। असमय में हैजा जैसी महामारी फैल जाएगी। जो असमय कार्य करते हैं, कलि कहता है कि वही मेरे प्रिय हैं।

(वैष्णव गीता, ठाकुर श्री अभिराम परमहंस)

दिबसे उदित होइब तारा । प्रचण्ड होइब रबिर खरा ॥
पबन बहिब निर्घात करि । बसिला ठारे द्रब्य ग्रिब चोरि ॥
एक बस्त्रकरे बञ्चिबे दिन । रजक घरे न देबे बसन ॥

अर्थात – दिन के समय ताराएँ उदित होंगी और सूर्य की तपिश अत्यंत प्रचंड हो जाएगी। तीव्र हवा चलेगी। बैठे-बैठे ही लोगों का धन चुरा लिया जाएगा। लोग एक ही वस्त्र में दिन व्यतीत करेंगे, और धोबी के घर कपड़े धुलवाने नहीं देंगे। **(यशोबंत दास मालिका)**

अविश्वासी हेबे नारी कुपुरुषे रसि । गलामानंकरे लगाइबे पुण फाशि । पुत्र जात करि माता पकाइबे मारि ।

अर्थात – नारी अविश्वासी हो जाएगी और कुपुरुषों में आकर्षण रखेगी। गले में फाँसी का फंदा डालकर आत्महत्या करने की घटनाएँ होंगी। माता, पुत्र को जन्म देकर उसे मारकर फेंक देगी।

(भक्ति मुक्तिदायक गीता, शिशु अनंत)

दुष्टजनमाने उपहास करि भकतकु निन्दुथिबे
भकतंक कथा भकते जाणन्ति अन्य केहि न जाणिबे ।

अर्थात – दुष्ट लोग भक्तों का उपहास करेंगे और उनकी निंदा करेंगे। भक्तों की बात केवल भक्त ही समझ पाएंगे, अन्य कोई नहीं जान सकेगा। **(शिव कल्प, महापुरुष अच्युत)**

अज्ञानता जोगुँ सामान्य सामान्य स्वार्थ लागि परस्पर
मध्यरे बिबाद सृष्टि करि शेषरे हणाहणि होइ मरिब ।

अर्थात – अज्ञानता के कारण लोग सामान्य-सामान्य स्वार्थों के लिए आपस में विवाद सृष्टि करेंगे और अंततः मारकाट करके मारे जाएंगे। **(भविष्यत मालिका, महापुरुष अच्युत)**

पितामातामाने सबु होइबे निष्ठुर । जल जल देखुथिबे कषण झिअर ॥
षाठिए बरष बुढ़ी पिन्धुथिबे शाढ़ी । छेदालुगा खण्ड़ि हेब झिअर संखालि ॥
बुढ़ीमाआमाने खाउथि माछ भात । झिअकु कराउथिबे एकादशी ब्रत ॥
बुढ़ाए षाठिए बर्षे हेउथिबे बिभा । बिधबा बिबाह प्रथा न दिशिब शोभा ॥
तेणुकरि देश देशे हेब ब्यभिचार । भ्रूण हत्या हेउथब हजार हजार ॥
बालुत बिबाह दोष अटइ अपार । बुझाइ कहिलि सबु मने हेतुकर ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कह रहे हैं कि – पितामाता सभी निष्ठुर हो जाएंगे और अपनी कन्या की पीड़ा से भरी आँखों में आँसू देखकर भी वे कठोर बने रहेंगे। साठ वर्ष की

वृद्ध महिलाएँ साड़ी पहनेंगी, जबकि उनकी बेटियाँ फटे हुए कपड़ों में घूमेंगी। वृद्ध माताएँ मछली-भात खाएँगी और अपनी बेटियों से एकादशी व्रत करवाएँगी। साठ वर्ष के वृद्ध पुरुष विवाह करेंगे, और विधवा विवाह की परंपरा शोभनीय नहीं प्रतीत होगी। इसके कारण देश-देश में व्यभिचार फैलेगा और भ्रूण हत्याएँ हजारों की संख्या में होंगी। बाल विवाह और इन दोषों का प्रभाव अपार होगा।

(मोहकल्प, महापुरुष अच्युत)

कामशक्ति देशे प्रबल होइब कामरे होइबे भोल ।

वृद्ध युबती ये रतिसुखे मेल अकर्मे होइबे मेल ।

अर्थात – देश में कामशक्ति (वासना, यौन इच्छा) अत्यंत प्रबल हो जाएगी और लोग कामवासनाओं में ही मोहग्रस्त होकर अपनी बुद्धि और विवेक को खो बैठेंगे। वृद्ध पुरुष और युवतियाँ भी रतिक्रिया के सुख के लिए मिलन करेंगे। **(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युत)**

बिप्रे करिबे निन्दित बेपार । औषध न धरिब बैद्यंकर ॥

ज्योतिष ये ग्रोग होइबे बणा । अदिने इन्द्र करिब पालणा ॥

गुरुंकु ठकिबे न देइ किछि । देखिले लुचिबे मान्य कहिछि ॥

अर्थात – ब्राह्मण निंदनीय व्यापार करेंगे और वैद्य की औषधियाँ निष्प्रभावी हो जाएँगी। ज्योतिषियों का ज्योतिष आंकलन गलत होने लगेगा अनुचित समय पर इंद्र वर्षा करेगा। गुरुजनों को ठगा जाएगा और उन्हें कुछ भी अर्पित नहीं किया जाएगा। उन्हें देखकर लोग छिप जाएँगे और सम्मान नहीं देंगे।

(अनन्तबट गीता, महापुरुष अच्युत)

चारण चरण बारण होइब बरण नकरि जन,

प्रेरण यन्त्र रे मन रखिथिबे दुष्ट भाब निरक्षण ।

अर्थात – धर्म प्रचारक और वेदाभ्यास का विरोध होगा, और मानव समाज सही चीज़ों को पसंद नहीं करेगा। प्रेरण यन्त्र (मोबाइल) में अपनी मन को लगाएंगे, एवं अनुचित चीज़ों को देखेंगे और समझेंगे।

(अच्युतानंद मालिका)

हिन्दु सबु खुसिरे ये दमन होइबे लुंगि पिन्धि मालि तेजि प्रचार करिबे ।

चितामालि घेनिथिबा लोकंकु ये थट्टा बग छेरि अछि बोलि कहिबे ये टोका ।

फेसन करिण मुण्ड बालकु काटिबे मुण्ड तलकु केहि बाल न रखिबे ।

मुण्ड कुण्ड़ाउथिबे दिनकु दशथर प्रभु नाम दिने न धरिबे तुण्ड़र ।

अर्थात – हिंदूजन स्वयं प्रसन्नतापूर्वक दमन (विधर्मी प्रभाव) को स्वीकार करेंगे। वे लुंगी पहनेंगे, गले की माला का त्याग करेंगे और उसी विधर्मी मत का प्रचार करेंगे। जो लोग माला धारण करेंगे और ललाट पर तिलक लगाएंगे, उनका उपहास किया जाएगा। कलियुग के लोग फैशन करके अपने सिर के बाल कटवाएँगे, और सिर के नीचे बाल नहीं रखेंगे। वे दिन में दस बार अपने सिर में कंघी फेरेंगे, किंतु दिन में एक बार भी प्रभु का नाम अपने मुख से नहीं लेंगे। **(पद्मकल्प टिका, महापुरुष अच्युत)**

नामकु न चिह्नि कलिरे प्राणी नाना कुतर्क मातिबे मितणि ।२९।

बहुत छल उपहास्य मान सतकु मिछ करिबे शुणिण ।३०।

माछ माउंस भोजन करिबे देखु देखु ये अगतिकि यिबे ।३१।

मोह भक्तकु नमानिबे केहि मो भक्ते थिबे ये दरिद्र होइं ।३२।

भक्त पाइबे बहुत कषण मोह चिन्तारे बञ्चिथिबे दिन ।३३।

कलि कुतर्के से पिरिट पिड़ीतहोइ गञ्जि होइण होउथिबे द्रोही ।३४।

सतकथाकु ये मिछ करिबे सत कहन्ते कर्ण्णे नशुणिबे ।३५।

मिछकु सत मणिबे कळिरे कलियुग क्षए एहु प्रकारे ।३६।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास अपने ग्रंथ 'परम गुप्त गीता' में लिखते हैं – नाम को न पहचानकर कलियुग के प्राणी नाना प्रकार के कुतर्क में अपनी मति देंगे। वे अनेक छल और उपहास से सत्य को मिथ्या सिद्ध करने का प्रयास करेंगे। मांस और मछली का भोजन ग्रहण करेंगे, और देखत-देखत वे अधोगति की ओर अग्रसर होंगे। मेरे भक्तों को कोई नहीं मानेगा। मेरे भक्त दरिद्र होकर रहेंगे। भक्त लोग अनेक कष्ट पाएंगे और मेरे चिंतन में दिन गुजारेंगे। कलि के कुतर्क से वे पीड़ित होंगे और अपमानित होकर द्रोही कहलाएंगे। कलियुग के लोग सत्य को अनसुना कर देंगे और झूठ को सत्य मानेंगे। इस प्रकार कलियुग का क्षय होगा। **(परमगुप्त गीता, महापुरुष अच्युत)**

पुराण गीता भागबत पढ़ि । मद मांस खाइ होइबे राढ़ि ॥
माता माउसी शाशुकु हरण । वेद न पढ़िबे तिले ब्राह्मण ॥
भग्नीकि हरिबे सोदर भाइ । बिप्रे मदिरा जे खाइबे मही ॥

××××

अति अनीतिरे हेब प्रबल । पूजा न करिबे बे देबता आल ॥
गुरुंकु शिष्य जे मानिबे नाहिं । गुरुंकु देखिले लुचिबे जाइँ ॥

××××

राजामाने ग्रे अन्याय करिबे । प्रजा गुहारि राजा न शुणिबे ॥

××××

करपीड़ा हेब शस्य नोहिब । परजा दुःख राजा न शुणिब ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास जी कलियुग की भीषण स्थिति का वर्णन करते हुए बताते हैं कि कलियुग में लोग पुराण, गीता और भागवत जैसे पवित्र शास्त्रों का अध्ययन तो करेंगे, किंतु साथ ही शराब और मांस का सेवन कर निष्ठुर बन जाएँगे। वे अपनी ही माता, मौसी और सास तक का हरण करेंगे। ब्राह्मण वेदों का अध्ययन नहीं करेंगे। भाई अपनी ही बहन का हरण करेगा, और ब्राह्मण मदिरा का सेवन करेगा। कलियुग में अनैतिकता अत्यंत प्रबल होगी। लोग देवताओं की पूजा नहीं करेंगे, शिष्य अपने गुरुओं को नहीं मानेंगे। वे गुरु को देखकर छिप जाएँगे। राजा अन्याय करेंगे और प्रजा की गुहार नहीं सुनेंगे। कर (टैक्स) का अत्यधिक बोझ होगा, और फसल नहीं होगी।

(गुप्तगहन गीता, महापुरुष अच्युत)

नाना जातिमाने भिक्षा ग्रे मागिबे न पूरिब तहिं पेट
चोरिहिं करिबे माड़ खाउथिबे हेउथिबे छटपट ।

अर्थात – विविध जातियों के लोग भिक्षा माँगेंगे, परंतु उससे पेट नहीं भरेगा। तब वे चोरी करके भोजन करेंगे और मार खाकर छटपटाएँगे। **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युत)**

ब्राह्मणे बेद बिक्रय़ करिबे । गाबमाने जे अभक्ष भक्षिबे ॥
गोरु मनुष्यर होइब प्रीति । पोइलिमाने कुलबधू स्थिति ॥
इच्छा सुखे कन्या बर बरिब । ताहारि इच्छा जे बिभा होइब ॥
गारेड़ि कुय़न्त्र बाद बिद्यारे । परंकु हिंसिबे प्राणी संसारे ॥
नानादि अकर्म करिबे जन । येकठारे बसि करि भोजन ॥
जाति बर्ण्णभेद रहिब नाहिं । नृपतिमाने निष्ठुर भजइ ॥
प्रजांकु अत्यन्त कषण देबे । कर पीड़ारे दिन नेउथिबे ॥
शून्यरे मेघ आच्छातन करि । बायु गर्जन बिजुलि सञ्चरि ॥
किञ्चित बरषा हेब नोहिब । जल बिहुने कृषि नाश जिब ॥
नानादि बेपार लोके करिबे । आपणा पेट पोषि न पारिबे ॥

भाइ भउणीर प्रीति होइब । माता पितांकु पुत्र मारुथुब ॥
बेहि भारिजाकु छाड़िबे जन । पोइलि होइबे घरे भार्जन ॥

अर्थात – ब्राह्मण वेदों को बेचने लगेंगे। गायें अभक्ष्य भक्षण करेंगी। गाय और मनुष्य के बीच अनुचित प्रीति होगी। घर की वधू (पत्नी) के स्थान पर नौकरानी को रखा जाएगा। कन्याएँ अपनी इच्छा से वर चुनेंगी और विवाह भी उनकी इच्छानुसार ही होंगे। काला जादू, तंत्र-मंत्र और कुंयत्र के माध्यम से लोग एक-दूसरे को हानि पहुँचाएँगे। लोग अनेक प्रकार के अनैतिक कर्म करेंगे, और एक ही स्थान पर बैठकर सभी जातियों के लोग एक साथ भोजन करेंगे। जाति और वर्ण का भेद समाप्त हो जाएगा। राजा लोग अत्यंत कठोर और निर्दयी हो जाएँगे; वे अपनी ही प्रजा को अत्यधिक कष्ट देंगे। कर (टैक्स) के भारी बोझ तले लोग दिन व्यतीत करेंगे। कलियुग में प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाएगा। बादल तो छाएँगे, बिजली भी चमकेगी और हवाएँ भी चलेंगी, परंतु वर्षा नगण्य (बहुत थोड़ी) होगी। जल के अभाव में खेती नष्ट हो जाएगी। लोग तरह-तरह के व्यापार करेंगे, फिर भी अपना पेट नहीं भर पाएँगे। भाई-बहन के बीच अनुचित प्रेम उत्पन्न होगा। पुत्र अपने ही माता-पिता को मारेंगे। लोग अपनी वैध पत्नियों को त्याग देंगे और नौकरानियों को घर की गृहिणी बना देंगे।

(भक्तिचन्द्रिका, महापुरुष जगन्नाथ दास)

नारीए होइबे प्रबल । सतीर धर्म हेब दूर ॥
होइब निश्चे कलियुगे । आरम्भ हेब मध्यभागे ॥
पुरुष बसिथिबे घरे । नारी बुलिबे बार द्वारे ॥
केहि कहिब मुहिं बड़ । आन कहिब मुँ असुर ॥
निज गारिमा निजे पुणि । नारीए हेबे बड़ मानी ॥
गृहस्थ कथा न शुणिबे । पुरुषे मुण्ड़ पोतिथिबे ॥
जाहार थिब मान लज्जा । संसार से करिब तेज्या ॥
केते होइबे गृहत्यागी । केते बा हेबे बइरागी ॥
करिबे आत्महत्या जन । न सहि नारी कुबचन ॥

अर्थात – निराकार महापुरुष अच्युतानंद से कह रहे हैं कि कलियुग में नारी प्रबल हो जाएगी, और सती धर्म दूर हो जाएगा। यह सब निश्चित रूप से कलियुग में घटित होगा, इसकी शुरुआत मध्यकाल में होगा। पुरुष घरों में बैठे रहेंगे, जबकि स्त्रियाँ घरों के बाहर विचरण करेंगी। कोई स्वयं को बड़ा बताएगा, तो कोई खुद को असुर कहेगा। नारी अपनी ही महिमा का गुणगान करेगी और अत्यधिक अभिमानी हो जाएगी। गृहस्थ के बातों को अनसुना करेंगी, और पुरुष अपना सिर झुकाए बैठे रहेंगे। जिन्हें मान-सम्मान और लज्जा का विचार होगा, वे संसार का त्याग करेंगे। कुछ गृहस्थ जीवन छोड़ देंगे, तो कुछ बैरागी बन जाएंगे। कई आत्महत्या कर लेंगे, क्योंकि नारी के कुवचनों को सह नहीं पाएंगे। **(छयालिश पटल, ४७ पटल, महापुरुष अच्युत दास)**

पर पुरुषे पर स्तिरी । गुप्त प्रेमरे ग्रिबे मिलि ॥
तांकर बढ़िब सम्मान । सती साबित्री हेबे हीन ॥
ये करिथिब पाञ्च पति । दाण्ड़े से फुलाइब छाति ॥

अर्थात – परपुरुष और परस्त्री गुप्त प्रेम में मिलेंगे। ऐसे संबंध रखने वालों का समाज में सम्मान बढ़ जाएगा, जबकि सती-सावित्री जैसी पतिव्रता स्त्रियों का स्थान और मान घट जाएगा। जो स्त्रियाँ पाँच-पाँच पुरुषों से संबंध रखेंगी, वे इसे गर्व का विषय मानते हुए अपनी छाती फुलाएँगी।

(छयालिश पटल, ४७ पटल, महापुरुष अच्युत दास)

शुणरे बारंग एमन्त होइब कलिकालर ए रीति
न भुलिजिबु तु काहाकु देखिरे अनेक अनन्त मूर्त्ति ।
षोहल अच्युत,होइब ए काले हे हेब परमहंस
ध्यान धारणाकु तेजिबे समस्ते धर्मध्वजा हेब ध्वंस ।

अर्थात – महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग से कहते हैं — हे बारंग, सुनो। कलियुग में ऐसा समय आएगा जब बहुत से लोग खुद को 'अनंत' कहकर घूमेंगे। वे ढोंग करेंगे, लेकिन तुम ऐसे लोगों से सावधान रहना और दूर रहना। इस युग में सोलह ऐसे लोग होंगे जो खुद को 'अच्युत' यानी भगवान कल्कि या महापुरुष अच्युतानंद बताकर लोगों को भ्रमित करेंगे। ध्यान और धारणा को सभी त्याग देंगे, और धर्मध्वजा का नाश होगा। **(पटा मड़ाण, महापुरुष अच्युत दास)**

जेतेबेले बृद्धावस्था होइब कलिर । बाद अहंकारे पूर्ण्ण होइब संसार ॥
आपे आपे कहुथिबे आपणा बड़ाइ । काहार शिरीकि पार्थ न देखिबे केहि ॥
बलबन्त दुर्बलकु देबे बहु दण्ड । राजार आगे गुहारी करि देबे तण्ड ॥
ताहांकर बृत्ति बाड़ि हरि नेउथिबे । गुहारि कले ता कथा केहि न शुणिबे ॥
धन लोभ दिनु दिनु बढ़ुथिब पार्थ । बाप माआकु बाहार करि देबे सुत ॥
भारिजा बशरे रहि धर्मकु लंघिबे । ठाकुर पराय तार चरणे सेबिबे ॥
से जाहा कहिब ताहा न करिबे आन । नारींक चरित्र एबे शुण हो अर्जुन ॥
परपुरुषकु जेबे देखिबे सुन्दर । ताहा संगे प्रीति करुथिबे निरन्तर ॥
धन लोभे केउँ नारी पर प्रीति करि । आपणा स्वामीकि छाड़ि हेबे देशान्तर ॥
कुलबती कुल छाड़ि अकुले रहिबे । दान धर्म तप ब्रत किछि न करिबे ॥
देबता गृहरे सन्ध्याबती न जालिबे । पति पुत्रठारे स्नेह श्रद्धा न रखिबे ॥
बेश्या नारीए करिबे धर्म आचरण । नीच नारीरे रहिब सतीर लक्षण ॥
स्मृतिर अर्थकु लोके करिबे अनर्थ । बेदबाक्यकु पाषाण्ड़े करिदेबे ब्यर्थ ॥
नब दश बर्ष कन्या हेबे ऋतुबती । एकादश बरषरे हेबे पुत्रबती ॥
पचिश बरषे नारी होइ ग्रिबे बुढ़ी । अरजा कन्या हरिबे काम लोभे पड़ि ॥
काहारि मन काहारि संगे न मिलिब । जणे बुड़ि मरुथिले जणे हसुथिब ॥
चोरी करुथिबा लोके साधु बोलाइबे । साधुए चोरी न करि दण्ड़ पाउथिबे ॥
जाति अजाति सकले एक पत्रे बसि । आहार करिबे जेते बेले होइ खुसि ॥
जाणिथबु हो अर्जुन कलि हेब ब शेष । मोहर भकतमाने होइबे प्रकाश ॥

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — हे पार्थ! जब कलियुग की वृद्ध अवस्था आएगी, तब संसार विवाद और अहंकार से परिपूर्ण हो जाएगा। लोग अपनी ही बड़ाई (आत्म-प्रशंसा) करेंगे। कोई भी दूसरों की समृद्धि, सुख या सौभाग्य को देखकर सहन नहीं कर पाएगा — अर्थात् ईर्ष्या और असहिष्णुता अत्यधिक बढ़ जाएगी। बलवान व्यक्ति निर्बलों को बोहोत दंड देंगे और राजा के समक्ष गुहार लगाकर उनसे दंड दिलवाएँगे। वे निर्बलों की आजीविका के साधन भी छीन लेंगे, और यदि वे अपनी पीड़ा की गुहार करें, तब भी उनकी कोई नहीं सुनेगा। हे पार्थ! दिन-प्रतिदिन धन का लोभ बढ़ता जाएगा। पुत्र अपने ही माता-पिता को घर से बाहर निकाल देंगे और पत्नी के वश में होकर धर्म का उल्लंघन करेंगे। वे अपनी पत्नी को ईश्वर समान चरणों की सेवा करेंगे और उसकी बातों का कभी मना नहीं करेंगे। हे अर्जुन, अब नारी के चरित्र की बात सुनो — जब वह किसी सुंदर परपुरुष को देखेगी, तो उससे निरंतर प्रेम करने लगेगी। धन के लोभ में स्त्रियाँ परपुरुषों से संबंध स्थापित करेंगी और अपने पति को छोड़कर परदेश चली जाएँगी। कुलवती स्त्रियाँ अपने कुल को त्यागकर नीच कुल (अकुल) में निवास करेंगी। वे न तो दान देंगी, न धर्म, तप या व्रत का आचरण करेंगी। देवता के मंदिर

में संध्या के समय दीपक तक नहीं जलाएँगी। पति और पुत्र के प्रति न स्नेह रखेंगी और न ही श्रद्धा। वेश्या स्त्रियाँ धर्म का आचरण करेंगी (बाहरी रूप से धर्माचरण दिखाएँगी), और नीच स्त्रियों में सतीत्व के लक्षण दिखाई देंगे। लोग स्मृतियों के अर्थ का अनर्थ करेंगे। वेदवाक्यों को पाखंडी और दुष्ट लोग व्यर्थ कर देंगे। नौ-दस वर्ष की कन्याएँ रजस्वला हो जाएँगी और ग्यारह वर्ष की आयु में ही मातृत्व प्राप्त कर लेंगी। पच्चीस वर्ष की उम्र में स्त्रियाँ वृद्धा होंगी। काम और लोभ में पड़कर कन्याओं का शोषण किया जाएगा। किसी का मन किसी के साथ नहीं मिलेगा — एक व्यक्ति जल में डूबकर मर रहा होगा, और दूसरा उस पर हँस रहा होगा। चोरी करने वाले लोग 'साधु' कहे जाएँगे, जबकि सच्चे साधु जो चोरी नहीं करेंगे, उन्हें दंडित किया जाएगा। जब जाति और अजाति सभी एक ही पत्तल में बैठकर प्रसन्नता से आहार करेंगे — तब जान लेना हे अर्जुन, कि कलियुग अपने अंतिम चरण में है। उसी समय मेरे भक्तों का प्रकाश होगा।

ब्यास बालमिक आदि जेते ऋषिगण । हिमालयरे गुपते रहिथिबे पुण ॥
कलिर भयरे मोर पादे करि लय । बहुत कष्टरे काटुथिबे से समय ॥
खरा बरषा काकर शीत सहिकरि । घोर कलिकि जिणिबे मोर नाम धरि ॥
बेदआदि शास्त्रमाने लोप होइजिबे । कलियुगर लोकेटि बामन होइबे ॥
बल बुद्धि हीन होइजिब ताहांकर । नानादि रोग ग्रासिब ताहांक शरीर ॥
बिषया बिषरे ज्ञान होइजिब हत । असत कथामानंकु मणुथिबे सत ॥
खचुआ मिछुआ आउ परघरबुड़ा । एमाने बुलिबे चढ़ि पालिंकि जे घोड़ा ॥
बाट होइब अबाट अघाट जे घाट । लोभरे प्राणी मरिबे होइ छटपट ॥
ब्राह्मणमाने गोरुकु करिबे बाहन । आबर करिबे गोरु मुष्ककु छेदन ॥
गोरुंकु क्रय बिक्रय करि पेट पोषि । पर मन्द चिन्ता करुथिबे दिबा निशि ॥
गोखादकु जे गोरु बिकिरि करिबे । बिष्णु बृक्षकु छेदन करिण जाळिबे ॥
बैद्यमाने बैद्यशास्त्र न पढ़ि न शुणि । रोग नाड़ीर लक्षण न चिह्नि जाणि ॥
सत मिछ करि ठकि नेउथिबे धन । बालके ज्ञानी होइण बुझाइबे ज्ञान ॥
गोमातार स्तनु क्षीर न झरिब बेशि । दिनु दिन पृथिबीरे हानि हेब हानि हेब कृषि ॥

××××

सुना रूपा आदि धातु शस्ता होइजिब । केबल धान चाउल महरग हेब ॥

अर्थात – व्याप्त कलियुग के भय से व्यास, वाल्मीकि आदि सभी ऋषिगण हिमालय में गुप्त रूप से निवास करेंगे और मेरे चरणों में ध्यान लगाकर अत्यंत कष्ट में समय व्यतीत करेंगे। वे प्रचंड गर्मी, वर्षा और कड़कड़ाती ठंड को सहन करते हुए, मेरे नाम का स्मरण कर घोर कलियुग पर विजय प्राप्त करेंगे। उस समय वेद एवं शास्त्र लुप्त हो जाएँगे। कलियुग के लोग बौने हो जाएँगे। वे बल और बुद्धि से हीन होंगे। विविध रोग उनके शरीर को ग्रस लेंगे। अत्यधिक विषयासक्ति में पड़कर उनका ज्ञान नष्ट हो जाएगा। वे असत्य बातों को ही सत्य मानने लगेंगे। परनिंदा करने वाले, मिथ्यावादी तथा दूसरों के घर उजाड़ने वाले लोग घोड़े और पालकी पर चढ़कर घूमेंगे। मार्ग अमार्ग बन जाएंगे और घाट, अघाट बन जाएंगे। लोभ के कारण प्राणी छटपटा कर मरेंगे। ब्राह्मण लोग गायों को वाहन के रूप में प्रयोग करेंगे। अन्य लोग गायों तथा अंडकोषीय जीवों का छेदन करेंगे। वे गायों को खरीद-बेचकर अपना पेट पालेंगे और दिन-रात दूसरों की बुराई के विषय में सोचेंगे। वे मुसलमानों को गाय बेचेंगे। लोग विष्णु वृक्ष अर्थात पीपल के वृक्ष को काटकर जला देंगे। वैद्य वैद्यशास्त्र को न पढ़कर और न सुनकर, रोग तथा नाड़ी के लक्षणों को न पहचानकर, सत्य–मिथ्या का व्यवहार करते हुए छल–कपट से धन ले लेंगे। छोटे-छोटे बालक ज्ञानी बनकर ज्ञान का उपदेश देंगे। गायों के स्तनों से दूध की मात्रा अत्यंत

कम हो जाएगी। दिन-प्रतिदिन पृथ्वी पर कृषि की हानि होती जाएगी। सोना, चाँदी आदि धातुएँ सस्ती हो जाएँगी, और केवल धान, चावल आदि अनाज ही मूल्यवान होंगे।

(कलियुग गीता, महापुरुष अच्युत दास)

पुरुष पुरुष प्रीति होइबे नियत । स्तरीकीं स्तरी रमण करिबे बहुत ॥

अर्थात – पुरुषों को पुरुषों से प्रीति होगा। स्त्रियाँ भी स्त्रियों के साथ रमण करेंगी।

(मोह कल्प, महापुरुष अच्युत दास)



नीच होइबे बड़लोक । एहा तु देखिबु प्रत्यक्ष ॥

××××

बढ़िब अनाचार देशे । नारी रहिबे पर बशे ॥

××××

कुल स्त्री घरु टाणि नेबे । पापीए कुकर्म करिबे ॥
केहि न देबे तहिँ बाधा । सत्य धर्मर हेब निन्दा ॥
निन्दा प्रशंसा सम हेब । कलिरे एमान घटिब ॥
केते होइबे निशाखोर । न थिब ताहार बिचार ॥

××××

गृहपालित पशु जेते । महिषि छागल सहिते ॥
गोरुमानंकु हेब पीड़ा । अकाले सर्बे हेबे बुढ़ा ॥

××××

चोर तस्कर दिन राति । बुलिबे फुलाइण छाति ॥
न थिब तांक ड़र भय । पापीए पाइबे अभय ॥
मूर्ख दुर्जन हेबे मानी । नीच अधम हेबे धनी ॥

अर्थात – नीच लोग बड़े और प्रतिष्ठित माने जाएँगे — यह तुम प्रत्यक्ष देखोगे। देश में अनाचार बढ़ जाएगा, स्त्रियाँ दूसरों के वश में रहेंगी। कुल के स्त्रियों को उनके घरों से खींचकर ले जाया जाएगा, और पापी लोग कुकर्म करेंगे। कोई उन्हें रोकने या टोकने वाला नहीं होगा। सत्य और धर्म की निंदा की जाएगी। निंदा और प्रशंसा समान मानी जाएँगी — कलियुग में यह सब घटित होगा। बहुत से लोग नशे के आदी हो जाएँगे, और उनमें विचार करने की शक्ति नहीं रह जाएगी। गृहपालित पशु जैसे भैंसें और बकरियाँ पीड़ा सहेंगी, गायों को भी अत्यधिक पीड़ा दी जाएगी। समय से पहले सब वृद्ध हो जाएँगे। चोर और लुटेरे दिन-रात सीना तानकर घूमेंगे, उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं होगा। पापियों को निर्भयता प्राप्त होगी। मूर्ख और दुष्ट व्यक्ति सम्मानित होंगे, और नीच, अधम व्यक्ति धनवान बन जाएँगे।

(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युत दास)

युबक युबती प्रबल । होइ बुलिबे दल दल ॥
न शुणि गुरुजन कथा । अन्तरे सदा काम चिन्ता ॥

अर्थात – युवा और युवतियाँ प्रबल हो जाएँगे। वे टोली बनाकर इधर-उधर घूमेंगे, न वे गुरुजनों की बात मानेंगे, और न ही उनका सम्मान करेंगे। उनके मन में सदा वासना और विषय-चिंतन भरा रहेगा।

(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युत दास)

अध्याय ४ - विष्णु अवतार एवं कल्कि जन्म-विवरण

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥८॥

हे अर्जुन! जब-जब धर्म की हानि होती है, अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं शरीर धारण करता हूँ। सज्जनों की रक्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए, तथा धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में स्वयं को प्रकट करता हूँ।

भगवान विष्णु के ३२ अवतार

बिनये पुच्छइ अर्जुन । हे कृपासिन्धु भगबान ॥
तुम्भर दश अबतार । शास्त्र शुणिछि दामोदर ॥
आउ अछिकि नार्हि जन्म । कह हे श्री पुरुषोत्तम ॥

विनयपूर्वक अर्जुन ने पूछा — हे कृपासागर भगवान! आपके दस अवतारों के विषय में तो मैंने शास्त्रों में पढ़ और सुना है, हे दामोदर। क्या इसके अतिरिक्त भी आपके अन्य जन्म (अवतार) हैं? कृपया बताइए, हे श्री पुरुषोत्तम।

अर्जुन बिनय बचने । कहन्ति कृष्ण तोषमने ॥
तु जाहा पचारिलु बीर । जन्म कर्म केते मोहर ॥
नदीर बालि ग्रे गणिब । से मो अबतार जाणिब ॥
द्वाबिंश अबतार तर्हि । मध्यरे अछि श्रेष्ठ होइ ॥
दश अबतार बाहारे । शुण मुँ कहे तो आगरे ॥
नर नारायण रूपरे । तप कलि पद्मासनरे ॥
मो तप करिबाकु भग्न । मनरे पाञ्च मघबान ॥
षड़ऋतु काम कोलिक । पठाइ देला से सकल ॥
मो तप भांगि न पारिले । लज्या पाइण फेरिगले ॥
ब्रह्मा मनरु जात हेलि । चतुः सनक बोलाइलि ॥
पुणि परम हंस रूपे । ज्ञान प्रसाद कलि आपे ॥
ऋषभ अबतार होइ । महीरे य़श गलि थोइ ॥
दत्तात्रय रूपरे पुण । साधन कलि दिब्यज्ञान ॥
गजकु कुम्भीर छन्दिला । से गज मोते ड़ाकदेला ॥
गरुड़ पृष्टरे जे बसि । कुम्भीर शिर काटिदेलि ॥
इन्द्र बिनाशि बृत्रासुर । बहिण थिले पाप भार ॥
से पाप करिबाकु दूर । होइलि धर्म मूर्ति बीर ॥
बालखिला बृन्द गोस्त्रदे । पड़न्ते दिब्यरुप उदे ॥
होइ ताहांकु उद्धारिलि । आबर पृथु रूप हेलि ॥
पृथिबी रुपा धेनु दुर्हि । कृषक कुल रखिलइँ ॥
ध्रुब रूपे तपस्या करि । रहिलि मण्ड़ल आबोरि ॥
पुणि कपिल नाम बहि । माताकु ज्ञान देलि मुर्हि ॥
मारिबा निमन्ते असुर । मालती नारी हेलि बीर ॥

मोहिनी मूर्ति मुँ धरिलि । देबे अमृत परशिलि ॥
पुणि धरि सेहि मूर्त्तिकि । ठकिलि मुँ पशुपतिंकि ॥
राधा मानस कृष्ण रूपे । हरिल बंशीस्वाने आपे ॥
नब गुञ्जर रूप मोर । देखिछु परा बीरबर ॥
बेदब्यास जन्म होइलि । बेदसिन्धु मन्थन कलि ॥
शुकदेब नाम मोहर । शुणिथाअ पण्डु कुमर ॥
चैतन्य नामे कलियुगे । नाम जाचि देबि सरागे ॥
पुणि होइबि नित्यानन्द । लभि प्रेम भक्त आस्वाद ॥
फकीर रूप मुँ होइबि । संसारु शिरिणी खाइबि ॥
एहि द्वाबिंश अबतार । या मधे पुणि दश सार ॥
एमन्ते द्वात्रिंश अटइ । अर्जुन हेतु रख तुहि ॥
एहा ग्रे पढ़िब शुणिब । बिष्णु गण मेले बसिब ॥
पाप पंकरु हेब पार । शुणि मोहर अबतार ॥

अर्जुन के विनयपूर्ण वचनों को सुनकर भगवान श्रीकृष्ण प्रसन्न मन से कहते हैं – हे वीर! तुमने जो प्रश्न किया है कि मेरे जन्म और कर्म कितने हैं – जो व्यक्ति नदी की रेत के कणों को गिन सकता है, वही मेरे अवतारों की संख्या जान सकेगा। (अर्थात – जैसे कोई व्यक्ति नदी की रेत के कणों को नहीं गिन सकता, वैसे ही भगवान के अवतारों की गणना नहीं की जा सकती।) उनमें से द्वाविंशति अवतार प्रमुख हैं, दश मुख्य अवतारों के अतिरिक्त। अब मैं उन्हें तुम्हारे समक्ष कहता हूँ।

• नर नारायण – नर और नारायण रूप में मैंने तपस्या की, कमलासन पर बैठकर। मेरी उस तपस्या को भंग करने के लिए इन्द्र के मन में चिंता उत्पन्न हुई। उन्होंने षडऋतु (छः ऋतुओं), कामदेव और कोलिक (मोहकारक शक्तियाँ) आदि समस्त मायिक बलों को मेरे पास भेज दिया। परन्तु वे मेरी तपस्या को भंग नहीं कर सके। अंततः लज्जित होकर वे सब लौट गए।

• सनकादि ऋषि (चार कुमार) – फिर मैं ब्रह्मा के मन से उत्पन्न मानसपुत्र चतुः सनक (सनकादि चार कुमार – सनक, सनन्दन, सनातन और सनत कुमार) कहलाया।

• परम हंस – फिर मैंने परम हंस के रूप में अवतार लेकर स्वयं ज्ञान का प्रसाद प्रदान किया।

• ऋषभ – फिर मैंने ऋषभ के रूप में अवतार लेकर पृथ्वी पर यश स्थापित किया। (ऋषभदेव अवतार का वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में विस्तार से वर्णित है। ऋषभदेव भगवान श्रीहरि के अवतार थे, जिन्होंने अपने पुत्रों, विशेषकर भरत को उपदेश देकर सदाचार, त्याग, तपस्या, और वैराग्य का मार्ग दिखाया। वे आदर्श राजा और सन्यास धर्म के प्रेरक माने जाते हैं।)

• दत्तात्रेय – फिर मैंने दत्तात्रेय के रूप में अवतार लेकर दिव्य ज्ञान की साधना की।

• गजेंद्रोधरा – जब मगरमच्छ ने गजेन्द्र को पकड़ लिया, तब उस गजेन्द्र ने मुझे पुकारा। तब मैंने गरुड़ पर सवार होकर, मगरमच्छ का सिर काट डाला।

• धर्ममूर्ति – हे बीर! इन्द्र ने जब वृत्रासुर का वध किया, तब वो पाप के भारी भार से ग्रसित हो गया। उस पाप को दूर करने के लिए मैं धर्ममूर्ति के रूप में प्रकट हुआ।

• पृथु – पृथु अवतार लेकर मैंने पृथ्वी रूपिणी कामधेनु को दुहा और कृषक कुल (कृषकों) का रक्षा किया।

• ध्रुव – ध्रुव रूप में तपस्या कर मैंने मंडल (ध्रुव मंडल) में स्थान प्राप्त किया।

• कपिल – फिर मैंने कपिल मुनि के रूप में अवतार लेकर अपनी माता देवहूति को ज्ञान (सांख्य योग का ज्ञान) प्रदान किया।
• मोहिनी – असुरों का वध करने हेतु मैंने मोहिनी रूप धारण किया और देवताओं को अमृत पान कराया। उसी मोहिनी रूप को धारण कर मैंने भगवान पशुपति (शिव) को भी मोहित कर दिया।
• श्रीकृष्ण – और मैं स्वयं श्रीकृष्ण रूप में अपनी मधुर वंशीध्वनि द्वारा राधा का चित्त हर लिया।
• नवगुंजर – हे वीर! नवगुंजर रूप मेरा ही था, जिसे तुमने देखा था।
• वेदव्यास – फिर मैं वेदव्यास रूप में जन्म लिया और वेदसागर का मंथन किया।
• शुकदेव – हे पाण्डुपुत्र! मेरा ही नाम शुकदेव हैं। (वेदव्यास के पुत्र और महान ब्रह्मज्ञानी, जिन्होंने राजा परीक्षित को भागवत पुराण का उपदेश दिया।)
• चैतन्य – कलियुग में मैं 'चैतन्य' नाम से अवतार लूंगा और भक्तों को प्रेमपूर्वक हरिनाम दूंगा।
• नित्यानंद – फिर मैं 'नित्यानंद' होऊँगा और भक्तों के साथ प्रेमरस का आस्वादन करूँगा।
• फक़ीर – मैं फकीर के रूप में प्रकट होऊँगा और संसार से शिरीणी (विशेष प्रकार का प्रसाद, जो सामान्यतः क्षीर (दूध), चीनी, कदली (केला), और छेना (पनीर) से मिलाकर बनाया जाता है।) खाऊँगा।

हे अर्जुन! ये जो द्वाविंश (२२) अवतार मैंने बताए, इनके अतिरिक्त दस अवतार श्रेष्ठ हैं। इस प्रकार कुल बत्तीस (३२) अवतारों का वर्णन हुआ है। हे अर्जुन! तुम इनका स्मरण रखना। जो कोई मेरे इन अवतारों का पठन या श्रवण करेगा, वह पापरूपी कीचड़ से पार हो जाएगा।

(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युत दास)

भगवान विष्णु के १० मुख्य अवतार



मत्स्यावतार | कूर्मावतार | वराहावतार | नरसिंहावतार | वामनावतार



परशुरामावतार | रामावतार | बलरामावतार | बुद्धावतार | कल्किावतार

• **चैतन्य महाप्रभु** – चैतन्य महाप्रभु का जन्म १८ फरवरी १४८६ ईस्वी (फाल्गुन पूर्णिमा, गोरापूर्णिमा) को पश्चिम बंगाल के नवद्वीप (नदिया ज़िले) में हुआ था। इनके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शची देवी था। उनका बचपन का नाम विश्वम्भर मिश्र था, परंतु उन्हें स्नेहपूर्वक "निमाई" कहा जाता था।

वे विद्या, तर्क और शास्त्रों के अत्यंत प्रखर विद्वान थे, परंतु जीवन के उत्तरार्ध में उन्होंने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति को प्राथमिकता दी। २४ वर्ष की आयु में उन्होंने संन्यास ग्रहण किया और जीवन पर्यंत श्रीकृष्ण नाम-संकीर्तन तथा प्रेम-भक्ति के प्रचार में लीन रहे।

चैतन्य महाप्रभु ने "अचिन्त्य भेदाभेद" तत्त्व का प्रतिपादन किया, जो अद्वैत और द्वैत का अद्भुत समन्वय है। उनका जीवन श्रीकृष्ण के राधा-भाव को जीने का उदाहरण था। वे स्वयं श्रीकृष्ण के अवतार माने जाते हैं, जिन्होंने श्रीराधा की भक्ति और भाव को धारण कर इस धरती पर प्रेम-रस का विस्तार किया। चैतन्य महाप्रभु ने "हरि नाम संकीर्तन" को कलियुग में मोक्ष का सर्वोत्तम साधन बताया।

उनकी पंच-तत्त्व संकीर्तन परंपरा इस प्रकार है –

श्रीकृष्ण चैतन्य, प्रभु नित्यानंद, अद्वैत आचार्य, गदाधर पंडित, श्रीवास ठाकुर — ये पाँच ही कृष्णप्रेम के प्रचारक स्तंभ थे।

चैतन्य महाप्रभु ने दक्षिण भारत की यात्रा कर वैष्णव धर्म का प्रचार किया। उन्होंने काशी, पुरी, वृंदावन तथा अन्य पवित्र स्थलों पर भक्ति का संचार किया। उनका अंतिम समय पुरी में व्यतीत हुआ और वहीं वे लीला-संवतार हो गए।

• **नित्यानंद महाप्रभु** – नित्यानंद महाप्रभु का जन्म १४७४ ईस्वी में बंगाल के एकचक्रा ग्राम (वर्तमान वीरभूमि ज़िला) में हुआ था। उनके पिता का नाम मुकुंद पंडित और माता का नाम पद्मावती था। बचपन से ही वे भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं में विशेष रुचि रखते थे और बाल्यकाल में ही रामलीला में लक्ष्मण की भूमिका निभाया करते थे। उन्होंने चैतन्य महाप्रभु के साथ मिलकर श्रीनाम-संकीर्तन और कृष्णभक्ति का व्यापक प्रचार किया। वे करुणा, क्षमा और प्रेम की सजीव प्रतिमा थे। उन्होंने गृहस्थ जीवन अपनाया, परंतु भक्ति में पूर्णत: स्थित रहे। उन्होंने समाज के सबसे नीच और पतित माने गए लोगों को भी श्रीहरि नाम की दीक्षा दी। उनका प्रमुख सिद्धांत था: "जो भी श्रीगौरांग का नाम लेता है, वह मेरा आत्मीय है।"

जगाई-माधाई जैसे अत्यंत पतित ब्राह्मणों को नित्यानंद प्रभु ने क्षमा कर और प्रेम देकर उद्धार किया। उन्होंने बंगाल और ओड़िशा में श्रीगौरांग महाप्रभु के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया।

• **फ़क़ीर** – भगवान श्रीविष्णु के फ़क़ीर अवतार का उल्लेख महापुरुष श्रीअच्युतानंद दास द्वारा रचित ग्रंथ "चउषठि पटल" में प्राप्त होता है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण स्वयं अर्जुन से इस विषय में संवाद करते हैं –

सेपरि यबन कुलरे फकीर नाम
बहि जन्महोइ भिक्षा मागिबि नाना दुआरे जाइँ ।३४।
सत्य नारायण नामरे उड़िब मो पताका
हिन्दु मुसलमान पूजिबे मोते बिचारि एका ।

यवन (मुस्लिम) कुल में एक फकीर के नाम से मेरा जन्म होगा। मैं विभिन्न दरवाज़ों पर जाकर भिक्षा माँगूँगा। सत्य नारायण के नाम से मेरा ध्वज (महिमा) उड़ेगा। हिंदू और मुसलमान दोनों मुझे एक मानकर मेरी पूजा करेंगे। **(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युत दास)**

• **बुद्ध अवतार**–



बुद्ध नाम धरि मुहिं जनम होइबि लोकंक मते अहिंसा धर्म प्रचारिबि ।
बहुत लोक मोहर धर्मकु पालिबे पाप पंकरे नपड़ि मोक्ष होइजिबे ।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं – मैं बुद्ध नाम धारण करके जन्म लूँगा और लोगो में अहिंसा धर्म का प्रचार करूँगा। बहुत से लोग मेरे द्वारा प्रतिपादित धर्म का पालन करेंगे। वे पापरूपी कीचड़ में नहीं पड़ेंगे और मोक्ष को प्राप्त हो जाएँगे। **(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युत दास)**

• **प्रबुद्ध बुद्ध अवतार**– अनेक मालिका ग्रन्थों में महिमा स्वामी (प्रबुद्ध अवतार) के विषय में प्रमाण प्राप्त होते हैं कि प्रभु सर्वप्रथम प्रबुद्ध अवतार धारण कर अपने धर्म का प्रचार करेंगे तथा इसके उपरान्त अपने इस शरीर का त्याग कर कल्कि अवतार धारण करेंगे। नीचे उल्लिखित मालिका ग्रन्थों में प्रबुद्ध अवतार का उल्लेख सप्रमाण संदर्भित है –

आगत सुबाहु कलिरे । आम्भे जन्मिबु मर्त्त्यपुरे ॥
प्रबुद्ध अंगे हेबु जात । शून्य अयोनिरु सम्भूत ॥
कलिरे हेब पाप गरु । अघोर अन्याय हेबारु ॥
महिमा धर्म प्रकाशिबु । धर्मे धरति अश्वासिबु ॥
तुम्भंकु देबु भक्तिकला । निर्बेद उपुजिब लीला ॥
पुणि से तनुकु तेजिबु । कलकि अबतार हेबु ॥
धर्मे स्थापिबु बसुन्धरी । तुम्भर बाञ्छा सिद्ध करि ॥
संगे घेनाइ निजपुरे । प्रबेश से कलि शेषरे ॥

अर्थात – आगामी सुबाहु कलियुग में, जब पाप अत्यधिक बढ़ जाएगा और भीषण अन्याय व्याप्त होगा, तब मैं इस मृत्युलोक में प्रबुद्ध स्वरूप में प्रकट होऊँगा। मैं शून्य अयोनि से सम्बूत होकर— अर्थात बिना किसी योनिज जन्म के प्रकट होकर महिमा धर्म का प्रकाश करूँगा और इस पृथ्वी को पाप के भार से कुछ अंशों में मुक्त करूँगा। तब मैं तुम भक्तों को भक्ति की कला प्रदान करूँगा और विविध लीलाओं का प्राकट्य होगा। इसके पश्चात मैं उस शरीर का त्याग करूँगा और कल्कि अवतार

धारण करके इस धरा पर धर्म की पुनः स्थापना करूँगा, और तुम्हारी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करके, कलियुग के अंत में तुम्हें अपने साथ लेकर अपने निजधाम को लौट जाऊँगा।

(अनादि संहिता, नवम अध्याय, महापुरुष अच्युत दास)

धनुमासे हरि जन्म लभिबे अनन्त मिश्र घरे उद्य हेबे ।
बृन्दाबन केश श्यामल बर्ण्ण बाहुल्य मूर्त्ति धरि जन्मे राम
श्याम कुण्ड़ राधा कुण्ड़ निकट संकेत रखिछि कदम्ब बट ।
प्रबुद्ध बुद्ध अबतार धरि बेगि होइबे नाग शरा पारि ।

अर्थात – भगवान श्रीहरि धनुर्मास में अनंत मिश्र के गृह में उदित होंगे। वे घुंघराले केशों से सुशोभित, श्यामल वर्ण एवं बाहुल्य स्वरूप को धारण कर जन्म लेंगे। उनके जन्मस्थल के समीप श्याम कुण्ड, राधा कुण्ड एवं कदंबवृक्ष विद्यमान रहेगा। प्रबुद्ध बुद्ध अवतार धारण कर प्रभु शीघ्र ही नागदेवता (कपिलास पर्वत पर) के संरक्षण में तपस्या हेतु अग्रसर होंगे। **(पंचसखा कलियुग जातक)**

बैत्रणी उत्तर तीररे । जनम होइबु सेठारे ॥
अनन्त मिश्र बोलि नाम । दुर्बादल श्यामल बर्ण्ण ॥
अति दरिद्र बिप्र सेहि । अन्न बसन न मिलइ ॥
भिक्षा मागइ निति निति। ये रूपे उदर पोषन्ति ॥
से गृह करिथुब य्रहिं । श्मशान भूमि से अटइ ॥

अर्थात – भगवान का जन्म वैतरणी नदी के उत्तर तट पर होगा। उनका पिता का नाम अनंत मिश्र होगा जिनका वर्ण दूर्वा-दल (हरित) के समान श्यामल होगा। वे एक अत्यंत दरिद्र ब्राह्मण होंगे, जिन्हें न तो अन्न और न ही वस्त्र सहजता से प्राप्त होगा। वे प्रतिदिन भिक्षा माँगकर ही अपने उदर का पोषण करेंगे। उनका गृह एक श्मशान भूमि के समीप स्थित होगा। **(कलि भविष्य, बाईकृष्ण दास)**

शुण हो बारंग कहिबा से रंग प्रभु अबतार गुण ।
श्री बिरोजा क्षेत्रे जनम लभिबे अनन्त मिश्र गृहेण ॥
जनम होइबे गृहकु छाड़िबे तपस्या करिबे जाइ
सिद्धगिरि स्थान सिद्धंक सदन रहिबे से भावग्राही ॥
खण्ड़गिरि स्थान एकाम्र कानन सुबर्ण्णच्युत गिरिरे
सेहि स्थाने प्रभु बिजे करिथिबे भक्तजन संगतरे ॥

अर्थात – महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग से कहते हैं — “हे बारंग, सुनो, प्रभु श्रीबिरजा क्षेत्र में, अनंत मिश्र के गृह में जन्म लेंगे। जन्म लेने के पश्चात वे गृह का त्याग कर तपस्या के लिए प्रस्थान करेंगे। वे सिद्धगिरि नामक स्थान में, जो सिद्धों का निवास है, वहाँ निवास करेंगे। फिर वे एकाम्र कानन (भुवनेश्वर) स्थित खंडगिरि तथा सुवर्णच्युत गिरि में अपने भक्तों के साथ आएंगे।” **(चुम्बक मालिका, शिशु अनंत दास)**

प्रभु प्रबुद्ध बुद्ध ने धनु मास में जाजपुर स्थित वैतरणी नदी के उत्तरी तट पर, एक श्मशान भूमि के समीप, एक ब्राह्मण परिवार में अवतार लिया था। शासकीय अभिलेखों एवं मालिका ग्रंथों के अनुसार, उनके पिता का नाम अनंत मिश्र था, तथा प्रभु का नाम मुकुंद मिश्र था।

सर्वप्रथम महिमा प्रभु (मुकुंद मिश्र) भारतवर्ष के हिमालय की एक शिखर पर स्थित गुफा में आत्मयोग साधना करते हुए दीर्घकाल तक केवल वायु पान कर स्थिर अवस्था में स्थित थे। तत्पश्चात वे प्रबुद्ध स्वरूप में अनेक देशों एवं प्रदेशों का भ्रमण करते हुए उत्कल भूमि में पदार्पण करते हैं। सिद्ध महापुरुषों के वचनों के अनुसार, ईस्वी सन् १८२६ में महिमा प्रभु ने पुरी में लोगो को दर्शन दिए थे। उस समय वे धूलि में शयन एवं उपवेशन कर रहे थे, अतः लोग उन्हें धूलिआ गोसाईं

कहकर संबोधित करने लगे। बाबाजी दैतारी दास ने 'दयानंद स्मरणिका' में अपने मत को प्रकट करते हुए गाया है —

महादधि उपकुले पुरी धामनीलाचले बिजे अठर छबिश साले,
दर्शन कले प्रथमे उत्कल निबासिमने धूलिआ गोसेइँ स्वरूपरे ।

अर्थात – ई. सन् १८२६ में, महादधि (समुद्र) के तट पर स्थित पुरी धाम नीलाचल में महिमा प्रभु ने प्रथम बार धूलिआ गोसाई स्वरूप में उत्कल निवासियों को दर्शन दिए।

उस समय वे गेरुआ वस्त्र धारण किए हुए थे और उनके सिर पर जटाएँ थीं। पुरी में अपने प्रवास काल के दौरान, वे मुक्तिमंडप के पंडितों के साथ ब्रह्मज्ञान पर चर्चा करते थे। इसके पश्चात उन्होंने खंडगिरि, धौलीगिरि की गुफाओं में बारह वर्षों तक निराहार रहकर 'समाधि योग' का अवलंबन किया। ऐसा कहा जाता है कि इस अवधि में खंडगिरि के समीपवर्ती 'बरमुंडा' ग्राम के एक धर्मपरायण व्यक्ति ने अनेक वर्षों तक उन्हें पीने योग्य जल प्रदान किया। वे केवल जलपान कर जीवन निर्वाह करते थे, इस कारण उन्हें 'निराहारी गोसाईं' कहा जाने लगा। खंडगिरि में निवास के दौरान उनका शरीर ताम्रवर्ण धारण कर चुका था और उनके मुखमंडल से अत्यंत तेजस्विता प्रकट होती थी। उनके इस दिव्य स्वरूप के दर्शन कर दर्शकों ने उन्हें शिव के अवतार के रूप में प्रचारित करना आरंभ किया। इस प्रचार के प्रभाव से अनेकों नर-नारी उनके दर्शन हेतु खंडगिरि में एकत्रित होने लगे। १८२६ ईस्वी से बारह वर्षों तक समाधि योग का अवलंबन पूर्ण करने के उपरांत वे ढेंकानाल स्थित कपिलास पर्वत पर पधारे। वहाँ वे कपिलास पर्वत स्थित 'केन्दुपाणिआ गुफा' में निवास हेतु विराजमान हुए। इसी समय देओग्राम निवासी एक धर्मनिष्ठ शबर, जिसका नाम सदानन्द था, आकस्मिक रूप से केन्दुपाणिआ गुफा में महिमा गोसाईं के दर्शन कर श्रद्धाभाव से हाथ जोड़कर निवेदन करने लगा— "हे प्रभु! आप स्वयं चन्द्रशेखर के अवतार हैं, ऐसा मैं विश्वास करता हूँ। आपके मस्तक पर सप्तफणी नाग को देखकर मुझे भय उत्पन्न हो रहा है। कृपया, आप कौन हैं, मुझे अपना परिचय दें।"

किरात सदानन्द की इस विनीत प्रार्थना से प्रसन्न होकर महिमा गोसाईं ने उसे कहा— "हे सदानन्द! निर्गुण निराकार अलेख एकाक्षर ब्रह्म की आज्ञा से सत्यधर्म की रक्षा हेतु मैंने यह शरीर धारण किया है। मैं इस कपिलास पर्वत पर चौबीस वर्षों तक आत्मयोग-समाधि में स्थित रहूँगा। परंतु, तुम मेरे विषय में किसी से भी कुछ प्रकट नहीं करना।"

प्रभु की आज्ञा को शिरोधार्य कर सदानन्द ने करबद्ध निवेदन किया— "हे प्रभु! कृपा कर मुझे आपकी सेवा में नियुक्त करें।"

तब महिमा गोसाईं ने आज्ञा दिया — "तुम बारह वर्षों तक वन से सुखी लकड़ियाँ तथा कुछ फल-मूल लाकर मुझे गोपनीय रूप से प्रदान करते रहो।" प्रभु की आज्ञा को शिरोधार्य कर शबर सदानन्द ने बारह वर्षों तक अति गुप्त रूप में महिमा गोसाईं को फल-मूल और धूनी की लकड़ी प्रदान की। इन्हीं बारह वर्षों के कारण महिमा गोसाईं को "फलाहारी गोसाईं" के नाम से भी संबोधित किया जाता है। बारह वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर, सन् १८५० ईस्वी में ढेंकानाल के तत्कालीन महाराजा श्री श्री भागीरथि महेन्द्र बहादुर की पटरानी को महिमा गोसाईं के विषय में ज्ञात हुआ। महाराजा एवं महारानी दोनों ही कपिलास पर्वत पर पधारे और अनेक प्रयासों तथा धर्मनिष्ठ सदानंद के सहयोग से केन्दुपाणिआ गुफा तक पहुँचे और महिमा गोसाईं के दर्शन किए। उन्होंने महिमा गोसाईं के समक्ष संतान प्राप्ति की कामना प्रकट की, जिस पर महिमा गोसाईं ने उनकी इच्छा पूर्ण होने की बात कही।

इसके उपरांत, महाराज के अनुरोध पर महिमा गोसाईं ने दीर्घ बारह वर्षों तक दुग्धाहार का पालन किया। प्रतिदिन प्रातःकाल नवीन मृत्तिका पात्र में गोधुग्ध प्रभु के समक्ष अर्पित किया जाता, जिसकी समुचित व्यवस्था स्वयं महाराजा ने सुनिश्चित की थी। कपिलास पर्वत पर तत्पश्चात के बारह वर्षों, अर्थात् १८६२ ईस्वी तक, जब उन्होंने केवल दुग्धाहार के माध्यम से जीवन निर्वाह किया, तब जनसमुदाय उन्हें 'क्षीराहारी गोसाईं' के नाम से संबोधित करने लगा। इसी वर्ष, सन् १८६२ ईस्वी में, महिमा गोसाईं ने ढेंकानाल के कपिलास पर्वत पर सिद्धि प्राप्त की।

सन् १८६२ ईस्वी में महिमा गोसाईं द्वारा ढेंकानाल के कपिलास पर्वत पर सिद्धि प्राप्ति के पश्चात्, वे अपने सिद्धि एवं धर्म के प्रचार हेतु ओडिशा के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने लगे। कपिलास से निकलकर वे वनमार्ग से अग्रसर होते हुए सर्वप्रथम बौद्ध राज्य के अंतर्गत 'बलासिंघा' ग्राम में प्रविष्ट हुए। वहाँ उनकी भेंट वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित 'जगन्नाथ दास' नामक एक साधक से हुई। यह घटना महिमा धर्म के इतिहास में अत्यंत उल्लेखनीय मानी जाती है।

वास्तव में, महिमा गोसाईं से जगन्नाथ दास का पूर्व से ही परिचय था और उन्होंने उन्हें गुरु रूप में स्वीकार किया था। इस अवसर पर महिमा गोसाईं ने जगन्नाथ दास से कहा कि वह वैष्णव सम्प्रदाय का त्याग कर, उनके द्वारा नवीन रूप में प्रतिपादित 'महिमा धर्म' में सम्मिलित हो जाएँ। इस आदेशानुसार, महिमा गोसाईं ने स्वयं जगन्नाथ दास का पुनः दीक्षा-संस्कार करते हुए उन्हें 'गोविंद दास' नाम प्रदान किया। तत्पश्चात् 'गोविंद दास' अथवा 'गोविंद दास बाबा' ही उनकी एकमात्र पहचान बन गई; उन्होंने अपने पूर्व परिचय जैसे जन्मस्थल, पितृनाम, जन्मवर्ष आदि समस्त सांसारिक पहचान का परित्याग कर दिया।

गोविंद बाबा महिमा पंथ के प्रथम चौंसठ सिद्धों में अग्रणी बने और उन्हें 'आदिसिद्ध' (प्रथम आत्मसाक्षात्कार प्राप्त) कहा गया, जिनसे सिद्ध संन्यास परंपरा की प्रथम पंक्ति की स्थापना हुई। महिमा गोसाईं के विशद निर्देशों के अनुसार वे पश्चिम की ओर इस नवप्रवर्तित महिमा धर्म के प्रचार हेतु प्रस्थान कर गए। गोविंद बाबा द्वारा धर्म प्रचार के समय भोगे गए संघर्षों एवं उनकी साधना की विस्तृत विवरणात्मक प्रस्तुति 'निर्वेद साधना' ग्रंथ में महाकवि भीम भोई द्वारा की गई है।

सन् १९०९ के बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में उल्लेख प्राप्त होता है कि अलेख स्वामी ने एक नवीन धर्म की प्रवर्तना कर, कुल ६४ साधुओं को उस धर्म में दीक्षित किया था। उन सभी दीक्षित साधु-संन्यासियों में 'गोविंद दास' सर्वश्रेष्ठ था। इन्हीं दीक्षित संन्यासियों के अथक प्रचार के फलस्वरूप उक्त धर्म का व्यापक प्रसार हुआ। ओड़िशा के बौद्ध राज्य स्थित बलासिंघा ग्राम में जब जगन्नाथ दास को महिमा धर्म में दीक्षित किया गया, तत्पश्चात महिमा गोसाईं उन्हें साथ लेकर रेंढ़ाखोल की ओर यात्रा पर निकले। उसी समय, प्रसिद्ध संत-कवि भीम भोई रेंढ़ाखोल के अंतर्गत कंकणपड़ा ग्राम में निवास कर रहे थे। वे वहाँ ग्राम के गौंठिया (मुखिया) चैतन्य प्रधान के घर में गाय चराकर उदर पोषण कर रहे थे। कथा के अनुसार, महिमा गोसाईं ने एक बार भीम भोई को कुएँ से उद्धार किया था, जिससे भीम भोई उनके प्रति अत्यंत कृतज्ञ थे।

बलासिंघा से महिमा गोसाईं और गोविंद बाबा पैदल चलते हुए रात्रि के अंधकार में भीम भोई की कुटी तक पहुँचे और उन्हें निद्रा से जगाया। भीम भोई जब गुरु और शिष्य दोनों को एक साथ देख कर अचंभित हुए, तब उन्होंने महिमा धर्म की बार्ता सुनी और तत्काल महिमा गोसाईं से दीक्षा प्राप्त की।

योगेश्वर स्वामी के साथ उनकी किस प्रकार साक्षात भेंट हुई, इसका वर्णन विभिन्न कवियों ने किया

है। महापुरुष अच्युतानंद ने अपनी ‘कल्पसंहिता’ में लिखा था—

भ्रमि एकान्त ग्राम पुरे । जे जम्बुदीप धरत्रीरे ॥

ग़े नित्य राधा मो भगत । से मर्त्य होइथिब जात ॥

ता हारे प्रबेशिबु ग़्राइ । ता नाम अटइ भीम भोइ ॥

××××

बालुत कालु सेहिं दुःखी । मो भाबे प्रेमे चित्ते सुखी ॥

××××

जाइ प्रबेशिबु रेढ़ारे । से भीम भोइ निज हारे॥

××××

जन्मरु अन्ध ता नयन । चाहिँ देखिब मोर बर्ण्ण ॥

मागि घेनिब दीक्षा मोर । प्रसन्ने देबु ताकु वर ॥

भावार्थ – प्रभु कहते हैं— मैं भ्रमण करता हुआ जम्बूद्वीप की धरती पर स्थित एक ग्राम में प्रवेश करूँगा, जहाँ मेरी भक्त 'नित्य राधा' मर्त्य लोक में जन्म लेंगी। उसका नाम होगा ‘भीम भोई’। वह बाल्यकाल से ही दुःखी तथा जन्म से नेत्रहीन होगा, किंतु मेरे भाव और प्रेम में लीन रहकर चित्त से सुख का अनुभव करेगा। मैं रेंढ़ाखोल में प्रवेश कर, भीम भोई के समीप पहुँचूँगा। वह मुझसे दीक्षा मांगेगा, और मैं प्रसन्न होकर उसे वर प्रदान करूँगा। **(कल्पसंहिता, अच्युतानंद दास)**

संतकवि भीम भोई ने जीवन के अंतिम क्षण तक महिमा धर्म के प्रचार और प्रसार के उद्देश्य से चौतीसा, भजन, ग्रंथ आदि असंख्य पुस्तकों की रचना की। महिमा गोसाई के जीवनकाल में भीम भोई की रचनाएँ उनके समक्ष पाठ की जाती थीं। महिमा गोसाई उन्हें सुनते, स्वीकार करते, और फिर उन्हें प्रचार कार्य में प्रयोग किया जाता था। कवि भीम द्वारा रचित महिमा धर्म का आदिग्रंथ ‘स्तुति चिंतामणि’ है। इस ग्रंथ में उल्लिखित नीति और नियमों को महिमा धर्म के अनुयायियों ने आत्मसात किया। महिमा धर्म के आदि भक्त और प्रवक्ता के रूप में कवि भीम भोई का स्थान अत्यंत उच्च और सम्माननीय है।

प्रभु महिमा स्वामी ने अपने लिए ६४ बकलधारी संन्यासियों की नियुक्ति की थी, जिन्हें ‘सिद्ध बाबा’ के नाम से भी संबोधित किया जाता हैं। महिमा गोसाई ने अपने धर्म का प्रचार कटक, पुरी, गंजाम ज़िलों तथा ढेंकानाल, आठगढ़, हिन्दोल, बौध, सोनपुर जैसी सामंती रियासतों के अतिरिक्त संबलपुर और अंगुल जैसे ज़िलों में भी किया। उन्होंने संपूर्ण ओड़िशा में असंख्य शिष्यों को दीक्षित किया। महिमा धर्म के प्रचार हेतु उन्होंने अनेक केन्द्रों की स्थापना की, जिन्हें ‘महिमा आश्रम’ एवं ‘अलेख टुंगी’ के नाम से जाना जाता है। शून्य समाधि ग्रहण करने से पूर्व, उन्होंने अपने समस्त अनुयायियों को एकत्र कर निर्देश दिया कि जो कोई भी महिमा धर्म में संन्यास लेना चाहता है, उसे बकल धारण करने से पूर्व कौपिन धारण करना अनिवार्य होगा। जब महिमा गोसाई परमधाम के लिए प्रस्थान किए, उस समय आकाश रंगीन हो उठा और सम्पूर्ण वातावरण में चंदन की दिव्य सुगंध व्याप्त हो गई। उन्होंने ढेंकानाल के जोरंडा में फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी (सन् १८७६) को शून्य समाधि लिया। महिमा प्रभु के प्रथम शिष्य गोविंद बाबा थे, जबकि अंतिम और सर्वशेष शिष्य नंद बाबा माने जाते हैं।

जोरंडा मेला, जिसे माघ मेला अथवा महिमा मेला के नाम से भी जाना जाता है, ओडिशा के ढेंकानाल जिले के जोरंडा क्षेत्र में प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा के दिन आयोजित होता है। यह मेला महिमा धर्म के प्रवर्तक महिमा गोसाई की समाधि स्थल पर आयोजित होता है, जहाँ देशभर से महिमा

संन्यासी, भक्तगण, भिक्षु एवं तीर्थयात्री एकत्र होकर शून्य मंदिर स्थित महिमा गोसाईं की समाधि-पीठ पर पूजा-अर्चना करते हैं। मंदिर में किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती, अपितु वहाँ स्थित 'अखंड धूनी'—महात्मा द्वारा प्रज्वलित एक चिरस्थायी ज्योति—आज भी प्रज्वलित है। मेला स्थल पर यज्ञ-कुंड में विशाल हवन आयोजित होता है, जिसमें सहस्त्रों लीटर घृत की आहुति दी जाती है। यह समारोह विश्वशांति, मानवता, प्रेम और समृद्धि की कामना हेतु सामूहिक प्रार्थना का रूप है। भक्त 'आलेख ब्रह्म' का उच्चारण करते हैं, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक चेतना से भर उठता है। यह मेला न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत का भी गौरवपूर्ण उत्सव है।



जोरंडा गादी



महादेव चंद्रशेखर मंदिर, कपिलास

सत्य सनातन महिमा धर्म मूलतः एकेश्वरवादी है। महिमा धर्म जातिवाद और मूर्तिपूजा का कठोरता से विरोध करता है। यह धर्म व्यभिचार, किसी भी प्रकार के मद्यपान, हिंसा तथा किसी भी प्रकार के मांसाहार को सख्त मनाही देता है। आहार और जल का सेवन सूर्यास्त से पूर्व करना अनिवार्य है। महिमा भक्त को प्रातः लगभग चार बजे उठकर सूर्य उदय से पूर्व सरण/दर्शन करना चाहिए। सरण/दर्शन का अर्थ है अपने आप का पूर्ण समर्पण महिमा प्रभु को। यह क्रिया प्रतिदिन तीन बार की जाती है—प्रातः, मध्याह्न और सूर्यास्त से पूर्व।

सर्वावतारों का मूल महाप्रभु जगन्नाथ

अबतार जेते येहि जगन्नाथ अंगरु क्षरि मिशन्ति
लीला निमन्ते से नीलाद्रि नायेक निर्बिकारे बसिछन्ति

अर्थात् — जितने भी अवतार होते हैं, वे इसी जगन्नाथ महाप्रभु के अंग से उत्पन्न होते हैं और उन्हीं में समाहित हो जाते हैं। लीला (जगत के खेल) के लिए ही वह नीलाद्रि नायक (नील पर्वत के स्वामी) निर्विकार (बिना किसी विकार के) विराजमान हैं। **(शून्यसंहिता, अच्युतानंद दास)**

उड्रराष्ट्रे नीलगिरि, जहिं बिजये नरहरि जगत ईश्वर ठाकुर, लीलाये नाना अवतार

अर्थात् — उड्रराष्ट्र (ओडिशा) में नीलगिरि (नीलाचल/पुरी) है, जहाँ नरहरि विराजमान हैं। वह जगत् के ईश्वर ठाकुर (जगन्नाथ) हैं, जो लीला के लिए नाना (अनेक) अवतार धारण करते हैं।
(वेदान्तसार गीता, महापुरुष बलराम दास)

• **कल्कि अवतार**– शास्त्रों एवं मालिका ग्रंथों के अनुसार, जब कलियुग का अंत समीप होगा, तब इस धराधाम पर अधर्म अपने चरम शिखर पर पहुँच जाएगा। सत्य दुर्लभ हो जाएगा, और शासकों द्वारा व्यापक अन्याय, भ्रष्टाचार तथा अत्याचार किया जाएगा। समाज में न तो मर्यादा बचेगी और न ही सदाचार। लोग केवल भौतिक सुखों के पीछे भागेंगे, तथा समस्त जीव विकृति, द्वेष और स्वार्थ में लिप्त हो जाएँगे।

चारों वर्ण, आश्रम और कर्तव्यों की मर्यादा नष्ट हो जाएगी। ब्राह्मण वेद-पठन छोड़ देंगे, क्षत्रिय धर्म-रक्षा नहीं करेंगे, वैश्यों में नैतिकता का अभाव होगा और शूद्र पथभ्रष्ट हो जाएँगे। गुरु-शिष्य, माता-पिता और संतान के संबंध भी विकृत हो जाएँगे। सच्चे संतों का अपमान होगा, जबकि अधर्म के अनुयायियों को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

वर्तमान स्थिति पर यदि दृष्टि डाली जाए, तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आज अधर्म अपने चरम पर पहुँच चुका है। छल-कपट, शोषण, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन अत्यधिक बढ़ गया है।

ऐसे विकट समय में, भगवान श्रीहरि विष्णु स्वयं 'कल्कि अवतार' के रूप में प्रकट होंगे, और समस्त म्लेच्छों तथा पापियों का संहार कर पुनः सत्य, धर्म, और अनंतयुग की स्थापना करेंगे। उनके अवतरण की स्थली, निवास तथा माता-पिता के विषय में पंचसखा संतों एवं भक्त कवियों ने अपने-अपने मालिका ग्रंथों में स्पष्ट रूप से वर्णन किया है, जिसका उल्लेख नीचे संदर्भित है –

बिष्णुयशा नामे ब्राह्मण । बिष्णु जे ता'र बीर्य्य जन्म ॥१३३॥
यशोबन्ती नामे ब्राह्मणी । ता' गर्भे जन्म चक्रपाणि ॥१३४॥

ओड़िया भागवत में महापुरुष श्री जगन्नाथ दास जी उल्लेख करते हैं कि भगवान श्रीहरि विष्णु का कल्कि अवतार विष्णुयशा नामक ब्राह्मण के घर होगा। उनकी माता यशोबन्ती नामक ब्राह्मणी होंगी, जिनके गर्भ से चक्रपाणि प्रभु जन्म होंगे। **(ओड़िआ भागवत, अतिबड़ि जगन्नाथ दास)**

बिष्णुशर्मागृहे प्रभु होइबेक जात । गयारे सम्बलनग्र हरिहर क्षेत्र ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद कह रहे हैं कि — 'प्रभु विष्णुशर्मा के घर जन्म लेंगे, जो गया में स्थित सम्बलनगर हरिहर क्षेत्र में है।' **(कलिकल्प, महापुरुष अच्युतानन्द)**

कल्की अबतार ओड़िशामण्ड़ले तुम्भे जनम होइब दुष्टजन नाशि भक्तंकु आश्वासी धर्मकु तुम्भे पालिब ।

अर्थात – हे प्रभु! आप कल्कि अवतार होकर ओडिशा मंडल में जन्म लेंगे और दुष्टजनों का नाश करके, भक्तों को सांत्वना देकर, इस धरती पर धर्म की स्थापना करेंगे।

(चुम्बक मालिका, महापुरुष शिशु अनंत)

सम्बल ग्रामरे बिष्णुय़शा घरे प्रभु य़हुँ जनमिबे । सुधर्मा सभाटि श्रीजाजनगरे प्रभु आपे बिस्तारिबे ॥

अर्थात – संबल ग्राम में विष्णुयशा के घर प्रभु जन्म लेंगे और श्रीजाजनगर में स्वयं प्रभु सुधर्मा सभा का विस्तार करेंगे। **(१३ जन्म शरण, महापुरुष अच्युतानन्द)**

योगनिद्राकु जे आम्भे भांगि पुण सम्बल नग्रे जन्मिबु । अग्निहोत्र द्विजशर्मा घरे पुण पञ्चसखा संगे नेबु ॥

अर्थात – प्रभु श्रीहरि कह रहे हैं कि — "योगनिद्रा को तोड़कर मैं संबल नगर में अग्निहोत्री ब्राह्मण शर्मा के घर जन्म लूंगा और पंचसखा को साथ लूंगा।" **(सदर जमा चकड़ा मड़ाण, महापुरुष अच्युत)**

गुपत सम्बल हरिहरपुर ग्राम । बरजनन्दन मने हेतु करि घेन ।
नोहिला नोहिला बोलि शुभुथुब गोल । खेल खेलुथिबे रहि मदन गोपाल ।
जाजपुर पञ्चकोश बिरय़ा मण्ड़ल । नाभिगया बिष्णु शर्मा घरे हेब खेल ।

अर्थात – गुप्त संबल ग्राम हरिहर क्षेत्र में हैं। हे ब्रजनंदन (रामदास), इसे याद रखना। 'नहीं हुआ, नहीं हुआ' कहते हुए लोग कोलाहल करेंगे। वहीं रहकर मदन गोपाल खेल खेलेंगे। जाजपुर

पंचकोश विरजा मंडल के नाभिगया में विष्णु शर्मा के घर प्रभु का खेल होगा।

(कलिकल्प, महापुरुष अच्युतानन्द)

क्षीर नदी देखिण जे बिरजा मण्ड़ल, क्षात ग्रे कमलपुर गुप्त जे सम्बल ।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद बताते हैं कि बिरजा मंडल में क्षीरधारा बहती है, और वहीं पर स्थित कमलपुर को गुप्त संबल कहा जाता है। **(कलिकल्प, महापुरुष अच्युतानन्द)**

सम्बल नग्र छाड़ि करि हरि । आत्मा तपस्यापूर्ण कुटगिरि ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद बताते हैं कि प्रभु श्रीहरि संबल नगर को छोड़कर पर्वत गिरि में आत्मतपस्या के लिए जाएंगे। **(कलिकल्प, महापुरुष अच्युतानन्द)**

केशब कहन्ति शुणहे उद्धब किंकट नग्रटि जाण ।
कल्की अबतार हेबु सेइठारे लोहित आमरिबर्ण्ण ।
खण्ड़गिरि स्थान गुपते प्रमाण ख्यातबट अछि तहिं ।
क्षीरधार पुण गण्ड़की संगम उदय होइबि मुहिं ।
गोपाल जे देब अनन्त मूरति उदय जेबण स्थान ।
गुप्त खण्ड़गिरि ताहाकु जाणिबु तहिंरे आम्भ आश्रम ।

अर्थात – प्रभु श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं — "हे उद्धव! मेरा कल्कि अवतार किंकट नगर में होगा, और मेरा वर्ण लोहित (लाल) होगा। गुप्त खण्डगिरि, जहाँ ख्यात वट स्थित है तथा जहाँ क्षीरधारा और गण्ड़की नदियों का संगम होता है — वहीं मैं उदय होऊँगा। जहाँ अनंत विष्णु गोपाल के रूप में उदय हुए होंगे, उसी स्थान को 'गुप्त खण्डगिरि' के नाम से जानना। वहीं मेरा आश्रम स्थित होगा।

(उद्धव चौतीसा, महापुरुष जगन्नाथ)

कमलपुरे कमल लोचन । किंकट नग्ररे हेबु जनम ।१।
कटक अमराबती जेस्थान । 'क' रु देखिबु उदय ब्रह्म ।२।
एक बट चारि नाम जाणिब । श्री पुरुषोत्तम क्षेत्रहोइब ।३।

अर्थात – प्रभु श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं कि प्रभु किंकट नगर (जाजपुर) कमलपुर में जन्म लेंगे। कटक-अमरावती जो स्थान है, वहीं पर कल्कि अवतार उदय होंगे। जहाँ एक ही वटवृक्ष को चार-चार नामों से जाना जाता है एवं जो स्थान श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र होगा। **(कलि भविष्य, महापुरुष जगन्नाथ)**

शिबकल्परे देखिबु प्रभु जन्मस्थान जाजपुर मध्यरे से होइथिबे जन्म ।
जगिथिबु न कहिबु बुलिबे देशरे बैष्णब बेशे रहिबे मध्य मण्ड़लरे ।
महामहिमा बेलकु प्रकाश करिबे मायामोहे पड़ि लोके चिह्नि न पारिबे ।

अर्थात – महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र से कहते हैं कि शिवकल्प में प्रभु का जन्मस्थान देखना — वे जाजपुर के मध्य में जन्म लेंगे। जागरूक रहना, लेकिन यह किसी से कहना नहीं। प्रभु देश में भ्रमण करेंगे, वैष्णव वेश धारण करके मध्य मंडल में निवास करेंगे। और महा महिमा का समय आने पर स्वयं को प्रकाशित करेंगे, किंतु लोग माया-मोह में पड़कर उन्हें पहचान नहीं पाएँगे।

(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)

कल्कि जनम हेबे सेकाले गोसाइँ । मुकुन्द राजन देब एक चालिश हिं ॥
ब्राह्मण जे बिष्णु शर्मा अपुत्रिक थिब । आपणे जनम सेहु अटे बसुदेब ॥

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानंद दास अपने गुरुभक्ति गीता में प्रमाण देते हैं कि प्रभु कल्कि गजपति राजा मुकुंद देव के ४१वें अंक में जन्म लेंगे। ब्राह्मण विष्णु शर्मा निसंतान होंगे। प्रभु स्वयं उनके यहाँ जन्म लेंगे। वे स्वयं द्वापर युग के प्रभु श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव हैं।

(गुरुभक्ति गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

चतुः पार्श्वरे कि संकेत मान । जेउँठारे प्रभु हेब जनम ।१९।
जनमि करिब एमन्त लीला । आज्ञा हेउ मोते श्रीचकाड़ोला ।२०।
शुण उद्धब आम्बर बचन । आठगिरि बेढ़ि जेबण नाम ।२१।
चारिदिगे चारि शिब जाणिब । सुबर्ण लिंग जे पश्चिमे थिब ।२२।
उत्तरे यमुना गंगा जे मेल । पूर्बे दशासनी गण्डुकी धार ।२३।
दक्षिणकु मणिनाग अछइ । पश्चिमे कुबेर भण्ड़ार कहि ।२४।
जहिं बसकल्प नगर कहि । क्षीर धार जहिं गुपत होइ ।२५।
जहिं चारि मेघंकर आस्थान । आर्त्त सम्बर्त्त द्रोण जे जाण ।२६।
पुष्कर जे मेघ ए मान चारि । जेउँ गिरिबर गर्भेण धरि ।२७।
य़हिं इन्द्र इन्द्राणी बास स्थान । तहिं बालिमीक तपी आश्रम ।२८।
कलागिरि परे बास आम्भर । शंख चक्र गदा न थिब कर ।२९।
साधुंक गृहरे आम्भे खेलिबु । बैष्णबंक संगे संग होइबु ।३०।
मही भ्रमिजिबु चिह्ना न देइ । राज्ये राज्य भिक्षा मागिबु जाइँ ।३१।

अर्थात – उद्धव भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं— "हे श्रीचकाड़ोला (जगन्नाथ)! आप जहाँ जन्म लेकर जिस स्थान पर ऐसी लीलाएं करेंगे, उस स्थान के चारों ओर क्या संकेत होंगे?"

प्रभु श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं— "हे उद्धव! सुनो, वह स्थान आठ गिरियों से घिरा हुआ होगा। चार दिशाओं में चार शिव विराजमान होंगे— पश्चिम दिशा में सुबर्ण (स्वर्ण) लिंग स्थित होगा। उत्तर दिशा में गंगा और यमुना नदियों का मिलन होगा। पूर्व दिशा में दशासनी और गण्डुकी की धाराएँ बहेंगी। दक्षिण दिशा में मणिनाग स्थित होगा, और पश्चिम में कुबेर का भंडार कहा जाता हैं। उस स्थान को वसुकल्प नगर कहा जाता है, जहाँ क्षीरधारा (दूध की धारा) गुप्त रूप से बहती है। वहीं पर चार मेघ — पुष्कर, आर्त्त, संवर्त और द्रोण— जिन्हें गिरिवर अपने गर्भ में धारण करता है। जहाँ इंद्र और इंद्राणी का निवास स्थान होगा, वहीं पर वाल्मीकि तपस्वी का आश्रम भी होगा। कलागिरि पर्वत के समीप मेरा निवास होगा। उस समय मेरे हाथों में शंख, चक्र और गदा नहीं होंगे। मैं साधुओं के घरों में खेलूंगा और वैष्णवों के साथ संगति करूंगा। मैं इस धरती पर भ्रमण करूंगा, बिना किसी को अपनी पहचान बताए और राज्य-राज्य जाकर भिक्षा मांगूंगा।" **(कलि भविष्य, महापुरुष जगन्नाथ)**

क्षीरधार बहि जाउछि स्थान अमराबती खण्ड़गिरि स्थान गुपते सिद्ध साधु अछन्ति ।
गुम्फारे भजन लागिछि रात्र दिन मध्यरे गुपते खेल से खेलिबे प्रभु सेहि ठाबरे ।

अर्थात – स्थान अमरावती में क्षीरधारा प्रवाहित हो रहा है। वहाँ खण्डगिरि स्थान पर गुप्त रूप से सिद्ध साधु निवास करते हैं। गुफाओं के मध्य दिन-रात भजन चल रहा है तथा वहाँ प्रभु गुप्त रूप से खेल खेलेंगे। **(आगत भविष्य मालिका, महापुरुष हाड़ी दास)**

कहिबि मुँ ए पाहाड़ न नाम कलागिरि । पुणि एक नाम यार गुप्त खण्ड़गिरि
। आउ एक हे । अमरारिपुर ये प्रत्यक्ष हे ।२०।

××××

जरा बंशे महाभक्त जनमिला एक । बसुकल्प नाम ता'र खोजिण अनेक ।
मोर भेट हे । एठारे पाइला भक्त श्रेष्ठ हे ।३४।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास जी के पुत्र, महापुरुष गदाधर दास द्वारा रचित 'शून्यकल्प गीता' में लिखा है कि कलागिरि पर्वत का एक अन्य नाम 'गुप्तखण्डगिरि' है, जो अमरारिपुर (अमरावती) में स्थित है। वहीं जरा वंश से वसुकल्प नामक एक महाभक्त ने अनेक खोजों के बाद प्रभु का अमरावती, कटक में दर्शन पाया। **(शून्यकल्प गीता-चउद बोलि, गदाधर दास)**

गुपत द्वारका मोर अमरा जे बती सेठारे रहिबि मुहिँ करिण बसति मोहर नाम जे हेब अनन्त गोपाल ॥

अर्थात – प्रभु श्रीकृष्ण कहते हैं कि गुप्त द्वारका मेरी अमरावती है; वहीं मैं निवास करूंगा और वहीं मेरी वासस्थली होगी। मेरा नाम 'अनंत गोपाल' होगा। **(यशोबंत मालिका)**

खण्ड़गिरि गुप्त स्थान क्षितिरे अनन्त पुण क्षीर धार गुप्त जहिं खेलिबे अनन्त तहिं
खेलिण गुपते लीला आरम्भिबे भकत संकेत पाइ ।

अर्थात – महापुरुष हाड़ीदास ने अपने ग्रंथ भविष्य चौतीसा में लिखा है कि गुप्त खंडगिरि स्थल पर गुप्त रूप से दूध की धारा मौजूद है और अनंत गोपाल वहीं अपनी लीला करेंगे। वे गुप्त रूप से अपनी लीला शुरू करेंगे। इसका संकेत केवल भक्तों को ही मिलेगा। **(भविष्य चउतिशा)**

महापुरुष हाड़ीदास जी की 'नीलमाधव गीता' इस बात का प्रमाण देती है कि अमरावती कटक में ही विश्ववासु शबर, भगवान नीलमाधव की उपासना हेतु एक प्रासाद (मंदिर) का निर्माण कर वहीं निवास कर रहे थे। राजा इंद्रद्युम्न द्वारा भेजे गए ब्राह्मण विद्वान विद्यापति भी नीलमाधव की खोज में इसी स्थान पर आए थे और वहीं विश्ववासु की कन्या ललिता के साथ प्रेम-संबंध में बंध गए थे।

बिश्वाबसु नामे थिला एकइ शबर । अमराबती कटक पाशे ता'र घर ।
भक्त बीर से । स्वप्ने आज्ञा देले निराकार जे' ।३।

××××

अमराबती पर्बते करन्ते सन्धान । ललिता कन्या देखिला पुरुष रतन ।
होइ स्नेही जे । मिलिलाक ता'र पाशे जाइँ जे' ।२६।

अर्थात – विश्ववासु नामक एक शबर था, जिसका घर अमरावती कटक के पास था। वह एक वीर भक्त था। स्वप्न में उसे निराकार प्रभु ने आज्ञा दी। ।३।

अमरावती पर्वत पर उसने प्रभु का अनुसंधान किया। वहीं पर पुरुष रत्न (विद्यापति) ने विश्ववासु की कन्या ललिता को देखा। वे उससे स्नेह करने लगे और उसके समीप जाकर उससे मिले। ।२६।
(नीलमाधव गीता)

जाणिथाअ कहुअछि निकट बिचार ।
जाणिले अमराबती नग्र ये कोणर ।
यहिँ बसुकल्प राजा गड़ करि थाइ ।

वसुकल्प नामक राजा अमरावती नगरी में इन्द्र और इन्द्राणी की मूर्ति स्थापित करके उन्हें गढ़देवता के रूप में पूजन करते थे। **(चाट चउतिशा, महापुरुष शिशु अनन्त)**

बैशाख शुक्ल द्वितीयारे प्रभु जनम हेबे । भकतंक हिते जनमि कलकि नाम बहिबे ॥
लग्न होइथिब कर्कट शुकंक पञ्चमरे । गुरु रहिथिबे आबर शनि चतुर्थ घरे ॥
रबि चन्द्र आउ मंगल उच्चरे थिबे रहि । आउ ग्रह शुभ स्थानरे रहिथिबे अनाइ ॥

अर्थात – वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को प्रभु कल्कि भक्तों के हित के लिए जन्म लेंगे। उस समय कर्क लग्न होगा तथा पंचम भाव में शुक्र स्थित होगा। गुरु और शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। सूर्य, चंद्रमा और मंगल उच्च स्थिति में रहेंगे, और समस्त ग्रह शुभ स्थानों में स्थित होंगे। **(ब्रह्म टिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

प्रभुंक पादरे थिब धनुहुल चिह्न देखिले जाणिबु तुहि सेहि भगबान ।
शिआली लतारे जेउँ शर मरिथिला पादरे चिह्न रहिछि कहुछि जे भला ।

अर्थात – महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र से कहते हैं – "प्रभु के चरणों पर जो धनुष के नुकीले सिरे (धनुहुल) का चिह्न होगा, उसे देखकर तुम जान सकोगे कि वही भगवान हैं। जिस शियाली लता (लता = बेल) में द्वापर युग में वह बाण लगा था, उसका चिह्न उनके चरणों पर अब

भी विद्यमान है — यह संकेत है, जिसे समझकर तुम पहचान सकोगे।"

(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)

मुकुन्ददेब जे बोलि राजनरे तृतीय पाद पशिब ॥
सेहि राजा एकचालिश अंकरे बउद्ध स्थान छाड़िण ॥
कल्कि रूप जे जनम होइबु भकत हितरे पुण ।६।

अर्थात् — प्रभु श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मुकुन्द देव नामक राजा के अंक में जब कलि का तृतीय चरण प्रवेश करेगा, उसी राजा के इकतालीसवें अंक (४१) में मैं बौद्ध (जगन्नाथ महाप्रभु) स्थान छोड़कर भक्तों के हित के लिए कल्कि रूप में जन्म लूँगा। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युत)**

माहालिआ मकुन्द बोलि राजन । तार येकचालिशिरे जनम ॥
आम्भे होइबु मर्त्त्ये देहधारी। गुपते थिब तपस्या आचरि ॥

अर्थात् — प्रभु श्रीकृष्ण इन्द्रदेव से कहते हैं कि माहालिआ मुकुन्द नामक राजा होगा। उसके इकतालीसवें अंक (४१) में मैं जन्म लूँगा। मृत्युलोक में देहधारण कर तपस्या करूँगा।

(इंद्र गोविंद गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

अणचालिशरु एकचालिश भितरे । कल्की अबतार हेउथिबे जे गुप्तरे ।

अर्थात् — उनतालीस (३९) से इकतालीस (४१) के बीच गुप्तरूप से कल्कि अवतार होंगे।

(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)



शोध निष्कर्ष – मालिका ग्रंथों के पदों के अनुसार, प्रभु कल्कि का जन्म वैशाख महीने(अप्रैल/मई) को जाजपुर/संबलनगर/किंकटनगर के बिरजा मंडल, हरिहर क्षेत्र में स्थित कमलपुर (गुप्त सम्भल) नामक गाँव पर होगा, जहाँ मालिका के अनुसार खरास्रोता नदी (जिसे क्षीर नदी भी कहा जाता है) बहती है। प्रभु एक अग्निहोत्री ब्राह्मण — अर्थात अग्निहोत्र अनुष्ठान करने वाले — विष्णुयशा शर्मा नामक ब्राह्मण के घर जन्म लेंगे, जो द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव थे। मालिका ग्रंथों के अनुसार, प्रभु कल्कि की माता का नाम यशोबन्ती होगा।

प्रभु कल्कि का देह लोहितवर्ण (लाल रंग) का होगा। महापुरुषों ने लिखा है कि वे राजा मुकुंद देव के समय उनतालीस (३९) से इकतालीस (४१) अंक के बीच में जन्म लेंगे। जन्म लेने के कुछ वर्ष पश्चात वे तपस्या हेतु गुप्त खण्डगिरि (कलागिरी) जाएँगे, जो कि अमरावती, कटक, छतिआ के समीप स्थित है। वहीं उनका आश्रम होगा और वे वहीं निवास करेंगे। वे वैष्णव वेश में रहेंगे तथा वैष्णवों की संगति में भिक्षा मांगकर जीवन यापन करेंगे। जब उचित समय आएगा, तब वे स्वयं को लोगों के समक्ष प्रकाशित करेंगे, किंतु लोग माया-मोह में पड़कर उन्हें पहचान नहीं पाएँगे और उनका निन्दा करेंगे।

पुणि से पद्म बालक शरीर, पद्म केशरटि नाम तांकर ।
अनन्त केशरी रेबती कान्त, ललाटकेशरी श्री जगन्नाथ ।
पद्मकेशरी क्षीरानब साइँ, तेज स्वरूप जे ब्रह्मदि सेहि ।

अर्थात् — महापुरुष शिशु अनन्त दास अपने ग्रन्थ 'कलियुग पुराण' में प्रभु के नामों का उल्लेख करते हैं — प्रभु क्षीरोदकशायी विष्णु का नाम पद्मकेशरी होगा, जो कमल के समान सुन्दर, निर्मल और तेजस्वी बालक शरीर वाले होंगे। प्रभु रेवतीकान्त अर्थात् रेवतीपति बलदेवजी का नाम अनन्तकेशरी होगा तथा ललाटकेशरी स्वयं महाप्रभु श्रीजगन्नाथ होंगे।**(कलियुग पुराण, शिशुअनन्त दास)**

इस अट्ठाईसवें (२८) कलियुग में कल्कि अवतार का पुराणाधारित विवेचन

अस्मिन्नेव युगे क्षीणे संध्याशिष्टे भविष्यति । कल्किर्विष्णुयशा नाम पाराशर्यः प्रतापवान् ॥ २,७३.१०४ ॥
दशमो भाव्यसंभूतो याज्ञवल्क्यपुरस्सरः । अनुकर्षन्स वै सेनां हस्त्यश्वरथसंकुलाम् ॥ २,७३.१०५ ॥
प्रगृहीतायुधैर्विप्रैर्वृतः शतसहस्रशः । नात्यर्थं धार्मिका ये च ये च धर्मद्विषः क्वचित् ॥ २,७३.१०६ ॥
उदीच्यान्मध्यदेशांश्च तथा विन्ध्या परान्तिकान् । तथैव दाक्षिणात्यांश्च द्रविडान्सिंहलैः सह ॥ २,७३.१०७ ॥
गान्धारान्पारदांश्चैव पह्लवान्पवनाञ्छकान् । तुबराञ्छबरांश्चैव पुलिन्दान्बरदान् वसान् ॥ २,७३.१०८ ॥
लंपाकानाङ्घ्रकान्पुण्ड्रान्किरातांश्चैव स प्रभुः । प्रवृत्तचक्रो बलवान्म्लेच्छानामन्तकृद्बली ॥ २,७३.१०९ ॥
अदृश्यः सर्वभूतानां पृथिवीं विचरिष्यति । मानवः स तु संजज्ञे देवसेनस्य धीमतः ॥ २,७३.११० ॥
पूर्वजन्मनि विष्णुर्यः प्रमितिर्नाम वीर्यवान् । गोत्रेण वै चन्द्रमसः पूर्णे कलियुगेऽभवत् ॥ २,७३.१११ ॥

अर्थात् — इसी युग में, जब यह क्षीण हो जाएगा और केवल उसका संध्या शेष रह जाएगा, तब विष्णुयशा नामक ब्राह्मण के घर पराशर वंश में प्रभु कल्कि का जन्म होगा, जो अत्यन्त प्रतापी होंगे। दसवें अवतार, जो भविष्य में प्रकट होंगे, याज्ञवल्क्य मुनि के नेतृत्व में, हाथी, घोड़े और रथों से परिपूर्ण विशाल सेना को अपने पीछे लेकर चलेंगे। प्रभु कल्कि उन लाखों की संख्या में ब्राह्मणों से घिरे होंगे जिन्होंने अपने हाथों में शस्त्र धारण किए होंगे। वे ब्राह्मण न तो अत्यन्त धार्मिक होंगे और न ही सर्वथा धर्मद्रोही, किन्तु उनमें धर्मनिष्ठ और धर्मविरोधी दोनों प्रकार के लोग सम्मिलित होंगे। वे उत्तर दिशा के लोग, मध्यदेशवासी, विन्ध्य पर्वत के पार के निवासी, इसी प्रकार दक्षिण भारत के लोग, द्रविड देश (तमिलनाडु आदि) के निवासी और सिंहल (श्रीलंका) के लोग के साथ गान्धारवासी (वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान), पारद लोग, पहलव, पवन, शक, तुबरा, शबर, पुलिन्द, वरद, लंपक, आंध्र, पुंड्र और किरात में जाकर वह अत्यन्त शक्तिशाली भगवान अपने राज्यचक्रका विस्तार करते हुए म्लेच्छों का अंत करेंगे। पूर्व में जो विष्णु पराक्रमी 'प्रमिति' नामक राजा थे, वे इस कलियुग के पूर्ण होने पर चंद्रवंश में उत्पन्न होंगे। वे सभी प्राणियों के लिए अदृश्य होकर पृथ्वी पर विचरण करेंगे। वे एक मनुष्य के रूप में उत्पन्न होंगे और बुद्धिमान देवसेन के पुत्र होंगे। (**आहे गरुड़, माता आम्भर बिप्र झिअ पिता आम्भर सोमबंशी ए बेनि अंशे आम्भे पुअ** — उदे बाखर पराद्ध मालिका के अनुसार भगवान क्षीरोदकशायी विष्णु के पिता सोमवंशी (चंद्रवंशी) होंगे तथा माता ब्राह्मणकन्या होंगी।)

(ब्रह्माण्ड पुराण, ७३.१०४-१११,महर्षि वेदव्यास)

विनिघ्नन्सर्वभूतानि मानुषानेव सर्वशः । कृत्वा बीजावशेषां तु महीं क्रूरेण कर्मणा ॥ २,७३.११४ ॥
शान्तयित्वा तु वृषलान्प्रायशस्तान धार्मिकान् । ततः स वै तदा कल्किश्चरितार्थः ससैनिकः ॥ २,७३.११५ ॥
कर्मणा निहता ये तु सिद्धास्ते तु पुनः स्वयम् । अकस्मात्कुपितान्योन्यं भविष्यन्ति च मोहिताः ॥ २,७३.११६ ॥
क्षपयित्वा तु तान्सर्वान्भाविनार्थेन चोदितः । गङ्गायमुनयोर्मध्ये निष्ठां प्राप्स्यति सानुगः ॥ २,७३.११७ ॥
ततो व्यतीते कल्पे तु समाप्ते सहसैनिके । नृपेष्वथ विनिष्टेषु तदा त्वप्रग्रहाः प्रजाः ॥ २,७३.११८ ॥
रक्षणे विनिपृत्ते तु हत्वा चान्योन्यमाहवे । परस्परत्दृतस्वाश्च निरानन्दाः सुदुःखिताः ॥ २,७३.११९ ॥
पुराणि हित्वा ग्रामांश्च तुल्यास्ता निष्परिग्रहाः । प्रनष्टश्रुतिधर्माश्चनष्टधर्माश्रमास्तथा ॥ २,७३.१२० ॥
ह्रस्वा अल्पायुषश्चैव भविष्यन्ति वनौकसः । सरित्पर्वतसेविन्यः पत्रमूलफलाशनाः ॥ २,७३.१२१ ॥
चीरपत्राजिनधराः संकरं घोरमास्थिताः । अल्पायुषो नष्टवार्ता बह्वाबाधाः सुदुःखिताः ॥ २,७३.१२२ ॥
एवं काष्ठामनुप्राप्ताः कलिसंध्यांशके तदा । प्रजाः क्षयं प्रयास्यन्ति सार्द्धं कलियुगेन तु ॥ २,७३.१२३ ॥
क्षीणे कलियुगे तस्मिन्प्रवृत्ते च कृते पुनः । प्रपत्स्यन्ते यथान्यायं स्वभावादेव नान्यथा ॥ २,७३.१२४ ॥

अर्थात् — प्रभु कल्कि क्रूर कर्म (युद्ध और संहार) के द्वारा सभी प्राणियों को और विशेष रूप से सभी मनुष्यों को मारते हुए, पृथ्वी को बीज मात्र (कुछ अंश) शेष रखेंगे। तत्पश्चात् वे अधिकांश अधार्मिक वृषलों (नीच अधर्मी लोगों) का नाश कर देंगे और धर्मनिष्ठ लोगों की रक्षा करेंगे। तब वे अपनी सेना

सहित अपना उद्देश्य सिद्ध कर देंगे। जो इस कार्य में नहीं मारे जाएंगे और किसी प्रकार कुछ प्राप्त कर लेंगे, वे अचानक एक-दूसरे पर क्रोधित होकर आपस में वैरभाव से भर जाएंगे और मोह में पड़कर परस्पर युद्ध करेंगे। उन सबका संहार करके और भविष्य की नियति से प्रेरित होकर, वे अपने अनुयायियों सहित गंगा और यमुना के बीच स्थित प्रदेश में स्थिर होंगे। जब वह कल्प (कालखंड) बीत जाएगा और राजाओं सहित उनके सैनिकों का नाश हो चुका होगा और प्रजाएँ बिना किसी शासन और अनुशासन के रह जाएँगी। उस समय जब रक्षण करने वाला कोई नहीं बचेगा, तब लोग युद्ध में एक-दूसरे की हत्या करेंगे और आपस में एक-दूसरे की सम्पत्ति छीन लेंगे। वे आनन्द से रहित होकर अत्यन्त दुःखित हो जाएंगे। लोग पुराने नगरों और ग्रामों को छोड़कर एक समान रूप से परिग्रह (संपत्ति) से रहित हो जाएँगे। वेद-धर्म नष्ट हो जाएगा और धर्म तथा आश्रम-व्यवस्था भी समाप्त हो जाएगी। तब मनुष्य छोटे कद वाले, अल्पायु और वन में रहने वाले होंगे। वे नदियों और पर्वतों के समीप निवास करेंगे और पत्तों, जड़ों तथा फलों का ही आहार करेंगे। वे लोग पेड़ों की छाल और मृगचर्म धारण करेंगे, और घोर वर्णसंकर में जीवन बिताएँगे। वे अल्पायु होंगे। उनकी धर्म-विचार और सत्संग की वार्ता नष्ट हो जाएगी। वे अनेक रोगों और कष्टों से पीड़ित होकर अत्यंत दुःखी होंगे। इसी प्रकार, जब कलिसन्ध्यांश का वह काल प्राप्त होगा, तब प्रजाजन कलियुग के साथ ही क्षय को प्राप्त होंगे। यह कलियुग क्षीण हो जाने पर पुनः सत्ययुग (कृतयुग) का आरंभ होगा, तब प्राणी अपने स्वभावानुसार, यथान्याय, पुनः उसी (सत्ययुगीन) स्थिति को प्राप्त होंगे, और यह किसी अन्य प्रकार नहीं होगा। **(ब्रह्माण्ड पुराण, ७३.११४-१२४,महर्षि वेदव्यास)**

मत्स्यपुराण के सैंतालीसवें अध्याय के श्लोक २४८ से २६२ में भी इसी अट्ठाइसवें कलियुग में प्रभु कल्कि अवतार के विषय में वही बातें उल्लिखित हैं, इसलिए यहाँ उन्हें पुनः नहीं लिखा जा रहा है।

कल्किर्विष्णुयशा नाम पाराशर्यः प्रतापवान् । दशमोभाव्यसंभूतो याज्ञवल्क्य पुरस्सरः ।।१०४ ॥
अनुकर्षन् सर्वसेनां हस्त्यश्वरथ संकुलाम् । प्रगृहीतायुधैर्विप्रैर्वृत्तः शतसहस्त्रशः ॥१०५ ॥

वायु पुराण के अट्ठानवे (९८वें) अध्याय के श्लोक १०४ से १२३ में भी इसी अट्ठाइसवें कलियुग में प्रभु कल्कि अवतार के विषय में वही बातें उल्लिखित हैं, इसलिए यहाँ उन्हें पुनः नहीं लिखा जा रहा है।

कल्किर्विष्णुयशा नाम शम्भले ग्रामके द्विजः । सर्वलोकहितार्थाय भूयश्चोत्पत्स्यते प्रभुः ।। १६४।।
दशमे भाव्यसम्पन्नो याज्ञवल्क्यपुरस्सरः । क्षपयित्वा च तान्सर्वान्भाविनार्थेन चोदितान् ।।१६५।।
गङ्गायमुनयोर्मध्ये निष्ठां प्राप्स्यति सानुगः । ततः कुले व्यतीते तु सामात्ये सहसैनिके ।।१६६।।
नृपेष्वथ प्रणष्टेषु तदा त्वप्रग्रहाः प्रजाः । रक्षणे विनिवृत्ते च हत्वा चान्योन्यमाहवे ।।१६७।।
एवं कष्टमनुप्राप्ताः कलिसंध्यांशके तदा । प्रजाः क्षयं प्रयास्यन्ति सार्द्धं कलियुगेन ह ।। १६८।।
क्षीणे कलियुगे तस्मिंस्ततः कृतयुगं पुनः । प्रपत्स्यते यथान्यायं स्वभावादेव नान्यथा ।।१६९।।

कल्कि नाम के भगवान विष्णुयशा के पुत्र के रूप में शम्बल ग्राम में ब्राह्मण के घर में समस्त लोकों के कल्याण हेतु प्रकट होंगे। दसवें अवतार के रूप में, जो भविष्य में प्रकट होगा और याज्ञवल्क्य के पुरस्सर (अर्थात् मार्गदर्शन अथवा नेतृत्व में) होगा, वह प्रभु भावी दैव विधान से अधर्म में प्रवृत्त सभी जनों का विनाश करेगा। वे (कल्कि) अपने अनुयायियों के साथ गंगा और यमुना के बीच के क्षेत्र में अपने अभियान की समाप्ति करेंगे। उसके बाद, मन्त्री और सैनिकों सहित राजवंशके विनष्ट हो जानेपर जब कोई शासक नरेश नहीं रह जायगा, तब प्रजा बिना नियन्त्रण के हो जाएगी। रक्षा का अभाव होने पर, वे लोग आपस में युद्ध में एक-दूसरे का हत्या करेंगे। उस समय कलियुगका संध्यांश बीत रहा होगा, उन दिनों इस प्रकार कष्टमें पड़ी हुई सारी प्रजा कलियुगके साथ ही क्षय हो जायगी। जब कलियुग क्षीण (समाप्त) हो जाएगा, तब फिर से सतयुग (कृतयुग) आएगा। तब लोग

स्वभाव से ही धर्म का पालन करेंगे, दूसरे किसी प्रकारसे नहीं। **(हरिवंशपुराण, पर्व १, ४१.१६४-१६९)**

कल्की विष्णुयशः पुत्रो याज्ञवल्क्यपुरोहितः। उत्सादयिष्यति म्लेच्छान् गृहीतास्त्रः कृतायुधः ।। ८ ।।
स्थापयिष्यति मर्यादां चातुर्वर्ण्ये यथोचिताम्। आश्रमेषु च सर्वेषु प्रजाः सद्धर्मवर्त्मनि ।। ९ ।।
कल्किरूपं परित्यज्य हरिः स्वर्गं गमिष्यति। ततः कृतयुगन्नाम पुरावत् सम्भविष्यति ।। १० ।।

भगवान कल्कि, जो विष्णुयशा का पुत्र होगा और जिसका पुरोहित याज्ञवल्क्य होगा, वह शस्त्र धारण करके तथा युद्ध के लिए सुसज्जित होकर म्लेच्छों का विनाश करेगा। भगवान कल्कि चारों वर्णों और सभी आश्रमों में उचित मर्यादा की पुनः स्थापना करेंगे और प्रजा को सतधर्म (सच्चे धर्म) के मार्ग पर चलाएँगे।उसके बाद श्रीहरि कल्किरूपका परित्याग करके अपने धाममें चले जायँगे। फिर तो पूर्ववत् सत्ययुगका साम्राज्य होगा। **(अग्निपुराण, अध्याय १६)**

यालयेष्वपि सतां न हरेः कथाः स्युः पाखण्डिनो द्विजजना वृषला नृदेवाः ।
स्वाहा स्वधा वषडिति स्म गिरो न यत्र शास्ता भविष्यति कलेर्भगवान् युगान्ते ।। ३८

कलियुग के अन्त में जब सत्पुरुषों के घरों में भी भगवान् की कथा होना असम्भव हो जाएगा, द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) लोग पाखण्डी बन जाएँगे तथा शूद्र राजा बन बैठेंगे। उस समय कहीं भी 'स्वाहा', 'स्वधा' और 'वषट्' की ध्वनि अथवा देवताओं और पितरों के यज्ञ-श्राद्ध की परम्परा सुनने को नहीं मिलेगी। तब कलियुग पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये स्वयं भगवान् कल्कि अवतार धारण करेंगे। **(श्रीमद्भागवतम्)**

इसी प्रकार पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रकृतिखण्ड, नरसिंह पुराण के चौवनवाँ अध्याय, ब्रह्मपुराण के ८५वा अध्याय एवं लिंग पुराण के ४०वा अध्याय में भी प्रभु कल्कि के विषय में जानकारी प्राप्त होता हैं। लिंग पुराण में एक अन्य जानकारी प्राप्त होती है, जिसे यहाँ प्रस्तुत करना उचित होगा।

मधुमांसैर्मूलफलैर्वर्तयन्ति सुदुःखिताः । चीरपत्राजिनधरा निष्क्रिया निष्परिग्रहाः ॥ ७०
वर्णाश्रमपरिभ्रष्टाः सङ्कटं घोरमास्थिताः । एवं कष्टमनुप्राप्ता अल्पशेषाः प्रजास्तदा ॥ ७१
जराव्याधिक्षुधाविष्टा दुःखान्निर्वेदमानसाः । विचारणा तु निर्वेदात्साम्यावस्था विचारणा ॥ ७२
साम्यावस्थात्मको बोधः सम्बोधाद्धर्मशीलता। अरूपशमयुक्तास्तु कलिशिष्टा हि वै स्वयम् ॥ ७३
अहोरात्रात्तदा तासां युगं तु परिवर्तते। चित्तसम्मोहनं कृत्वा तासां वै सुप्तमत्तवत् ॥ ७४
भाविनोऽर्थस्य च बलात्ततः कृतमवर्तत । प्रवृत्ते तु ततस्तस्मिन् पुनः कृतयुगे तु वै ॥ ७५

वे (लोग) अत्यन्त दुःखी होकर मधु, मांस, मूल और फल से जीवन-यापन करेंगे। वे लोग चीवर (वृक्षों की छाल के वस्त्र), पत्तों और अजिन (मृगचर्म) धारण करेंगे, तथा सभी निष्क्रिया और किसी प्रकार का परिग्रह रहित होंगे। वर्ण और आश्रम धर्म से भ्रष्ट हुए लोग भयानक संकट में पड़ेंगे, तब प्रजा (लोग) अत्यन्त कष्ट को प्राप्त होकर बहुत थोड़ी शेष रह जाएगी। जब कलियुग में लोग बुढ़ापे, रोग और भूख से पीड़ित होंगे, तब दुःख से उनका मन संसार से विरक्त होगा। उस वैराग्य से उनमें विचार उत्पन्न होगा, और विचार के परिणामस्वरूप वे समता या साम्यावस्था (समभाव) को प्राप्त करेंगे। साम्यावस्था (समभाव की स्थिति) स्वरूप बोध होगा, और उस बोध से धर्मशीलता उत्पन्न होगी। कलियुग में शेष रहने वाले लोग स्वयं ही शक्ति-सामर्थ्य के अभाव में शमयुक्त (शान्तचित्त) हो जाएँगे। उस समय उनका चित्त (मन) मोहित करके, उन्हें सोए हुए और नशे में धुत व्यक्ति की तरह बना देंगे और एक दिन और रात (अहोरात्र) में ही कलियुग परिवर्तित हो जायगा और भविष्य के विधान के प्रभाव से सतयुग फिर से शुरू होगा। **(लिंग पुराण, ४०.७०-७५)**

अध्याय ५ - प्रभु बलराम की विजय-लीला और शासन

काया आठगड़े थोइ गोदाबरी कूले जनम होइ हे जगन्नाथ बड़ भाइ ।

(कलि भारत, भक्तकवि सालबेग)

दक्षिणे जन्म हेबे बलदेब धनु मासरे उदय होइब
बेउंक बोलि ग्रामेश्बर तार जात होइबे नब कलेबर
शिरे रहिथिब सपत फेणि श्री अंग सुन्दर धबल पुणि ।

(१० पटल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद)

महापुरुष सालबेग ने अपने ग्रंथ कलि भारत में लिखा है कि प्रभु बलदेव जी (काया आठगढ़े थोई), अर्थात आठगढ़ जो कि धीरपटना के समीप स्थित है, वहाँ रहेंगे और उनका जन्म गोदावरी तट के निकट होगा। साथ ही, महापुरुष अच्युतानंद ने अपने ग्रंथ दश पटल मालिका में प्रमाण देते हुए बताया है कि बलदेव जी का जन्म दक्षिण दिशा में होगा, धनु मास में। उनके शरीर का वर्ण अत्यंत सुंदर तथा धवल (श्वेत) होगा, और उनके मस्तक पर सप्तफेणी (सात फनों वाला शेषनाग) का चिह्न विद्यमान होगा।

बारंग कहन्ति गुरुंकु चार्हिं, मो मने संशय हेला गोसाइँ । प्रकृति पुरुष दुइ अटन्ति, युगल भावरे लीला करन्ति ।
प्रकृति छड़ा पुरुष नार्हिं, पुरुष छड़ा प्रकृति कार्हिं । दुइ भाइंकर अभेद प्रीति, युगे युगे मिलि लीला करन्ति ।
श्री बलदेबंक जन्म कीरति, आज्ञा हेब मोते गुरु शकति । बारंग बचन गुरु शुणिण, बलभद्र यन्त्र आदि कारण ।
तीर्थ राजा गोदाबरी कूलरे, जन्मिब बिश्वकर्मा द्विज घरे । जनम होइण रेबती कान्त, धीर पाटणा निकटे रहित ।
प्रभुंक दर्शन पाउण थिबे। गुपते भेट ग्ने करुथिबे । निज शक्तिरे प्रकाश पाइबे, पछकु अबतार से होइबे ।
थय न पाइ कूलर ठिकणा, थिबे बलराम नार्हिं कलणा । दुधभात खाइ आनन्द होइ, गुपते देहकथिबे लुचाइ ।
प्रभुंक शक्ति होइले सञ्चार, ड़काइण नेबे से बिम्बाधर । एमन्ते लीलाटि भिआण जाण, दुइभाइ से गुप्तरे बसिण ।
जेउँ जेउँ ठाबे लीला होइब, दुइभाइंक बिचार सरिब । बलदेबंक मुखकु चार्हिंण, बोलिबे प्रभु कमल लोचन ।
दिग भ्रमणरे तुम्भे ग्ने जिब, भलमन्द सबु देश देखिब। करपीड़ा ग्ने प्रभुंकु नोहिब, प्रबोधि सबु राजांकु कहिब ।

अर्थात – महापुरुष शिशु अनन्त दास जी के शिष्य बारंग महापुरुष से प्रश्न करते हैं – "हे गोसाईं! मेरे मन में एक संदेह उत्पन्न हुआ है। प्रकृति और पुरुष दोनों ही युगल भाव से लीला करते हैं। प्रकृति के बिना पुरुष नहीं और पुरुष के बिना प्रकृति नहीं। उसी प्रकार दो भाइयों (भगवान श्रीजगन्नाथ और श्रीबलभद्र) की भी अभिन्न प्रीति है, जो युग-युग में मिलकर लीला करते हैं। कृपया श्रीबलदेव जी के जन्म एवं उनकी कीर्ति के विषय में विस्तारपूर्वक बताइए।"

बारंग के वचनों को सुनकर महापुरुष शिशु अनन्त दास कहते हैं कि रेवतीकांत, अर्थात् रेवती के प्रिय श्रीबलदेव, तीर्थराज गोदावरी के तट पर 'विश्वकर्मा' नामक ब्राह्मण के घर जन्म लेंगे और तत्पश्चात धीरपटना के निकट निवास करेंगे। श्रीबलभद्र जी, प्रभु कल्कि से गुप्त रूप से भेंट करेंगे। वे जहाँ जन्म लेंगे, उस स्थान का स्पष्ट ठिकाना लोगों को ज्ञात नहीं हो पाएगा। श्रीबलदेव जी आनंदपूर्वक दूध-भात खाकर गुप्त रूप से निवास करेंगे। जब प्रभु कल्कि की शक्ति का संचार होगा, तब वे श्रीबलदेव जी को बुलाएंगे, और दोनों भाई गुप्त रूप से बैठकर यह विचार करेंगे कि किस-किस स्थान पर लीला की जाएगी।

प्रभु कमललोचन (प्रभु कल्कि) श्रीबलदेव जी से कहेंगे कि – "आप दिग्विभ्रमण (चारों दिशाओं में यात्रा) के लिए जाएंगे और समस्त देश के शुभ और अशुभ स्थिति को देखेंगे। यह सुनिश्चित कीजिएगा कि प्रजा को कर (टैक्स) की पीड़ा नहीं सहना पड़े; इसके लिए आप सभी राजाओं को समझाएँगे और उन्हें प्रबोध प्रदान करेंगे।"

जेमन्ते सुखि हेबे प्रजानन, सेइभावरे करिब भिआण। चारिधाम बलराम गमिबे, राजामानंकु प्रबोधि कहिबे।
ग्राम बसाइ परजा इच्छारे, ताहा करिबे से बुद्धि बेभारे। कलामूर्त्ति सेहु माण भिआण, टंकाकरे चारिअणा बिधान ।
सरस निरस करिण बर, धानराणी कृषि जेउँ भूमिर । माणकसे चारि छअणारे, आठअणा बारअणा बिधिरे ।
टंकाए पर्य्यन्त दर होइब, परजांकमने दुःख होइब। कागज तिआरि जगतमय, श्रीबलदेब करिबे निश्चय ।
देशे देशे से कागज कराइ, प्रभु छामुकु से देबे चलाइ । शासन बाड़ि य़तने बसाइ, ब्राह्मणमानंकु सुखे रखाइ ।
बेद शास्त्रय़े पुराण पठन, गाइत्री सन्ध्या जप होम कर्म । उत्तम शुभ कर्मरे जगत, कराइबे प्रभु रेतबी कान्त ।
तुलसी चउँरा ठाबरे पुण, अठरनला से सीमा भिआण। मठबाड़ि करि द्यन्ति शासन, प्रभुंक निजोग नित्य जे पुण।
केते बा अछन्ति प्रभु सेबक। आउ भक्तछन्ति केतेक लोक । ताहांकु सुखे रखाइबे राम, कर्मधर्म जप वेद बिधान ।
धबलपुर से क्षेत्र कराइ, बैष्णबमानंकु यत्ने रखाइ । चन्दन पुष्करिणी से तीररे, सत्याग्रह से बैष्णब बिधिरे ।
चारि संप्रदा भेकधारी तहिँ, थिब अनेकय़ुथ य़ुथ होइ । से महाप्रसाद से महाब्रत, पाइ भक्तजन मनरे रत ।
घट निरोधे जेते जन थिबे, आनन्द भावे कैबल्य पाइबे । चारिधाम गमि पञ्चकोशिरे, सदाब्रत दिआइब बिधिरे ।
जाजपुर क्षेत्रे आसि आपण, बारुणी शासन बसाइ राम । आगम शास्त्रकु शासने रखि, बिप्रमानंकु कराइब सुखी ।
चारिधाम ठाबे ठाबे चलिण, धर्म स्थापन करिबे आपण अबिरतरे रेबती रमण, जेउँठारे जेउँ लीला भिआण ।

जिस प्रकार प्रजा सुखी होगी, उसी प्रकार प्रभु बलराम उपयुक्त विधानों की रचना करेंगे। वे चारों धामों की यात्रा करेंगे और समस्त राजाओं को यथोचित उपदेश देंगे। ग्रामों की स्थापना प्रजा की इच्छा के अनुसार तथा अपनी बुद्धि से युक्तिपूर्वक करेंगे।

प्रभु बलराम जी शासन और अर्थनीति की कला में निपुण होंगे। वे भूमि की उपज और उत्पादन क्षमता के अनुसार कर-व्यवस्था बनाएंगे। जहाँ भूमि अधिक उपजाऊ होगी, वहाँ चार, छह, आठ या बारह आने तक कर लगाया जाएगा। प्रारंभिक अवस्था में यह कर-नीति अत्यंत सहज और न्यायपूर्ण होगी — केवल चार आने जैसी न्यूनतम दर पर आधारित। किंतु जैसे-जैसे यह कर-प्रणाली बढ़ते-बढ़ते संपूर्ण मुद्रा तक पहुँचने लगेगी और जब कर अधिक मात्रा में वसूला जाएगा, तब प्रजा को कष्ट होने लगेगा और उनके मन में दुःख उत्पन्न होगा। श्री बलराम निश्चित रूप से ऐसे कागज़ (सम्भवतः – नियम-दस्तावेज़ या करेंसी) तैयार करवाएँगे जो संपूर्ण जगत में लागू होंगे, और उन्हीं कागज़ों को देश-देश में चलाएँगे। वे यत्नपूर्वक प्रशासनिक भवनों की स्थापना करेंगे तथा ब्राह्मणों को सुखपूर्वक जीवन यापन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ प्रदान करेंगे। वेद, शास्त्र और पुराणों का पाठ, गायत्री मंत्र का संध्या-जप और हवन आदि कर्म नियमित रूप से संपन्न कराए जाएँगे। प्रभु रेवतीकान्त (बलराम जी) जगत को अच्छे एवं शुभ कर्मों में संलग्न रखेंगे। वे तुलसी चौरा के समीप अठारह नला (ओड़िआ भाषा में अठारह का मतलब १८ होता है, नला का मतलब है मार्ग।) की सीमा का निर्माण करेंगे और उनकी आज्ञा से मठों की स्थापना की जाएगी। कई प्रभु-सेवक और उनके अनन्य भक्त होंगे — जिन्हें प्रभु बलराम सुखपूर्वक रखेंगे तथा उन्हें कर्म, धर्म, जप और वेद-विधान से युक्त करेंगे। प्रभु बलराम धवलपुर को एक विशिष्ट धर्मक्षेत्र बनाकर, वहाँ वैष्णवों को यत्नपूर्वक निवास कराएँगे। वहाँ चंदन-पुष्करिणी के तट पर सत्याग्रह तथा वैष्णव धर्म का विधान स्थापित किया जाएगा। चारों संप्रदायों के लोग वहाँ उपस्थित रहेंगे और अनेक दलों में संगठित होंगे। भक्तजन वहाँ महाप्रसाद तथा महाव्रत प्राप्त कर आनंदित होंगे। जिन लोगों में घट-निरोध (सम्भवतः – इंद्रिय संयम) होगा, वे सभी आनन्दपूर्वक कैवल्य पाएंगे। वे चारों धामों में जाकर पंचकोशी क्षेत्र में विधिपूर्वक सदाव्रत की व्यवस्था कराएंगे। प्रभु बलराम स्वयं जाजपुर क्षेत्र में आकर बारुणी शासन की स्थापना करेंगे। वे आगम शास्त्रों को शासन का आधार बनाकर ब्राह्मणों को सुखी बनाएंगे। चारों धामों में वे स्वयं विहार करते हुए धर्म की स्थापना करेंगे।

मका सहरे से हलधर, अनेक यबन करि संहार। महेश्वर महादेब अछन्ति, चारि दिगे यबन जगिछन्ति।
तुअबा बुलिबु यबन देशे, हिन्दु देबता रहिलेकि आशे। तहिँ प्रतिकार कहिबा बाबु, तोमनु संशय तुटिब सबु ।
सूर्य्यबंशी गादी सेहु अटइ, असंख्य गण बिप्र अछइ क्षत्री ब्राह्मण बैश्य शूद्रजन, छतिश जाति से स्थलरे पूर्ण ।
दिअँ देबता ब्रह्मचारी तपि, अनेक सन्न्यासी अनेक तपी। षोलशासन बिप्रंक सदन, अनेक द्विज स्थापिण राजन ।
ब्राह्मणमाने सबु बिचारिले, ब्राह्मण यांकु करिनेले भले । से स्थल मध्यरे एक यबन, गृह करिथिले पूर्बरु जाण ।
एका पिता से आम्भे पुत्र दुइ, सुर असुर आम्भे दुइ होइ । एमन्त बिप्र से बिचार कले, ब्राह्मण करिनेबा तांकु भले।
सेकथा यबन पति ता शुणि, अक्षुर्ण्णमानंकु ड़काइ आणि । हुकुम देला तुम्भे सर्बे ग्राअ, मका मदिनारे प्रबेश हुअ ।
सबु जातिकु मुँ सत्य कराइ, हिन्दुगत धर्म रखिबि नाहिँ । हुकुम पाइण सेहु जे गले, मका सहररे सुनत कले ।
केते २ देले देबता भांगि, बिप्रंक मुण्ड़कु देलेक दलेक टांगि । नारखार सेहु भंगन कले, नृपबंशकु प्राणु बिनाशिले।
महेश्वर महादेबंकु छाड़ि, सबु देबतांकु देले घउड़ि । सेहि दिनरु हिन्दु धर्मकर्म, मका सहररु बुड़िला जाण ।
भूतकथा ए भबिष्य नुहइँ, केबे शुणिथिलु बारंग तुहि ।

मक्का-मदीना में प्रभु हलधर (बलराम जी) अनेक यवनों (मुसलमानों) का संहार करेंगे। वहाँ मक्केश्वर महादेव विद्यमान हैं, और चारों ओर यवन (मुसलमान) हैं। पहले उस मक्का-मदीना क्षेत्र में सूर्यवंशी गद्दी स्थापित थी। असंख्य गण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा छत्तीस जातियों से वह स्थल पूर्ण था। देवताओं का समुदाय, ब्रह्मचारी, तपस्वी, और अनेक संन्यासी वहाँ विद्यमान थे। वहाँ सोलह शासन क्षेत्रों के ब्राह्मणों के निवास हुआ करते थे, और अनेक द्विजों को वहाँ राजा द्वारा स्थापित किया गया था। उसी स्थल में एक यवन(मुस्लिम) का भी घर था। फिर ब्राह्मणों ने विचार किया कि यदि इसे भी ब्राह्मण बना दिया जाए तो यह उत्तम होगा, क्योंकि हम सबका एक ही पिता (परमेश्वर) है, और हम दो पुत्र—एक सुर और एक असुर हैं। इसलिए इसे भी ब्राह्मण बना देना उचित रहेगा। जब यह बात यवनों (मुस्लिमों) के स्वामी के कानों तक पहुँची, तब उसने अपने अन्य यवनों (मुस्लिमों) को बुलाकर हुकुम दिया—"तुम सब मक्का-मदीना में प्रविष्ट हो जाओ। मैं यहाँ हिंदू धर्म को रहने नहीं दूँगा।"

उसकी हुकुम पाकर वे लोग मक्का शहर में घुस गए और वहाँ सुन्नत (खतना) करने लगे। उन्होंने अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ा, और ब्राह्मणों के सिर काटकर लटका दिए। उन्होंने वहाँ घोर विनाश (नारखार) किया और राजवंश का नाश कर दिया। मक्केश्वर महादेव को छोड़कर उन्होंने सभी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ नष्ट कर दीं। उसी दिन से मक्का नगर से हिंदू धर्म कर्म लुप्त हो गए। हे बारंग! यह मैंने तुम्हें भूतकाल की बात बताई है, भविष्य की नहीं।

श्रीमुख आज्ञापाइ बले बल, मका सहरकु जे बहन चल । बिचार करिण रेबती कान्त, संगरे घेनाइ कोठ बळन्त ।
जाहाज बोइत चलाइ गम, मका सहरकु गले से जाण । गङ्गोदल सन्तुष्टरे घेनिबे, मका सहररे प्रबेश हेबे ।
अप्रमित युद्ध होइब पुण, नष्ट होइबे अनेक नेक दमन । किछिदिन बलदेब रहिबे, से स्थाने हिन्दु धर्म प्रकाशिबे।
महेश्वरंकु मार्जना कराइ, होम कराइबे रेबती साइँ । गंगोदक से शिरे चढ़ाइबे । महरम पाठ देब शुणाइबे।
बेढ़ा पाचेरी देउल निर्माण । अनेक देबता स्थापिबे जाण । तिनिधूपरे पाञ्च जे अबकाश,
कराइबे भाबे रेबती ईश। सन्न्यासीमानंकु मठ कराइ, सदा ब्रत तांकु देबे खञ्जाइ।
पुणि बिचारिबे रेबती कान्त, प्रतिनिध् ए स्थाने करिबा स्थित महेश्वरंठारु एककोश,
से स्थाने देउल करि प्रकाश। पद्मबेढ़ा कृम बेढ़ा करिबे, अनेक देबता देबी स्थापिबे ।
क्षेत्र प्रतिनिध् किछि करिबे, दारुब्रह्म प्रतिनिध स्थापिबे । अनेक बैष्णब मठ कराइ, बिप्रजनंकु य़तने रखाइ ।
षोल शासन बसाइबे तहिँ, अनेक बाड़िबृरि तांकु देइ । गलारे तुलसी माल लम्बाइ, ऊर्द्ध्व पुण्ड़रिक तिलक कटाइ ।
प्राणीमानंकु हरिनाम नाम देइ, हरि शबद उछुलिब तहिँ । श्रीगुण्डिचा य़ात से भिआइबे, तिनि रथ निर्माण कराइबे ।
श्रीबड़दाण्ड़े दुइ पाखे घर, श्री महाप्रसाद खेला बेभार । परजामानंकु संगे रखाइ, करिबे बेभार रेबती साइँ ।
श्री जगन्नाथ नामे सदाब्रत, बैष्णबमाने थिबे अनुगत । सूर्य्यबंशकु गादीरे बसाइ, शिरीपा बान्धि तांकु पद देइ ।
धर्मस्थापि ताहांकु दीक्षादेइ, दिब्यज्ञान तांकु देबे बताइ। गहण बल संगतरे नेइ, जाहाजरे चढ़ि आसिबे बाहि ।

प्रभु कल्कि के श्रीमुख से आज्ञा प्राप्त कर प्रभु बलदेव मक्का नगर में जाएंगे। प्रभु रेवतीकांत अपने साथ अनेक सैन्यसमूह को लेकर जलपोत (जहाज़) द्वारा प्रस्थान करेंगे। वे अपने साथ गंगाजल लेकर मक्का नगर में प्रवेश करेंगे। वहाँ भीषण युद्ध होगा और असंख्य मुसलमान विनष्ट हो जाएंगे। इस युद्ध के पश्चात प्रभु श्री बलदेव वहाँ कुछ दिनों तक निवास करेंगे और हिन्दू धर्म का प्रकाश फैलाएंगे। प्रभु रेवतीकांत मक्केश्वर महादेव का मार्जना कराकर वहाँ हवन करेंगे। वे गंगाजल को उनके शीश पर चढ़ाएंगे और वहाँ महरम पाठ सुनबाएंगे। चारों ओर दीवार बनवाकर मंदिर का निर्माण करवाएंगे तथा अनेक देवताओं की स्थापना करेंगे। वे सन्यासियों के लिए मठों की स्थापना करवाएंगे और सदाव्रत की व्यवस्था करेंगे। इसके पश्चात प्रभु रेवतीकांत विचार करके मक्केश्वर महादेव के स्थान पर एक प्रतिनिधि को स्थापित करेंगे और वहाँ से एक कोश (लगभग ३.२२ किलोमीटर) की दूरी पर एक और मंदिर का निर्माण करवाएंगे। वे वहाँ पद्मद्वार एवं क्रमद्वार का निर्माण कराकर अनेक देवी-देवताओं को स्थापित करेंगे। उस क्षेत्र के संचालन हेतु कुछ प्रतिनिधियों की नियुक्ति करेंगे और दारुब्रह्म (जगन्नाथ महाप्रभु) के लिए भी एक प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे। ब्राह्मणों को यत्नपूर्वक वहाँ निवासित करवाएंगे तथा अनेक वैष्णव मठों का निर्माण करवाएंगे। वहाँ के निवासियों को गृहभूमि प्रदान कर सोलह शासन की स्थापना करेंगे। लोग अपने गले में तुलसी की माला पहनेंगे और ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक लगाएंगे। प्रभु बलराम लोगों को हरिनाम देंगे और चारों ओर हरिनाम की ध्वनि गुंजायमान होगी। वहाँ प्रभु बलदेव तीन रथों का निर्माण करवा कर गुंडीचा यात्रा संपन्न कराएंगे। श्रीबड़ डांड पर दोनों ओर घर होंगे और वहाँ महाप्रसाद का वितरण किया जाएगा। प्रभु बलदेव प्रजाजनों को आचार-विचार और परंपराएं सिखाएंगे तथा उन्हें एक साथ संगठित करेंगे। वैष्णवजन जगन्नाथजी के नाम पर सदाव्रत देंगे। प्रभु बलदेव सूर्यवंशियों को सिंहासन पर प्रतिष्ठित करेंगे। वे धर्म की स्थापना करेंगे तथा उन्हें दीक्षा देकर दिव्यज्ञान प्रदान करेंगे। इसके पश्चात प्रभु बलदेव जी अपनी सेना के साथ वहाँ से प्रस्थान करेंगे।

अति दयालु चित्ते हलधर, राजामानंकु बुझाइ बिधूर। मार्गण दण्ड़ से करिण नेबे।
परजामानंकु य़ह्ने रखिबे। तुम्भेमाने य़े राजुति करिब, सुधर्म मार्गरे निरते थिब ।
ब्राह्मणमानंकु कष्ट नदेब, देले तुम्भ धर्म बिफल हेब । आहुरि बारंग कहिबा शुण,
गोदण्ड़ा गोहिरी चषिबे जन । निर्द्दया होइण चाष करिबे, गोमाताठारे दया न रखिबे ।
बलद पृष्ठरे लदन देइ, चतुर्मास्यारे से बलद बाहि । शगड़मान चलाइबे सेहि, षण्ढमानंकु कामरे लगाइ ।
ए कर्ममाद देखि हलधर, राजा प्रजांकु शिखाइ बेभार । जेउँ ग्रामरे जेते गोरुथिबे, गणिता कराइ भूमि छड़ाइबे।
आनन्दे गोमाता सुखे चरिबे, गाईमाने बहुत क्षीरदेबे । चतुर्मास्यारे गाड़ि बन्दकरि, करिबे प्रभु प्रलम्बा अइरि ।
जेउँ बलद जेते बहिब, सेइ मुताबक जिनिष लदिब । दुइकोशे ड़ाकघर करिबे, चाकरमानंकु सेहि जगाइबे ।
थोरिआबलद तर्हिंरु जाइ, सेठारे द्रब्य ओजन कराइ । बहुत हेले दण्ड़ करि नेबे, से मूढ़कु दण्ड़ से कराइबे।
गाड़िर ओजन द्रब्य लदाइ, गोमातांकु कष्ट होइब नाहिं । एहिमते चारिधामे कराइ, भाबे कराइबे रबती साइँ।
चोर खण्ड़ जन रखिबे नाहिं, प्राणीमानंकु दिब्य चक्षु य़े देइ। पाञ्चकोश जाक से सदाब्रत,
तांक भक्तमाने होइबे सुस्थ। पुष्करिणी ठाबे ठाबे कराइ।
कूपबाम्फी सबु करिबे सेहि। गहणदल कोठदल जेते, तेर सुआर थिबे संगते ।
सकल जीबे सुखमान देइ, सम्बल ग्रामकु य़िबे पलाइ । चारिधामे य़ेते कीर्ति करिबे,
प्रभुंक आगे सकल कहिबे । मका सहररे से रणभूइँ, शुणि सन्तोष कमला साइँ ।

अत्यन्त दयालु चित्त से प्रभु हलधर (बलराम जी) राजाओं को विधिपूर्वक समझाएँगे— "तुम लोग सन्मार्ग पर चलकर धर्मानुकूल राज्य करो, तथा अपनी प्रजा का यथोचित पालन-पोषण करो। ब्राह्मणों को कष्ट मत देना, क्योंकि ब्राह्मणों को कष्ट देने से तुम्हारा धर्म निष्फल हो जाएगा।"

इसके आगे महापुरुष शिशु अनन्त अपने शिष्य बारंग से कहते हैं— "और एक बात सुनो, बारंग! लोग गायों के सहारे निष्ठुर होकर खेती करेंगे तथा गौमाता पर दया नहीं रखेंगे। वे लोग बैल की पीठ पर भारी

भार लादकर चातुर्मास्य में भी उन्हें कार्य में लगाएंगे, बैल गाड़ियों को चलाएँगे और काम कराएँगे। यह सब देखकर हलधर (प्रभु बलराम) राजा और प्रजा को व्यवहार सिखाएँगे। गांवों की सभी गायों की गिनती करके उन्हें जमीन पर चरने के लिए छोड़ देंगे और गौमाता खुशी से चरेगी और खूब दूध देगी। प्रभु बलरामजी चातुर्मास्य में गाड़ियों को रोक देंगे और जितना भार बैल वहन कर सके, उसी के अनुसार ही सामान लादने की अनुमति देंगे। प्रति दो कोस (६.४४ किलोमीटर) की दूरी पर डाकघर स्थापित किए जाएँगे, और वहाँ सेवकों की नियुक्ति की जाएगी, ताकि जो व्यापारी बैलों द्वारा वस्तुएँ ले जा रहे होंगे, वे वहाँ जाकर माल का वजन तौलकर ही बैलों पर लादें। यदि वजन अधिक हुआ, तो उस मूर्ख को दंडित किया जाएगा। गाड़ियों में तुल्य भार, सम वस्तुएँ तथा निश्चित सीमा में ही लदान किया जाएगा, ताकि गौवंश को कष्ट न हो। इसी प्रकार चारों धामों में रेवतीपति (बलरामजी) यह नियम लागू करेंगे। ऐसे ही चारों धामों में प्रभु रेवतीपति (बलराम) यह व्यवस्था करेंगे। वे चोरों को कदापि नहीं रखेंगे। प्रभु बलदेव जी प्राणियों को दिव्य चक्षु प्रदान करेंगे। पंचकोशी क्षेत्र में भक्तजन सदाव्रत प्राप्त कर स्वस्थ हो जाएँगे। उस समय प्रभु बलराम जी स्थान-स्थान पर पुष्करिणी, कुएँ तथा जलकुंड बनवाएँगे। उनके साथ रहेंगे गहन दल, कोठ दल और तेरह अश्वारोहियों की सेना। सभी प्राणियों को सुख प्रदान करके प्रभु बलराम अन्ततः सम्बल ग्राम में लौटेंगे। वहाँ से वे चारों धामों में किए गए समस्त कीर्त्यों तथा मक्का नगर में किए गए युद्धों का वर्णन प्रभु कल्कि के सम्मुख करेंगे। यह सब सुनकर प्रभु कल्कि अत्यन्त संतुष्ट होंगे।"

(भविष्य पुराण, शिशु अनंत)

बलदेब राजा हेबे । शहे आठबर्ष भोग करिबे लो जाइफुल सेहि सत्यरे पृथ्बी पालिबे ।५९।

××××

अनन्त किशोर देब, भ्रमि चक्रबर्ति निश्चे होइबे लो जाइफुल एहि कथा अटइटि ध्रुब ।६३।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास अपने शिष्य रामदास को बताते हैं कि प्रभु बलदेव जी राजा होंगे और एक सौ आठ वर्ष तक राज्यभोग करेंगे। वे सत्य के मार्ग से पृथ्वी का पालन करेंगे। (श्लोक ५९)

महापुरुष यह भी बताते हैं कि अनंत किशोर देव निश्चित ही चक्रवर्ती सम्राट होंगे, और यह बात अटल सत्य है। (श्लोक ६३) **(जाईफ़ूल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद)**

बलदेब हेबे राजा काह्नु परिचार बसिब सुधर्मासभा जाक ग्रे नगर ।

अर्थात – महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र से कहते हैं कि प्रभु बलदेव जी राजा होंगे और कान्हू (प्रभु कल्कि) परिचारक होंगे। जो सुधर्मा सभा होगी, वह जाजनगर अर्थात् जाजपुर में बैठेगा। **(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)**

अच्युतानन्द उबाच

पचारे अच्युत होइण उषत कह प्रभु बुझाइण ए घोर दुर्द्दिन काहिँ केउँभाबे रहिबे भकतजन।
केउँ पीठे केते रहिबे कि रूपे से कथा शुणिले मोर जन्म जन्मान्तर पाप ताप जिब सेबिबि तांक पयर।

निरकार उबाच

कहन्ति प्रभृ निरञ्जन । शुण अच्युत देइ मन ॥ भकत जन चारिदिगे । अछन्ति जेझा अनुरागे ॥
से कथा बड़इ कठिन । केते बा करिबा बखाण ॥ संसारे अछि नाना धर्म । लोके करन्ति नाना कर्म ॥
के केउँ पथ अछि धरि । निज हृदरे सार करि ॥ केते अछन्ति भण्ड़ मूर्ख । मिछरे करुथान्ति तर्क ॥
ए जम्बु द्वीप भारतरे । भक्त अछन्ति बहुठारे ॥ केते बा तो आगे कहिबा । तो मनु संशय दहिबा ॥
ठिके तु शुण देइ मन । पबित्र जेते तीर्थ स्थान ॥ सेठारे छन्ति बहु भक्त । अचिह्ना अछन्ति गुपत ॥
के अबा कुष्ठ रोगी अछि । मो नाम मुखे बखाणुछि ॥ लोके करन्ति छिछिकार । आनन्दे नाचे भक्त मोर ॥
अन्ध अपुत्री चिर रोगी । केते अछन्ति बइरागी ॥ कर्म अबलु कर्म फल । भुञ्जन्ति होइण प्रफुल्ल ॥
दुःख न थाए तांक मने । मो नाम शुणुथाइ कर्ण्णे ॥ सकल माया फिंगि दूरे । केहि बा तीर्थे बासकरे ॥
माया संसार दाउ धक्का । न सहि केते हेले एका ॥ आश्रे करिले मोते बले । पड़िले मोर पादतले ॥
पापी पाषाण्ड़ बहु नर । भोगिले संसार जञ्जाल ॥ करिले आत्म समर्पण । हराइ निजर सम्मान ॥
एपरि कहिबइँ केते । के काहिँ रहिछि गुपते ॥ शुण तु एबे देइ मन । दुर्जन कुबचन बाण ॥
न सहि केते साधु नर । मो नाम करिछन्ति सार ॥ के अबा संसाररे थाइ । दाण्ड़कु चिह्ना न पड़इ ॥
केहि श्रीक्षेत्रे बृन्दाबने । केहि बा सिद्ध पीठ स्थाने ॥ केहि निर्जन जन मेले । सकल माया फिंगि दूरे ॥
के करे ब्यबसाय चाष । पर सेबारे केहि तोष ॥ भक्तकु चिह्निबार पाइँ । भकत समर्थ हुअइ ॥
आनर किछि अबा शक्ति । पारन्ति मो भक्तंकु देखि ॥ भक्त भक्तंकु देखे जेबे । प्रेम सागरे मजे तेबे ॥
आनन्द तार अनुभब । अन्तरु हुअइ उद्भब ॥ एबे तु शुण देइ मन । तो आगे करिबा बखाण ॥
शुण हे अच्युत होइण उषत कलियुग भक्त कथा किपरि चिह्निबु किए भक्त बोलि कहिण देबा सर्बथा।
साधन भजने मन बलाइले आपे पाइबु भक्तंकु टंका सुना धन मान महतकु पका तु सबु पछकु।
कलिरे उत्कले प्रबल होइबे खण्ट चोर प्रतारक से नुहँन्ति भक्त दाढ़ी निश रखि मागुथिबे बुलि भिक।
आत्मगोपनरे रहिथिबे मोर बछा बछा भक्तमाने चिह्ना न पड़िबे जहिँ बाबु हेतु तुहि करिथिबु मने।
साधन भजन नाम जप तांक अन्तररे थिब लागि भिकारी परि से बार द्वार बुलि न खाइबे किछि मागि।
बाहारे देखिले भक्तिभाबे चिह्नाचिह्नि हेउथिबे आन केहि तांकु धन जनबले बशकरि न पारिबे।
लोभ मोह तर्क बितर्क तांकर न थिब सबु कालकु पर दुःख देखि आखिरु लोतक बहि तिन्तुथिब बुकु।
मान अपमान निन्दा प्रशंसारे न थिब तांकर ड़र केबल मो नाम अन्तरे अन्तरे जपुथिबे करि सार।
राजा महाराजा धनी मानी तांकु ड़ाकिले,से य़िबे नाहिँ गले केबेहेले ठिआरे ठिआरे फेरिबे दि' कथा कहि।
तांक मने जेबे केहि देले केबे देब आघात यातना । ता फल पाइँकि रहिछि मुँ टाकि भोगिब यम यातना।
कथा आघातरे मो भक्त आखिरु बाहारिब जेबे लुह हरि हर ब्रह्मा हुअन्तु ना काहिँ पछे हेब कोह मोह।
उत्कल मण्ड़ले गोपने गोपने रहिबे मो भक्तमाने आसु जेते बाधा हेउ असुबिधा न शुणिबे किछि काने।
हेउ काराबास अबा पुत्रशोक कि अबा बिपद भरि मो भक्त जाणिब सबु मिछमाया संसारे रहिछि पूरि ।
आनन्द सागरे भासुथिब भक्त देखुथिब मोते निति अशबद शब्द काने शुणुथिब मो भाबरे देइ मति।
पूजा महोत्सब नाम संकीर्त्तन पाखकु न जिबे केते गले असम्भाल हेब तांक हृदे प्रेम उपुजिब चित्ते।
समाज भितरे उन्मत्त होइ से नाचिबे मो नाम धरि मान लज्जा भय दूर होइजिब से लागि न जिबे ड़रि।

जहिँ तहिँ थाइ नाम मो शुणिले समाधि शुणिब सार मन मिशिजिब ब्रह्मपदे य़ाइ प्रकृत भक्त से मोर।
कलिरे के काहिँ रहिबे भकत से कथा कहिबा तोते। न चिह्निबे केहि आड़म्बर नाहिँ मो भक्त थिबे गुपते।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद दास पूछते हैं — हे प्रभु! इस घोर दुर्दिन में भक्तजन कहा किस प्रकार रहेंगे? किस पीठ में कितने भक्त निवास करेंगे और वे किस रूप में होंगे? यदि मैं यह बात सुन पाऊँ, तो मैं उनके चरणों की सेवा कर सकूँगा और मेरे जन्म-जन्मांतर के पाप-ताप नष्ट हो जाएँगे।

निराकार उवाच — हे अच्युत! मेरे भक्तजन चारों दिशाओं में हैं, जो अपने-अपने प्रेम और अनुराग के साथ स्थित हैं। वह बात बहुत ही कठिन है, उसका कितना वर्णन किया जाए। इस संसार में नाना प्रकार के धर्म हैं। लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्म करते हैं। कोई किसी पथ को अपनाए हुए हैं और उसे हृदय में सार रूप में धारण किए हुए हैं। किन्तु कितने ही भंड-मूर्ख हैं, जो मिथ्या तर्क करते रहते हैं। इस जम्बूद्वीप भारतवर्ष में अनेक स्थानों पर मेरे भक्त निवास करते हैं। मैं कितनों को तुम्हारे सामने कहूँ? जितने भी पवित्र तीर्थस्थान हैं, वहाँ अनेकों भक्त अज्ञात एवं गुप्त रूप में निवास करते हैं। कोई कुष्ठ रोगी है, जो मेरे नाम का मुख से उच्चारण करता रहता है। लोग उन्हें देखकर छिछिकार (घृणा) करते हैं, परंतु मेरे भक्त आनंद में नाचते हैं। कोई नेत्रहीन है, कोई संतानहीन, कोई चिर रोगी है और कोई वैरागी है। वे अपने कर्म और उसके फल को भोगते हुए भी प्रसन्नचित्त रहते हैं। उनके मन में दुःख नहीं होता, क्योंकि वे मेरे नाम का श्रवण करते हैं। वे सभी माया को दूर फेंककर कोई तीर्थस्थल में निवास करते हैं। तो कोई संसार की माया और दुखद आघातों को सहन न कर अकेले होकर मुझमें आश्रय लेते हैं और मेरे चरणों में शरणागत हो जाते हैं। अनेक पापी और दुष्ट मनुष्य, संसार के जंजाल को भोगकर अपना मान-सम्मान गंवाकर अंततः आत्म-समर्पण कर देते हैं। दुष्टों की कुवाणी के बाणों को असह्य पाकर कितने ही साधु पुरुष मेरे नाम को ही सार मानकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कोई श्रीक्षेत्र में, कोई वृंदावन में, तो कोई सिद्धपीठ स्थानों पर निवास करते हैं। कोई-कोई निर्जन स्थान में निवास करता है, समस्त माया को दूर फेंककर। कोई व्यवसाय करता है, कोई कृषि करता है और कोई दूसरों की सेवा कर त्रप्त रहता है। भक्त को पहचानने में केवल भक्त ही समर्थ होता है; अन्य किसी में यह शक्ति नहीं कि वह मेरे भक्त को देखकर उसे पहचान सके। जब एक भक्त दूसरे भक्त को देखता है, तो वह प्रेम के सागर में डूब जाता है; उस समय उसका आनंदमय अनुभव भीतर से स्वतः प्रकट होता है।

हे अच्युत! सुनो, कलियुग के भक्तों की बात बताता हूँ — किस प्रकार तुम पहचानोगे कि कौन भक्त है। जो भजन और साधन में मन लगाएगा, वही स्वयं उन भक्तों को पहचान सकेगा। इस मार्ग में धन, सोना, संपत्ति, मान और प्रतिष्ठा — इन सबको पीछे छोड़ देना होगा। मेरे गिने-चुने भक्त आत्मगोपन रूप में रहेंगे जो पहचान में नहीं आएंगे। उनके अंत:करण में निरंतर नामजप, भजन और साधन चलते रहेंगे। वे कभी भिक्षुओं की भाँति द्वार-द्वार जाकर भिक्षा मांगकर नहीं खाएंगे। बाहर से देखने पर वे भक्तिभाव से परस्पर एक-दूसरे को पहचान लेंगे, किंतु अन्य कोई व्यक्ति उन्हें धन या जनबल के प्रभाव से अपने वश में नहीं कर सकेगा। उनमें न लोभ होगा, न मोह, न ही तर्क-वितर्क। जब वे किसी दूसरे का दुःख देखेंगे, तो उनका हृदय व्यथित हो उठेगा और उनकी आँखों से अश्रुधारा बह निकलेगी। मान, अपमान, निंदा और प्रशंसा से उन्हें कोई भय नहीं होगा। वे केवल मेरे नाम का ही अंतर में निरंतर जप करते रहेंगे। यदि कोई राजा, महाराजा, धनवान या प्रतिष्ठित उन्हें बुलाए, तो वे नहीं जाएंगे — और यदि कभी चले भी गए, तो केवल दो बातें कहकर वहीं से लौट आएंगे। यदि कोई मेरे भक्तों के मन को कभी आघात या यातना पहुँचाए, तो उसका फल देने के लिए मैं स्वयं तत्पर

रहूँगा — वह यम-यातनाएँ भोगेगा। जब मेरे भक्तों की आँखों से किसी के कटु वचनों या आघात से आँसू बहेंगे, तो चाहे वह हरि हो, हर (शिव) हो या ब्रह्मा ही क्यों न हों — उन्हें भी उसका उत्तर देना पड़ेगा। उत्कल मण्डल में मेरे भक्त गुप्त रूप से निवास करेंगे। चाहे जितनी भी बाधाएँ या असुविधाएँ आएँ, वे कुछ भी अपने कानों से नहीं सुनेंगे। चाहे वह कारावास हो, पुत्र-शोक हो या कोई अन्य विपत्ति — मेरे भक्त यह जानेंगे कि यह संसार मिथ्या माया से पूर्ण है। वे मुझे निरंतर देखते हुए आनंद-सागर में निमग्न रहेंगे, और शब्द तथा अशब्द को भी मेरे भाव में डूबकर सुनेंगे। कई ऐसे होंगे जो पूजा, महोत्सव और नाम-संकीर्तन जैसे आयोजनों में सम्मिलित नहीं होंगे। लेकिन यदि कभी वहाँ पहुँच भी गए, तो उनका हृदय प्रेम से उमड़ पड़ेगा और वे अपने चित्त को संभाल नहीं पाएँगे। समाज के भीतर वे मेरे नाम का उच्चारण करते हुए उन्मत्त होकर नाचेंगे — उनके भीतर से मान, लज्जा और भय दूर हो जाएगा। उन्हें इन बातों से कोई डर नहीं रहेगा। जहाँ कहीं भी मेरे नाम को सुनेंगे, वहीं समाधि में लीन हो जाएंगे; उनका मन ब्रह्मपद में मिल जाएगा — वही मेरा वास्तविक भक्त है। उन्हें कोई पहचान नहीं पाएगा, वे आडंबर रहित होंगे और गुप्त रूप से निवास करेंगे।

जे काले प्रबल हेब कलिकाल बाहारिबे बहु जन असत्य कपट कूट अन्याचारे न मानिब तांक मन ।
राजा अत्याचार गुरु पापभार न पारिबे जेणु सहि जन बसतिकु छाड़ि देइजिबे बुलिबे मो नाम ध्यायि ।
पुणि शुण बाबु संसार भितरे पुत्र कन्या नारी दाउ सहि न पारिण निन्दा अपमान केते हेबे काउबाउ।
उपाय न देखि घोर कलिकाले त्राहि त्राहि त्राहि करि छाड़ि घर द्वार भिकारी बेशरे बुलिबे मो आश्रा धरि।
केते कोटिपति अहंकारे माति कामिनी काञ्चन सार करि बसिथिबे धन जन बले सबु हेब नारखार।
मान अभिमान पुत्र दारा धन उभाइब पाप फले सेकाले अन्तर पोड़ि जलि जिब ध्यायिले मोते सकले।
केहि बा आनन्दे पूर्ब पुण्य बले नाम करिथिब सार मिछ माया धन्दा सुख दुःख फन्दा थाइ न थिब ताहार ।
रामेश्वरठारु हिमालय जाए थिब जेते तीर्थस्थान काशी बनारस जाह्नबी तटरे भक्त होइथिबे पूर्ण्ण ।
नर्मदा काबेरी चित्रोत्पला घेनि कृष्णा गोदाबरी कूल प्रयाग त्रिबेणी बृन्दाबने भक्त होइथिबे तहिं ठुल ।
लाङ्गुलि बाबाजी सिद्ध साधु नागा ब्रह्मचारी दीक्षा नेइ नारीभक्त मोर थिबे केते घरे चिह्ना न पड़िबे काहिं।
केते स्थाने नारी सिद्ध होइथिबे सदा ब्रह्मपद ध्यायि देश भाषा धर्म भिन्न होइथिब
मन होइथिब एका भकत भकत देखा देखि हेलेन थिब जञ्जाल दका।
यबन फकीर अंग बंग पुणि कणटि करिबे बास सकले मो भक्त ब्रह्मभाब पाइँ बुलुथिबे करि आश ।

अर्थात – जिस काल में कलियुग प्रबल होगा, उस समय असत्य, कपट, कूट और अन्याचार में लिप्त अनेक लोग बाहर निकलेंगे। राजा अत्याचारी हो जाएंगे, गुरुजन इस पाप के भार को सहन नहीं कर पाएंगे एवं जन-बस्तियों को छोड़कर मेरे नाम का ध्यान करते हुए विचरण करेंगे। संसार के भीतर पुत्र, कन्या, स्त्री, भाई — ये निंदा और अपमान सह नहीं पाएंगे; यह उनके लिए असह्य हो जाएगा। और कोई उपाय न देखकर, इस घोर कलियुग में 'त्राहि त्राहि' करते हुए, घर-द्वार त्यागकर भिखारी के वेश में मेरे आश्रय को धारण कर घूमेंगे। कितने ही करोड़पति अहंकार में चूर होकर, स्त्री और सोने (कामिनी-कांचन) को ही सार मानकर धन, जन और बल के भरोसे बैठे रहेंगे — किन्तु अंततः सब कुछ नारखार हो जाएगा। मान अभिमान पुत्र पत्नी धन पाप के फल स्वरूप खड़े करेंगे, उस समय जब सब नारखार होगा तब मेरा ध्यान करने से उनका अंतर जल जाएगा। कुछ लोग अपने पूर्व पुण्य के बल पर आनंदपूर्वक हरि-नाम को सार बना लेंगे, तब उनके लिए मिथ्या माया, सांसारिक धंधे और सुख-दुख के फंदे रहकर भी नहीं रहेंगे। रामेश्वरम से लेकर हिमालय तक जितने भी तीर्थस्थान हैं — काशी, वाराणसी, और जाह्नवी (गंगा) के तटों पर — वे सभी भक्तों से पूर्ण होंगे। नर्मदा, कावेरी, चित्रोत्पला, कृष्णा और गोदावरी के तटों पर, प्रयाग के त्रिवेणी संगम में, तथा वृंदावन में — वहाँ भक्तगण समूहों में रहेंगे। दिगंबर, बाबाजी, सिद्ध-साधु, नागा और ब्रह्मचारी दीक्षा लेकर

रहेंगे। मेरी कितनी ही स्त्री भक्त होंगी, जो घरों में रहकर भी किसी को पहचान में नहीं आएँगी। कितने ही स्थानों में स्त्रियाँ सिद्ध होंगी, जो सदा ब्रह्मपद का ध्यान करती रहेंगी। देश, भाषा और धर्म भिन्न-भिन्न होंगे, किन्तु भक्तों का मन एक होगा। भक्त जब एक-दूसरे को देखेंगे, तब वे संसार के जंजाल और चिंता को भूल जाएँगे। यवन (मुसलमान), फकीर अंग (बिहार), बंग (बंगाल) और कर्नाटक में वास करेंगे। वे सभी मेरे भक्त ब्रह्मभाव की प्राप्ति की आशा में भ्रमण करेंगे।

(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)

चार प्रकार के भक्त

लयांग लीलांग ग़ोगांग भोगांग चारि प्रकार भकति एहि चारि स्थाने प्रकाशि अछन्ति कहिलु बारंग चेति ।
कहन्ति बारंग शुण गुरुदेब चारि प्रकार कहिबा चारि परकार भक्तंक सिद्धान्त अटे सुधारस अबा ।
लयांग भकत लय करुथान्ति ब्रह्म समाधि करिण योगांग ग़ोग साधन करन्ति धारणा ग़ोगरे मन ।
भोगांग भकत ऐश्वर्या बाञ्छित कामना परे थाआन्ति केबा ऐश्वर्या बाञ्छित कामनारे मतबैकुण्ठे (से) बसन्ति
लीलांग भकत जाणन्ति समस्त बिष्णुलीलाकु जाणन्ति अबतार श्रेणी जेतेक मेदिनी प्रभुंक सेबा खटन्ति ।
लीलांग भकत सबुदिने स्थित प्रभु अबतार हेले संगते घेनिण बुलन्ति मेदिनी छाड़ि न पारन्ति तिले ।
से सत्ययुगरे होइथिले तपी त्रेतायुगे हेले कपि द्वापर युगरे श्रीकृष्ण संगरे होइले गोपाल गोपी ।
श्री नबद्वीपरे बैष्णब बेशरे सखासखी जन्महेले ओड़राष्ट्र गोदाबरी परियन्ते प्रभु संगे लीलाकले ।
ए कलियुगरे कल्की अबतार हेबे प्रभु बिम्बाधर चौषठि भकत कोठदल घेनि करिबे दुष्ट संहार ।

अर्थात – महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग से चार प्रकार के भक्तों के विषय में कहते हैं —

• लयांग भक्त — लयांग भक्त ब्रह्म समाधि करके लय करते हैं। (लयांग भक्त अपनी भौतिक चेतना को पार करके आध्यात्मिक चेतना में प्रवेश कर ब्रह्म के साथ एकत्व की अनुभूति करता है।)
• योगांग भक्त — योगांग भक्त योग की साधना करते हैं और धारणा योग में मन लगाते हैं।
• भोगांग भक्त — भोगांग भक्त ऐश्वर्य की कामना में लिप्त रहते हैं, तो कभी-कभी उनका मन मतवैकुण्ठ में लगता है। (वे भक्त जो भक्ति का मार्ग तो अपनाते हैं, परंतु उनमें भोग (संसारिक सुख-सुविधा, वैभव) की इच्छा रहती है। वे भगवान से धन, सुख, पद, वैभव जैसी इच्छाएँ रखते हैं।)
• लीलांग भक्त — लीलांग भक्त भगवान विष्णु की लीलाओं को जानते हैं। लीलांग भक्त इस धरती पर प्रभु की सेवा में तत्पर रहते हैं। लीलांग भक्त चारों युगों में विद्यमान रहते हैं। जब-जब प्रभु अवतार लेते हैं, वे उनके साथ-साथ विचरण करते हैं और तिलमात्र भी उन्हें छोड़ नहीं पाते। वे सत्ययुग में तपस्वी हुए, त्रेतायुग में वानर (कपि), द्वापरयुग में श्रीकृष्ण के साथ गोपी-गोपाल बने, और कलियुग में श्रीनवद्वीप में वैष्णव वेशधारी सखा-सखी रूप में जन्म लिए और प्रभु के साथ लीलाएँ कीं। इसी कलियुग में जब प्रभु बिंबाधर (बिंबफल जैसे लाल अधरों वाले) कल्कि अवतार लेंगे, तब वे चौसठ भक्तों की कोठ-दल को साथ लेकर दुष्टों का संहार करेंगे।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

सोलह मंडल

बोलन्ति प्रभु प्रभु निराकार । शुण अच्युत महा महाबीर ॥
जुमर चरित अमृत । शुणिले न छाड़िब चित्त ॥
प्रथमे शारला मण्डल । द्वितीये भगबती आल ॥
तृतीये बिरजा मण्डल । देबीमानंकर तहिं मेल ॥
चतुर्थमण्डले कालिका । पञ्चमे काशीक्षेत्र लेखा ॥

षष्ठरे गोप बृन्दाबन । सप्तमे द्वारका भुबन ॥
अष्टमे आफ्रिकामण्ड़ल । नबमे अय़ोध्यारे खेल ॥
दशमे महारत्नपुरे । षोलमठ य़े सेहिठारे ॥
एकादश सम्बलपुर । छतिश गड़र मध्यर ॥
बाररे गञ्जा ब्रह्मपुर । लंगुलि एगार हजार ॥
आम्बर नीलाचल जाण । तेर चउद मण्ड़लेण ॥
पन्दर पञ्चकोश जाण । षोलरे रत्नबट टाण ॥
ए कथा मनरे तु जाण । षोलरे रत्नबट टाण ॥
षोलमण्डले जेते भक्त । समस्ते होइथिबे गुप्त ॥

अर्थात् — श्री निराकार प्रभु महापुरुष अच्युतानंद दास से उन सोलह मंडलों के विषय में बताते हैं, जहाँ से भक्तों का एकत्रीकरण (या 'मिलन') होगा — सुनो अच्युत! प्रथम मंडल है शारला (सारला) मंडल; द्वितीय है भगवती मंडल; तृतीय है बिरजा मंडल, जहाँ देवियों का समूह है। चतुर्थ मंडल है कालिका; पाँचवाँ है काशी क्षेत्र; छठा है गोप वृंदावन; और सातवाँ है द्वारका भुवन। आठवाँ है आफ्रीका मंडल; नौवाँ है अयोध्या मंडल; दसवाँ है महारत्नपुर, जहाँ सोलह मठ स्थित हैं। ग्यारहवाँ है संभलपुर, जो छत्तीसगढ़ के मध्य में है; बारहवाँ है गंजाम-ब्रह्मपुर, जिसमें ग्यारह हज़ार लंगुलि (दिगंबर साधु) हैं। तेरहवें और चौदहवें मंडल के रूप में हमारे नीलाचल (पुरी) को जानो। पंद्रहवाँ मंडल पंचकोश है, और सोलहवाँ मंडल रत्नवट है। इन सोलह मंडलों में जितने भी भक्तजन हैं, वे सभी गुप्त रूप से विद्यमान होंगे।"

(अमरजुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

ए षोल मण्डल भाब तोते देबा कहि तोहर जन्म मण्डल नेम्बाल अटइ ।
शारलामण्डले भक्त लक्षे से पूरिबे बिरजा मण्डले भक्त तेरश मिळिबे
काली मण्डलरे क्षउणीए भक्त जाण काशी मण्ड़लरे भक्त ता'र य़े द्वि गुण ।
गोप अय़ोध्यारे भक्त एगार हजार एहा देखि भक्तमाने हेबे थरहर ।
आम्भ नीलाचलरे जे लक्ष भक्त जाण पद्म भक्त मध्यरे जे होइब से टाण ।
ए सबु मेल होइबे रत्नबटठारे सुजने जाणिबे कलि शेष हेलाबेले ।

अर्थात् — श्री निराकार प्रभु महापुरुष अच्युतानंद दास से सोलह मंडलों के भक्तों की संख्या बताते हुए कहते हैं कि: "शारला (सारला) मंडल में एक लाख भक्त पूर्ण होंगे। बिरजा मंडल में तेरह सौ (१,३००) भक्त मिलेंगे। काली मंडल में एक अक्षौहिणी भक्त होंगे, और काशी मंडल में उससे दुगुने (दो अक्षौहिणी) भक्त होंगे। गोप अयोध्या में ग्यारह हज़ार (११,०००) भक्त होंगे। यह देखकर भक्तजन थर-थर होंगे (अत्यंत विस्मित या रोमांचित होंगे)। हमारे नीलाचल (श्री जगन्नाथ पुरी) में भी एक लाख भक्त होंगे, जो पद्म भक्तों के समूह में दृढ़ माने जाएँगे। ये सभी भक्तगण रत्नवट नामक स्थान पर एकत्रित होंगे। सज्जन (सुजन) लोग कलियुग के समाप्त होने के समय इस बात को जानेंगे।

(अमरजुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

दिब्यसिंह देब अंकरे जाण । धूमकेतु हेब पूर्बभागेण ॥
उलुकापात हेब हालहुलि । श्वानश्रृगाल छाड़िबे बोबालि ॥
मातिबे कालि जे करालिगण । लोके मरिबे होइ रणभण ॥
थोकाए मरिबे अग्निमुखरे । दयाधर्मथिब जार पाखरे ॥
उबुरि य़िबे कालिमुख जाण । कलिकल्प सिना एहि भिआण ॥

अर्थात – गजपति महाराज दिव्यसिंह देव के समय, पूर्व दिशा में धूमकेतु गिरेगा। उल्कापात होगा। कुत्ते और सियार भयावह स्वर में चीत्कार करेंगे। लोग असंख्य संख्या में मृत्यु को प्राप्त होंगे। कुछ लोग अग्निमुख में पड़कर मृत्यु को प्राप्त होंगे। केवल वे ही लोग माँ कालि के मुख से उद्धार पाएंगे, जिनके भीतर दया और धर्म विद्यमान होंगे। **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

बिरजा पीढ़ बैतरणी नदी । दशासनि घाट भितरे भेदि ॥
सप्तमातृका टेकि अछि शिर । तांक अधरु बहिब रुधिर ॥
सेहि संकेत जाणिथाअ राम । कल्की उदय निश्च जाण ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं — 'हे राम! जब बिरजा क्षेत्र (जाजपुर) में, वैतरणी नदी के तट पर स्थित दशासनि (दशास्वमेध) घाट में सप्तमातृकाएँ — ब्राह्मणी, वैष्णवी, शिवदूती (या इन्द्राणी), नृसिंही, चामुंडा, कौमारी और वाराही — के अधरों से रक्त प्रवाहित होगा, तब उस दैवी संकेत से यह निश्चयपूर्वक जान लेना कि प्रभु कल्कि का उदय हो चुका है।' **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

दिब्यसिंह देब नब अंकरे । किछि दुर्भिक्ष पड़िब संसारे ॥
केते नाशजिबे अन्नकष्टेहिं । निष्ठाबचन कहुछि मुँ फेड़ ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि गजपति राजा दिव्यसिंह देव के नौवें अंक में संसार में कुछ दुर्भिक्ष पड़ेगा। कितने ही लोग केवल अन्न के कष्ट से नष्ट हो जाएंगे। (ना'अंका दुर्भिक्ष्य (१८६६) के नाम से प्रसिद्ध यह भुखमरी, गजपति महाराज दिव्यसिंहदेव (३) के शासनकाल के नववें अंक में आई थी।) **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

मुकुन्ददेबंक एकचालिशरे बहुत दुर्भिक्ष हेब
सागर बढ़िब प्रलय होइब कुल लंघि बलिजिब ।
पूर्बरु दक्षिणे समुद्र बढ़िब दक्षिणे करिब गादि
होइब लहरी पड़ुथिब माड़ि बड़ देउलकु कादि ।
बड़ देउलकु धका मारुथिब देखिबु तु नयनरे
उत्तराञ्चलक युद्धर प्रस्ताब हेतु रखिबु मनरे ।
नीलचक्रपरु पताका छिड़िण पड़िब समुद्र कूले

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास दास से कहते हैं कि गजपति राजा मुकुंद देव (संभवत: ४) के इकतालीसवें (एकचालीस) (४१) अंक में बहुत बड़ा दुर्भिक्ष होगा, सागर बढ़ेगा, (खंड) प्रलय होगा, और समुद्र का जल किनारा लांघेगा। पूर्व और दक्षिण दिशाओं से समुद्र बढ़ेगा, उसकी उग्र लहरें उठेंगी, जिनके कारण बालुकाएं (रेत) श्रीमंदिर के भीतर तक पहुँच जाएँगी। समुद्र की विशाल लहरें श्रीमंदिर से टकराएँगी— यह दृश्य तुम अपनी आँखों से देखोगे। उस समय उत्तरांचल में युद्ध का प्रस्ताव उपस्थित होगा। उस समय नीलचक्र के ऊपर स्थापित ध्वजा फटकर समुद्र के तट

पर जा गिरेगी। **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

निश्चय मुकुन्ददेबकंक अंकरे रुधिर बरषा हेब ।

अर्थात – निश्चित रूप से मुकुन्ददेव (संभवत: ४) के अंक में रक्त की वर्षा होगी।

(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)

बालमुकुन्द एकचालिश हेब निश्चय चबिश भोग चबिश भितरे आहुरि गुपत कहिछन्ति बासुदेब ।
बृष मास आदि आरम्भ होइब उत्तराञ्चलरे युद्ध प्रस्ताब घटणा होइबटि बणा बाट घाटरे युझिब ।
समुद्र लहड़ि माड़ि पड़िबटि पापभरा हेब ग्रहुँ बड़पण्डा बड़ देउले आसिण बन्दाण करिब सेहु ।
प्रभु आज्ञाकुत केहि मेण्टि नाहिं जलनिधिकि मेण्टिब बेलके बाहुड़िजिब जलनिधि हरिनाम उछुलिब ।
आउ बारेक आसिब जलनिधि देउलकु धका देब प्रभु कोप हेबे चक्रकु धरिबे म्लेच्छ संहार करिबे ।
बड़ देउले लबण बाजिकरि देउल चूल छाड़िब बिश्वकर्मा गुपतरे जात होइ देउलरे चूलदेब ।
कमला निर्द्दया हेबारु उत्कल देशे दुर्भिक्ष पड़िब पापभारा सहि न पारिब बसुधा बिकल हेब ।
एकचालिशठारु तेणिकि सबु कृषि हेब हतबीर्य्य जल पबन घातेण पृथ्वी उभा हेब देबराज ।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि गजपति राजा बालमुकुंद (४) के इकतालीसवें (४१) अंक में चौबीस भोग होंगे। वृषभ मास के प्रारम्भ में यानि अप्रैल-मई में उत्तरांचल में युद्ध का प्रस्ताव आएगा। मार्गों और घाटों पर संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न होंगी। पाप का भार बढ़ने के कारण समुद्र से लहरें उठकर आएंगी। उसी समय पुरी के बड़पंडा (मुख्य पुजारी) आकर वंदना करेंगे। तब महाप्रभु की आज्ञा से समुद्र लौट जाएगा और हरिनाम की ध्वनि चारों ओर गूंज उठेगी। किंतु पुनः एक समय ऐसा आएगा जब समुद्र की लहरें तट को लांघकर बड़ देउल (श्रीजगन्नाथ मंदिर) को धक्का देंगी। उस समय प्रभु कुपित होंगे, चक्र धारण कर म्लेच्छों का संहार करेंगे। समुद्र की तीव्र लहरों के प्रहार से श्रीमंदिर का शिखर टूट जाएगा। तभी विश्वकर्मा, जो गुप्त रूप से जन्म ले चुके होंगे, मंदिर के शिखर को पुनः स्थापित करेंगे। माता कमला (लक्ष्मी) के निर्दय हो जाने के कारण ओडिशा में भीषण दुर्भिक्ष पड़ेगा। पाप का भार इतना बढ़ जाएगा कि वसुंधरा (पृथ्वी) उसे सहन नहीं कर पाएगी और विकल (व्याकुल) हो उठेगी। इकतालीसवें (४१) अंक के बाद जल और पवन के प्रहार से समस्त कृषि शक्तिहीन और दुर्बल हो जाएगी। **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

मेषकु बृष संगते मिलाइबु मिथुनरे प्रकाशिण सप्तर्षिमण्ड़ल दक्षिणरे लेख न कह मोहर गुण ।
मीन शनि गुरु बाररे पड़िब एहि अंके ध्रुब ध्रुब मिथुन मासरे तेरदिन पक्षे काल धरणी ग्रासिब ।
ओड़िशा देशरे जलबिम्ब हेब प्रान्त आद्य मध्यकाले पाण पठाण ये चाउळ बाण्टिबे एकथा होइब ढ़ाळे ।

×××××

भकतंकु नाना कषण पड़िब अन्न जल न मिलिब माता सुत रड़ि भक्तलीला श्रुति इन्द्रि सृष्टि न पालिब ।
सेतिकिबेलकु त्राहि त्राहि बोलि उदासे दिन बञ्चिबु पन्दर दिनरे थरे अन्नजल समीर अंके भोगिबु ।

अर्थात – मेष को वृषभ के साथ मिलाकर, मिथुन में प्रकाशित करो। सप्तर्षि मंडल को दक्षिण में लिखो। (यह सांकेतिक भाषा में है, जिसे गूढ़ अर्थों में समझने पर एक विशेष अंक निकलता है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार वह अंक ३२ है।) महापुरुष आगे कहते हैं कि यही वह अंक होगा जब शनि का प्रवेश मीन राशि में होगा, और वह भी गुरुवार के दिन (संभावित तिथि: १४ मई २०५४)। मिथुन महीने के तेरह दिन पक्ष में काल (विनाशकारी समय) पृथ्वी को ग्रस लेगा। ओडिशा में हर ओर जल ही जल दिखेगा — आरंभ, मध्य और अंत, तीनों कालों में। उस काल में पठान चावल बाँटते हुए दिखाई देंगे। भक्तों को अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ेंगे — उन्हें अन्न और जल भी नहीं मिलेगा। माता और पुत्र विलाप करेंगे। उस समय देवराज इन्द्र वर्षा नहीं करेंगे। चारों ओर त्राहि त्राहि मच

जाएगी, लोग उदास होकर किसी तरह दिन बिताएंगे। केवल पंद्रह दिनों में एक बार ही अन्न-जल प्राप्त होगा। **(शिवकल्प, महापुरुष अच्युतानंद)**

मीन शनि हेब मुकुन्द अंक । भारतश्वरी हेब उतपात ॥
हेतु रखिथाअ ब्रजकुमर । सेकाले तेजिबि मुँ कलेबर ॥
मधु षष्ठितिथि गुरुबाररे । कषण पड़िब निज दासरे ॥
सेहिदिनकु अष्टदश जाण । भक्तंकु किछि पड़िब कषण ॥
नक्षत्र बृष्टि रात्र दिन हेब । महत पुणि केहि य़े न थिब ॥
लुचिबे भक्त कलि प्रभा देखि । सन्थ साधुगोष्ठी हेबे निर्मुखी ॥
बालबृद्ध अंके बताशा हेब । जल पबन बताश बहिब ॥
जल पबन बताष बहिब । पृथ्बी हीनमान बहु होइब ॥
प्रजाये नष्टभ्रष्ट होइथिबे । प्रजा गुहारि राजा नशुणिबे ॥
अणघरुआ घरुआ होइबे । घरुआमाने य़े उजुड़िजिबे ॥
न मिलिब पुणि टंका कउड़ि । दुहिता बिक्रय हेब सबुरि ॥
कलिर भिआण ए सबु जाण । धरि मारुथिबे पाण पठाण ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं — हे ब्रजकुमार! मीन शनि योग गजपति राजा मुकुन्ददेव के अंक में पड़ेगा और उस समय भारतवर्ष में उत्पात होगा। उस समय मैं अपने कलेवर (देह/शरीर) का त्याग करूँगा। मधु मास की षष्ठी तिथि, जो कि गुरुवार को होगी, मेरे दासों (भक्तों) को कष्ट पहुँचेगा। उसी दिन से अठारह दिनों तक भक्तों को कुछ कष्ट सहने पड़ेंगे। नक्षत्र वर्षा दिन-रात होगी और तब कोई भी सम्मानित नहीं रहेगा। उस समय भक्त, कलि के प्रभाव को देखकर छिप जाएँगे। संत और साधुओं का समूह भी उस काल में मौन और मुखरहीन हो जाएगा। वृद्धबालक राजा के अंक में प्रचंड वायु चलेगी। जल, वायु और तूफ़ानी हवाएँ चलेंगी, जिससे पृथ्वी दुर्बल और उजाड़ हो जाएगी। प्रजा नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगी, और उनकी गुहार राजा द्वारा अनसुनी की जाएगी। अपरिचित लोग घरवाले बनेंगे और घरवाले उजड़ जाएँगे। उस समय धन या पैसा नहीं मिलेगा और कन्याएँ (पुत्रियाँ) भी बेची जाएँगी। यह सब कलि की रचना होंगी। उस समय पठान लोग लोगों को पकड़-पकड़कर मारेंगे। **(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद)**

मीन शनि मेल गो होइब जेतेबेले से बेले समर हेब भारत मण्ड़ले ।

अर्थात – जब मीन-शनि का संयोग होगा, उसी समय भारत-मंडल में समर (युद्ध) होगा।
(रुक्मिणी गीता, महापुरुष अच्युतानंद)

वसु साल बिंश वेद अंके जे प्रमाण । सप्तदिन अन्धकार होइब य़े जाणि ॥
मीन मास चतुर्द्दशी शुक्र जे बाररे । अन्धकार घोटिथिब ए मर्त्त्य मण्ड़ले ॥

अर्थात – वसु (अष्ट वसु) साल (वर्ष) बीस (२०) वेद (४ वेद) अंक में (यह कोई सांकेतिक गणना है जिसे "डिकोड" करने पर एक अंक निकलता है) — उस अंक में सात दिन का अंधकार होगा। मीन मास की चतुर्दशी, शुक्रवार के दिन, इस मृत्युलोक में अंधकार छा जाएगा।
(मोहकल्प, महापुरुष अच्युतानंद)

बिंश अंके मधुमासे चतुर्द्दशी दिन । बिरजा मिलिबे खण्ड़गिरिर भुबन ॥
श्रेणी:कन्या रुपे जात होइथिबे सेहि । भैरब करिण से य़े ड़ाक देबे तहिँ ॥

××××

बिंशरे बार अंक चतुर्द्दशी दिन । बिरजा मिलिबे खण्ड़गिरिर भुबन ॥
सुश्री कन्यारुपे जात होइथिबे सेहि । भइरबी मूर्त्ति धरि ड़ाकदेबे तहिँ ॥

निर्घात पड़िला प्राये शबद शुढ़िब । सेहि शब्द मेच्छंकर प्राण जे हारिब ॥
चेता भक्त चेतुथिबे ब्रह्म एकाक्षर । भक्त उदे हेबे जाइँ सप्तमण्ड़लर ॥

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद द्वारा रचित मोह कल्प एवं कल्प टीका ग्रंथ में लिखा है कि मधु मास (चैत्र माह) की चतुर्दशी तिथि को माँ बिरजा खंडगिरि भूवन में आएंगी। वे सुश्री (सुंदर) कन्या के रूप में जन्म लिए होंगी। उस समय वे खंडगिरि में भैरवी मूर्ति धारण करके पुकारेंगी। उनके उस प्रचंड शब्द (डाक) को सुनकर म्लेच्छों के प्राण निकल जाएंगे। उसी समय भक्तगण ब्रह्म एकाक्षर का जाप करेंगे।

मुकुन्द देबंक बतिश अंकरु चौत्रीश परिर्ज्यन्ते
हेब मीन शनि शुण स्थिर बाणी चेतिबे कलकी भक्ते ।

अर्थात – संत कवि भीम भोई अपने ग्रंथ पद्मकल्प में लिखते हैं कि गजपति राजा मुकुन्द देव (संभवतः चतुर्थ) के ३२वें अंक से लेकर ३४वें अंक तक मीन-शनि योग पड़ेगा, और इस विषय में प्रभु कल्कि के भक्तों को चेतना प्राप्त होगी। (संभवत: ३२वां अंक अर्थात २०५४, ३३वां अंक अर्थात २०५५ तथा ३४वां अंक अर्थात २०५६)। **(पद्मकल्प, संतकवि भीम भोई)**

लो कोइलि- तेररु ग्ने तेतिश होइब, तिनिरे तिनि रहिले बिपत्ति पड़िब लो कोइलि ।१८१।

अर्थात – महापुरुष यशोवन्त दास कोइली मालिका ग्रंथ में लिखते हैं कि जब ओडिशा के जनपदों की संख्या १३ से बढ़कर ३३ हो जाएगी, तब संसार में विपत्ति छा जाएगी।
(कोइलि मालिका, महापुरुष यशोवन्त दास)

जेबे छायासुत रबि कुम्भ घेनि मीनरे प्रबेश हेबे ।
मेदिनी कम्पिब भूमिकम्प हेब भण्ड़ पापी नाशजिबे ॥

अर्थात – जब छायासुत (शनि) रवि कुम्भ को लेकर मीन में प्रवेश करेगा, तब पृथ्वी काँपेगी, भूकंप होगा, और पाखंडी पापी नष्ट हो जाएँगे। **(शिव कल्प, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

मीन शनि जेउँ अंके युक्त हेब जाण श्री नीलाचलकु त्रास करिब दमन ।
सेहि दिनु दमन जे मनरे पाञ्चिब दारु ब्रह्म नेबा पाइँ कलणा करिब ।
देउल कु गन्ताघर करिब दमन श्री पुरुषोत्तम यात्रा करिब खण्डन ।
नबदिन यात्राकु जे दमन नाशिब पुरी तीर्थ घाटमान दमन साधिब ।

अर्थात – मीन शनि जिस अंक में युक्त होगा, तब श्री नीलाचल (जगन्नाथ धाम) पर दमन (विरोधी बल) त्रास करेंगे। उसी दिन से दमन (विरोधी बल) के मन में दारु ब्रह्म को ले जाने की योजना बनेगी। मंदिर को वे गोदाम में परिवर्तित कर देंगे और श्री पुरुषोत्तम (श्री जगन्नाथ) की यात्रा का खंडन (बाधित) करेंगे। नौ दिनों की रथयात्रा को दमन नष्ट कर देगा और पुरी तीर्थ के घाटों को भी वे अपने अधिकार में ले लेंगे। **(भविष्यत परार्ध)**

१. षड़बर्ष ग्रात्रा जे नोहिब नन्दिघोष ।

××××

२. चन्द्र किरण मलिन होइब। सूर्य्यकिरण तेज प्रकाशिब ॥

××××

३. गीता भागबत अनादर हेब सुरासुरींकि चिन्तिबे बाप थाउ पुत्र नाश होइजिब केहि का'कु न मानिबे ।

××××

४. रंग बस्त्रमान करि आभरण गञ्जेइमान टाणिबे बिग्रह पूजाकु सर्बे बरजिबे शून्य ब्रह्म देखाइबे ।

××××

५. कुक्कुटमानंक मुकुटटि धला होइग्रिब जेउँ काल जाणिबु कल्की अबतार हेले सरिला कलिर खेल ।

××××

६. भाइबोहू देढ़शुरंकर परा पीरति होइब ग्रहिं जाणिबु बारंग अल्पकाले कलि छाड़िजिब एहि मही ।

××××

७. ठिकणा बेलकु ठिक न पाइबे बाउलि होइबे जन अधर्मीमानंकु गुरु करिथिबे बहे अणचाश पबन ।
सिद्ध गुरुमाने गुपत होइबे मन्त्र काहाकु न देइ ठिकणा बेलकु ठकरे पड़िबे पामर अनन्त कहि ।

××××

८. जे कालरे मीन खेलिब श्रीक्षेत्रे बाइशि पाबछे जाइ पाहाड़ पराए सागर आसिब नर न रहिबे केहि ।

××××

९. बानरमाने ग्रे कथाबार्त्ता हेबे जाणिबु आगम रीति ।

××××

१०. अणचाश बायु बहिब एमन्त पृथ् टलमल ध्रुब ।

××××

११-१३. अलाबु बृक्षरे तिन्दुक फलिब कपारे फलिब आम्ब अदिनरे वत्स करि द्रुम शिखे बिना फुले हेब शिम्ब ।

××××

१४. आसिब एमन्त पबन बारंग घरद्वार न रहिब लक्ष लक्ष मड़ा भासि जाउथिबे किए बा तांकु खाइब ।
पतंग आसिबे लक्ष लक्ष होइ नर देहकु दंशिबे धर्माधर्ममान न रहिब आउ केहि का'कु न मानिबे ।

××××

१५. दिबसरे परा अन्धार घोटिब सूर्य्य देखादेबे नाहिं ।

××××

१६. कुल स्तिरीमाने बिधर्मी होइबे पर पुरुष सेबिबे ।

××××

१७. बृक्षमाने आउ न फलिबे फल कीट खाइग्रिबे सर्ब ।

××××

१८. निज नारी मुखे बिष देइ पुंस अन्य स्तिरीरे रमिबे ।

××××

१९. भागशेषकु तु चाहिंबु बारंग होइब एमन्त काल अकालरे लिम्ब कड़ आचरिब अकाले आम्ब बउल ।
आकाल कोकिल राबिबे बारंग पुरुष पुत्र प्रसब एमन्त भिआण नोहिले बारंग कलि नाश न होइब ।

××××

२०. अज्ञानीमाने जे ज्ञानी बोलाइबे ज्ञानी होइबे अज्ञानी अधर्मीमाने ग्रे ज्ञानी होइथिबे बोलाइबे ब्रह्मज्ञानी

२१. धण्ड़ा मालगले पुराइ भंगि होइबे लोके । देब अंगी बोलि कहिण आज्ञा करिबे थोके ।११।

१. छः वर्षों तक नन्दी घोष (भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा का रथ है।) की यात्रा नहीं होगी। (सारंगदास मालिका)

२. चन्द्रमा की किरणें मलिन और मंद हो जाएँगी, जबकि सूर्य की किरणें तीव्र प्रकाश से अत्यधिक उष्णता प्रदान करेंगी। (तत्वबोधिनी, महापुरुष अच्युतानंद)

३. लोग गीता और भागवत का अनादर करेंगे, तथा केवल मद्य और स्त्री-सुख की चिंता में लिप्त रहेंगे।

४. रंग-बिरंगे वस्त्र धारण करके लोग गांजा खींचेंगे।

५. मुर्गों की कलगी (मुकुट) श्वेत हो जाएगी।

६. जेठ और बहू के मध्य अनुचित प्रेम-संबंध होंगे।

७. महापुरुष शिशु अनन्त दास कहते हैं कि लोग उचित समय को ठीक से नहीं पहचान पाएँगे और भ्रमित होकर प्रलाप करेंगे। वे अधार्मिकों को ही गुरु मान लेंगे। सिद्ध गुरुजन गुप्त हो जाएँगे और किसी को भी मंत्र नहीं देंगे। युगान्त काल में असंख्य लोग ठगों के शिकार बनेंगे।

८. मछलियाँ श्रीक्षेत्र (जगन्नाथ पुरी) की बैसी पहाचा (२२ सीढ़ियों) तक आकर खेलने लगेंगी, एवं पर्वतों के समान विशाल समुद्र लहरें उठाएगा।

९. वानर आपस में वार्तालाप करेंगे।

१०. उनचास प्रकार की वायु बहेगी एवं पृथ्वी काँप उठेगी।

११. लौकी के वृक्ष में तेंदू का फल लगेगा।

१२. कपास के वृक्ष में आम उग आएगा।

१३. असमय में, वृक्षों पर बिना फूल खिले ही फलियाँ (शिंब) लग जाएँगी।

१४. महापुरुष शिशु अनंत अपने शिष्य बारंग से कहते हैं — ऐसा भीषण पवन चलेगा कि किसी का घर-द्वार शेष नहीं रहेगा। लाखों मृत शरीर बहते हुए दिखाई देंगे और लाखों की संख्या में पतंगे आकर मानव शरीरों को दंश देंगे।

१५. दिन के समय अंधकार के समान व्याप्त होगा, सूर्य दिखाई नहीं देगा।

१६. कुल की स्त्रियाँ अधार्मिक हो जाएँगी और पर-पुरुषों की सेवा करेंगी।

१७. वृक्षों में फल नहीं लगेंगे, और फल को समस्त कीट खा जाएँगे।

१८. पुरुष अपनी ही पत्नी को विष देकर मार डालेंगे और फिर अन्य स्त्रियों के साथ रमण करेंगे।

१९. हे बारंग! तुम कलियुग के अन्तकाल में देखोगे कि असमय नीम के वृक्ष पर फल लगेंगे और आम के वृक्ष पर फूल खिलेंगे। असमय में कोयल कूकेगी और पुरुष संतान को जन्म देंगे। जब तक ऐसे लक्षण प्रकट नहीं होंगे, तब तक कलियुग का नाश नहीं होगा।

२०. अज्ञानी लोग 'ज्ञानी' कहलाएँगे, जबकि वास्तविक ज्ञानीजन अज्ञानी कहलाएँगे। अधर्मी लोग ही ब्रह्मज्ञानी कहलाने लगेंगे।

२१. लोग फूल-मालाओं को अपने गले में पहनेंगे और स्वयं को 'देव-अंगी' (अर्थात कि उनके शरीर में देवी-देवता प्रवेश कर गए हैं) बताकर आज्ञाएँ देने लगेंगे। (लक्ष्मीधर विलास, महापुरुष अच्युतानंद दास)

३–२० (पट्टा मड़ाण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

१. दुष्टजनमाने भक्तकु निन्दिबे महिमा निन्दा होइब महिमा निन्दा होइब रामचन्द्र पृथ्वी पातालकु जिब ।
तेणु करि मोर नियम दुष्टकु न कहिबु गुप्तबाणी मने रखिथाअ बरज कुमर कार्हि न कहिबु पुणि ।

××××

२. बराह क्षेत्रे शुभस्तम्भ थिब । सेठारु रुधिर बाहार हेब ॥
एक बइष्णब सेठारे मिलि । मारुण थिब रहि करतालि ॥
कपटे थिब न जाणिबे केहि । शुभस्तम्भकु खोलिथिब सेहि ॥
किछि पदार्थ घेनि चलिजिब । से दिनु जाणिबु सूचक भाब ॥
टह टह हसि बिराज मात । किछिदिने पृथ्बी हेब उसत ॥

××××

३. टाण महरग पृथ्बी होइब । धान छाड़िण चिना बिक्रीहेब ॥
माण्ड़िआ, कोदुअ, शुआँ, बालुंगा । कांगगेइ खालि भरदम्बा ॥

××××

४. नक्षत्र लज्जा भूमिकम्प हेब । पूर्बदिशरे सागर बढ़िब ॥
खण्ड़प्रलये केते नष्टहेबे । घरुआमाने उजुड़िण जिबे ॥
५-६. गाबमाने भक्षकरिबे बिष्ठा । घृतरे टिकिए नथिब मिठा ॥
दुग्ध, दधि, घृत हीन होइब । टाण महरगे बिकिरिहेब ॥
७. सत नरहिब ग्ने बेपाररे । सारनथिब केउँ पदार्थरे ॥

××××

८. ब्याधिरपरे थोकाए मरिबे । ड़ाकिनीमाने थोकाए नाशिबे ॥
नाल रकतरे थोकाए नाश । केतेर्हें पृथ्बी हेब उश्वास ॥
बायु बेमारिटि घोटिबटि मर्त्त्य । शुण राम धर्म कहुछि सत्य ॥

××××

९. निआँ पाणि सबु बिक्री होइब । कटके सूता कलटि बसिब ॥
समस्ते एक बस्त्ररे बेहार । नाल पाटरे पूरिब संसार ॥

××××

१०-११. झिंकारीमाने जे शस्य खाड़जिबे बुद्धिबाट न खटिब सन्तान जन्मिबे हीनबीर्य्य हेबे पशु संगे तुल्य ध्रुब ॥
एक माताठारु तिनि शिशु जात बिकलांग अंग हेब । कार पाञ्च पाद दुइ तिनि मुण्ड़ कार पिण्ड़ला होइब ॥
जन्म हेबा मात्रे कथा जे कहिब असुर अंशरे जात । देबता बोलिण दर्शन करिबे भोग सम्भाररे मत ॥

××××

१२. घरमानंकरे मड़ा पूरिजिब तोलि न पारिबे केहि श्वानभृगालंक देबसभा हेब नयने देखिबु तुहि ।

××××

१३. चारिदिग जाक अन्धार होइब उत्तरु बहिब हीम
चारिदिन मध्य पृथ्बी नाशजिब अग्निकुण्ड़ न मानिब ।
बारहात दीर्घ बरफ पड़िब माटि न दिशिब कार्हि
चतुर्द्दश दिन द्वार न खोलिब हेतुकर बार पोइ ।
मत्तकारी प्राए दलि पकाइबे छप्नाकोटि रम्भाबन
नदी पुष्करिणी शुष्क होइथिब न मिलिब जल अन्न ।
दशदिने थरे आहार करिबे बरफ शिउलि आणि
मायाबीमानंक प्राण बड़टाण नूआ बोलुथिबे पुणि ।
एते कषणरे चेति न पारिबे तुण्ड़े न आसिब हरि
नाना कलबल एकाले फलिब दण्ड़ देब दण्ड़धारी ।

१. महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं – हे ब्रजकुमार! (रामदास) दुष्टजन भक्तों की निंदा करेंगे, महिमा की निंदा होगी। इसलिए यह मेरा नियम है कि दुष्टों को कोई गुप्त वाणी न कहना; इसे स्मरण रखना।

२. वराह क्षेत्र में एक शुभ स्तंभ होगा, जहाँ से रक्त प्रवाहित होगा। उस स्थान पर एक वैष्णव मिलेगा, जो ताली बजाते हुए वहाँ ठहरेगा। वह कपटता से वहाँ ठहरेगा, कोई जान नहीं पाएगा। वही व्यक्ति उस शुभ स्तंभ को खोलेगा और वहाँ से कुछ पदार्थ निकालकर चला जाएगा। उसी दिन से इस घटना को एक दैवी संकेत के रूप में जानना। उस समय माता बिरजा उच्च स्वर में ठहाका लगाकर हँसेंगी, और कुछ ही समय में पृथ्वी आनंदित हो उठेगी। (संभावना है कि यह पापियों के अंत और धर्म की पुनः स्थापना का संकेत हो।)

३. धरती पर अत्यधिक महँगाई होगी। धान (चावल) को छोड़कर बाजरा (एक प्रकार का मोटा अनाज), मड़िया (रागी), कोदों, साँवाँ, तिन्नी, कंगनी या कौनी बेचा जाएगा।

४. धूमकेतु गिरेगा और भूकम्प आएगा। पूर्वी देशों में समुद्र बढ़ेगा। खंडप्रलय के कारण अनेकों का विनाश होगा। घर-परिवार सब उजड़ जाएँगे।

५. गायें विष्ठा (मल) को खाने लगेंगी।

६. घी में किंचित भी मिठास नहीं बचेगी। दूध, दही और घी दुर्लभ हो जाएँगे। महंगाई इतनी बढ़ जाएगी कि ये पदार्थ अत्यंत ऊँचे मूल्य पर बिकेंगे।

७. व्यापार में सत्य नहीं रहेगा और किसी भी वस्तु में सार या गुण शेष नहीं रहेगा।

८. व्याधियों के कारण बहुतों की मृत्यु होगी। डाकिनियाँ भी बहुतों का विनाश करेंगी। नसों (नाल) से रक्त बहकर अनेक का नाश होगा। धरती पर वायु-जनित बीमारियाँ फैलेंगी।

९. अग्नि और जल सभी वस्तुएँ बिकने लगेंगी।

१०. झींकारियाँ (टिड्डियाँ) फसलों को खा जाएँगी, और लोगों को कोई उपाय या रास्ता नहीं सूझेगा — बुद्धि काम नहीं करेगी।

११. हीन वीर्य शिशुओं का जन्म होगा, जो पशुओं के समान होंगे। एक ही माता से तीन बच्चे जन्म लेंगे, जो विकलांग शरीर वाले होंगे। किसी के पाँच पैर और दो या तीन सिर होंगे, और किसी का मांस का लोथड़ा होगा। किसी के जन्म लेते ही बोलने लगेंगे, क्योंकि वे असुरों के अंश से उत्पन्न हुए होंगे। लोग उन्हें देवता मानकर उनके दर्शन करेंगे।

१२. घरों में शव पड़े रहेंगे और उन्हें उठाने वाला कोई नहीं होगा। उस समय कुत्ते और सियार एकत्र होकर उन्हें खाएँगे।

१३. चारों दिशाओं में अंधकार छा जाएगा और उत्तर दिशा से हिम बहने लगेगा। केवल चार ही दिनों में पृथ्वी पर अनेक विनाश हो जाएँगे। उस समय अग्निकुंड भी अपना प्रभाव नहीं दिखा सकेगा। बारह हाथ लंबी बर्फ गिरेगी और धरती दृष्टिगोचर नहीं होगी। चौदह दिनों तक द्वार नहीं खुलेंगे, लोग पागलों की भाँति व्यवहार करेंगे। नदियाँ और पुष्करिणियाँ सभी शुष्क हो जाएँगी, अन्न और जल कहीं उपलब्ध नहीं होगा। लोग दस दिनों में केवल एक बार भोजन करेंगे वह भी बर्फ और काई (सेवार/हरिता) लाकर। इतने कष्टों में वे चेतना नहीं प्राप्त कर पाएँगे और उनके मुख से हरि का नाम भी नहीं निकल पाएगा। नाना प्रकार के दुःख और यन्त्रणाओं से वे व्याकुल हो उठेंगे। स्वयं प्रभु दण्डधारी सबको उनके कर्मों का यथोचित दण्ड देंगे।

१–११ (कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास), १२–१३ (शिव कल्प, महापुरुष अच्युतानंद)

१. इन्द्र देबता अकृपा करिब संसारकु शुभबृष्टि न देब ।९।
इन्द्र पूजा उठिजिब संसारु जाहा चलि आसुथुला आगरु ।१०।

××××

२. बोहूए बेल प्रहरे पर्य्यन्त शोइथिबे पेटरे देइ हात ।१५।
शाशुमाने बासी काम करिबे निजे कुम्भ घेनि पाणि आणिबे ।

××××

३. असती होइबे अनेक नारी । सती जणे जणे जे थिबे केहि असतीए तांकु करिबे टाहि ।१८।
पर पुरुषे रसिबार पाइँ गृह छाड़ि राते जिबे पलाइ ।१९।

××××

४. पुणि जन्मिबे बहु अलक्षणी पिशाची राक्षसी योग्नि ड़ाकिनी ।
तांक तेजरे स्वामी जिबे मरि बिधबा भाबे दिनथिबे हरि ।२५।
५. बिश्वासरे अबिश्बास करिबे मित्र पत्नी प्रेमे दिन हरिबे ।

××××

६. एक गर्भरु तिनि चारि सुत एक समयरे होइबे जात ।३८।
७. बहुत रोग ब्यापिब संसारे भल नहोइब औषधादिरे ।

××××

८-९. झाड़ा बान्ति बसन्त प्रबल हेब मही भइरबी शब्द परि घड़ घड़ि होइ ।

××××

१०. मर्कट स्वरूप काल ब्यापिब संसारे मूषिक मार्जार श्वान शिबा परकारे ।५०।
प्राणीर अनिष्ट ए करिबे अपार जाणि न पारिबे एहा अबिबेकी नर ।

××××

११. बेश्यामाने गृही नारीमानंकु निन्दिबे धनबन्त लोक देख फान्दे पकाइबे ।

××××

१२. पाप प्रबल होइब जगत मध्यरे गुरुजनंकु प्रहार करिबे कुमरे।

××××

१३. घड़घड़ि शब्द पृथ्बी हेब कम्पमान
दिबस भाबे मिलिब तारा दरशन ।

××××

१४. आहे बीर बर्षकरे तिनि चारिथर चन्द्र सूर्य्य ग्रहण होइब हेतु कर ।

××××

१५. निर्घात शबदे पृथ्बी थर थर हेब परजामानंक हृदे भय उपुजिब ।

××××

१६. खालि मिछरे संसार चलिब सत्यर नथिब सत्ता अलप जाणिण बहुत कहिबे होइनिति भनमत्ता ।६।

××××

१७. गोबध संसारे बहुत होइब गो हरण सेहिपरि
षण्ढ़ मारि मांस खाइबे सानन्दे पापपुण्य न बिचारि ।१।

××××

१८. श्रीधाम मन्दिरु एक पाषाण खसिब दिबसे उल्लुक तार उपरे बसिब ।२४।

××××

१९. कलियुगरे महिमा कहिबाकु ड़र ब्रह्माण्ड़रे पशुबध होइब अपार ।३०।
से मांस बिक्रय हेब सहर बजारे अधर्मकु भय न रहिब का मनरे ।
जणे जणे शत शत गोरु घरे रखि खाइबाकु न देबारु जिबे सेहि शुखि

रहिबा गृह तांकर सफा न होइब दश आठ दिन रंग जाए सेहिपरि थिब ।
घास पाणि तांक मुखे देबे नाहिँ केहि दान कथा आउ बाबु कहिबि किम्पाइँ ।
दाण्ड़रे करिबे गर्ब मोर एते गाई मोह समानरे ए ग्रामरे नाहिँ केहि ।३५।
कीट होइथिले केबे न देखिबे नेत्रे गोरुमाने घाण्टि हेउथिबे मलमूत्रे ।३६।
बिश्वाकरु बशी दुग्ध देबे नाहिँ सेहि । बाछुरीमाने मरिबे खाइबा न पाइ ।३७।
गोरुमानंकु एपरि करिबारु बीर खाइबा पेटकु न पाइबे नीर ।

१. इन्द्र देवता संसार पर कृपा नहीं करेंगे; वे शुभ वर्षा नहीं देंगे। संसार से इंद्र की पूजा उठ जाएगी, जो प्राचीन काल से चली आ रही थी।

२. बहुएँ दिन के समय में भी कई प्रहरों (कई घंटे) तक पेट पर हाथ रखकर सोई रहेंगी, और सासुएँ सारा बासी काम करेंगी — खुद घड़ा लेकर पानी लाएँगी।

३. अनेक स्त्रियाँ असती हो जाएँगी। जो एक-दो सती स्त्रियाँ रहेंगी, उन्हें भी असती स्त्रियाँ ताने मारेंगी। पर-पुरुष की आसक्ति के लिए वे स्त्रियाँ घर छोड़कर रात में भाग जाया करेंगी।

४. अनेक अलक्षणी, पिशाचिनी, राक्षसी और डाकिनी स्त्रियाँ जन्म लेंगी। उनके तेज के कारण उनके पति मृत्यु को प्राप्त होंगे, और वे स्त्रियाँ विधवा रूप में अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

५. लोग, विश्वासघात करेंगे और अपनी मित्र की पत्नि के प्रेम में अपना समय बिताएँगे।

६. एक ही गर्भ से तीन या चार पुत्र एक साथ जन्म लेंगे।

७. संसार में अनेक रोग फैलेंगे, और औषधियों से भी उपचार सफल नहीं होगा।

८. झाड़ा (दस्त) और वान्ति (उल्टी) का रोग, तथा बसंत रोग अत्यंत प्रबल होगा।

९. पृथ्वी में भयावह भैरवी शब्द की तरह घड़घड़ाहट सुनाई देगी।

१०. वानर, चूहा, बिल्ली, कुत्ता और सियार के स्वरूप वाला काल संसार में व्याप्त होगा। ये प्राणियों का अपार अनिष्ट करेंगे, किंतु अविवेकी मनुष्य यह जान नहीं पाएँगे।

११. वेश्याएँ गृहिणी स्त्रियों की निंदा करेंगी, और धनवान लोगों को देखकर उन्हें अपने जाल में फँसाएँगी।

१२. जगत में पाप अत्यधिक प्रबल हो जाएगा; बालक अपने ही गुरुजनों पर प्रहार करेंगे।

१३. दिन के समय में भी तारे दिखाई देंगे।

१४. एक ही वर्ष में तीन से चार बार चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण होंगे।

१५. निर्घात शब्द से पृथ्वी थरथर होगा, और प्रजा के हृदय में भय उत्पन्न हो जाएगा।

१६. संसार केवल मिथ्या पर चलेगा; सत्य की सत्ता नहीं रह जाएगी। लोग अल्प ज्ञान रखकर बहुत अधिक बोलेंगे, और स्वयं को नीतिवान समझते हुए उन्मत्त हो उठेंगे।

१७. संसार में गोवध अत्यधिक होगा, और गौ-हरण भी उसी प्रकार से बढ़ेगा। बैल (षण्ढ) को मारकर लोग आनंदपूर्वक मांस खाएँगे, बिना पाप-पुण्य का विचार किए।

१८. भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं— मेरे श्रीधाम से एक पत्थर नीचे गिरेगा, और दिन के समय उल्लू आकर उस पर बैठेगा।

१९. प्रभु श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — "हे अर्जुन! कलियुग में अपार पशुवध होगा। नगरों और बाज़ारों में खुलेआम मांस की बिक्री होगी, और अधर्म का भय किसी के मन में नहीं रहेगा। कुछ लोग एक-एक घर में सौ-सौ गायें रखेंगे, पर उन्हें खाने के लिए नहीं देंगे, जिससे वे गायें सुख जाएँगी। जहाँ गायें रहेंगी, वह स्थान आठ-दस दिनों तक भी साफ़ नहीं होगा और उसी अवस्था में रहेगा। उन्हें घास-पानी तक नहीं देगा, और न ही उनके लिए दान करेगा। फिर भी ऐसे लोग मार्ग में गर्व से कहेंगे— "

मेरे पास इतनी सारी गायें हैं, मेरे समान इस गाँव में कोई नहीं है।' गायों को कीड़े लग जाएँगे, पर वे उन्हें देखेंगे तक नहीं। वे गायें मल-मूत्र में सनी हुई पड़ी रहेंगी। गायों की बछड़ियों को दूध नहीं दिया जाएगा, जिससे वे भूख से मर जाएँगी। और गायों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार करने के परिणामस्वरूप मनुष्य को पीने के लिए पेट तक में जल भी सुलभ नहीं होगा।"

१–१९ (चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद)

१. स्थाने स्थाने भूमिकम्प होइबारु कम्पिजिब हिमगिरि गृह बृक्ष केते स्थानु भांगिगले होइजिब हतशिरी ।

××××

२. नाना रोगमान प्राणींक शरीरे दिनकु दिन ग्रासिब अति आचम्बित जिनिष जे दुरदेशु पाशकु आसिब ।२०।

××××

३. ग्रीष्मर उत्ताप बढ़िब अनेक तृणमाने जिबे जलि अग्नि बृष्टि प्राय प्राणींकु लागिब जाणिथाअ फाल्गुनि ।

××××

४. स्तिरींक प्रभाब बढ़िब अर्जुन बसिबे जाइँ सभारे धर्म न्याय पूर्ण सत्य शान्ति दया रखि निज हृदयरे ।२४।

××××

५. कल्पबटु शाखा छिड़ि पड़िब से काले नाना अकर्म मान हेब क्षेत्रबरे ।१८।

××××

६. पन्दर जाइण जेबे सतर होइब पूर्बदिगुँ पाराबार माड़िण आसिब ।२२।
लबण तापरे कृषिमान जिब जलि प्राणीमाने ड़ाकुथिबे रख बनमाली ।
सेहि दिनरु दुर्भिक्ष पड़िब अर्जुन बहुत अभाब से कालरे हेब धन्य ।२३।

××××

७. मानबमाने जन्मिबे होइ सान सान मूषा छुआ प्राय देखाजिबे अपघन ।
८. बामन होइण पुणि जन्म हेबे केते बेशि जेबे बढ़िबे होइबे बेनिहाते ।

××××

९. रोगचिह्न न पारिबे बैद्यमाने पार्थ बड़िमा पणरे हृदे मारुथिबे हात
गछ मूले औषध से चिह्नि न पारिबे एणु तेणु आणि निजे करिछु बोलिबे ।३५।

××××

१०. पाठ पढ़ि जेहु जेते हेलेहें बिद्यान धन अर्जिबारे सर्बे बलाइबे मन ।३६।

××××

११. दरिद्र मानब जेबे मागिबाकु जिबे अति हीन नयनरे ताहांकु देखिबे ।३८।

××××

१२. अलस पणरे केते प्राणी हेबे दुःखी देह न सहिब पुणि परधन देखि ।४०।
१३. मिछ कथा सत बोलि देबे सेहु कहि धन लोभे साक्षी हेबे राजद्वारे जाइँ ।

××××

१४. भगबिक्रय करिबे केते नारीगण प्रथमरे पुरुषंकु देखाइ यौबन ।५३।

××××

१५. नारीमाने स्वामी मुण्डे पाद प्रहारिबे निज भर्त्ता थाउँ पर पुरुषे मज्जिबे ।

××××

१६. सभारे बसिण सत्य जे न कहे पुणि पक्षपात करे जाण धनञ्जय सेहि प्राणीमाने जिबे बिरजा खर्परे ।६।

××××

१७. बिटपी पराये हेबे नारीमाने गुरुजनंक आगरे कर कर हसि कथा परे कथा प्रकाशिबे उच्चस्वरे।१७।

××××

१८. एका सूर्य्यरे पाञ्चथर आहार करिबे कलिरे नरे ।

१. स्थान-स्थान पर भूकंप होंगे, जिससे हिमगिरि (हिमालय) तक काँप उठेगा। घरों और वृक्षों के अनेक स्थानों से टूटने पर यह पृथ्वी शोभाहीन (हतश्री) हो जाएगी।
२. विभिन्न प्रकार के रोग प्राणियों के शरीर में दिन-प्रतिदिन प्रवेश कर उन्हें ग्रसते रहेंगे। अत्यंत आश्चर्यजनक वस्तुएँ दूरदेश से पास में आ पहुँचेंगी।
३. ग्रीष्म की तीव्रता बढ़ेगी, बहुत-से तृण (घास-पत्तियाँ) जल जाएँगे। फाल्गुन में अग्निवर्षा के समान ताप प्राणियों को लगेगा।
४. प्रभु श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — हे अर्जुन! स्त्रियों का प्रभाव बढ़ेगा। वे अपने हृदय में धर्म, न्याय, सत्य, शांति और दया को धारण कर सभाओं में जाकर बैठेंगी।
५. कल्पवट का शाखा टूटकर गिर पड़ेगा, और श्रीक्षेत्र में अनेक अकर्म घटित होंगे।
६. प्रभु श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — हे अर्जुन! जब १५ अंक बीत जाएगा और १७ अंक आएगा (संभवतः यह संकेत मुकुन्द देव चतुर्थ के समय की ओर है), तब पूर्व दिशा से समुद्र चढ़ता हुआ आएगा। समुद्र की नमकयुक्त तपिश से कृषि भूमि नष्ट हो जाएगी। इस समय सभी प्राणी कष्ट में आकर पुकारेंगे: "हे बनमाली (प्रभु श्रीकृष्ण), हमें इस विपत्ति से बचाइए!" उसी दिन से भयंकर अकाल/दूर्भिक्ष आरंभ हो जाएगा। लोगों को अन्न नहीं मिलेगा। चारों ओर भूख, अभाव और त्रासदी व्याप्त हो जाएगी।
७. छोटे-छोटे होकर मनुष्य जन्म लेंगे और उनका शरीर के अंग/शरीर चूहे के बच्चे के समान दिखाई देगा।
८. अनेक बौने लोग जन्म लेंगे और जब वे बड़े होंगे, उनका शरीर केवल लगभग दो हाथ (लगभग तीन फीट) लंबा होगा।
९. हे पार्थ! वैद्यजन रोगों के लक्षणों को पहचान नहीं पाएँगे। वे गर्वपूर्वक हृदय पर हाथ रखकर केवल अनुमान से कहेंगे। वृक्षों की जड़ों में जो औषधियाँ विद्यमान हैं, उन्हें भी वे पहचान नहीं सकेंगे। फिर इधर-उधर से कुछ भी लाकर यह कहेंगे — "यह औषधि हमने स्वयं बनाई है।"
१०. चाहे कोई कितना भी पाठ पढ़ ले, विद्वान बन जाए — परंतु सभी का मन केवल धन अर्जन की ओर ही प्रवृत्त रहेगा।
११. जब कोई दरिद्र व्यक्ति कुछ माँगने के लिए जाएगा, तो लोग उसे अत्यंत हीन दृष्टि से देखेंगे।
१२. कलियुग में मनुष्य अत्यंत आलसी हो जाएगा। उस आलस्य के कारण अनेक लोग दुःख से पीड़ित रहेंगे। जब वे दूसरों के धन और वैभव को देखेंगे, तो उनके भीतर जलन, ईर्ष्या और असंतोष इतना बढ़ेगा कि उनका तन-मन उसे सहन नहीं कर पाएगा।
१३. लोग झूठ को सत्य बताकर बोलेंगे, और धन के लोभ में न्यायालयों, प्रशासनिक संस्थानों एवं शासकीय दरबारों में जाकर झूठी गवाही देंगे।
१४. कई स्त्रियाँ पहले पुरुषों को अपना यौवन दिखाकर भोग का विक्रय करेंगी।
१५. स्त्रियाँ अपने पतियों के सिर पर पैर से प्रहार करेंगी, और अपने ही पति को छोड़कर पर-पुरुषों में आसक्त हो जाएँगी।
१६. हे धनंजय! जो सभा में बैठकर भी सत्य नहीं बोलते, और पक्षपात करते हैं — ऐसे लोग बिरजा के खप्पर में पड़ेंगे।
१७. नारियाँ कुलटा (व्यभिचारिणी) स्वभाव की हो जाएँगी। वे गुरुजनों के सामने 'कर कर' अर्थात् ठहाके लगाकर हँसेंगी, और ऊँचे स्वर में बातों पर बातें करती चली जाएँगी।

१८. कलियुग में नर एक ही दिन में पाँच बार आहार करेगा।

१–१८ (चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद)

१. दले बाहारिबे नास्तिक ए भबे मुँ नाहिँ बोलि कहिबे
देश बिदेशरे भ्रमि दिन राति लोकंकु ए शिक्षा देबे ।

××××

२. दिबस भागे कुहुड़ि घोटिब प्रबल बृक्षमानंकरे तहुँ न फलिब फल ।१०।

××××

३. इन्द्र देबता अल्प करिब बरषश
तेणु प्राणीमानंकर उड़िजिब हंसा
पुणि इन्द्र बिशेष भाबरे बर्षा करि
जलार्ण्णब हेब खण्ड खण्ड बसुन्धरी ।
तेणु शस्य हानि हेउथिब संसाररे
प्राणीमाने एका कष्ट न लभि शयले ।१५।

××××

४. ओड़िशारे बड़ बन्ध तिआरि जे थिब सेइबेले शत्रुद्वारा भांगिण ग्रे जिब ।
ओड़िशारे छअ जिल्ला जलार्ण्णब होइ जिबापाइँ बाट न पाइबे पुणि केहि ।
सम्बल ग्रामरे थाइ हरि जे जाणिबे निज जन्मस्थान बोलि केतेटा रखिबे ।
हीराकुद बोलि ग्रामर जे नाम थिब बन्धबाड़ भांगि सबु एक जे होइब ।
एहिबेले गंगा पुणि आसिबे जे माड़ि बैतरणी, ब्राह्मणी जे देबे पुणि रड़ि ।
सात समुद्रर पाणि होइ एकमेल भसाइ नेब पुणि जे जाहार सम्बल ।
महानदीर एक कुद रहिथिब खालि घोड़ाटापुरे चिह्नमान पड़िथिब बालि ।
रक्तरनगरे पाणि नालि जे दिशिब योग्नीगणंकर खाँ खाँ शब्द जे शुभिब ।

××××

५. बैज्ञानिक यन्त्रमान अचल होइब हरिंकर चक्र खालि घूरुण जे थिब ।

××××

६. आहुरि कथाए रामचन्द्र शुण तुहि लुंगीपिन्धा सार हेब कलिरे जे सेहि ।
बेकरु मालिकु सबु छिण्ड़ाइण देबे कुकुड़ा अण्ड़ा जे कारबार करुथिबे ।
बेकरे मालि जे आउ केहि न नाइबे पड़ता छिण्ड़ाइ ख्रीष्टियान बोलाइबे ।
धर्म अधर्म बिचार नथिब काहारि कालमुखे पड़ि एमाने जे जिबे पुणि मरि ।

××××

७. सातदिन अन्धकार हेब जे महीरे स्तिरींकर गला फाटिजिब से रात्ररे ।
निजे सेइ य़ोग्निरुपे करिबे बिनाश बुझाइ कहिलि एबे शुण रामदास ।
आहुरि कथाए बाबु शुण रामदास बाप पुअंकर कलि लागिब अबश्य ।
बाप पुअ हणाहणि हेबे जे महीरे एहिपरि हणाहणि हेबे दुनिआरे ।
शुण रामचन्द्र तुहि मोहर बचन जेउँ सातरात्र हेब कहुछि तु शुण ।
अन्धकारे काहाकु जे देखाहेब नाहिँ सेतिकिबेलरे योग्नी खाइबे गोड़ाइ ।
घरे थिबे जेते सबु अत्याचारी नारी सेतिकिबेले नाचिबे कालीरूप धरि ।

××××

८. बिशान पबन बहिब गहन आसक्त लोक होइबे बिशान पबन बहिब भुबन पापीमाने नष्ट हेबे ।
कान्तानी गुपते भ्रमण करिबे मरुत रुपे बहिबे य़ोग्निगण सबु एकाठि बुलिण द्वारे द्वारे ग्रे मिलिबे ।
अदृश्य़रे थिबे देखि जे नोहिबे प्राणींकि नाशिबे रहि दुष्टंक गर्भरे पशिबे निर्भरे मलत्याग बान्ति होइ ।
बिषम गहन बहिब पबन आशक्त लोक होइबे कुढ़ कुढ़ होइ पड़िबे से मही बहु जन नष्ट जिबे ।

१. कलियुग में नास्तिक लोग झुंडों में बाहर निकलेंगे और यह कहेंगे कि इस संसार में कोई भगवान नहीं है। वे देश-विदेशों में दिन-रात भ्रमण करते हुए लोगों को यही शिक्षा देंगे।
२. दिन के समय घना कोहरा छा जाएगा, जिससे वृक्षों में फल नहीं फलेंगे।
३. इन्द्र देव बहुत ही कम वर्षा करेंगे, जिसके कारण प्राणियों का प्राणवायु उड़ जाएगा। फिर इन्द्र विशेष रूप से एक ही बार में अत्यधिक वर्षा करेंगे, जिससे पृथ्वी के विभिन्न भागों में समुद्र के समान जल से भर जाएंगे। फलतः संसार में फसलें नष्ट हो जाएँगी, और प्राणीजन जर्जर और असहाय हो जाएँगे।
४. ओडिशा में एक बड़ा बाँध निर्मित रहेगा, जिसे समय आने पर शत्रुबल द्वारा तोड़ दिया जाएगा। उस कारण ओडिशा के छह जिले जलमग्न हो जाएँगे और वहाँ से निकलने का कोई मार्ग किसी को नहीं मिलेगा। उस समय प्रभु श्रीहरि अपने भक्तों को सुरक्षित बाहर निकालेंगे। हीराकुद नामक ग्राम के नाम पर जो बाँध बनाया जाएगा, वह टूट जाएगा और सब कुछ एकसाथ जल में समा जाएगा। उस समय गंगा, वैतरणी और ब्राह्मणी नदियों का जल एक साथ उमड़ पड़ेगा। सात समुद्रों का जल एकाकार होकर संगठित होगा, और लोगों का संबल (आश्रय, सुरक्षा) बहा ले जाएगा। केवल महानदी का एक ऊँचा भूभाग (कुद) शेष रह जाएगा, जहाँ बालुचरों पर घोड़े के खुरों के चिन्ह दिखाई देंगे। उस समय नदियाँ और नाले का जल रक्तरंजित दिखाई देंगे, और योगिनियों की "खा-खा" ध्वनि गूंजेगी।
५. वैज्ञानिक यंत्र अचल (निष्क्रिय) हो जाएँगे, और केवल हरि का चक्र घूमता रहेगा। (ऐसा समय आएगा जब सभी आधुनिक वैज्ञानिक यंत्र – जैसे उपग्रह, कंप्यूटर, रडार, इंटरनेट, या संचार उपकरण – जो आज मानव के अभिमान और सहारा बन चुके हैं– सब अचानक निष्क्रिय (अचल) हो जाएँगे, अर्थात काम करना बंद कर देंगे।)
६. महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र से कहते हैं – "हे रामचंद्र! एक और बात ध्यान से सुनो — कलियुग में लुंगी पहनना लोगों का व्यवहारिक सार बन जाएगा। गले की माला को तोड़कर लोग मुर्गी और अंडे का व्यापार करेंगे। लोग गले में माला धारण नहीं करेंगे, यज्ञोपवीत (जनेऊ) को तोड़कर वे लोग स्वयं को ख्रीष्टियान (ईसाई) कहलवाएँगे। धर्म और अधर्म का किसी को कोई विचार नहीं रहेगा, और ये सब लोग काल के मुख में पड़कर मृत्यु को प्राप्त होंगे।"
७. महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं — "हे रामदास! सुनो, जब पृथ्वी पर सात दिन और सात रात घना अंधकार छा जाएगा, तब स्त्रियों का गला फट जाएगा और वे उस रात्रि में स्वयं योगिनी रूप में विनाश करेंगी। और एक बात सुनो — कलियुग में पिता और पुत्र के बीच कलह उत्पन्न होगा। पिता और पुत्र एक-दूसरे से मार-काट करेंगे और ऐसा मार-काट पूरी दुनिया में दिखाई देगा। हे रामचंद्र! मेरे इन वचनों को सुनो — वह सात रात्रियों का समय जब आएगा, तब अंधकार इतना गहन होगा कि किसी को कुछ भी दिखाई नहीं देगा। उस समय योगिनियाँ लोगों को पकड़कर खा जाएँगी। और उस समय जिन-जिन घरों में अत्याचारी स्त्रियाँ रहेंगी, वे सब काली रूप धारण करके नृत्य करेंगी।"
८. प्रचंड पवन संसार में बहने लगेगा, जिससे पापी लोग नष्ट हो जाएंगे। कान्तानी गुप्त रूप से भ्रमण करेंगी और मरुत रूप में प्रवाहित होंगी। योगिनियाँ सभी एकत्र होकर द्वार-द्वार पर विचरण करेंगी। वे अदृश्य रूप में रहेंगी, जिन्हें लोग देख नहीं सकेंगे। वे दुर्जनों के गर्भ में प्रविष्ट होकर मलत्याग और

वमन की स्थिति उत्पन्न करेंगी। भयानक और घना पवन बहने लगेगा, लोग उसमें आकुल और व्याकुल हो उठेंगे, और तड़पते हुए धरती पर गिर पड़ेंगे। अनेक लोग इस आपदा में नष्ट हो जाएंगे।

१–३ (चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद), ४–८ (महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित)

१. दुष्टजनंक सभामान बहुत होइब ग्रामे ग्रामे त ।११३।
बड़ लोकंकु जे सभाकु न ड़ाकि बालके करिबे सभा ।
सभा मध्यरे जे मिछ बखाणिबे अधर्म केते कहिबा ।११४।

××××

२. शते गाबर जे दुग्ध एकभार नोहिब जे कलिकाल।
३. घृत गुड़ इक्षु बास जे तुटिब लागिब सेहु आम्बिल ।१२६।
४. चन्दन फुलर बास जे तुटिब चिन्ता ज्वरे प्राणी-नाश ।

××××

५. अबढ़ा संगते शुखुआ पोड़िण खाइबे महत जन ।
साक्षाते गो-मांस मल जे खंकार भक्षइ माछ यतन ।३५६।
एड़े अपराध कैबल्य संगते करिबे जे प्राणीमाने ।

××××

६. पंक बरषिब आहो अर्जुन। जल संगे बृष्टि हेब पाषाण ॥

××××

७. पृथ्बी रोदन करिब करिब बसि। कलिकाल ताकु जिबटि गासि ॥
घन घन कम्पिब ता देह । भूमिकम्पे लोके पाइबे भय॥
केते घर द्वार भांगि पड़िब। समुद्ररु पाणि उठि आसिब ॥
मरिबे तहिँरे बहुत जन। मनुष्य करिबे भूत जनम ॥

××××

८. शिबज्बर बिष्णुज्बर ए दुहेँ । ग्रासिजिबे आसि लोकंक देहे ॥
दिनक मध्यरे हरिबे प्राण । रखि न पारिबे रेषज गण ॥

××××

९. कन्याकु बिक्री करिबे पिअर । बदल करि हेब बिभाघर ॥

××××

१०. पूर्बर नक्षत्र ग्रेतेक थिब । नक्षत्र सबु गोप्यान होइब ॥
आकाश नक्षत्र मञ्चकु आसि । तेइशि अंकरे पड़िब खसि ॥
नूआ नक्षत्र ग्रे होइब पुण । तेणु जे एमन्त होइब गुण ॥

××××

११. ध्रुब नक्षत्र होइब अदृश्य ॥

××××

१२. कुल स्थिरीमाने बिटपी हेबे । यउबन बिकि पेट पालिबे ॥
लाज संकोचमान दूर हेब । जाति कुल धर्म किछि नथिब ॥

××××

१३. इन्द्र बरषा करिबे रकत ॥

××××

१४. ब्याधि होइण पिशाची आसिबे । प्राणीमानंकु गुपते दंशिबे ॥
नालशूला संगे रकत ब्याधि । घरकु घर पकाइब शोधि ॥

××××

१५. मेघ बरषा फिरिफिरि हेब । बज्राघातरे मनुष्य मरिब ॥

××××

१६. घुमारोग प्रकाशिब मनुष्य मानरे । घरे घरे कुढ़ कुढ़ मरिबे अपारे ॥

××××

१७. गोरु जे मनुष्यमाने हेबे सान सान । कञ्चा सिझा माएंस भुञ्जिबे भोके जन ॥
गोरुंकु हो न मिलिब चरिबाकु द्रोण । घृतसेर मूल्य हेब चतुर्थ काहाण ॥
छेलि मेण्ढ़ा प्राये गाई अति सान हेबे । अभक्ष भक्षण करि अल्प क्षीर देबे ॥

१. कलियुग में गाँव-गाँव में दुष्ट लोगों की सभाएँ बहुत अधिक होंगी। वे सभाएँ बड़ों जनों को आमंत्रित किए बिना, बालक द्वारा संचालित की जाएँगी। उन सभाओं के भीतर झूठ बोला जाएगा, और अधर्म किया जाएगा।

२. सौ गायों के होने पर भी बहुत ही अल्प मात्रा में दूध मिलेगा।

३. घी, गुड़ और इक्षु की सुगंध (खुशबू) भी समाप्त हो जाएगी, और वह खट्टा लगेगा।

४. चंदन फूलों की सुगंध भी खत्म हो जाएगी, और चिंता तथा ज्वर के कारण प्राणियों का नाश होगा।

५. कलियुग में कुछ सम्मानित माने जाने वाले व्यक्ति, जगन्नाथ महाप्रभु के महाप्रसाद के साथ सूखी मछली जलाकर खाएँगे; और प्रत्यक्ष रूप से गौमांस, मल तथा मछली का स्वाद लेकर उसका भक्षण करेंगे। ऐसा जघन्य अपराध महाप्रसाद के साथ मिलाकर प्राणियों द्वारा किया जाएगा।

६. कलियुग के अंतकाल में ऐसा समय आएगा जब आकाश से केवल जल (पानी) ही नहीं गिरेगा, बल्कि उसके साथ कीचड़ (पंक) और पत्थरों की वर्षा भी होगी।

७. जब कलियुग अपनी चरम सीमा पर पहुँचेगा, तब यह पृथ्वी दुख से बैठकर रोएगी। बार-बार धरती का शरीर काँपेगा — अर्थात बार-बार भूकंप आएँगे। भूकंप होंगे और लोग भयभीत हो उठेंगे। कई घर ध्वस्त हो जाएँगे और समुद्र की लहरें नगरों पर चढ़ आएँगी। इन आपदाओं में असंख्य लोग मारे जाएँगे।

८. शिव-ज्वर और विष्णु-ज्वर दोनों आकर मनुष्यों के शरीर को ग्रसित कर लेंगे, और एक दिन के मध्य में ही उनके प्राण हर लेंगे। वैद्यजन भी उन्हें बचाने में असमर्थ रह जाएँगे। (शिव ज्वर भगवान शिव का अस्त्र है जो अत्यधिक गर्मी पैदा करता है। जबकि विष्णु (नारायण ज्वर) भगवान विष्णु का अस्त्र है जो अत्यधिक ठंड पैदा करता है।)

९. पिता अपनी कन्या को बेचेंगे, और विवाह के बदले में लेन-देन (सौदा) होगा।

१०. पूर्व के जितने भी नक्षत्र होंगे, वे सारे नक्षत्र गोपनीय हो जाएँगे। आकाश के नक्षत्र मंच पर आकर तेईस अंक में गिरेंगे तत्पश्चात नए नक्षत्रों का उदय होगा।

११. ध्रुव नक्षत्र अदृश्य हो जाएगा।

१२. कुल की स्त्रियाँ व्यभिचारिणी बन जाएँगी। वे अपना यौवन बेचकर पेट पालेंगी। लज्जा और संकोच की भावना समाप्त हो जाएगी। न जाति का भान रहेगा, न कुल का, और न ही धर्म का कोई अनुसरण किया जाएगा।

१३. इंद्रदेव रक्त की वर्षा करेंगे।

१४. रोग के रूप में पिशाचिनी आएँगी और प्राणियों को गुप्त रूप से डसेंगी। नालशूल (अर्थात आंतों या किसी शरीर की नली में उत्पन्न पीड़ा) और रक्त संबंधी रोगों के साथ वे घर-घर फैलेंगी और लोगों को भीतर से पीड़ा पहुँचाएँगी।

१५. बादल धीरे-धीरे टप-टप (फिरि-फिरि) करके वर्षा करेंगे; और बिजली गिरने से मनुष्य मरेंगे।

१६. मनुष्यों में घुमारोग प्रकाशित होगा, और लोग घर-घर में पीड़ा से तड़प-तड़पकर अपार संख्या में मरेंगे।

१७. गायें और मनुष्य छोटे-छोटे हो जाएंगे। लोग भूख से विवश होकर कच्चा-पका मांस खाएँगे। गायों को चरने के लिए तृण या घास नहीं मिलेगा। घी का मूल्य अत्यंत महँगा होगा। बकरी और भेड़ा के समान छोटी हो जाएँगी गाएँ। वे निषिद्ध वस्तुएँ खाकर बहुत थोड़ा दूध देंगी।

१–१५ (तत्त्वबोधिनी, महापुरुष अच्युतानंद), १६ (भक्त चंद्रिका), १७ (भक्तिमुक्तिदायक गीता, महापुरुष शिशुअनंत)

१. माछ माउँस मदिराकु खाइ नाना बामपूजा करिबे रहि ॥

××××

२. क्षीर मधु गुड़ कन्द आम्बिल लागिब ।

××××

३. कामांगि होइबे नारीबश। नर पितामातांकु मारिबे ।

××××

४. लो कोइलि- चल चञ्चल समस्ते होइबे, पिता मातांकर सेबा केहि न करिबे लो कोइलि ।७।
लो कोइलि – नारी पुरुष चिह्नि न पारिबु, दूररु देखिले तुहि समान मणिबु लो कोइलि ।९।
लो कोइलि– बोहू गर्भरे शिशुर पुणि रेत देब, सेहिदिन ठारु महा बिपत्ति पड़िब लो कोइलि ।१०।
लो कोइलि- जल पाइँ बिबाद होइब, जल बहुल होइण सृष्टि नाश हेब हेब लो कोइलि ।१६८।
लो कोइलि– शरीर शुद्धि काहार नथिब, शिशु हत्या भृण हत्या संसारे ब्यापिब लो कोइलि ।१९।
लो कोइलि - गोमातार दुःख कथा शुण, बुढ़ि होइले पठाणकु बिकिबे ब्राह्मण लो कोइलि ।७०।
लो कोइलि- गंगा नदी अपूज्य होइब, अपबित्र द्रब्य सदु नदीरे पड़िब लो कोइलि ।१८३।
लो कोइलि- देबी नदी धार शुखिग्रिब, जल पाइँ प्रजामाने बिकल होइबे लो कोइलि ।६०।
लो कोइलि- सर्ब नदी अपूज्य होइब, बिनाश पदार्थ सबु नदीरे पड़िब लो कोइलि ।६१।

××××

५. अचिह्ना रोग ब्यापिब संसारे बैद्यमाने पड़िजिबे भ्रमरे ।१०।
औषधादिरु हेब रसहीन तहिँरु केभें न मिलिब गुण ।
बसन्त ब्यापिब सचराचर संगे कफ पित्त बिकार ।
प्रति घरे कन्दल उपुजिब पुणि होइबे अर्थ अभाब ।
अपस्मार मृग गुल्म कामल ता संगरे थिब ज्वरातिसार ।१४।
प्रमेह बिचर्च्चिका आदि रोग प्राणीए बहु करुथिबे भोग ।१५।

××××

६. कलापाहाड़ बोलिण एकइ ब्राह्मण । दमन कर्मकु सेहि आचरिब जाण ।१०३।
नब सस्र संगतरे घेनिण पठाण । बंगला ओड़िशा सबु करिब समान ।१०४।
आलम बादसाकु से संगे घेनिजिब । देबनागरीकु जाइ देबता नाशिब ।१०५।
ओड़िशारे ठाबे ठाबे बसाइब ग्राम । जमिबाड़ि देइ यत्न रखाइ पठाण । १०६।
किछिदिन राजुति से करिब संसारे । वेद बिदित किछि से न रखिब ढ़ाले ।१०७।
देउल अट्टालि मण्ड़प भांगिजिब सर्ब । दशरथ शून्य ताकु भोग जे करिब ।१०८।
पोषे यशमान खइरात न रखिब । किछिदिन राजुति करिण छाड़िजिब ।१०९।
मरहट्टा बोलि एक सुबासे अटइ । रघु भोसले बोलि ता नाम जे अटइ ।
नागपुर ओड़िशा बंगला सर्ब नेइ । गो–ब्राह्मण रक्षाकरि धर्म स्थापिबइँ ।१११।
शते बरष मोगल राजुति करिब । ब्रह्मत्व देखाइ सेहि सर्ब हरिथिब ।११२।
मरहट्टा आसि खइरात पुणि देब । ठाबे ठाबे देबा देबी पूजा से करिब ।
सेहि खइरात देइ धर्मकु स्थापिब । जीबमध्य मनुष्यकु धर्मे चळाइब ।११४।
एहा उत्तारे पुणि फिरिंगी आसिजिब सर्बदेश जय करि धर्मकु स्थापिब ।११५।
जीब मधे मनुष्यकु दया से स्थापन । परस्तरी परधन न रहिब जाण ।११६।

××××

१. मांस, मछली, और मदिरा का सेवन करके लोग विविध प्रकार की वामपूजा (तांत्रिक उपासना) करेंगे और उसमें लगे रहेंगे। (महिमा लेखन भबिष्यान्त, महापुरुष जगन्नाथ दास)
२. दूध, शहद, गुड़, कंद खट्टे लगेंगे। (उलट भबिष्य चउतिषा, महापुरुष दीनकृष्ण दास)
३. भावार्थ – कलियुग के अंत समय में मनुष्य की कामवासना (कामाग्नि) इतनी तीव्र होगी कि वह स्त्री के आकर्षण में विवेकहीन हो जाएगा। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी और वह अपने कर्तव्यों और धर्म को भूलकर — यहां तक कि अपने माता-पिता जैसे पूजनीय संबंधों को भी मारेंगे। (आर्त्तदास मालिका)
४. (1) सभी लोग चंचल और अस्थिर हो जाएँगे, कोई भी अपने माता-पिता की सेवा नहीं करेगा।
(2) नारी और पुरुष को पहचाना नहीं जा सकेगा, दूर से देखने पर दोनों एक समान प्रतीत होंगे।
(3) जब बहू के गर्भ में ससुर वीर्य देगा, उसी दिन से महाविपत्ति पड़ेगी। (कलियुग में जब नैतिकता पूरी तरह नष्ट हो जाएगी, तब कुछ घरों में ऐसी अपवित्र घटनाएँ होंगी जहाँ रिश्तों की मर्यादा टूट जाएगी। जब एक ससुर अपनी ही बहू के गर्भ में वीर्य डालने जैसा अधर्म करेगा — तभी से समाज में महाविनाशकारी विपत्तियाँ उत्पन्न होंगी।)
(4) कलियुग में जल जैसे मूलभूत संसाधन के लिए भी लोग आपस में झगड़ने लगेंगे। वहीं दूसरी ओर, कुछ स्थानों पर जल इतना अधिक हो जाएगा (बाढ़, सागर उठान आदि), कि वही जल विनाश का कारण बनेगा और सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाएगा।
(5) किसी का भी शरीर शुद्ध नहीं रहेगा, शिशु हत्या और भ्रूण हत्या संसार में फैल जाएगी।
(6) गोमाता का दुःख सुनो — जब वह वृद्ध हो जाएगी, तब ब्राह्मण उसे पठानों को बेच देंगे।
(7) गंगा नदी अपूज्य होगी, अपवित्र पदार्थ सभी नदी में गिरेंगे।
(8) देवी नदी का प्रवाह सूख जाएगी, और जल के लिए प्रजाजन व्याकुल हो जाएँगे।
(9) सभी नदियाँ अपूज्य हो जाएँगी, और विनाशकारी पदार्थ सभी नदियों में गिरेंगे।
५. अचिह्ना रोग (अज्ञात रोग) संसार में फैलेगा, वैद्यगण (चिकित्सक) भ्रम में पड़ जाएंगे। औषधियाँ रसहीन (प्रभावहीन) हो जाएँगी, उनमें कोई गुण या उपचार क्षमता नहीं रहेगी। बसंत (संक्रामक रोग, जैसे चिकनपॉक्स या स्मॉलपॉक्स) व्यापक रूप से फैलेगा और उसके साथ कफ और पित्त के विकार भी उत्पन्न होंगे। घर-घर में कलह, झगड़े और मानसिक अशांति का वातावरण रहेगा। इसके साथ ही लोगों को आर्थिक तंगी और धन की भारी कमी का सामना करना पड़ेगा। अपस्मार (मिर्गी), गुल्म (गाँठें/अंदरूनी सूजन), कामल (पीलिया) के साथ-साथ ज्वरातिसार भी व्याप्त होंगे। प्रमेह (मधुमेह), विचर्चिका (चर्मरोग, विशेषकर फोड़े-फुंसी या दाद-खाज) आदि अनेक रोगों को प्राणी बहुत मात्रा में भोगेंगे।
६. (1) महापुरुष शिशुअनंत दास ने आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व अपने शिष्य बारंग से बताया था कि 'कलापाहाड़' नामक एक ब्राह्मण सनातन हिन्दू धर्म के विरुद्ध 'दमन' कर्म का आचरण करेगा। वह अपने साथ नौ हज़ार पठानों और आलम बादशाह को लेकर देवताओं की मूर्तियों को तोड़ेगा। कलापाहाड़ ओड़िशा में मुस्लिम बस्तियाँ बसाएगा और उन्हें भूमि व संसाधन प्रदान करेगा। वह मंदिरों, अट्टालिकाओं एवं मंडपों को विध्वस्त कर देगा। इसके पश्चात महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग को बताते हैं कि मराठा सेनापति रघु भोंसले नागपुर, ओड़िशा और बंगाल को साथ लेकर गौ तथा ब्राह्मणों की रक्षा करते हुए धर्म की रक्षा करेगा। फिर वे बताते हैं कि मुग़ल सौ वर्षों तक शासन करेंगे। उसके उपरांत मराठा पुनः आएगा, दान-पुण्य के कार्य करेगा और स्थान-स्थान पर देवता एवं देवियों की पूजा करेगा तथा जीवों को धर्मपथ पर चलाएगा। इसके पश्चात महापुरुष बताते हैं कि अंग्रेज़ों का शासन आएगा, जो धर्म और नीति में परिवर्तन लाएँगे। (चुम्बक मालिका, महापुरुष शिशुअनंत दास)

मदनमालब्य नाम बोलिकरि एक भक्त थिब जन्मि, गान्धि सहितरे अहिंसा धर्मरे निरन्तरे थिबे पुणि ।
चुड़ंग बंशरे उतपत्ति होइ मोतिलाल जे नेहेरु, महाप्रतापी अटइ सेहु भक्त आसिछन्ति शून्यपुरु ।

××××

बिक्रमादित्य नामरे जणे राजा हेब कबि पण्डितंकु घेनि से सभा करिब ।
अष्ट बेतालंकु साधि जगत जिणिब सत्यशान्ति दया क्षमा गुण हृदे थिब ।
ता नामरे एक अब्द चलाइब सेहि कलियुग समाप्त पर्य्यन्त थिब रहि ।१०।

××××

जन्मुजय नामे एक जन्मिब नृपति शिबंक पादरे भक्ति रखुथिब अति ।५।

××××

इन्द्रद्युम्न नामधारी जणे नरपति जगन्नाथंकु पूजिब हृदे रखि भक्ति

××××

जजाति केशरी नामे जणे हेब राजा सदाशिबंक पादकु करिब से पूजा ।
से बंशे ललाट केशरी जनम होइ भुबनेश्वर देउल तोलाइब सेहि ।
बहुदेबदेबी मूर्ति बेढ़ारे खञ्जिब शिबंकर नाम दिनराति जपुथुब ।२०।

××××

चूड़ंगदेब बोलिण गंग बंश राजा पुत्र सम करि से पालिब जनप्रजा ।

××××

बट मुनि बेनि कुम्भ शालरे अर्जुन अनंग, देब नामरे होइब राजन ।
जगन्नाथंक देउल तोलाइब सेहि बहु दान पुण्य करिब से नरसाइँ ।

××××

लांगुला नरसिंह नामरे राजा होइ कोणार्के एक देउल तोलाइबे सेहि ।

××××

पुरुषोत्तम नामरे एक राजा हेब युद्धे काञ्चि जय करि ता कन्या आणिब ।
तार पुत्र प्रताप बसिब सिंहासने यशशिरी अर्जन करिब दान पुणे ।२९।

××××

पुण्यकाले घेनि उदय सेहि । एकछत्र राजा होइब मही ॥
ता अन्ते धरम होइब हानि । मोहन राजुति होइब पुणि ॥
गुलि चोटे तार प्राण छाड़िब । सर्त्त खोलि कलि मञ्जि पोतिब ॥
जाणि न पारिबे संसार प्राणी । टेकि कहुथिबे कथा निशाणि ॥

××××

शुद्ध भूमि खण्ड़ ममता कलिन्द्र अशुद्ध करिब य़ाइँ । अपार कालर राजा पोताधन सबु नेब सेहि बहि ।६५।

××××

बाण बसु राजा नरेन्द्र साल, थोकाए नष्ट हेबे महा मल ।
चन्द्रबाण रामबाण थोइबु, एहि सालटि ठिकणा जाणिबु ।
से दिनु उत्पात मही सत्बर, किछि उश्बास हेब मही भार ।
केशरी पुण प्रकाश होइब, ओड़िशा देश नारखार हेब ।

××××

तदिअन्ते मोहना मोगल जे आसिब । देबधर्म नष्टकरि जाति न रखिब ।१२०|
हारमांक दल सेहि महना मोगला । बिष्णुद्रोही अत्याचारी पृथ्बीकि सल ।१२१।
एककार करिब से गो-ब्रह्म छेदन । देबस्थान न रखिब पुणि दिअँ पण ।१२२।
अति बिरक्त होइबे हरिभक्त जन । प्रजामाने कष्टपाइ होइबे उच्छन्न ।१२३।

अतिहिं दुस्तर कर्म सेहि से करिब । वेद कर्म जाति धर्म तिले न रखिब ।१२४।
नाना भक्तमाने से ये गृहकु छाड़िबे । बनगामी होइ बने लुचिण रहिबे ।१२५।
भक्तंकर दुःख देखि प्रभु चक्रधर । गहण दलकु घेनि करिबे प्रचार ।१२६।
कोठदल गहण दल संगरे नेबे । बारण बेलकु जाणि बाहार होइबे ।१२७।
कला धला दुइ घोड़ा दुइभाइ चढ़ि । मारिण दमन दल देबे से घउड़ि ।१२८।
तेरजण सुआर संगतरे थिबे । कलि महाभारत जे युद्ध आरम्भिबे ।१२९।

××××

तुरुकिराजा दमन निधन । प्रजांकु बहुत देब कषण ।
किछिदिन से राजुति करिब, तदन्ते मोहना मुगल हेब ।
जारिकरड़ा बहुत करिबे । बृद्धा बिकल जे बहुत हेबे ।
प्रजा बिकल सहि न पारिबे, आपणे प्रभु अबतार हेबे ।

(2) संत कवि भीम भोई द्वारा रचित पद्मकल्प मालिका में मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी एवं मोतीलाल नेहरू के नामों का उल्लेख मिलता है। महापुरुष अच्युतानंद द्वारा रचित चउषठि पटल मालिका में राजा विक्रमादित्य के विषय में वर्णन मिलता है, जिसमें यह संवाद भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य द्वापर युग में हुआ था। उस संवाद में भगवान श्रीकृष्ण, अर्जुन से कहते हैं कि विक्रमादित्य नाम से एक राजा होगा, जो कवियों और पंडितों को साथ लेकर सभा करेगा। वे अष्टबेताल को साधकर जगत को जीतेंगे। उनके हृदय में सत्य, शांति, दया, क्षमा जैसे गुण विद्यमान होंगे। उनके नाम पर एक संवत (कालगणना) का आरंभ होगा, जो कलियुग के अंत तक प्रचलित रहेगा। इसके पश्चात जन्मुजय नामक एक राजा का उल्लेख मिलता है, जो भगवान शिव के चरणों में अत्यंत भक्ति रखेगा। इन्द्रद्युम्न नामधारी एक नरपति होगा, जो अपने हृदय में भक्ति रखकर भगवान जगन्नाथ की पूजा करेगा। जजाति केशरी नाम से एक राजा होगा, जो सदाशिव के चरणों की पूजा करेगा। उसी वंश में ललाट केशरी नामक राजा जन्म लेगा, जो भुवनेश्वर में मंदिर का निर्माण कराएगा। चोडगंग देव नामक गंगवंशीय राजा, पुत्रवत अपनी जनप्रजा का पालन करेगा। अनंग देव नाम से एक राजा होगा, जो भगवान जगन्नाथ का मंदिर बनवाएगा और अनेक दान–पुण्य करेगा वह नरश्रेष्ठ। लांगुला नरसिंह नाम से एक राजा होगा, जो कोणार्क मंदिर का निर्माण कराएगा। पुरुषोत्तम नाम से एक राजा होगा, जो युद्ध में कांची पर विजय प्राप्त कर वहाँ की कन्या को लाएगा। उनका पुत्र प्रताप, सिंहासन पर आसीन होकर यश-कीर्ति अर्जित करेगा और दान–पुण्य के कार्यों में प्रवृत्त रहेगा।

(3) महापुरुष अच्युतानंद द्वारा रचित शिव कल्प मालिका ग्रंथ में महात्मा गांधी का उल्लेख मिलता है कि उनकी मृत्यु गोली की चोट से होगी और उसके साथ ही कलि का बीज रोपण किया जाएगा। संसार के लोग समझ नहीं पाएँगे और इस घटना की प्रशंसा करेंगे।

द्वापर युग के भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के मध्य हुए संवाद को महापुरुष अच्युतानंद 'कलियुग कलि कहानी' में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि कलियुग में एक शुद्ध भूमि खंड को ममता कलिन्द्र (अर्थात कलि + शासक) द्वारा अशुद्ध किया जाएगा। बह अपार काल के राजाओं का समस्त गड़े हुए खजानों को अपने अधिकार में ले लेगी।

महापुरुष अच्युतानंद द्वारा रचित 'कलिकल्प गीता' में नरेंद्र नामक राजा का उल्लेख मिलता है जिसमें लिखा हैं कि — शब्दशः अनुवाद — बाण वसु राजा नरेंद्र साल, कुछ महा मल (गंदगी या पाप या अशुद्धता) नष्ट होंगे। चंद्रबाण और रामबाण रखना, यही साल को ठिकाना जानोगे। उस दिन

से धरती में उत्पात होगा, एवं धरती का भार कुछ कम होगा। फिर केशरी प्रकाशित होंगे, ओड़िशा देश नारखार होगा।

७. महापुरुष शिशु अनंत दास द्वारा रचित चुम्बक मालिका में "मोहना मुग़ल" शासक का उल्लेख मिलता है, जो देवधर्म को नष्ट करके जाति नहीं रखेगा। हारम के दल के साथ वह मोहना मुग़ल आएगा, जो विष्णु-द्रोही और अत्याचारी होगा। वह गायों और ब्राह्मणों का वध करेगा तथा देवस्थानों और देवी-देवताओं की मूर्तियों को नहीं छोड़ेगा। हरिभक्त जन अत्यंत विरक्त हो जाएंगे, और प्रजाजन कष्ट पाकर बेचैन हो उठेंगे। वह अत्यंत ही दुस्तर कर्म करेगा, वेद, कर्म, जाति और धर्म – किसी को भी टिकने नहीं देगा। अनेक भक्तजन अपने घरों को छोड़ देंगे और वनगामी होकर जंगलों में छिपकर रहने लगेंगे। भक्तों का दुःख देखकर प्रभु चक्रधर गहण दल को लेकर प्रचार हेतु निकलेंगे। कोठ दल और गहण दल को संग लेकर, बारण (बाधित) समय को जानकर वे बाहर आएंगे। काले और सफेद दो घोड़ों पर दो भाई सवार होकर, दमनकारी दल को मारकर भगाएंगे। तेरह सुआर (अश्वरोही) उनके साथ होंगे और वे कलि महाभारत युद्ध का आरंभ करेंगे।

महापुरुष अच्युतानंद दास अपनी 'कलिकल्प गीता' में लिखते हैं कि तुर्की का दमनकारी राजा निधन होगा। वह प्रजा को बोहोत कष्ट देगा। कुछ समय तक वह शासन करेगा, फिर उसके बाद "मोहना मुग़ल" आएगा। वह अत्यधिक कर (टैक्स) वसूल करेगा। प्रजा विकल होकर उसे सहन नहीं कर पाएगी। तब स्वयं प्रभु अवतार लेंगे।

एमंत ब्याधि कौंहु त आसिब नर अंगरे प्रकाश । मुखरु त रक्त उद्गार होइब सकले होइबे नाश ॥
आद्य बैद्य ठारे प्रकाश होइब परे अन्य हेबे नाश । बैद्य नाश जेबे नोहिब बारंग आनके होइब ध्वंश ॥

महापुरुष शिशु अनन्त अपने शिष्य बारंग से कहते हैं कि – एक समय ऐसा रोग आएगा जो मनुष्य के शरीर में प्रकट होगा। उस रोग से मनुष्य के मुँह से रक्त (खून) निकलने लगेगा और लोग नष्ट हो जाएँगे। पहले यह रोग वैद्य (डॉक्टर) के पास प्रकट होगा, फिर अन्य लोग भी इसकी चपेट में आकर नाश होंगे। जब वैद्य (चिकित्सक) भी नष्ट हो जाएँगे, तब बारंग, और लोग भी ध्वस्त हो जाएँगे।

(पट्टा मड़ाण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

लागिब महा समर देश देश मध्ये अति प्रबल, लो जाइफुल पृथ्वी होइजिब नारखार ।
तुरुक धाइं आसिब भारतरे हाणकाट करिब, लो जाइफुल गुलिगुला तहिं बरषिब ।
शत शत कोठाघर पोड़ि जलि हेब कि नारखार, लो जाइफुल ताहा शुणिबु बेनि कर्ण्णर ।
कोणारकरे जे आउ सहिब के अबा युद्धर दाउ, लो जाइफुल दुष्ट मारिदेबे चाहुँ चाहु ।
बड़देउल भितरे हाणगोल हेब सेहि बेलरे, लो जाइफुल तुहि देखिबु एहा नेत्ररे ।
अधर्मी जे शत शत छागल पराए होइबे हत, लो जाइफुल तांक कर्म अटइ असत्य ।
भक्ति पथरे जे थिब तांकु कि करिब दुष्ट दानब, लो जाइफुल ग्रार बन्धु निजे बासुदेब ।
अश्वत्थमा पुणि थरे जनम लभिछि अति गुप्तरे, लो जाइफुल बीर समरे के ताकु पारे ।
अभिमन्यु बाल बीर बेलालसेनकु धरि संगर, लो जाइफुल दिने करिब महासमर ।
एकलब्य घटोकूच बब्रुबाहन ए मिलिण पाञ्च, लो जाइफुल भांगिदेबे बिदेशींक पाञ्च ।
भारत युद्धरे एहि रणरंक होइ अछन्ति रहि, लो जाइफुल सेहि लम्पट कृष्णर पाइं ।
भीष्म, द्रोण, कर्ण्ण, शल्य कपट समरे एहांक बल, लो जाइफुल भांगिछन्ति जे नन्द दुलाल ।
पुणि एहि बीरगण भारत समर करिबे पूर्ण, लो जाइफुल किए बुझिब सेहि समर ।
सर्बे होइ रणरंका भांगिदेबे बिदेशींकर पखा, लो जाइफुल उड़ाइबेटि जय पताका ।
ओलिए भारत युद्ध ओड़िशा देशरे पुणि होइब, लो जाइफुल बले यबन बाहि आसिब ।
अग्निर दाहिका शक्ति टाणि आणिबे से कमला पति, लो जाइफुल तहु बिदेशीए ग्रिबे हटि ।
महाकलि जेतेबेले आसि आच्छादिब मही मण्ड़ले, लो जाइफुल हिंसा बाद हेब परस्परे ।
भारते बिजाति गण न रहिबे केहि गोटाए जाण, लो जाइफुल सेहि सरबे हेबे निधन ।
पश्चिम उत्तर देश हाड़माल होइजिब बिशेष, लो जाइफुल मही दुलुदुल हेब ध्वंस ।
बंगदेशर सहर पोड़ि जलि हेब कि नारखार, लो जाइफुल हेब भारत समर सार ।
बहु अन्याय बढ़िब भूमिकम्प घड़घड़ि होइब, लो जाइफुल बेले तोफान प्रबल हेब ।

अर्थात – महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामचन्द्र से कहते हैं— देश-देश के मध्य अत्यंत प्रबल महासमर लगेगा, जिसके कारण पृथ्वी नारखार हो जाएगी।

तुर्की भारत पर आक्रमण करेंगे और भयंकर रक्तपात करेंगे। चारों ओर गोलियों की वर्षा होगी।

सैंकड़ों-सैंकड़ों भवन जलकर राख हो जाएंगे — और वह समाचार तुम अपने दोनों कानों से सुनोगे।

कोणार्क में भला और कौन सह सकेगा उस युद्ध के आघात को? दुष्ट लोग लोगों की हत्या कर देंगे — देखते ही देखते।

उस समय बड़ देउल (श्री जगन्नाथ मंदिर) के भीतर भी मारकाट और कोलाहल (हिंसा और हाहाकार) होगा — और तुम स्वयं इसे अपनी आँखों से देखोगे।

सैकड़ों-सैकड़ों अधर्मी, बकरियों की भाँति मारे जाएँगे, क्योंकि उनके कर्म असत्य हैं।

जो भक्ति के मार्ग पर होंगे, उन्हें दुष्ट दानव क्या कर सकेंगे, जिनका बंधु स्वयं वासुदेव है।

अश्वत्थामा ने पुनः एक बार अत्यंत गुप्त रूप में जन्म लिया है, वीर समर में कौन उसका सामना कर सकता है?

अभिमन्यु, बेलालसेन (बर्बरीक) को साथ लेकर, एक दिन महासमर करेगा।

एकलव्य, घटोत्कच और बभ्रुवाहन — ये पाँचों वीर मिलकर विदेशियों की सैन्य शक्तियों को चकनाचूर कर देंगे। भारत के उस युद्ध के लिए ये सभी युद्धलोलुप योद्धा आतुर हैं।

भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य — इनका बल कपट-समर में नंद दुलाल (भगवान श्रीकृष्ण) ने तोड़ा था।

अब ये ही वीरगण पुनः भारत में महायुद्ध को पूर्ण करेंगे — परंतु उस युद्ध को कौन समझ सकता है? ये सभी योद्धा युद्ध के लिए उत्सुक होकर, विदेशियों के पंख तोड़ देंगे और विजयी पताका फहराएँगे। महाभारत के युद्ध का जो 'आधा दिन' शेष रह गया था, वह अब ओडिशा भूमि पर पुनः होगा। यवन बलपूर्वक आक्रमण करते हुए प्रवेश करेंगे।

कमलापति (प्रभु श्रीकल्कि) अग्नि की दाहिका शक्ति को खींच लाएँगे — और तब विदेशी हट जाएँगे।

जब महाकलियुग (महाकलि) आकर पृथ्वी-मण्डल को आच्छादित कर लेगा, तब परस्पर हिंसा और विवाद उत्पन्न होगा।

भारत में कोई भी विजातिगण नहीं बचेंगे — वे सभी निधन होंगे।

विशेष रूप से पश्चिम और उत्तर के देश हड्डियों के ढेर में बदल जाएंगे। पृथ्वी जोरदार कांपेगा और भारी विनाश होगा।

बंग देश का शहर जलकर नारखार हो जाएगा। वह (शहर) भारत के युद्ध का सार बनेगा।

बहुत अन्याय बढ़ेगा, ज़ोरदार भूकंप होंगे, और समय-समय पर भीषण तूफान आएंगे।

(जाईफूल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)

भारत ग्रे भगबानंकर जन्म स्थान अनिष्ट घटिले पुणि नूआ हेब जन्म ।
पाकिस्थान राज्य गोटा छारखार हेब पछबेलकुत पुणि बुद्धि जे स्तुरिब ।
दोषकरि परे पुणि अनुताप करि क्षमाभिक्षा करिबाकु आसिबे बाहारि ।
आमेरिका ऋषिआ जे आगभर हेबे तांकर पाखरे जाइँ गुहारि करिबे ।
इरान, जापान पुणि एहि सुय्रोगरे बले माड़ि बसिबे जे के काहा राज्यरे
भारत एहिबेले पुणि मध्य्रस्था करिब पाकिस्थान भाइबोलि शेषरे मानिब ।

अर्थात – महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र से कहते हैं कि भारत भगवान का जन्मस्थान है; यदि कोई अनिष्ट घटित होता है, तो पुनः नया जन्म होगा। पाकिस्तान देश पूरी तरह से छारखार (नष्टभ्रष्ट) हो जाएगा। बाद में उसका बुद्धि जागेगा और दोष करने के पश्चात वह अनुताप करेगा, और क्षमा की भिक्षा माँगने हेतु बाहर आएगा। अमेरिका और रूस उस समय अग्रसर होंगे, और वह (पाकिस्तान) उनके पास जाकर विनती करेगा। ईरान और जापान भी इस अवसर का लाभ उठाकर बलपूर्वक आक्रमण करके अलग-अलग क्षेत्रों पर अधिकार जमा लेंगे। भारत उस समय पुनः मध्यस्थता करेगा, और अंततः पाकिस्तान भाई बोलकर मान जाएगा। (संभवतः – भारत में विलीन हो जाएगा)

(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)

उत्तर पश्चिमे घोर समर, मेलि होइबे केते नृपबर।
हारमा पठाण कलि जारज, समस्ते कहिबे सैन्यंकु साज।
षड़बर्ष षड़मासटि युद्ध, तदिअन्ते ओड़िशाकु प्रमाद ।
सकल आसिबे ओड़िशापुर, ओड़िशारे युद्ध होइब घोर ।
रकत तिनिताल बहुथिब, जाणिदुर्गा खपरकु पातिब।

अर्थात – उत्तर-पश्चिम में घोर समर होगा, अनेक राजा (शासक) मिलकर गुट बनाएँगे। सभी पठान अपनी सेना को सजाने का आदेश देंगे। छह वर्ष छह मास तक युद्ध चलेगा, उसके बाद ओडिशा में विपत्ति आएगी। सभी ओडिशा की ओर बढ़ेंगे, जहाँ एक भयंकर युद्ध छिड़ेगा। तीन ताल तक रक्त बहेगा, तब माता दुर्गा देवी अपना खप्पर (रक्तपान पात्र) फैलाएँगी।

(कलियुग पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

दक्षिणु आसिबे तेलंगा बल पश्चिमु आसिबे सैन्य बहुल ।३४।
पूर्बरु आउ केहि न रहिबे झाड़खण्ड़ देशे लुचि रहिबे ।३५।
कुलकु बिहन होइबे सेहि सत्य कहइ हे ब्रज तनयी ।३६।

महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं — "हे ब्रजपुत्र! दक्षिण दिशा से तेलंगाना के सैनिक आएँगे, और पश्चिम दिशा से विशाल सैन्य दल आएगा। पूर्व दिशा में कोई नहीं रहेगा। झाड़खंड देश, अर्थात् जो लोग झाड़ जंगलों में छिपे रहेंगे, वे कुल के बीज होंगे।

(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

ओलिए जे रहिथिब शुण हेतु द्वारे भारत युद्ध होइब सेतिकि बेलरे ।
सेहि ओलिकरे नाथ कलि शेष हेब से ओलिके तेर मास भोग जे होइब ।
कलि रे भारत भूमि जोबरा होइब बहुलीला आरम्भ जे सेहिठारे हेब ।
कलिरे जे कलघर हेब सेहिठारे कलि युगे क्षय एका हेब से बेलरे ।

महाभारत काल का जो आधे दिन का युद्ध शेष रह गया था, वह कलियुग के अंत में भारतभूमि पर फिर से होगा। वही आधे दिन का बचा हुआ युद्ध जब समाप्त होगा, उसी के साथ कलियुग का अंत होगा। वह आधे दिन का युद्ध तेरह महीने तक भोगा जाएगा, जो कि कलियुग में भारतभूमि के (ओडिशा के) जोबरा नामक स्थान में होगा। उस स्थल पर अनेक लीलाएँ आरंभ होंगी। कलियुग में वहाँ 'कलघर' (संभवत: यंत्रशाला) होगा। **(अमर जुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद)**

मही महागोल चहल पड़िब ठाबे ठाबे । मुकुन्द देबंक अंकरे सन्य माड़ि आसिबे ।५।

पृथ्वी पर स्थान-स्थान पर महा कोलाहल और हंगामा होगा। गजपति राजा मुकुंद देव के अंक में सेना चढ़ाई करेगी। **(भक्त आरत चउतिशा, महापुरुष अच्युतानंद)**

कलियुग शेष बेले घोर उतपात । रणगोल से कालरे होइब बहुत ॥

कलियुग के अंतिम समय में घोर उत्पात होगा। उस काल में युद्ध और कोलाहल बहुत होंगे।

(अमर जुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद)

पृथ्वीर चारिदिगमान । तिनिदिग जे हेब शून्य ॥

पृथ्वी की चार दिशाओं में से तीन दिशाएँ शून्य हो जाएँगी।

(अमर जुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद)

अंग बंग कलिंग आदि ए देश जेते । ओड़िशा उत्तरखण्ड़ प्रलय समस्ते ॥
उत्तरु आसिबे बल पशिबे झसाइ । ठाबे ठाबे घोर द्वन्द्व आरम्भिबे सेहि ॥
हाणगोल भय निश्चे जगते ब्यापिब । तेतेबेले के काहाकु साहाय्य नोहिब ॥
भक्तमाने रहिथिब चोर प्राय होइ । नाम भजुथिबे निज प्राणरक्षा पाइँ ॥
थोके लोक चिह्नि तांकु करिथिबे सेबा । सेबा करिले ताहांकु तरिजिबे अबा ॥

अंग, बंग, कलिंग, ओडिशा, उत्तरखण्ड आदि ये जितने भी देश (राज्य) हैं — सभी में प्रलय आएगा। उत्तर दिशा से सेनाएँ आकर प्रवेश करेंगी और स्थान-स्थान पर भीषण संघर्ष प्रारंभ होगा। मारकाट हिंसा का भय पूरी दुनिया में फैल जाएगा। उस समय कोई किसी की सहायता नहीं कर पाएगा। भक्तजन चोर के समान छिपकर रहेंगे और अपनी प्राणरक्षा के लिए भगवान का नाम जपते रहेंगे। बहुत कम लोग उन्हें पहचान कर सेवा करेंगे, और जो उनकी सेवा करेगा, वह पार हो जाएगा। **(विज्ञानकल्प, महापुरुष अच्युतानंद)**

मुकुन्ददेबंक अंकरे सैन्य माड़ि आसिबे । युगशेष कलि भारत युद्ध होइब घोर ।

गजपति राजा मुकुंददेव के अंक में सेना चढ़ाई करेगी; युग का अंत होगा और घोर कलि-भारत युद्ध घटित होगा। **(कलि चउतिशा, महापुरुष हाड़िदास)**

कुम्भ मास ठाबरु हे दमन आसिबे, मीन मासठारे हाण गोल लगाइबे ।
सुज्ञजने हे, चारिदिग लोके । गंगाकुलठारु नीलगिरि परिय्यन्ते ।८।
छअबर्ष यात्राहि नोहिब नन्दिघोष । नअ बर्षे पृथ्वीदेबी होइब सन्तोष ।

कुम्भ मास (जनवरी–फरवरी के आसपास) से दमन (विरोधी बल) आएंगे। मीन मास (मार्च–अप्रैल के दौरान) भारी आक्रमण और मारकाट होगी। यह विनाश गंगा के तट से लेकर नीलगिरि तक फैलेगा। इन भयावह परिस्थितियों के कारण लगातार छह वर्षों तक भगवान श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा (नन्दिघोष) आयोजित नहीं हो पाएगी एवं नवें वर्ष में ही पृथ्वी माता संतुष्ट होंगी। **(सारंग दास मालिका)**

लो कोइलि- ऋषिआ आदि देश जेते, भारत बर्ष मध्यरे रहिबे समस्ते लो कोइलि ।१८५।

××××

लो कोइलि– देशे देशे समर होइब, पाश्चात्य देश समस्त शरण पशिबे लो कोइलि ।१८७।

रूस आदि जितने भी देश हैं, वे सभी भारतवर्ष के मध्य रहेंगे ।१८५।
विभिन्न देशों में युद्ध होगा, और पश्चिमी देश शरण लेने के लिए आएंगे ।१८७।

(कोइलि मालिका, महापुरुष यशोबंत दास)

गुप्त खेदा मालिका

जेउँदिन धरापरे महायुद्ध हेब तापरे पञ्चभूत निर्बल दुर्बल हेब ।

××××

मणिष मणिष मधे हिंस्र युद्ध हेब महाभारी लढ़ाइरे ए बिश्व कम्पिब ।

अर्थात् — जिस दिन धरती पर महायुद्ध होगा, उसके बाद पंचभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) निर्बल और दुर्बल हो जाएँगे।
मनुष्य और मनुष्य के बीच हिंसक युद्ध होगा, इस महाभयंकर लड़ाई से यह विश्व काँप उठेगा।

दिल्ली बम्बे कलिकता माड्रास जे जाण प्रथमे घाउला हेबे बिम्माड़े पुण ।
टुकुरा टुकुरा हेब सहर त परा क्षतिग्रस्त हेब धरा आसइ इसारा ।
गगन पबन सबु बिषाक्त होइब धूआँ बारुद गन्धरे भरपूर हेब ।

अर्थात् — दिल्ली, बॉम्बे (मुंबई), कलकत्ता और मद्रास (चेन्नई) जैसे शहर सबसे पहले बमबारी से घायल होंगे। शहर टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे और धरती भारी रूप से क्षतिग्रस्त होगी। आकाश और पवन (हवा) सब कुछ विषैला हो जाएगा, धुआँ और बारूद की गंध से वातावरण पूरी तरह भर जाएगा।

आमेरिका राष्ट्र भाइ मुलु ध्वंस जिब गर्बरे जलुछि राजा विश्व मुख्य हेब ।
धराकु मणुछि सरा, कुहे मुहिँ श्रेष्ठ उड़ाइबि पृथिबीकु करे मुँ शपथ ।
काहारि गरब सहि न पारिबे धाता जलाइदेबे ताहाकु उड़ाइबे मथा ।
निओ्बार्क सहर ध्वंस पदाहोइजिब हाहाकार पड़िजिब अथर्ब निर्बेद ।

अर्थात् — अमेरिका राष्ट्र मूल से ही नष्ट हो जाएगा। वहाँ का शासक अपने घमंड में जल रहा है और स्वयं को विश्व का मुख्य मानता है। वह इस धरती को तुच्छ समझता है, कहता है 'मैं ही सर्वश्रेष्ठ हूँ' और 'मैं पृथ्वी को उड़ा दूँगा' (नष्ट कर दूँगा)—ऐसी वह शपथ लेता है। विधाता (ईश्वर) किसी का भी घमंड सहन नहीं करेंगे; वे उसे जला देंगे और उसका सिर उड़ा देंगे (अहंकार को तोड़ देंगे)। न्यूयॉर्क शहर पूरी तरह ध्वस्त होकर ज़मीन पर मिल जाएगा; वहाँ हाहाकार मच जाएगा और लोग असहाय होकर निर्वेद (वैराग्य/उदासीनता) की स्थिति में आ जाएँगे।

चिन्, पाकिस्थान पुणि आमेरिका जाण ऋषिआ, भारत पुणि जर्मान जापान ।
भारत सपक्ष हेबे महाशक्ति जाण इराक जे समर्थन देब पाकिस्थान ।

सबु मिआँ देशमाने एकत्रित हेबे कहिबे जे भारतकु बुड़ाइण देबे ।
जेउँ भूमि दिव्यभूमि जन्मे भगबान आध्यात्म ज्ञानरे छन्ति देबऋषि जाण ।
धर्म, कर्म, साधनार देबपीठ पुण तपस्याभूमि अटइ पबित्र ए धाम ।
महान् भारतभूमि महाशक्तिशाळी गुपतरे छन्तिरहि प्रभु चक्रधारी ।
लढ़िबे निजे जे आसि गुपतरे रहि शक्ति देबे भारतकु अब्यक्तरे तहिं ।

अर्थात् — चीन, पाकिस्तान और फिर अमेरिका; दूसरी तरफ रूस, भारत, जर्मनी और जापान। जान लो, महाशक्तियाँ भारत का पक्ष लेंगी, जबकि ईराक पाकिस्तान का समर्थन करेगा। सभी मुसलमान राष्ट्र एकजुट होकर कहेंगे कि वे भारत को डुबो देंगे (नष्ट कर देंगे)। यह भूमि वह दिव्य भूमि है जहाँ स्वयं भगवान जन्म लेते हैं, और जहाँ देवऋषि आध्यात्मिक ज्ञान से विभूषित हैं। यह पवित्र धाम धर्म, कर्म और साधना का देवपीठ तथा तपोभूमि है। महान भारतभूमि महाशक्तिशाली है, यहाँ प्रभु चक्रधारी (भगवान विष्णु) गुप्त रूप से स्थित हैं। वे स्वयं आकर युद्ध करेंगे और गुप्त रूप से भारत को शक्ति प्रदान करेंगे।

पाहाड़बि चुना हेब बअम् माड़रे सागर बिषाक्त हेब अणु बिषाक्तरे ।
सार, आकाश, जमि बृक्षलता बारे जलिजिब बिष अग्नि गोला बारुदरे ।
मणिषत छार भाइ निरीह दुर्बल से बेलरे कान्दुथिबे जीबन बिकल ।
अर्द्धरु अधे मरिबे भारतबर्षरे सबुराज्य शून्य हेब युद्ध गोलपरे ।
बड़ बड़ सहर त ध्वंसस्तुप जाण नाहिं नथिब राम बिद्युत् किरण ।
समाचार, ग़्यातायात बन्द होइय़िब सड़क रास्ता जे सबु भांगि तुटिजिब ।
बिद्युत् चलिब नाहिं सबु हिं दुर्भिक्ष युद्ध परे परे हेब भयंकर दृश्य ।

अर्थात् — पर्वत भी बमों की मार से चूर-चूर हो जाएँगे और समुद्र अणुबमों के विष से विषाक्त हो जाएगा। वायु, आकाश, धरती, वृक्ष और लताएँ सब विषैली अग्निगोलों और बारूद की ज्वाला से जल उठेंगे। उस समय लोग जीवन से व्याकुल होकर विलाप करेंगे। भारतवर्ष में आधे से भी अधिक लोग मर जाएँगे, सभी राज्य युद्ध की विभीषिका में शून्य हो जाएँगे। बड़े-बड़े शहर ध्वस्त होकर खंडहर बन जाएँगे, बिजली की किरणें भी वहाँ दिखाई नहीं देंगी। समाचार और यातायात पूरी तरह बंद हो जाएगा, सड़कें और रास्ते भी टूटकर बिखर जाएँगे। बिजली नहीं चलेगी, सब जगह अकाल (दुर्भिक्ष) होगा; युद्ध के ठीक बाद यह दृश्य बहुत ही भयानक होगा।

रेड़िओ, बेतार य़न्त्र भांगि रुजिय़िब आगुआ खबर देबाकु बिज्ञान नथिब ।

××××

सबुदिने मलाशब श्मशाने चालिब मशाणी घाटरे मढ़ांक मेलण जमिब ।
केउँठि पड़िब मढ़ा केउँठि पोड़िबे शेषरे जे रास्ताघाटे पोति हेइजिबे ।
आजि मुँ नेउछि शब कान्धेइ कान्धेइ कालि काहा कान्धे मुहिं शब जिबि होइ ।
कुकुर शिआल शागुणा सबु एकाकार रास्ताघाटे शबंकर पचागन्ध सार ।

अर्थात् — रेडियो और बेतार यंत्र (वायरलेस डिवाइस/संचार उपकरण) नष्ट हो जाएँगे, विज्ञान आगे समाचार देने में असमर्थ हो जाएगा। प्रत्येक दिन श्मशानों में लाशों का अंबार लगेगा और दाह-स्थलों पर मृतकों की भीड़ जमा होगी। कहीं लाशें पड़ी रहेंगी, कहीं उन्हें जलाया जाएगा, और अंत में तो रास्तों और गलियों में ही मृतदेह गाड़ दिए जाएँगे। लोग कहेंगे “आज मैं किसी का शव अपने कंधे पर उठाकर ले जा रहा हूँ, कल पता नहीं किसके कंधे पर मेरा शव उठाकर ले जाया जाएगा।” सड़कों और गलियों में शवों की सड़ांध की गंध फैलेगी, और उन शवों को कुत्ते, सियार और गिद्ध सब एक साथ मिलकर खाएँगे।

आमेरिका इउरोप महादेश जाण स्थिति हराइब तार बिषाक्त पबन ।

सबुरि ध्वंसर कारण आमेरिका जाण निश्चिह्न होइब युद्धे गर्बि अटे पुण ।

अर्थात् — अमेरिका और यूरोप महादेश अपनी स्थिति खो देंगे, विषैली हवा (पवन) के कारण। समस्त विनाश का कारण अमेरिका होगा; और वह अपने गर्व के कारण युद्ध में निश्चिह्न (बिना किसी चिन्ह के, पूर्णतः विनष्ट) हो जाएगा।

भारत बर्षर बल युद्धार चातुर्य्य देखि छानिआँ हेबे बिदेशी फउज ।
रण कौशलरे बीर महारथि गण उड़ाइबे बिजयर पताकाकु जाण ।

अर्थात् — भारतवर्ष का बल और युद्ध की चतुराई देखकर विदेशी सेनाएँ भयभीत (दहशत में) हो जाएँगी। रण-कौशल में वीर महारथीगण विजय के झंडे (पताका) को फहराएँगे, यह जान लो।

(पाठक हेतु सूचना — "गुप्त खेदा" नामक इस मालिका के संबंध में प्रचलित मान्यता यह है कि इसका रचनाकार महापुरुष अच्युतानंद जी को माना जाता है। तथापि, विद्वानों और शोधकर्ताओं के मध्य इस विषय में मतभेद पाया जाता है तथा कुछ का मत है कि यह ग्रंथ किसी अन्य रचनाकार द्वारा भी लिखा गया हो सकता है। इस पुस्तक में दिए गए श्लोकों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसके वास्तविक रचनाकार के बारे में कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं है और यह अभी भी शोध का विषय है। पाठकों से निवेदन है कि इसे उसी दृष्टि से ग्रहण करें।)

धरणी बक्षरे प्रखर रक्त स्रोत बहिब धरणीरु तिनि भागटि मरिजिबे मानब ।

अर्थात् — धरती के वक्ष (सीने/सतह) पर भयंकर (तेज़) रक्त की धारा बहेगी। धरती के समस्त मानवों में से तीन भाग मर जाएँगे। **(आगत भविष्य मालिका)**

महरग कान्तार जे माड़िण आसिब । योग्नीगणमानंकर पालि जे पड़िब ॥
जगतरे हाहाकार पड़िर ग्ने ग्रिब । खाद्य अभावे मणिष माउंस खाइब ॥

अर्थात् — भयंकर अकाल छाता हुआ आएगा। योगिनियों का समय (प्रकोप की बारी) पड़ेगा (या आरंभ होगा)। सारे जगत् में हाहाकार मच जाएगा। खाद्य के अभाव में मनुष्य मनुष्य का माँस खाएगा। **(हाड़ी दास ग्रंथावली)**

चबिश चइत्र मास रबिबार दिन भइरबी ड़ाक होइबटि घन घन ।१०।
से ड़ाक भुबनेश्वरु होइब नियत दुष्ट प्राणीमानंकु से अटइ अहित ।
याजपुरकु से शब्द शुभिब अर्जुन बिरजाई देबी बसिथिब ब्रह्मस्थान ।
बिरजाई निद्रा भांगिजिब शुणि ड़ाक सेहि ड़ाकरे प्राणींकि लागिब चमक ।
सत्यबन्त प्राणी कर्णे बाजिले शबद किछि न होइण तार बढ़िब आनन्द ।
असत्यबन्त प्राणीए से शब्द शुणिण महीरे ढ़लि पड़िण हेबे अचेतन ।१५।
सत्य पथरे जे प्राणी गति करुथिब ताहर हृदरे क्लेश तिळे न होइब ।

अर्थात् — प्रभु श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं — "हे अर्जुन! जब चौबीसवाँ चैत्र मास का रविवार (अथवा कुछ स्थानों पर गुरुवार) का दिन होगा, तब भैरवी की पुकार (डाक) बारंबार (लगातार) होगी। यह पुकार भुवनेश्वर से आरम्भ होकर निरंतर गूँजती रहेगी, जो दुष्ट प्राणियों के लिए अहितकर सिद्ध होगा। हे अर्जुन! यह शब्द याजपुर (जाजपुर) तक सुनाई देगा, जहाँ बिरजा देवी ब्रह्मस्थान पर विराजमान होंगी। उस पुकार को सुनकर बिरजा देवी की निद्रा भंग हो जाएगी, और उस पुकार से प्राणियों में भय उत्पन्न होगा। किंतु, जो प्राणी सत्यवान होगा, उसके कानों में वह शब्द पड़ते ही, उसे कुछ भी हानि नहीं होगी, अपितु उसका आनंद बढ़ेगा। इसके विपरीत, असत्यवान प्राणी उस शब्द को सुनकर, पृथ्वी पर गिर पड़ेंगे और अचेतन (बेहोश) हो जाएँगे। जो प्राणी सत्य के मार्ग पर चल रहा होगा, उसके हृदय में तनिक भी क्लेश नहीं होगा।" **(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

अध्याय १० - कल्कि लीला

बहुरूपी संहार लीला

काहिँ जल रूपे मुहिँ जगत नाशिबि, काहिँ पबन रूपरे सकल ग्रासिबि ।
काहिँ य़ोग माया नेइ संहार करिबि, काहिँ निजे विश्व रूप धारण करिबि ।
काहिँ मउन ब्रत मुँ धारण करिबि, काहिँ काल रूपे मुहिँ पापिंकु नाशिबि ।

प्रभु कल्कि कहीं जल रूप धारण करके जगत में विनाश करेंगे, कहीं पवन रूप में सब कुछ ग्रस लेंगे। कहीं योगमाया को साथ लेकर संहार करेंगे, कहीं स्वयं विश्वरूप धारण करेंगे। कहीं मौन व्रत धारण करेंगे, तो कहीं काल रूप में पापियों का विनाश करेंगे। **(अमरजुमर संहिता, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

भक्ति-कला का प्राकटन

श्री अनन्त दल अपारु अपार पद्म भकत सहिते कोठदलगण सहिते मिलिबे आसिण पुणि समस्ते ।
श्रीबिन्दुसागरे स्नाहान सारिबे समस्त भकत मिलि निजकला भक्ति कला प्रकाशिब हुड़िब कलिर मलि ।
पूर्बु महाबीर मिलिब सेठार प्रभुंक दर्शन करि श्रीमुखे बचन बोलिबे आपण निअ नियोग आबोरि ।
जाहार जेउँ बिकार ग्ये होइब श्रीमुखु आज्ञा पाइण भकतमानंक कोप प्रकाशिब कहिलि बारंग शुण ।
श्रीगुरु बचन बारंग शुणिण चरणे मिनति कले भक्तंक गारिमा तांक जन्म सीमा कहिबा आपण भले ।
केउँस्थाने सेहु जनम होइबे मण्डल सीमा कहिब केउँकुले केहु जनम लभिबे कहिब श्रीगुरुदेब ।
शुण हो बारंग कहुछि फेड़िण गोपनीय कथा सेहि भक्तंक जनम कहिबा फेड़िण अनन्त कलि अटइ ।
अनन्तरे दल अपारु अपार चउद भुबने छन्ति कोठदल चउषठी सस्रदल ओड़िशामण्डले स्थिति ।
गहण से दल अपारु अपार छामुरे सेहि बाछिबे कल्की अबतार अटइ अघोर दुष्ट सेहि बिनाशिबे ।

महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग को बताते हैं कि प्रभु कल्कि अपने साथ श्री अनंत दल, कोठ दल और पद्म दल के अपार भक्तों सहित ओडिशा के भुवनेश्वर में स्थित बिंदुसागर में एकत्र होंगे। भक्तजन जब बिंदु सागर में स्नान करेंगे, तब उनके भीतर भक्ति कला प्रकाशित होगी, और उनके अंतर से कलियुग की मलिनता नष्ट हो जाएगी। वहाँ पूर्वकाल के सभी महावीर एकत्र होकर प्रभु के दर्शन करेंगे। तत्पश्चात प्रभु अपने श्रीमुख से सभी को अपने-अपने कार्यों के लिए नियुक्त करेंगे। यह सुनकर महापुरुष शिशुअनंत दास के शिष्य बारंग महापुरुष से पूछते हैं कि कौन-से भक्त कहाँ जन्म लेंगे, कृपया उनके मंडलों की सीमा बताइए। यह सुनकर महापुरुष शिशुअनंत दास बताते हैं कि श्री अनंत दल चौदहों भुवनों में स्थित है। कोठ दल की संख्या चौसठ हज़ार है, जो ओडिशा में स्थित है। और गहन दल को प्रभु कल्कि अपने सम्मुख चुनेंगे तथा दुष्टों का विनाश करेंगे।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

अष्टदेवियों को भक्तसंरक्षण का दायित्व

भक्तर मिनति देखि दाशरथि श्रीमुखरे आज्ञादेले अष्टदेबींकि से पाशकु ड़काइ तांकु उचित कहिले ।
तुम्भे अष्टदेबी आम्भ सेबा सेबि आम्भ बचन घेनिब मो गहण दल जेते कोठदल दल साइति जह्ने रखिब ।
कल्की अबतार बारणर बेले गणिता करिण देब मो भक्त जेमन्ते बिभ्रम नोहिब यत्ने साइति रखिब ।
बिरजामण्ड़ल पद्म बनस्थल भक्तंक मण्डल सीमा श्रीभुबनेश्वर श्रीक्षेत्रमण्ड़ल भक्तमानंक गारिमा ।
श्रीतुलसीक्षेत्र स्थले मो भकत सेठारे जनम हेब पाराद्वीप, पारेश्वर से स्थानरे किछि भक्तंकु रखिब ।
मानेश्वरठारु श्रीक्षेत्र पर्य्यन्ते चउषठि भक्त थिबे तुम्भे अष्टदेबी भक्तंकु मोहर साइति यत्ने रहिबे ।
ए बाणी शुणिण अष्टदेबीगण छामुरे उभा होइले काहाकु केते मारफत करिबा ठिक कर श्रीमुखरे ।

कहन्ति श्रीधर देबींक आगर बिम्बलाईकि अनाइ अठर सहस्र तुम्भ मारफत निअ गणिता कराइ ।
बीरजांकु चाहिँ कहन्ति गोसाइँ दशसस्र तुम्भ जिमा सिद्ध शारलाकु सातसस्र देइ रखिब तुम्भर सीमा ।
गोपालुणीकि सातसस्र गणन्ति दुइसस्र भगबती सम्बलाईकु दशसस्र भकत जिमाकले शिरीपति ।
कुआँशमंगलांकु श्रीहरि चाहिँ पाशसस्र तुम्भे नेब बारणबेलकु भक्तंकु मोहर गणिता करिण देब ।
श्रीपरीचिकुल काकट से पुर मंगलांकु चाहिँ हरि पञ्चसस्र तुम्भ भक्त मारफत निअ जे गणिताकरि ।
तुम्भे मोर दासी भक्तंकु आश्वासी यतने रखाइथिब जेतेबेले आज्ञा तुम्भंकु होइब गणता करिण देब ।
बिरोजा गरुड़कु चाहिँण श्रीहरि बोलन्ति हे तुम्भे शुण आउ पद्मे भकत से जेतेक तुम्भ मारफत जाण ।
बुलि दशदिन मो भक्त लाञ्छन खोजिण तांकु आणिब जाहार जेमन्त नियोग जे तुम्भे ताहांकु योगाइदेब ।
बिनता नन्दन शुण से बचन पक्ष बिस्तार करिब कान्तानी भ्रमिबे पापींकि भक्षिबे भक्तंकु मोर रखिब ।

संक्षिप्त भावार्थ – द्वापरयुग में ही भगवान श्रीकृष्ण ने अष्टदेवियों को बुलाकर कोठ एवं गहन दल के भक्तों की सुरक्षा का दायित्व सौंपा था। प्रभु श्रीकृष्ण ने अष्टदेवियों को अपने समीप बुलाकर कहा कि कलियुग के अंतिम समय में जब मेरा कल्कि अवतार होगा, तब मेरे भक्तों की संख्या गिनकर मुझे सौंप दीजिएगा। यह सुनकर अष्टदेवियाँ प्रभु से उन भक्तों की संख्या पूछती हैं, जिन्हें उन्हें संरक्षण प्रदान करना है। इस पर भगवान श्रीकृष्ण माता विमला को अठारह हजार भक्तों की जिम्मेदारी सौंपते हैं, माता बिरजा को दस हज़ार भक्तों की, माता सिद्ध शारला को सात हजार, माता गोपालुणी को सात हजार, माता भगवती को दो हजार, माता समलाई को दस हज़ार, माता कुआँश मंगला को पांच हजार तथा माता काकटपुर मंगला को पांच हजार भक्तों की सुरक्षा का भार प्रदान करते हैं। फिर भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरे इन भक्तों को यत्नपूर्वक संभालकर रखिएगा। जब आपको आज्ञा प्राप्त हो, तब मेरे इन भक्तों की गणना करके सौंप दीजिएगा। तत्पश्चात भगवान माता बिरजा और गरुड़ जी को पद्म दल के भक्तों की सुरक्षा का दायित्व भी सौंपते हैं और कहते हैं कि मेरे भक्तों को खोजकर, उन्हें लाकर, जो जिस प्रकार के कार्य के योग्य हो, उसे उसी के अनुसार कार्यभार सौंप देना। फिर भगवान गरुड़ जी से कहते हैं कि जब कान्तानीगण भ्रमण करके पापियों का संहार करेंगी, तब तुम अपने पंखों का विस्तार करके मेरे भक्तों को सुरक्षा प्रदान करना।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

अकाल समय की भक्तोपकार लीला

बारंग कहन्ति जे श्रीगुरुंकु चाहिँण अबतार संशयटि होइलाक पुण ।
आपणा मुखरे प्रभु आज्ञाकर पुण निर्द्धनी होइबे भक्त ओड़िशा भुबन ।
भक्ते स्थाने स्थाने लीला केमन्ते करिबे प्रभुंक सेबारे भक्त केममन्ते खटिबे ।
शुण हे बारंग एहा गोपनीय कथा शुणिले तुम्भ मनरु जिब सबु कथा ।
द्वापर युगरे प्रभु बिचार करिण ठाबे ठाबे रखिछन्ति गुपते सुबर्ण्ण ।
बिरोजा दक्षिण भागे अछि चारिखाद हीरा मोति माणिक्य सुबर्ण्ण अछि साध्य ।
मणिभद्र नामे एक जाजनग्रे अछि अमाप सुनिआँ कूपे गुपते रखिछि ।
आखण्ड़लेश्वर ठारु जे दक्षिण भागरे सुबर्ण पाषाण कूपे रतन भण्ड़ारे ।
षाठिए लक्ष रत्न बाउन जे सहस्र गुपतरे रखिछन्ति प्रभु पीतबास ।
बैतरणी नदीतीरे शोलपुर ग्राम सोमबंशी राजा तहिँ रखिथिबे धन ।
आहुरि कथाए तोते कहिबाक फेड़ जाजनग्रठारे जेते द्रब्य अछि रहि ।
जाजपुर नृपबर सूर्य्यबंशे जात अनेक कीर्त्ति करिब जगते बिदित ।
मुगुनि पथरे बान्धिब से जे कूपगोटि उपरे लुहा किलिणी देइ बान्धिबटि ।
बैतरणी नदीकि से बान्धिब दि'कूल तथि मध्यरे रखिब रतन भण्डार ।
तिनि लक्ष बारसस्र सुनिआ गणिण कूपर भितरे नेइ रखिब यतन ।

तथि परे पाञ्चहात पथर बान्धिब तथिपरे शिबलिंग स्थापन करिब ।
चतुर्भुजी नारायणी दक्षिणे स्थापिब ठाकुराणी पृष्ठे देबनागरी लेखिब ।
देबनागरी अक्षर पृष्ठरे लेखाइ अक्षर ताड़े लेखाइब जे नृपसाइँ ।
शुणि बारंग कहन्त गुरु मुख चाहँ बिपरीत कथागोटि पचारिलि मुहिं ।
देबनागरी पढ़ा से नरलोके नाहिं केउँलोक पढ़िब जे अक्षरकु जाइँ ।
बारंग बचन शुणि श्रीगुरु कहन्ति अष्टलिपि अक्षर से जगतरे ख्याति ।
देबनागरी अक्षर इंगिराजी जाण फारशी बंगला मरहट्टा तेलंगेण ।
ओड़िआ मिशाइ अष्टप्रकार अक्षर देबनागरी पढ़न्ति देबता सकल ।
तो मने संशय हेला कहिबा बुझाइ अपूर्ब चरित कथा देबि तोते कहि ।
ब्रह्मांकर ज्येष्ठपुत्र मरिचि अटइ काशीक्षेत्रे रहिथिब बिश्वनाथ ध्यायि ।
ताहांक कोलरे एक गोटि पुत्र हेब एकपुत्र बिनु दुइपुत्र ग्रे नोहिब ।
सेहि पुत्रगोटि देबनागरी पढ़इ देबअंशी मर्त्त्यरे से छन्ति जन्महोइ ।
प्रभुंक कारणबेले आसि पहञ्चिब देबनागरी पढ़िण द्रब्य काढ़िदेब ।
आहुरि कथा रहिला बारंग तु शुण कहिदेबा प्रति प्रति बिस्तार करिण ।
सिद्ध बलदेब छन्ति तुलसी क्षेत्रेण धर्म युधुष्ठिंक धन अछि सेहि स्थान ।
तिनिरे से सातअंक सहस्र गणन बलदेबंक गोचरे रहिअछि धन ।
उदय बेलकु प्रभु रेबतीर कान्त से रत्न पहञ्चाइबे प्रभुंक अग्रत ।



भावार्थ — महापुरुष शिशुअनंत दास के शिष्य बारंग ने पूछा — “गुरुदेव! जब ओडिशा भूवन में दुर्भिक्ष पड़ेगा एवं भक्त निर्धन हो जाएँगे, तब वे किस प्रकार लीला करेंगे और प्रभु की सेवा में कैसे नियोजित होंगे?”

तब महापुरुष शिशुअनंत दास ने कहा — “हे बारंग! यह एक गुप्त बात है। द्वापरयुग में ही प्रभु श्रीकृष्ण ने अनेक गुप्त स्थलों पर स्वर्ण और रत्न छिपाकर रखे हैं। बिरजा के दक्षिण में हीरे, मोती, माणिक और सोने के चार खजाने हैं। जाजनग्र में मणिभद्र नामक स्थान पर एक कुएँ में अपार सोना रखा गया है। आखंडलेश्वर के दक्षिण पर एक कुएँ में साठ लाख बावन हज़ार रत्न गुप्त रखा गया है। बैतरणी नदी के पास सोमवंशी राजा ने अपार धन रखा है। जाजपुर के सूर्यवंशीय राजा ने एक कुएँ में तीन लाख बारह हज़ार सुवर्ण सुरक्षित कर, उसके ऊपर पाँच हाथ ऊँचा पत्थर और लोहे की किल्ली से बाँधकर शिवलिंग तथा दक्षिण दिशा में चतुर्भुजी ठाकुरानी नारायणी की स्थापना की है, और नारायणी की पीठ पर देवनागरी अंकित कर प्रतिलिपि ताड़पत्र पर भी लिखवाई है। ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र मरीचि काशी क्षेत्र में रहकर भगवान विश्वनाथ का ध्यान करेंगे। उनके यहाँ एक ही पुत्र होगा (दूसरा नहीं)। वह पुत्र देवनागरी पढ़ेगा — देवांशयुक्त होकर मर्त्यलोक में जन्म लेगा। जब समय आएगा, प्रभु की इच्छा से वही व्यक्ति आकर देवनागरी पढ़कर उस गुप्त द्रव्य (ख़ज़ाने) को निकाल देगा।”

महापुरुष आगे कहते हैं — “सिद्ध बलदेव तुलसी क्षेत्र में स्थित हैं। वहाँ धर्मराज युधिष्ठिर का अपार धन रखा है, जब समय आएगा, रेवतीकांत बलदेव जी स्वयं उस धन को प्रभु कल्कि के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे।”

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

श्रीक्षेत्ररे इन्द्रद्युम राजा हेतुकर केते रत्न रखिअछि बेढ़ार भितर ।
भकतजनंकु बाण्टिदेबे बसुदेब बेढ़ाभितर (धन) प्रभुंक खरत होइब ।
ए कथा शुणि बारंग नमस्कार होइ शुणिण गरु लागिला मोते जे गोसाइँ ।
कोठ गहण जे दल प्रभु संगतर द्रब्य पाइ सुस्थ हेब निज भक्तकुल ।

अर्थात — महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग को बताते हैं कि राजा इन्द्रद्युम्न ने श्रीक्षेत्र के बेढ़ा के भीतर अनेक रत्न रखे हैं। और समय आने पर प्रभु कल्कि इन धन-रत्नों को अपने भक्तों में

बाँट देंगे। प्रभु के कोठ तथा गहन दल इन द्रव्यों को प्राप्त कर स्वस्थ हो जाएँगे।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

पद्म भक्त जन्म हेबे ए जे सीमाधरि ओड़िशा मण्डले जन्मिबे सीमाकु आबोरि ।
समस्ते केमन्ते सुस्थ होइबे गोसाइँ एथिर जे प्रतिकार कहिब बुझाइ ।
भला बारंग प्रसन्न चित्तरे बिचारु टिकक कथाकु तुहि गण्ठिकरि धरु ।
कारण बेलरे प्रभु कमल लोचन भक्तंकु जे देखि दयाकर नारायण ।
इन्द्रकु डकाइ प्रभु आज्ञा से करिबे मीन बृष्टिकर बोलि श्रीमुखे कहिबे ।
आज्ञा पाइबा समये शीघ्र चलिजिब चारिमेघ ड़काइ से हुकुम करिब ।
सुबर्ण्णरिखा ठारु ऋषिकुल्या ग़ाए सम्बलपुरठाबरु पाराद्वीप ग़ाए ।
एथिमधे मीनबृष्टि कर तुम्भे जाइ आज्ञापाइ मेघमाने जिबे शीघ्र होइ ।
मीनबृष्टि करिबे से सीमाकु आबोरि परजा समस्त पाइ धर्मकु आबोरि ।
सुबर्ण कलस सर्ब पीढ़ारे बसिब जयध्धनि सबु मञ्च मण्ड़ले शुभिब ।
प्रजाजन भक्तजन आनन्द होइबे कृष्णनाम उच्च भणि भक्तिरे भासिबे ।
हरि हरि शब्द मही उछुलि पड़िब हरष होइब मही सर्ब देखुथिब ।

अर्थात — शिष्य बारंग अपने गुरुदेव महापुरुष शिशु अनन्त दास जी से पूछते हैं कि ओड़िशा मंडल में जो पद्मभक्त हैं, वे किस प्रकार स्वस्थ होंगे? इसके उत्तर में महापुरुष शिशु अनन्त दास बताते हैं कि समय आने पर प्रभु कल्कि इन्द्रदेव को बुलाकर अपने श्रीमुख से मीनवृष्टि करने का आदेश देंगे। आदेश प्राप्त होने के पश्चात इन्द्रदेव शीघ्र ही चारों मेघों को बुलाकर आज्ञा देंगे। तत्पश्चात वे चारों मेघ सुवर्णरेखा से ऋषिकुल्या तक, संबलपुर से पाराद्वीप तक समस्त सीमाओं के भीतर शीघ्र जाकर मीनवृष्टि करेंगे। सुवर्ण कलश सभी पीढ़ाओं पर स्थापित होंगे और जयध्वनि से सम्पूर्ण मंच-मण्डल शोभायमान होगा। प्रजाजन तथा भक्तजन हर्षित होकर कृष्णनाम का उच्चारण करेंगे और भक्ति में तल्लीन हो जाएँगे। "हरी-हरी" की ध्वनि सम्पूर्ण धरती पर गूँज उठेगी और हर्षोल्लास से भूमण्डल परिपूर्ण हो जाएगा। **(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)**

भक्त-संघ और दुष्ट-दलन लीला

लक्ष्मी नारायणंक अभिषेक तिनि भुबने उछुलिब ड़ाक ।
चउषठि सस्र ग्रे कोठदल गहण दल तिनिशरे ठुल ।
देबीमाने भक्तंकु गणिदेबे तिनिश भकत संगरे थिबे ।
यदुबंशी ऋक्ष बंशी सहिते गोपीबंशी आदि जेते जगते ।
भकत भकते आनन्दभरे दुष्ट दलन सेहि अनुसारे ।
कलप बाण्टिदेबे भावग्राही भक्तंक अज्रामर हेब देही ।
बिरोजा मण्ड़पे प्रबेश हेबे बिरोजा जे टह टह हसिबे ।
एबे पाञ्च ठिक कहिबा शुण बारंग बिचार चित्तरे घेन।
पाञ्च सहस्र जेतेबेल हेब सम्पूर्ण लीला प्रकाश होइब ।
मधुमास त्रयोदशी दिनरे लक्ष लक्ष नाश होइबे नरे ।
कृष्णपक्ष चइत्र मासे जाण असंख्य नाश हेबे पापीजन ।
बिक्रमसिंह प्राय बेनि भाइ दुष्टंकु दलिबे उप्रोध नाहिं ।
परजामानंक दुःख नाशिबे स्थान भ्रष्ट नृप जेतेक थिबे ।
श्रीहस्तरे शाढ़ी बान्धिण देबे जाहांकु जेउँस्थाने (नेड़) रखाइबे ।

अर्थात — महापुरुष शिशु अनंत दास अपने शिष्य बारंग से कहते हैं कि लक्ष्मी-नारायण का अभिषेक तीनों भुवनों में गूंज उठेगा। चौषठि सहस्र कोठ-दल सहित तीन सौ गहन-दल के भक्त एकत्रित होंगे। देवियाँ भक्तों की गणना करेंगी और तीन सौ भक्त उनके साथ रहेंगे। यदुवंशी, ऋक्षवंशी तथा गोपीवंशी आदि जितने भी जगत में हैं, सभी भक्त आनंदपूर्वक मिल-जुलकर दुष्ट-दलन करेंगे। प्रभु कल्कि भक्तों को कलप बाँटेंगे, जिससे भक्तों का शरीर अजर-अमर हो जाएगा। इसके पश्चात् माता विरजा मण्डप में प्रवेश करेंगी और ऊँचे स्वर में हँसेंगी। आगे महापुरुष बताते हैं कि जब पाँच हज़ार वर्ष पूरे होंगे, तब सम्पूर्ण लीला प्रकाशित होंगी। मधु मास की त्रयोदशी के दिन लाखों मनुष्यों का नाश होगा। कृष्णपक्ष के चैत्र मास में असंख्य पापियों का विनाश होगा। विक्रमसिंह के समान दो भाई दुष्टों का संहार करेंगे और प्रजाजनों के दुःख का नाश करेंगे। तत्पश्चात जितने भी स्थान-भ्रष्ट शासक होंगे, उन्हें हटाकर प्रभु अपने हस्तों से नवीन शासक प्रतिष्ठित करेंगे।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

मरु-देवापि का सिंहासनारोहण



आहुरि कथाए बारंग शुण श्री भागबते द्वादश स्कन्धेण ।
हस्तिना कटक जेबण भूइँ बर्त्तमान दिल्ली सहर सेहि ।
सोमबंशी राजा गादीटि सेइ बामन जन्मि नष्ट कला सेहि ।
पूर्बर चरित्र कहिबा शुण से पापी अछन्ति तपस्यारेण ।
उत्तरदिगे तपस्या करन्ति तपस्या से पूर्ण करि नाहान्ति ।
पाञ्च सहस्र बरषरे पुण तपस्या तांकर हेब सम्पूर्ण ।
बारंग बेले प्रभुक्ति भेटिबे प्रभु श्रीहस्ते शिरीपा बान्धिबे ।
श्री पद्म हस्त त मस्तके देबे हस्तिना राजन हेलु बोलिबे ।
प्रभु बचन से पापी शुणि शिरे कर देइ से बेनि प्राणी ।
आज्ञा कल प्रभु शिरीमुखेण हस्तिना कटके हेलु राजन ।
पितृ पितामह आम्भरि स्थान नष्ट करिअछि सेहि दमन ।
सेठारे यज्ञ होइब गोसाइँ तेबे से गादीरे बसिबि मुहिं ।
आपण प्रभु बिजे करि जिब से स्थान अति निर्मल होइब ।
प्रभु आसिबे दुइ भाइ पुण गहणदल संगते घेनिण ।
हस्तिना स्थले प्रबेश होइबे याग कराइ गादीरे स्थापिबे ।
सोमबंशी स्थापि से बिम्बाधर सूर्य्यबंशी कथा भाबि मनर ।
कलाप ग्राम आदि परे स्थित मरुत तपस्या तहिं निअत ।
उत्तराखण्ड सरकु अणाइ अय़ोध्या स्थापिबे से भाबग्राही ।
देशे देशे दुइ भाइ गमिबे थानी अथानी से होइण थिबे ।
ताहांकु स्थापन करि श्रीधर ग्राम बसाइबे प्रभु अपार ।
बिश्वकर्माकु चाहिं चक्रधर अमृतबाणी कहिबे मधुर ।
सकल ग्रामरे पुर निर्माण य़ेमन्ते प्रकार करि पूरण ।
ताहा शुणि बिश्वकर्मा कहइ निर्माण करि रखिछि गोसाइँ ।
हरिहर क्षेत्र सकल ग्राम से स्थाने प्रभु करिबे गमन ।
कोठ दलकु स्थानमान देइ गहण दलकु यह्ने रखाइ ।
अनन्त दल चउद भुबन रखाइबे प्रभु अति यतन ।
पद्म भब भकतंकु से सुखदेइ प्रजामानंकु सुस्थरे रखाइ ।
दुष्ट दल नाशे सन्थ पालन प्रजा रक्षण से धर्म स्थापन ।
भागबत नाम ग्राम ग्रामरे उछुलिब नाम तिनि पुररे ।

अर्थात — महापुरुष शिशु अनन्त दास अपने शिष्य बारंग को श्रीमद्भागवतम् के द्वादश स्कन्ध में वर्णित प्रसंग के बारे में बताते हैं। जो हस्तिना कटक की जो भूमि है, वही वर्तमान में दिल्ली शहर है। महापुरुष राजा देवापि के विषय में बताते हैं कि वे उत्तर दिशा में तपस्या कर रहे हैं, जो अभी तक पूर्ण नहीं हुई है। पाँच हज़ार वर्ष पूर्ण होने पर उनकी तपस्या पूर्ण होगी। उस समय वे प्रभु कल्कि से भेंट करेंगे और प्रभु कल्कि उनको राजा बनाकर अपने पद्म-हस्त को उनके मस्तक पर रखकर कहेंगे —'तुम हस्तिनापुर (दिल्ली शहर) के राजा हुए।'

प्रभु के वचन सुनकर देवापि विनीत भाव से कहेंगे—'आपकी आज्ञा से मैं हस्तिनापुर का राजा तो हुआ, किन्तु हे प्रभु! हमारे पितृ और पितामह का स्थान दमन वंशजों ने नष्ट कर दिया है। अतः जब उस स्थान पर यज्ञ होगा और आप स्वयं उस स्थल पर पधारेंगे, तभी मैं उस गद्दी पर बैठूँगा। तब वह स्थान अति निर्मल हो जाएगा।'

तत्पश्चात प्रभु कल्कि और बलराम अपने गहण-दल सहित वहाँ पधारेंगे तथा हस्तिनापुर में यज्ञ कराकर देवापि को गद्दी पर प्रतिष्ठित करेंगे। सोमवंशी राजा की स्थापना करके प्रभु कल्कि सूर्यवंशी राजा मरु के विषय में विचार करेंगे। मरु उस समय कलापग्राम में तपस्या में लीन होंगे। प्रभु उत्ताराखण्ड को समीप लाकर अयोध्या की स्थापना करेंगे। फिर सूर्यवंशी राजा मरु की स्थापना करके प्रभु कल्कि और बलराम देश-देश में भ्रमण कर विकास करेंगे। इसके उपरान्त प्रभु कल्कि ग्रामों और नगरों का निर्माण कराएँगे। प्रभु विश्वकर्मा जी को बुलाकर ग्राम और पुरों के निर्माण का आदेश देंगे। यह सुनकर विश्वकर्मा जी कहेंगे कि वे पहले ही ग्राम और पुरों का निर्माण कर चुके हैं। हरिहर नामक क्षेत्र में सभी ग्राम निर्मित हो चुके होंगे और प्रभु कल्कि वहाँ गमन करेंगे। प्रभु कल्कि कोठ-दल तथा गहन-दल को उचित स्थान देंगे तथा उन्हें यत्नपूर्वक रखेंगे। जो अनन्त-दल हैं, उन्हें चौदहों भुवनों में यत्नपूर्वक स्थापित करेंगे। प्रभु पद्म-दल के भक्तों को सुख प्रदान करेंगे और प्रजाजनों को स्वस्थ रखेंगे। वे दुष्ट-दलों का नाश करेंगे, संतों का पालन करेंगे, प्रजाओं की रक्षा करेंगे और धर्म की पुनः स्थापना करेंगे। 'भागवत' का नाम ग्राम-ग्राम और तीनों पुरों में गूँज उठेगा।

(भविष्यत पुराण, महापुरुष शिशुअनंत दास)

जाजपुर में ग्रन्थ का प्रकाश

जाजपुर ठारे ग्रन्थ मेलिण, भक्तमाने पुणि मिलिबे जाण I
भक्तंकु घेनिण प्रभु बसिबे, ग्रन्थ प्रकाश कर हे बोलिबे ।
पठन ग्रन्थमान तहिं हेब, समस्त भक्तंक नाम मिलिब ।
कलप बाण्टिबे से गदाधर, भक्तमाने पान करि अधर ।
पूर्ब ज्ञातिश्वर कला मिलिब, शरीर अबस्था सकल जिब ।
भक्तमानंकर आनन्द मन, बज्रठुँ शरीर हेब कठिन ।
प्रभुंक लीला निकटरे थिब, ए ग्रन्थ गोटि प्रकाश होइब ।

अर्थात — महापुरुष शिशु अनन्त दास अपने शिष्य बारंग से कहते हैं कि जाजपुर में ग्रन्थ प्राप्त होगा और भक्तजन वहाँ एकत्रित होंगे। प्रभु कल्कि अपने भक्तों के साथ विराजमान होंगे और अपने भक्तों को उन ग्रन्थों को प्रकाशित करने के लिए बोलेंगे। वहाँ ग्रन्थों का पाठ होगा और सभी भक्तों के नाम उसमें मिलेंगे। प्रभु गदाधर अपने भक्तों को कलप बाँटेंगे, जिसे भक्त अपने अधरों से पान करेंगे और पूर्व की कलाओं को प्राप्त करेंगे। उनके शरीर की अवस्था दूर हो जाएगी। उनके मन आनन्दित होंगे और उनके शरीर वज्र के समान कठोर हो जाएँगे। प्रभु की लीला समीप रहेगी और यह ग्रन्थ प्रकाशित होगा। **(भविष्यत पुराण)**

मायिक आवरण

चउषठि सिद्ध सहस्र भकत, जन्म होइथिबे पुणि समस्त
प्रभुंक गहणे खेल खेलिबे, मायापटले चिहि न पारिबे ।
चिहि पाशोरिबे सकळ पोए, ता देखि आपणे देबाधिराए ।
सप्तबार सेहु बुझाइ कहि, सप्तबार धर्मकु साक्षी देइ ।
केहि न मानिले बाक्य आम्भर, तेणु दुर्गा पातिअछि खपर ।
एहा शुणि प्रभु लुचि बसिबे, तेणु योग्नी बुलि बाछि खाइबे ।
घोर गर्जन अति भयंकर, युबाबेश होइ धरि खपर ।
कुराल चक्र प्राये नेत्रमान, तराटि चार्हिबे भकतजन ।
श्रीमुखरे प्रभु आज्ञा बहिबे, सकल देबींकु ड़ाकि कहिबे ।
तुम्भे देबी ये एमन्त करिब, मन्त्रयन्त्र बेद बिद्या पढ़िब ।
सेमानंकु आग खाइब य़ाइँ, आम्भ आज्ञा शिरे थुबटि बहि ।
तेणु देबी उल्कापात होइबे, ड़ाकिहाकि ग्रामे बुलि खाइबे ।
शुणि बारंग जोड़ि बेनि कर, कि कहिलटि सन्देह मोहर ।
यन्त्र मन्त्र वेद न मानि पुण, केमन्ते बञ्चिबे भकत जन ।
शुण कुमर पचारिलु जाहा, ब्रह्म एकाक्षर बोलि जे एहा ।
ब्रह्म गुणाण ब्रह्म गायतरी, जे भक्त कहिब देबिटि बारि।
चउषटि हजार भकत पुण, षोलकोश मध्ये हेबे जनम ।
अधिक षोल सरदार, चउषठि महन्त जन्म आबर ।
अष्ट सेनापति एथि सङ्गरे, जन्म होइबे नानादि जातिरे ।
बैष्णब नोहिण गृहरे थिबे, बालक स्वरूपे प्रभु मिलिबे।
जार जेउँ सेबा जे अधूकार, ड़ाकिण देबेटि श्री चक्रधर ।
पद्माकु अनिरुद्ध गदाबीर। उद्धब आदि सातुकी बिदुर ।
एमाने समस्ते आसि मिलिबे, प्रभुंक रूप दर्शन करिबे ।

अर्थात — चौषठि सिद्ध सहस्र भक्त जन्म लेंगे और प्रभु के संग खेल खेलेंगे, परन्तु आँखों पर माया के आवरण के कारण उन्हें पहचान नहीं पाएँगे। कुछ पहचान कर भी प्रभु को पुनः भूल जाएँगे। यह देखकर स्वयं देवाधिराज सात बार समझाकर कहेंगे और सात बार धर्म को साक्षी देकर बताएँगे। परन्तु कोई भी वचन नहीं मानेगा, इसी कारण दुर्गा खप्पर धारण किए हुए हैं। यह देखकर प्रभु छिपकर बैठेंगे और योगिनी गण घूम-घूमकर चुन-चुनकर खाएँगी। अति भयानक गर्जना होगी, युवावेश में होकर वे हाथों में खप्पर धारण किए रहेंगी। कराल चक्र के समान नेत्रों से भक्तजनों को घूरेंगी। तब प्रभु कल्कि सभी देवियों को बुलाकर कहेंगे — “आप देवियाँ ऐसा कीजिए कि जो मन्त्र, यन्त्र और वेदविद्या पढ़ेंगे, उन्हें जाकर पहले खाइए।” इस कारण देवियाँ गर्जना करती हुई ग्राम-ग्राम में घूमकर खाएँगी। यह सुनकर महापुरुष शिशु अनन्तजी के शिष्य बारंग अपने दोनों हाथ जोड़कर महापुरुष से पूछते हैं — “आपने यह क्या कहा गुरुदेव! मुझे संशय है — यदि मन्त्र, यन्त्र और वेद को न मानें तो भक्तजन किस प्रकार बचेंगे?”

महापुरुष शिशुअनन्त उत्तर देते हैं — “जो भक्तगण ब्रह्म एकाक्षर, ब्रह्मगुणान और ब्रह्म गायत्री कहेंगे , वे बच जाएँगे।” चौषठि हज़ार भक्त सोलह कोश के मध्य जन्म लेंगे, और सोलह सरदार, सोलह महन्त, आठ सेनापति नाना जातियों में जन्म लेंगे। वे वैष्णव न होकर गृहों में रहेंगे और प्रभु के बालक स्वरूप का दर्शन करेंगे। जिसकी जो सेवा का अधिकार होगा, प्रभु श्रीचक्रधर (कल्कि) उन्हें बुलाकर वह सौंपेंगे। अनिरुद्ध, उद्धव, विदुर तथा सात्यकी — ये सभी आकर मिलेंगे और प्रभु का दर्शन करेंगे। **(कलियुग पुराण)**

सियालदह यज्ञ

आहुरि कथाए राम कहिबि बुझाइ शिआलदा यज्ञकथा शुण मनदेइ ।
शिआलदारे यज्ञ करिबे अच्युत महायज्ञ हेब सेठि साजिबे अच्युत ।
प्रभुंक चिन्तारे मुहिँ जाइथिबि पुण केहि न जाणिबे मोते थिबि मुँ गुप्तेण ।
कलिकता गंगाकाली तिनिरड़ि देबे शुणिकरि तिनिरड़ि भक्त प्रबेशिबे ।
ओड़िशा देशकु पुण ड़ाक जे शुभिब सारा पृथ्वीजाक पुण चमकिणजिब ।
सारा पृथ्वीजाक पुण चमकिणजिब अच्युत दास सेठारु पलाइ आसिबे ।
नेम्बालबट पुटरे आसिण मिलिबे प्रभु बलदेब आसि पूर्बु रहिथिबे ।

अर्थात — महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामदास से सियालदह के यज्ञ के विषय में कहते हैं कि — सियालदह में स्वयं अच्युत यज्ञ करेंगे, वहाँ एक महायज्ञ का आयोजन होगा। प्रभु के चिंतन में मैं वहाँ जाऊँगा, किन्तु मुझे कोई नहीं पहचानेगा, मैं गुप्त रूप से रहूँगा। कोलकाता में गंगा काली तीन बार गर्जना करेंगी। उन तीन गर्जनाओं को सुनकर भक्तगण वहाँ प्रवेश करेंगे। वो ध्वनि ओड़िशा तक सुनाई देगी और समस्त पृथ्वी आश्चर्यचकित हो उठेगी। इसी कारण अच्युतदास वहाँ से निकलकर नेमाल बट में आकर मिलेंगे, जहाँ प्रभु बलदेव पहले से ही उपस्थित रहेंगे।

(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)

शिआलदाठारे राम मोते तु देखिबु आउ केउँठारे राम मोते न पाइबु ।
अच्युत जे य़ज्ञ करुथिबे सेहिठारे यज्ञशाले रहि मोते भाबिब मनरे ।
अच्युत जे ड़ाकदे देबे सेहि ठाबे पुणि मोर शर पड़िब ग्रे यज्ञशाले जाणि ।
ओलाशुणिठारे शर मारिबि मुँ पुण शिआलदाठारे शर पड़िब जे शुण ।
शरकु देखि अच्युत भाबिब मनरे अरक्षित आसि पहञ्चिब सेबठारे ।
अच्युतर मनजाइ हरष होइब पुणि आहुति सेठारे अच्युति करिब ।
जगन्नाथ बलराम सेहिठारे थिबे अरक्षित जाइ तहिँ मिलन होइबे ।
अरक्षित अच्युतकु घेनिण आसिबे न जाणि पारिण तहुँ पलाइण जिबे ।
नेम्बाल मठरे आसि सर्बे पहञ्चिब सुधर्मासभा सेठारे शारला करिबे ।
कोड़िएरे एहि कथा कथा होइब जे जाण कहिलि बुझाइ राम गुपत बिधान ।

अर्थात — महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचन्द्र से कहते हैं कि सियालदह में ही तुम मुझे देखोगे और अन्य कहीं नहीं पाओगे। अच्युत वहाँ यज्ञ करेंगे और उसी यज्ञशाला में मन ही मन मेरा स्मरण करेंगे। ओलाशुनी से मैं तीर चलाऊँगा, जो सियालदह में आकर गिरेगा। उस बाण को देखकर अच्युत सोचेंगे कि अरक्षित आकर वहाँ पहुँचेंगे। अच्युत हर्षित होंगे और पुनः यज्ञ में आहुति आरम्भ करेंगे। वहाँ महाप्रभु जगन्नाथ और बलराम जी भी उपस्थित रहेंगे, जहाँ महापुरुष अरक्षित दास जाकर उनसे मिलेंगे। महापुरुष अरक्षित दास अच्युत को अपने साथ लेकर आएँगे, किंतु न जान पाने के कारण वहाँ से लौट जाएँगे और सभी नेमाल मठ पहुँचेंगे। वहाँ सुधर्मा सभा का आयोजन माता सारला करेंगी। महापुरुष आगे अपने शिष्य से कहते हैं कि यह घटना बीसवें में घटित होगी। **(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)**

रूस एवं महाप्रभु जगन्नाथ की अद्भुत लीला

आहुरि कथाए राम कहिबिटि पुण आहुरि गुप्त कथाटि मनदेइ जाण ।
समुद्ररु उठिबटि लहड़ि जे जाण नीलचक्ररे ढ़ेउ पाणि पड़िबटि पुण ।
छपनरे ढ़ेउ पुणि उठिण आसिब बड़ देउलरे पाणि पशिण जे जिब ।
सेतिकिबेलरे रुषिआटि जगिथिबे त्रिजटा मिलिण दारुकु पुणि (जे) आणिबे ।
रेलरे बसाइ जाण रुषिआ आणिब बइरीरे पुणि रेल इञ्जिन भांगिब ।

**छतिआरे पुणि तर्हिं दारु जे रहिबे भक्तमाने पूर्बु जाइ ठुल होइथिबे ।
बड़ देउल चूम्बकु नेब जे रुषिआ बिलातरु चुम्बक जे आणिब रुषिआ ।
बाइशि महण चुम्बक सेठारेरहिछि बिलातरे राज नेइ चुम्बक रखिअछि ।
बिलातरु चुम्बक जे आणिण रुषिआ । बड़ देउल पाखरे होइब जे ठिआ ॥
रुषिआ जाहाजरे नेब सेहि चूलिकु तर्हिं लुचाइ नेइण जिब रात्ररे से नेइ ।
छतिआरे चूलि मारिब ए कथा प्रमाण दरगढ़ा देउल जे रहिब जाण ।
जगन्नाथंकु रखि (छतिआ) देउल भितरे। सातदिन सातरात्र रहिबेटि पुण
छतिआ होइब पुरीक्षेत्र जे प्रमाण । बयालिश ठिक हेब ए कथा ग्रे प्रमाण
कहिलिरे राम तोते ए गुप्त पुराण । धलाघोड़ा चढ़ि प्रभु ग्रामरे बुलिबे
बारहात खण्ड़ाधरि बुलाउण थिबे । सातदिन चढ़ि प्रभु बुलिबे जे देश
बारहात खण्डा धरिथिबे (निजे) जगन्नाथ । म्लेच्छ संहार करिबे प्रभु पीतबास
एहिबेले कलियुग होइब जे शेष द्वापरे रुषिआ मागिथिला एहि बर ।
छेरापरा देबइँ मु मुहिं ए कलियुगर । कलिरे दारु होइण थिबि मुहिं जाण
नीलगिरि उपरे थिबि मुहिं जे पुण तुहि आसि मोते पुण घेनिकरि जिबु ।
सातदिन छतिआरे मोते तु रखिबु । सेथिपाइँ रामचन्द्र नेब ग्रे रुषिआ
केहि न जाणिबे तांक कूटनीति माया । (परे) छेरापरा करिब जे रुषिआटि जाण
सातदिन सात रात्र (पुरी) क्षेत्रर प्रमाण । सेइठारे रुषिआ जे मोक्ष होइजिब
जगन्नाथंक चरणे शरण पशिब । केते केते भक्तमाने होइबेटि मेल
बैज्ञानिक यन्त्र सबु होइब अचल ।**

अर्थात — महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि समुद्र की लहरें उठकर पुरी श्रीमंदिर से टकराएँगी और नीलचक्र तक पहुँच जाएँगी। छप्पन (५६) में पुनः लहरें उठकर पुरी श्रीमंदिर में प्रवेश करेंगी। उस समय रूस, त्रिजटा के साथ मिलकर दारु विग्रह (जगन्नाथ महाप्रभु, बलभद्र और माता सुभद्रा की काष्ठ मूर्तियाँ) को रेलगाड़ी में बैठाकर ले जाएगा। परंतु बैरी स्टेशन पर रेल का इंजन टूट जाएगा। छतिआ पर दारु विग्रहों को रखा जाएगा, जहाँ भक्त पहले से ही बड़ी संख्या में उपस्थित रहेंगे। रूस पुरी श्रीमंदिर का चुम्बक लेगा और इंग्लैंड का चुम्बक लेकर आएगा। बाइस महण (२२ × ३७.३ = लगभग ८२०.६ किलोग्राम) का चुम्बक वहाँ इंग्लैंड में रखा हुआ है, जिसे राजा ने रख रखा है। वही चुम्बक रूस लाकर पुरी श्रीमंदिर के पास खड़ा होगा। रूसी जहाज़ द्वारा उस शिखर को उठाकर रात में गुप्त रूप से ले जाया जाएगा। रूस अधबने छतिआ मंदिर में उस शिखर को स्थापित करेगा। फिर जगन्नाथ महाप्रभु को छतिआ मंदिर के भीतर रखकर सात दिन सात रात वहीं रहेंगे। तब छतिआ पुरी क्षेत्र बन जाएगा। यह घटना बयालीस (४२) में घटित होगी। प्रभु श्वेत अश्व पर आरूढ़ होकर गाँवों में भ्रमण करेंगे। बारह हाथ लंबा खड्ग धारण कर वे सात दिन तक देश भ्रमण करेंगे। स्वयं जगन्नाथ महाप्रभु बारह हाथ लंबा खड्ग लेकर म्लेच्छों का संहार करेंगे। ठीक इसी समय कलियुग का अंत होगा। द्वापर युग में रूस ने यह वरदान माँगा था कि कलियुग में वह प्रभु की सेवा करेगा। तब प्रभु ने कहा था कि कलियुग में मैं दारु विग्रह के रूप में नीलगिरि पर्वत (नीलाचल) में रहूँगा। तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे और छतिआ में सात दिन तक रखोगे। महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामचंद्र को आगे बताते हैं कि इसलिए रूस दारु विग्रहों को अपने साथ ले जाएगा। कोई भी उनकी इस कूटनीति और माया को नहीं जान पाएगा। बाद में रूस छेरापहँरा सेवा करेगा। सात दिन सात रात जब छतिआ श्रीक्षेत्र में परिवर्तित होगा तब रूस जगन्नाथ महाप्रभु के चरणों में शरण लेकर मोक्ष प्राप्त करेगा। अनेकों भक्त एकत्र होंगे और विज्ञान के सभी यंत्र अचल हो जाएँगे।

(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)

भक्तजनों के लिए अंजन-प्रदान लीला

शुण रामचन्द्र तुहि मोहर बचन जेउँ सातरात्र हेब कहुछि तु शुण ।
अन्धकारे काहाकु ग्रे देखाहेब नाहिँ सेतिकिबेलरे ग्रोग्नी खाइबे गोड़ाइ ।
घरे थिबे जेते सबु अत्याचारी नारी सेतिकिबेले नाचिबे कालीरूप धरि ।
अञ्जन नाइले देखाजिब दिनपरि केउँ गछ तोते सबु कहिबा बिस्तारि ।
निर्मूलिर चेर आणि अञ्जन घेनिब सातदिन अन्धकार दिन जे होइब ।
एहाशुणि रामदास पुच्छन्ति बचन निर्मूलिर चेर कथा कुह नारायण ।
किपरि से चेर मुहिँ चिहिबिटि कुह न कहिले प्रभु मोर न रहि रहिब देह ।
एहा शुणि अरक्षित दिअन्ति उत्तर काहाकु जे देखा हेब नाहिँ सेहि सेहि चेर ।
पञ्चसखांकु जे देखा निर्मूलि होइब तांक बिना अन्य काहिँ देखा जे न जिब ।
सेथिग्नोगु भगबान रखिछन्ति याकु कलिरे अञ्जन देबे से भक्तमानंकु ।

अर्थात — महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं— “हे रामचन्द्र! मेरे वचनों को ध्यानपूर्वक सुनो। जिस दिन सात रातों तक अंधकार छाया रहेगा, उस समय किसी को कुछ भी दिखाई नहीं देगा। उस समय योगिनियाँ पीछा करके खाएँगी। घर में जितनी भी अत्याचारी स्त्रियाँ होंगी, वे सब काली का रूप धारण कर नृत्य करेंगी। यदि अंजन लगाया जाए तो सब कुछ दिन के समान स्पष्ट दिखाई देगा। यह अंजन किस वृक्ष से बनेगा, यह भी मैं तुम्हें विस्तार से बताता हूँ। निर्मूली का जड़ लाकर अंजन लगाने से सात दिनों के अंधकार दिन के समान दिखाई देगा। यह सुनकर महापुरुष अरक्षित दास के शिष्य रामचंद्र पूछते हैं, "निर्मुली नामक जड़ के बारे में कृपा करके और बताइए, मैं उसे कैसे पहचानूँगा?"

यह सुनकर महापुरुष अरक्षित दास कहते हैं, "किसी को वह जड़ दिखाई नहीं देगा, वह निर्मुली की जड़ केवल पंचसखाओं को दिखाई देगा, उनके सिवा और किसी को नहीं। इसलिए प्रभु ने इसे रखा है कि कलियुग में अंजन भक्तजनों को दिया जाएगा।" **(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)**

महादुर्भिक्ष में खंडगिरि की गुप्त शरण लीला।

खाइबा पाइँकि अन्न राम न मिलिब दुर्भिक्ष पड़िब सारा पृथ्वी ग्रे कम्पिब ।
एहा शुणि रामदास पुच्छन्ति बचन कलिरे भकतमाने कि करिबे पुण ।
अन्न बिहुने के लोक मरिण जे जिबे किपरि बञ्चिबे सेहु सहु कहिबटि तेबे ।
एहाशुणि अरक्षित कहन्ति बुझाइ भक्तमानंकु जे नेबि खण्ड़गिरि भुइ।
सेठारे पत्र खोइण बञ्चाइबि मुहिँ गुम्फार मध्यरे तांकु रखाइखाइबि नेइ ।
पत्र नाम कहुअछि शुण राम तुहि गोखर पत्रकु राम भुञ्जिबटि रहि ।
से पत्रकु खाइ भक्तमाने जे बञ्चिबे घोर कलिरे जे भक्त आहार करिबे ।
पाणि अभावरु भक्त न पाइबे जाण उदय गिरिरे रहिअछि पाणि पुण ।
सेइ पाणि खाइ राम दिन ग्रे बञ्चिबे गांगी परबते पुणि भक्त ग्रे रहिबे ।

अर्थात — महापुरुष अरक्षित दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं— राम! भोजन के लिए अन्न नहीं मिलेगा, भयंकर दुर्भिक्ष पड़ेगा और पूरी पृथ्वी कांप उठेगी। यह सुनकर रामदास प्रश्न करते हैं— ‘गुरुदेव! कलियुग में भक्तगण क्या करेंगे? अन्न के बिना लोग तो मर जाएँगे, वे किस प्रकार बचेंगे?’

तब महापुरुष अरक्षित दास उत्तर देते हैं— ‘मैं भक्तों को खंडगिरि की भूमि में ले जाऊँगा। वहाँ उन्हें गुफाओं के भीतर रखकर पत्ते खिलाकर बचाऊँगा। सुनो राम! उस पत्ते का नाम बताता हूँ— वह है गोखर का पत्ता। भक्तजन उसी पत्ते को खाकर घोर कलियुग में जीवित रहेंगे। पानी के अभाव से भी भक्त पीड़ित होंगे, परंतु उदयगिरि पर्वत में जल उपलब्ध रहेगा। वहाँ के जल को पीकर भक्तजन बचेंगे। इसके बाद, गांगी नामक पर्वत पर भी भक्तजन रहेंगे।" **(महागुप्त पद्मकल्प, महापुरुष अरक्षित दास)**

छतिआ बट लीला

मारु महरग पड़िब देशरे अन्नजल न मिलिब ।
पागला इञ्जिन कलिकताठारु सेहि बेलरे आसिब ॥
नीलाचल धामर । आसि मिलिब बइरी ठार ॥
छतिआ बटरे गुज्जरी राहास नयने देखिबु तुहि ।
भकत परीक्षा सेठारे होइब तोते मुँ देलि बुझाइ ॥

××××

छपनरे ढ़ेउ माड़ि आसिब बड़देउलरे पाणि पशिब ।
सिंहासनपरे थिबे बरुण बड़पण्डार जे हेब मरण ।
जगन्नाथ जिबे छतिआपुरी संसार पड़िब चमक हुरि ।
तेरदिन क्षेत्र हेब छतिआ भकत रहि तहिँ हाड़िआ
बइरी ष्टेसन इञ्जिन चूर्ण छतिआकु जिबे से दारुब्रह्म
ऋषिआ त्रिजटा मुकत हेब युगकु युगकु कथा रहिब ।

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि देश में विनाशकारी अकाल पड़ेगा, अन्न और जल उपलब्ध नहीं होंगे। उस समय कलकत्ता से पागल इंजन नीलाचल धाम में आएगा और बैरी स्टेशन पर पहुँचकर रुकेगा, जहाँ इंजन चूर्ण होगा तथा दारु-विग्रहों को भक्तों द्वारा छतिआ धाम ले जाया जाएगा। महापुरुष बताते हैं कि छतिआ बट में गुज्जरी रास होगा और वहाँ भक्तों की परीक्षा भी होगी। छप्पन (५६, संभवतः — २०५६) में लहरें उठेंगी और श्रीमंदिर में जल प्रवेश करेगा। सिंहासन पर वरुण देव विराजमान होंगे। उसी समय पुरी श्रीमंदिर के बड़ पंडा (पुरी श्रीमंदिर के मुख्य पुजारी) जी का निधन होगा। जगन्नाथ महाप्रभु छतिआपुरी जाएंगे और उस समय संसार में कोलाहल व्याप्त होगा। तेरह दिनों तक छतिआ श्रीक्षेत्र में परिवर्तित होगा। रूस त्रिजटा मुक्त होंगे और यह कथा युगों-युगों तक रहेगी। **(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

जाहा हेबटि सेहि बेलरे त्रिजटार बंश मिलि दारुकु नेबेटि यानरे भरि, लो जाइफुल
सबु बुद्धि जिबटि पाशोरि बइरि निकटे पुण सेठारे बिमान होइब चूर्ण, लो जाइफुल
तहिं प्रभु हेबे अन्तर्द्धान भकते होइ आगम दारुकु नेबे से छतिआ ग्राम, लो जाइफुल
तहिं भेइबे पीठ सुठाम श्रीक्षेत्र छाड़ि से दिन लीला आरम्भिबे छतिआ धाम, लो जाइफुल
बहु भकत मेलि से स्थान पुण श्रीक्षेत्रे आसिबे दारुब्रह्म तहिं पूजा पाइबे, लो जाइफुल
जने सत्याग्रही ग्रहु हेबे धर्म कर्म नीति न्यास यबनंक जोगुँ होइब नाश, लो जाइफुल भाब ए कथा मिथ्या न भाष

अर्थात — महापुरुष अच्युतानन्द जी अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि त्रिजटा के वंश मिलकर दारु विग्रहों को यान (कुछ स्थानों पर रेलगाड़ी लिखा है) में भरकर ले जाएँगे, परन्तु बैरी स्टेशन के निकट विमान चूर्ण हो जाएगा। वहाँ से प्रभु अन्तर्ध्यान हो जाएंगे। तत्पश्चात् भक्तों का वहाँ आगमन होगा और वे दारु-विग्रहों को अपने साथ लेकर छतिआ ग्राम जाएंगे। वहाँ उन्हें सुन्दर पीठ में स्थापित करेंगे। उस समय प्रभु छतिआ धाम में अपनी लीला का आरम्भ करेंगे। वहाँ अनेक भक्त एकत्र होंगे। इन लीलाओं के सम्पन्न होने के पश्चात् दारु-ब्रह्म पुनः श्रीक्षेत्र में आएंगे और वहाँ पूजा प्राप्त करेंगे। उस समय एक सत्याग्रही होगा, जो धर्म, कर्म और नीति के मार्ग पर चलेगा। उसका नाश एक यवन (मुसलमान) के कारण होगा। **(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

लंकारु आसिब भक्त बिभीषण अगस्ति संगरे घेनि बड़देउलर जलकु से चलू करिबे अगस्ति मुनि ।

अर्थात् — लंका से भक्त विभीषण अगस्त्य मुनि को साथ लेकर आएँगे। वे अगस्त्य मुनि बड़े देवालय (पूरी श्री जगन्नाथ मंदिर) के जल का पान करके सुखा देंगे)।

(जिस प्रकार पूर्व में देवताओं के अनुरोध पर, अगस्त्य मुनि ने अपनी योगिक शक्ति का प्रयोग किया था और एक ही आचमन में पूरे समुद्र के जल को पी लिया था।) **(पट्टामड़ान, शिशुअनंत दास)**

बड़चणा ठारु होइब उत्सब भावबट गादि जाएं । जगन्नाथ मूर्त्ति गादि पाखे रखि करिबे से क्षेत्र प्राये ॥
महाप्रसाद जे तहिंरु होइब कैबल्य हाट बसिब । क्षेत्र जातकरि अनन्त केशरी लीला तहिं आरम्भिब ॥
नबसस्र भक्त संगतरे थिबे तेर जण मूल करि । पञ्चसखा आम्भे प्रकाश होइबु देखिबु इच्छाबिहारी ॥
भकतंक मेल होइथिब तहिं आनन्द कल्लोल हब । आनन्द सम ए मोहना मुगल पुत्र तहिं ये मिलिब ॥
नाम ता दुर्दुर राक्षास शरीर न जाणइं धर्म सेहि । मुगल बल ता संगतरे थिबे नबलक्ष जाण तहिं ॥
भकतमानंकु बहु कष्ट देब से जे दुर्दुर मोगल । भकतमाने जे ध्यान करुथिबे बसि ब्रह्म एकाक्षर ॥
छतिआ बटरु नीलगिरि जाएं घाटिबे मोगल बल । बले बलिआर होइण राक्षसे पशिबे बड़देउल ॥
अतिहिं कष्टरे देखिण केशरी हृदरे बिचार करि । द्वापर युगरे येहु परंब्रह्म सेहु ललाट केशरी ॥
ताहांकु अणाइं केशरी गोसाइं आज्ञा जे देबे बहन । मुगल बलकु तुहि बेगे जाइ कर बहन छेदन ॥
ललाट केशरी युद्धकु आचरि बहु युद्ध आरम्भिबे । मुगल बलकु जिणि न पारिण अबश्य सेहु हारिबे ॥
प्रभुंक छामुरे जणाइबे जाइ उपदर्प ताहांकर । ताहांकु प्रभु जे जाणि न पारिबे ब्रह्म जप जे तांकर ॥
शुणिण अनन्त केशरी गोसाइं सहदेबंकु चित्तिबे । नकुल जे पुण दुइ भ्रातजाक मणिपुर ठारे थिबे ॥
बंग देशरे जे मणिपुर ठारे बायुमण्ड़ल गिरिरे । ब्राह्मण रूपरे तप करुथिबे से गिरि गुम्फा मध्यरे ॥
अश्बत्थमा शल्य से गिरिरे थिबे क्षत्रि बृत्तिकु धरिण । धनुर्बिद्यामान तहिं साधुथिबे उत्तर बट पाशेण ॥
सहदेब ध्यान भांगिटि पुण प्रभुंकु चिन्तिला बेले । अनन्त केशरी मर्त्त्ये अबतरि जाणिबे से योगबले ॥
नकुल आदि जे अश्बत्थमा शल्य घेनि संगते चलिबे । छतिआ गादिर पारुशे जाइण तिनिदिने से मिलिबे ॥
प्रभुंक आगरे क्षत्रि चारिजण दरशन दिले जाइं । किस आज्ञा प्रभु होइब गोसाइं कहिब हे भावग्राही ॥
अनन्त केशरी बोलिबे जे तुम्भे बेगे चारिजण जाअ । दुर्दुर मोगल बलमान मारि भक्तंकु रक्षा कराअ ॥
आज्ञा पाइ चारि क्षत्रिबीर जाइ समर करिबे पुण । मुगल बलकु बिनाश करिबे क्षत्रिंक मध्यरे टाण ॥
मुगल सकल होइबे बिनाश नकुलर शस्त्र घाते । मुगलकु नाश सहदेब आदि मिलिबे प्रभु अग्रते ॥
अनन्त केशरी आदि सर्ब भक्ते छतिआ ठाबरे थिबे । हरेकृष्ण आदि सर्ब भकतंकु सहदेब जे चिह्निबे ॥

××××

सप्तबिंश दिन क्षेत्र जे होइब भकतंक मेलि तहिं । सेहि जे ठाबरु छतिश नृपति प्रभुंकु भेटिबे जाइं ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि ओड़िशा में छतिआ से लेकर बड़चणा तक उत्सव होगा। वहाँ जगन्नाथ मूर्त्ति को हाड़ी दास के गादी के पास रखकर क्षेत्र-प्राय किया जाएगा और वहीं महाप्रसाद का कैवल्य हाट बैठेगा। उस स्थान पर प्रभु अनंत केशरी लीला का आरंभ करेंगे। वहाँ तेरह जन मुख्यकर नौ हज़ार भक्त उपस्थित होंगे। वहाँ पंचसखा भी आएंगे और प्रभु के दर्शन करेंगे। भक्तों का आपसी मिलन होगा और वहाँ आनंद की लहर उठेगी। इसी आनंद के समय मोहना का पुत्र आकर वहाँ मिलेगा, जिसका नाम दुर्दुर राक्षस होगा। उसके साथ नौ लाख के लगभग मुगल सैनिक होंगे। यह दुर्दुर और उसके मुगल सैनिक भक्तजनों को अत्यधिक कष्ट देंगे। उस समय भक्त लोग बैठकर ब्रह्म एकाक्षर मंत्र का ध्यान करेंगे। तब छतिआ बट से लेकर नीलाचल पुरी तक मुगल सैनिक फैल जाएंगे। बलपूर्वक वे राक्षस लोग बड़देउल (जगन्नाथ मंदिर) में प्रवेश करेंगे। इन दुःखद दृश्य को देखकर अनन्त केशरी विचार करेंगे कि जो द्वापर युग के परब्रह्म थे वही लालाट किशोर हैं। उन्हें बुलवाकर प्रभु अनन्त कहेंगे कि "आप जाकर मुगल सैनिकों का संहार करिए।" लालाट किशोर युद्ध में जाकर अनेक युद्ध आरम्भ करेंगे, परंतु अंततः

पराजित होंगे। (जैसे द्वापर युग में जरासन्ध का वध भीम के हाथों ही निश्चित था, जिसके कारण प्रभु श्रीकृष्ण ने उसे नहीं मारा; वैसे ही इस बार भी उनका वध किसी और के हाथों होना निश्चित है।)
तब प्रभु लालाट किशोर प्रभु अनन्त किशोर के समक्ष जाकर उन मुगल सैनिकों की उपद्रव के विषय में सूचित करेंगे। यह सुनकर अनन्त केशरी सहदेव और नकुल भाइयों को स्मरण करेंगे। वे उस समय बंग देश के मणिपुर के वायुमंडल गिरि पर्वत पर ब्राह्मण रूप धारण कर तप कर रहे होंगे। उनके साथ अश्वत्थामा और शल्य भी क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए अस्त्र-शस्त्र की साधना कर रहे होंगे।
प्रभु के चिंतन से सहदेव का ध्यान टूट जाएगा और वे अपने योगबल से जानेंगे कि पृथ्वी पर प्रभु ने अवतार धारण किया है। सहदेव, नकुल, अश्वत्थामा और शल्य साथ चलकर छतिआ गादी पर पहुँचेंगे और तीन दिन के भीतर प्रभु के समक्ष प्रस्तुत होंगे। तब चारों क्षत्रिय प्रभु को प्रणाम कर कहेंगे — "हे भावग्रहण करने वाले, हमें आज्ञा दें।"
अनन्त केशरी कहेंगे — "तुम शीघ्र जाकर दुर्दुर और उसकी मुगल सेना का संहार कर भक्तों की रक्षा करो।" प्रभु की आज्ञा पाकर चारों क्षत्रिय वीर युद्ध करेंगे और मुगल सेना को परास्त कर देंगे। नकुल के शस्त्राघात से उस मुगल सेना का संपूर्ण नाश हो जाएगा और सहदेव आदि प्रभु के समक्ष पुनः मिलेंगे। इसके उपरांत अनन्त केशरी और समस्त भक्त छतिआ स्थान पर रहेंगे और सहदेव सभी भक्तों को पहचानेंगे, जिनमें हरेकृष्ण आदि सभी सम्मिलित होंगे। सत्ताईस दिन बड़चणा से आरम्भ कर छातिआ तक उत्सव में भक्तों का मिलन होगा। उस स्थान में छत्तीस शासक प्रभु से मिलने आएँगे और प्रभु के चरणों की सेवा करेंगे। **(कल्प टिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

महापुरुष अच्युत और प्रभु श्रीहरि के प्रेमसन्देश

कलियुग हटि जाइ सत्यर प्रकाश भकतमाने रहिबे अत्यन्त उल्लास ।
बहु कष्ट पाइछन्ति भकत मोहर अलप दिनरे दुःख कष्ट जिब दूर ।
ए कलि हटिब युग अनन्त होइब दीन अच्युती कामना पूरण होइब ।
चेतुथिबे भक्तगण दिन गणुथिबे से जे कलंकीकि ध्यायी उद्धार होइबे ।

अर्थात — कलियुग हट जाएगा और सत्य का प्रकाश होगा। भक्तजन अत्यंत उल्लासपूर्वक रहेंगे। मेरे भक्तों ने बहुत कष्ट सहा है, परंतु थोड़े ही दिनों में उनके दुःख और कष्ट दूर हो जाएंगे। यह कलियुग हट जाएगा और अनन्त युग का आरंभ होगा। तब इस दीन अच्युत की कामना पूर्ण होगी। भक्तजन सजग रहकर दिन गिनेंगे और कलंकी (प्रभु कल्कि) का ध्यान करके उद्धार होंगे।

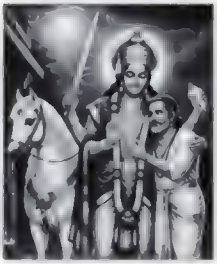
(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)

कहन्ति अच्युत शुण रामदास भकत मो गला माल । भकत निमन्ते सम्बलनग्ररे हेबि कल्की अबतार ॥
भकत मो माता भकत मो पिता भकत भउणी भाइ । भकतंक पाइँ निद न लागइ बुलइ मुँ साइ साइ ॥
भकत पाइँ हेबि अबतार पापी करिबि नाश । बारहात खण्डा धरिबि मुँ हस्ते महीभाराटि उश्बास ॥
भकत मोहर पञ्च आत्मा जाण भक्त मोहर जीबन । भकतंक पाइँ साइति रखिछि अनन्त युगटि पुण ॥
सत्यरे पृथिबी हेब आतय़ात सत्य हेब बलीयार । भकते मोहर आनन्दे रहिबे सत्य सत्य एहि गीर ॥
भकत निमन्ते दशबिध रूप चारियुगरे होइलि । श्रीनीलाचलरे मउन होइण नयने सबु देखिलि ॥
हेबि अबतार नाशि म्लेच्छ पल पृथ्बी उश्वास करिबि । भक्तंकु मोहर आनन्दे रखिबि शिरीपा मुण्डे बान्धिबि ॥
रात्र दिबा निद मोते न लागइ सर्बदा मन अस्थिर । शुण रामचन्द्र बेल जे आखर मरिबे मेलछ पल ॥
नेमाल बटरे चित्रोत्पला कूले निबास मोर अटइ । साधुसन्थंक पादरे शरण दीन अच्युती कहइ ॥
मोर बटपुट पड़िब चहल बारण बेलरे जाण । प्रकाश यज्ञ जे निकटरे हेब चोर धरा हेबे पुण ॥
गुरुबार हेब सेहिदिन जाण सरबे एकाठि हेबे । मोहर नामरे उद्धार होइबे मोहर नाम जपिबे ॥

अर्थात — सुनो रामदास! अच्युत कहते है कि भक्त मेरे गले का हार हैं। भक्तों के लिए संबलनगर में कल्कि अवतार लूँगा। भक्त मेरी माता हैं, भक्त मेरे पिता हैं, भक्त मेरे भाई और बहन हैं। भक्तों के लिए मुझे नींद नहीं आता और मैं इधर-उधर घूमता रहता हूँ। भक्तों के लिए मैं अवतार लूँगा और पापियों का नाश करूँगा। अपने हाथों में बारहहाथ खंडा धारण करके पृथ्वी का भार हल्का करूँगा। भक्त मेरे पाँच आत्माएँ हैं, भक्त मेरा जीवन हैं। भक्तों के लिए ही मैंने यह अनन्त युग संचित करके रखा है। अनन्त युग में सत्य में पृथ्वी पर आना-जाना होगा और सत्य ही बलशाली होगा। मेरे भक्त आनंदपूर्वक रहेंगे। भक्तों के लिए मैंने चार युगों में दस भिन्न-भिन्न रूपों में अवतार धारण किया है। श्रीनीलाचल में मौन रहकर अपनी आँखों से सब कुछ देखा। मैं अवतार लेकर म्लेच्छों का नाश करूँगा और पृथ्वी का भार हल्का करूँगा। अपने भक्तों को आनंद में रखूँगा और उनके मस्तक पर शिरीपा बाँधूँगा (राजा बनाऊंगा)। दिन-रात मुझे निद्रा नहीं आता, मेरा मन सदा अस्थिर रहता है। महापुरुष अच्युतानन्द आगे अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि समय अब समीप आ गया है, म्लेच्छ समुदाय नष्ट हो जाएगा। चित्रोत्पला के तट के नेमाल बट पर मेरा निवास है। साधु-संतों के चरणों में शरण लेकर दीन अच्युत यह कहता है। बारण (बाधित) समय में मेरे वट के नीचे कोलाहल होगा। प्रकाश यज्ञ निकट में होगा और चोर पकड़े जाएँगे। उस दिन गुरुवार होगा, सब एकत्रित होंगे।

(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)

हजिजिब दुःख सत्य उपुजिब । हरिबोल शबदरे जगत पूरिब ॥
क्षेमे अच्युत कहइ भज एकाक्षर । क्षीति मध्य थिबु राम गुपत भाबर ॥
अनेक दुष्ट अछन्ति ए कलि युगर । बानानिन्दा हेब कहे अच्युती पामर ॥
धर्म निन्दुक अज्ञानी अनेक अछन्ति । मोहर भक्तमानंकु थट्टा गालि दयन्ति ॥
देबी मुखरे सेहिमानंकु मुँ देबि । भकतमानंकु घण्ट घोड़ाइ रखिबि ॥
मन्त्र संगे यन्त्रर जे परीक्षा होइब । बैज्ञानिक यन्त्रपाति अचल होइब ॥
तप संगे तोपर य़े लागिब समर । ओलिए भारत क्षय जम्बु द्वीपर ॥
मा शारला षोलमण्ड़ल परीक्षा होइब । सरस्वती कण्ठे बसि खल भिआइब ॥
जेते चिन्ता कले मनु पाशोरिण य़िब । कर्मर परीक्षा गोटि उणा जे पड़िब ॥
ए पृथिबी शान्त हेब सत्य उपुजिब । य़ुग य़ुगकु अच्युती बाणी न टलिब ॥



अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य से कहते हैं कि दुःखों का नाश होगा और सत्य का उदय होगा। हरिबोल के शब्द से जगत गूंज उठेगा। अतः मंगल के लिए एकाक्षर का भजन करो। हे रामदास! पृथ्वी के मध्य गुप्त रूप से रहना। इस कलियुग में अनेक दुष्ट लोग हैं। महिमा की निन्दा होगी, ऐसा कहता है यह पामर अच्युत। धर्म की निंदा करने वाले अज्ञानी बहुत होंगे। वे मेरे भक्तों का उपहास करेंगे और उन्हें गालियाँ देंगे। इन दुष्टों को मैं देवी के मुख में दूँगा तथा अपने भक्तों को सुरक्षित रखूँगा। मंत्र के साथ यंत्र की परीक्षा होगी और वैज्ञानिक यंत्र सभी अचल हो जाएँगे। तप के साथ तोप का युद्ध होगा। जम्बूद्वीप भारतवर्ष में कलिभारत युद्ध होगा। माँ सारला समेत सोलह मण्डलों में परीक्षा होंगी। माँ सरस्वती दुर्जन-कुटिल लोगों के कंठ में बैठकर खेलेंगी। वे मन में कितना भी स्मरण करने का प्रयास करें, वे सब कुछ भूल जाएँगे। कर्म की भी परीक्षा होगी। उसके बाद यह पृथ्वी शांत होगी और सत्य का उदय होगा। अच्युत की वाणी युग–युग तक अटल रहेगी।

(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)

जोबरा घाट परीक्षा

कहन्ति अच्युत शुण ब्रज शिष्य जोबरा घाटर लीला पञ्चसखा संगे कल्की पुरुष गुप्तरे करिबे खेला ।
परीक्षा होइब ब्रह्म एकाक्षर आबर बतिशाक्षर अबना आठ जे ब्रह्म गुणाणटि बसाण पञ्च तत्त्वर ।
गायत्री साबित्री अजपा अमपा ब्रह्म तत्त्व ज्ञान जाण चक्र मन बीज स्वर आत्मा पुण तहिं जे समा आसन ।
ओलट ओंकार सूर्य्य एकाक्षर षड़चक्रर बसाण सप्तांग जे अणरूप ब्रह्म भेद खेचरी मुद्रा प्रमाण ।
धनुर्बाण मन्त्र होइब परीक्षा ग्रोगान्त नागान्त पुण बेदान्त सिद्धान्त परीक्षा जे हेब सेहि भकत प्रमाण ।
गला कटिजिब तण्टि अठा हेब केहि काहाकु न कहि धरा पड़िजिब सबुरि गारिमा तोते मुँ देलि चेताइ ।
नाम न जाणिण शिष्य पणपण भण्ड़साधु करुछन्ति पथर नउका उपरे बसाइ शिष्य बुड़ाइ मारन्ति ।
एमानंकु देबी खर्परे देबि अठाइशठारे जाण बरड़ाल मोर शिरे लागिजिब एहि कथाटि प्रमाण ।
न जाणिण नाम करुछन्ति ढ़म आपणे टेक बोलान्ति गर्ब अहंकार खच मिछ कहि शिष्यमान करुथान्ति ।
तिनि आठ पण से जाणि नाहान्ति य़न्त्र मन्त्र तन्त्र द्वारे ज्योति दरशन छाया अबाड़कु बुझान्ति से कपटरे ।
भण्ड़गुरु सेहि संसारे बोलान्ति कामिनी काञ्चन पाइँ रोगी जा खोजे बइद बताए रोग बढ़िबार पाइँ ।
बहु गुरु एहि कलिरे होइबे शिष्य गोटिए नथिब मायापटलरे समस्ते मातिबे अच्युतीर बाणी ध्रुब ।
शिष्य पणपण गुरु ग्रे काहाण सरबे शुद्ध माउँस द्वापरर चण्डी ताहांकु खाइबे पुरिब तांक आयुष ।
दुर्ल्लभ शरीर संसाररे सार केहि चिह्नि न पारन्ति आपकु चिह्निले सबु दुःख ग्रिबे तेबे होइब मुकति ।
गर्ब अहंकारे मातिछन्ति सर्बे मोर मोर बोलि कहि ए भब सागरे तरिबाकु एका गुरुनाम सत्य सेहि ।
से गुरुनामकु भज आरे मन दिबस निशि शर्बरी गुरुछड़ा गति मुक्ति तोर नाहिं जोबरारु हेबु पारि ।

××××

कहन्ति अच्युत शुणरे बाबु परीक्षार कथा कहिबा सबु ।१।
परीक्षा होइब से तेर मास । मुहिं होइथिबि मानब बेश।२।
जोबरा घाटरे परीक्षा हेब । भूत, मन, तत्त्व, चित्तकु भाब ।३।
ब्रह्म एकाक्षर गायत्री भाब । साबित्री ब्रह्म गुणाण ग्रोगतत्त्व ।४।
बटचक्र, नित्य, महानित्य परीक्षा । बिराट बसाण त्रिबीज लेखा ।५।
सप्तांग अष्टांग नबधा भक्ति लीलांग लयांग अबाड़ ज्योति ।६।
हज सहज जे पुणि ओंकार सूर्य्य एकाक्षर ठार तत्त्वर ।७।
त्रिबेणी ग्रोग ग्रे हरादीक्षर बतिश अक्षर बारमन्त्र सार ।८।
बज्रकिलिणि जे मरा भजन आबर परीक्षा ओलट ज्ञान ।९।
अजपा मृणाल ग्रोग आसन निराकार मन्त्र यन्त्र बसाण ।१०।
शुन्य भजन जे बिराट तत्त्व अपर्णा पार्बती बसाण भाब ।११।
ओंकार, चक्र बेद तत्त्व ज्ञान सूर्य्य समाधि जे तारक ज्ञान ।१२।
मालाझुला चिता परीक्षा जेते कोठदल भक्त देबे समस्ते ।१३।

अर्थात — महापुरुष अच्युतानन्द अपने शिष्य रामदास से जोबरा घाट की लीला परीक्षा के विषय में बताते हैं — वहाँ पंचसखा के साथ प्रभु कल्कि गुप्त रूप से खेलेंगे। वहाँ तेरह महीनों तक अनेक परीक्षाएँ होंगी — ब्रह्म एकाक्षर, बत्तीस अक्षर, अवना, गायत्री, सावित्री, अजपा, ब्रह्मतत्व ज्ञान, चक्र, मन, बीज, स्वर, आसन, उल्टा ओंकार, सूर्य एकाक्षर, षट्चक्र स्थान विन्यास, सप्तांग, खेचरी मुद्रा, धनुष–बाण मंत्र, योगतत्व, अष्टांग, नवधा भक्ति, ओंकार, त्रिवेणी योग, शून्य भजन, विराट तत्व, तारक ज्ञान, माला–तिलक मंत्र, लीलांग, लयांग, हरादीक्षर, निराकार मंत्र–यंत्र स्थान विन्यास आदि अनेक परीक्षाएँ होंगी।

उस समय कोई किसी से बोल नहीं सकेगा, कंठ चिपक कर बंद हो जाएगा। सभी का गर्व पकड़ा जाएगा। महापुरुष बताते हैं कि पाखंडी साधु नाम को न पहचानकर असंख्य शिष्य बनाएँगे। ये लोग पत्थर की नाव में अपने शिष्यों को बैठाकर डुबोकर मरते हैं। इन लोगों को मैं देवी के खप्पर में

डालूंगा। नाम को न पहचानकर गर्व और बाहरी आडम्बर करते हैं और स्वयं को महान बताते हैं। गर्व और अहंकार से भरकर, चुगली और मिथ्या बातें बताकर शिष्य बनाते हैं। तीन–आठ अंश भी वे नहीं जानते और कपट करके यंत्र–मंत्र–तंत्र का ज्ञान बताते हैं। यह नकली ढोंगी गुरु हैं, जो संसार में स्त्री और धन के लिए भटकते रहते हैं, मानो जैसे कोई रोगी वैद्य को खोजकर रोग बढ़ाने के लिए बताता है। इस कलियुग में बहुत गुरु होंगे, किन्तु शिष्य एक भी नहीं। नेत्रों में पड़ी माया की परत से सब मतवाले रहेंगे। ये सभी गुरु और शिष्य शुद्ध मांस होंगे, द्वापर युग की चंडी इन्हें खाएगी। यह दुर्लभ शरीर संसार में सार (श्रेष्ठ) है, किन्तु लोग इसे पहचान नहीं पाते। यदि कोई स्वयं को पहचान ले, तो उसके समस्त दुःख मिट जाएँगे और वह मुक्त हो जाएगा। सभी लोग गर्व और अहंकार में डूबे हैं, हर कोई "मेरा–मेरा" कहता रहता है। इस भावसंसार से पार होने के लिए केवल वही एक गुरु–नाम ही सत्य है। हे मन! दिन–रात उसी गुरु–नाम का भजन कर। क्योंकि गुरु के बिना गति मुक्ति नहीं है; उसी से तू जोबरा की परीक्षा में पार हो सकेगा। **(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

नेमाल प्रकाश यज्ञ

घोर कलि देखि माड़ुछि ड़र प्रकाश यज्ञ जे हेब नेमाल ॥
भक्तंक कामना पूरण हेब कलि हटिजाइ सत्य आसिब ॥
बलदेब य़ज्ञ करता हेबे शक्तिधारी सबु धरा पड़िबे ॥
गोल चहल जे सेठारे हेब अष्टचण्ड़ी घेनि शारदा थिब ॥
चारियुग शक्ति पुणि भकत चिह्नाधरा हेबे नेमाल बट ॥

××××

से यज्ञरु शक्ति बाहार हेब भक्तंक कषण उभेइ जिब ॥
अनन्त युगटि होइब तहिँ अन्त न पाइबे एहार केहि ॥
कला प्रबेशिब सेहि स्थानर युबा होइजिब बृद्धा शरीर ॥
निजर संसार निजे बाछिबे कल्कीराम संगे से पञ्चसखा थिबे ॥
नूआ जीबनकु बाछिबे एका भक्त युगे युगे तांकरि सखा ॥

××××

प्रकाश यज्ञ य़े हेब नेमाल तेबे जाणिबु य़े बेल आखर ॥
गुपतरे यज्ञ एहा होइब भक्तंकर देहे कला पशिब ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि घोर कलियुग को देखकर मन में भय व्याप्त हो रहा है। नेमाल में प्रकाश यज्ञ होगा। भक्तों की कामनाएँ पूर्ण होंगी, कलि हट जाएगा और सत्य आएगा। बलदेव जी यज्ञ के कर्ता होंगे और सभी पाखंडी पकड़े जाएँगे। वहाँ बड़ा कोलाहल होगा तथा अष्टचंडी के साथ माँ शारदा भी वहाँ उपस्थित रहेंगी। चारों युगों के भक्तों की पहचान नेमालवट पर होगी। उस यज्ञ से शक्ति प्रकट होगी जिससे भक्तों के कष्ट दूर हो जाएँगे। वहाँ से अनन्त युग का प्रकाश होगा। उस स्थान पर भक्तों में कला का प्रवेश होगा; वृद्ध शरीर युवा बन जाएगा। भक्त अपने संसार को स्वयं चुनेगा और प्रभु कल्कीराम के साथ पंचसखा उपस्थित रहेंगे। भक्त नया जीवन चुनेंगे। जब नेमाल में प्रकाश यज्ञ होगा, तब जान लेना कि समय समाप्त हो गया है। यह यज्ञ गुप्त रूप से होगा और भक्तों के शरीर में कला प्रवेश करेगी।

(चकड़ा मड़ान, महापुरुष अच्युतानंद दास)

कुंजबिहारी कल्कि की विजय-लीला

केबल ए सनातन धर्मकु स्थापिबे

से नारायण, लो जाइफुल
आउ अन्य धर्म हेब चुर्ण्ण
गरुड़ पृष्ठरे बसि
बिदेशकु जिबे से ब्रह्मराशि, लो जाइफुल
सेठु आणिबे श्वेत तुलसी
मयूर खंजा आसन
कउस्तुभ मणि करे धरिण, लो जाइफुल
प्रभु आसिबे से नारायण
गरुड़ पक्ष आघाते
तुरुक सइन मरिबे केते, लो जाइफुल
जेउंमाने थिबे धर्म सत्ये
सेमानंकु सेहि राज्य
समर्पि आसिबे नन्द आत्मज, लो जाइफुल
तुहि हिंसा असत्यकु तेज
लक्षे माढ़ स्वर्ण्ण धरि
रुषिए आसिब दर्शन करि, लो जाइफुल
देखि हसिबे कुञ्जबिहारी



अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि प्रभु श्री नारायण केवल सनातन धर्म की ही स्थापना करेंगे और अन्य सभी धर्म चूर्ण हो जाएँगे। प्रभु कल्कि गरुड़देव की पीठ पर आरूढ़ होकर विदेश प्रस्थान करेंगे और वहाँ से श्वेत तुलसी, मयूर सिंहासन तथा कौस्तुभ मणि अपने हाथों में धारण कर वापस आएँगे। आगे महापुरुष बताते हैं कि गरुड़ देव के पंखों के प्रहार से तुर्कों की असंख्य सेनाएँ मारी जाएँगी। किंतु जो लोग सत्य धर्म में स्थित रहेंगे, प्रभु उन्हें राज्य समर्पित करके लौटेंगे। लाखों की संख्या में स्वर्ण लेकर रूस प्रभु कल्कि के दर्शन हेतु आएँगे। यह देखकर प्रभु कुंजबिहारी (कल्कि) मुस्कुराएँगे। **(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

प्रभु कल्कि और माता लक्ष्मी का विवाह

लक्ष्मी नृसिंह मिलन
खण्ड़गिरिठारे होइब जाण, लो जाइफुल
तहिं आसिबे चतुरानन
महादेब जे आसिबे
ताण्ड़ब नृत्यरे मग्न होइबे, लो जाइफुल
अष्ट दुर्गा तांक संगे थिबे
ए लीला गुपते हेब
भक्त बिना अन्य केबा जाणिब, लो जाइफुल
एहि बाणी अटइटि ध्रुब
सम आसन तु कर
मनकु नेइण चैतन्य धर, लो जाइफुल
तोर अपलक नेत्र कर
जेबे देखिबु श्रीहरि
लाबण्य मूरति मुरली धारी, लो जाइफुल
तेबे भवसागरकु जिबु तरि



अर्थात — लक्ष्मी-नृसिंह का मिलन अर्थात् प्रभु कल्कि और माता लक्ष्मी का विवाह खंडगिरि में होगा। वहाँ चतुर्मुख ब्रह्मा आएंगे और महादेव तांडव नृत्य में मग्न होंगे। उनके साथ अष्ट दुर्गाएँ भी उपस्थित रहेंगी। यह लीला गुप्त रूप से संपन्न होगी जिसे भक्तों के अतिरिक्त कोई और नहीं जान सकेगा। यह वाणी ध्रुव सत्य है। इसलिए समआसन करो, मन को चैतन्य में स्थिर करो। अपनी दृष्टि को अपलक बनाकर जब तुम श्रीहरि की लावण्य मूर्ति, मुरलीधारी रूप का दर्शन करोगे, तभी तुम भवसागर से तर जाओगे। **(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

गजपति महाराज प्रभु अनन्तकेशरी का आगमन

१. कहे रामचन्द्र शुण गोसाइँ । सबुत कहिल मोते बुझाइ ॥
आग पछ करि कहिल मोते । आहुरि सन्देह रहिला चित्ते ॥
सत उपुजिब जेबणकाले । के अबा थिबटि होइ भूपाले ॥
भूपतिर नाम कहिबा हेउ । मोहर मनरु संशय जाउ ॥
बोलन्ति अनादि शुणरे बाल । काशीनग्ररु आसिबे भूपाल ॥
अनन्त मूरति आसिबे बहि । बाल मूरति होइथिबे सेहि ॥
हाती चढ़िण देश बुलिजिबे । श्रीक्षेत्रे आसिण नृपति हेबे ॥
भक्तमाने थिबे ताहांक पाश । सेदिनु बसुधा हेब उश्बास ॥

××××

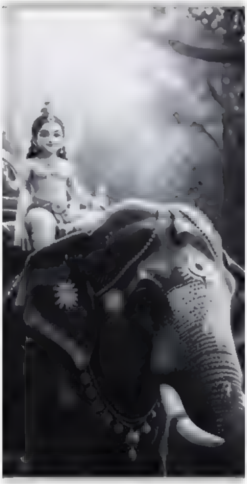
२. गजपति बोलिण न थिबे पाटणार । गिरि जे कन्दरु प्रभु होइबे बाहार ।
गज बाहनरे प्रभु बिजय करिबे । दुष्ट म्लेच्छ देखि प्रभु संहार करिबे ।३।

××××

३. शुकल पक्ष बइशाख मास । तृतीया तिथि जे रोहिणी बृष ॥
बार बृहस्पति से बिद्यमान । गोप्य नृपति उदय से दिन ॥
नाम ता' केशरी । लुचि रहिथिब धबल गिरि ॥

××××

४. ब्रह्म जन्म नाम अनन्त किशोरी नृपति होइब जाण ।
राजगादिकि से आबोरि बसिब सुख हेब सेहिदिन ॥



अर्थात — पंचसखा महापुरुषों ने अपने मालिका ग्रंथों में प्रमाण दिया है कि जब श्रीक्षेत्र पुरी में कोई गजपति महाराज नहीं होगा, उस समय प्रभु अनंतकेशरी गज-वाहन (हाथी) पर आरूढ़ होकर बालक रूप में काशीनगर से आएंगे। वे धवलगिरि की गुफा में गुप्त रूप से निवास करेंगे और उचित समय आने पर श्रीक्षेत्र में आकर नए गजपति महाराज बनेंगे। उनके साथ भक्तजन रहेंगे। जिस दिन वे गजपति महाराज के रूप में प्रतिष्ठित होंगे, उसी दिन से सुख और समृद्धि का आरंभ होगा। यह घटना वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को घटित होगी, जब रोहिणी नक्षत्र वृषभ राशि में होगा और वह दिन गुरुवार का होगा।

१. (तत्वबोधिनी, महापुरुष अच्युतानंद दास) २. कलियुग (आख्यान, महापुरुष यशोबंत दास) ३. शिशु अनन्त मालिका ४. भक्ति चंद्रिका, महापुरुष जगन्नाथ दास

ब्रह्मापद पर हनुमान और इन्द्रपद पर बली

एबे गो शुण शुभ्रकेशी । से महानित्य ब्रह्मराशि ॥
भक्तंक बाञ्छा पूर्ण करि । सत्ये आराधि बसुन्धरी ॥
ब्रह्माण्ड़े स्थापि नृपबर । समर्पि देले महीभार ॥
ए चतुर्मुख प्रजापति । बिनाशि करिबे नृपति ॥

हनुकु ब्रह्मा पद देबे । बलिकु स्वर्ग समर्पिबे ॥

अर्थात — भगवान शिव कहते हैं कि प्रभु कल्कि भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करके पृथ्वी पर सत्य की स्थापना करेंगे। वे ब्रह्मांड में नए राजाओं की स्थापना करेंगे। साथ ही चतुर्मुख ब्रह्मा के पद पर हनुमान जी को प्रतिष्ठित करेंगे तथा बली को स्वर्ग का अधिपत्य प्रदान करेंगे, अर्थात उन्हें इन्द्र का पद देंगे। **(अनादि संहिता, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

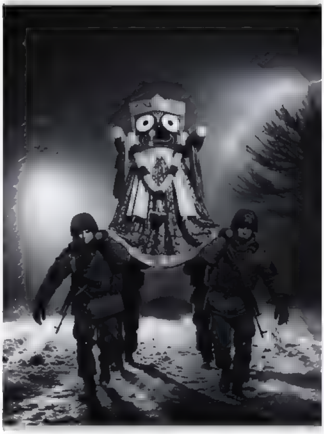
भक्त चितल और मगर

कालिआ घाइ धारे जे दृश्यटि होइब दलेइ घाइ जे बन्ध उछुलि पड़िब
गुप्ते गुप्ते पातालकु से स्रोत फिटिब से धारे धारे करिण पूर्बकु माड़िब
चितल माछ सेबेले बाहारिण जिब शारदा दर्शने पुणि गमन करिब
रत्नजोड़िरे मिलिण बहन चलिब अनेक नगरमान भसाइण नेब
सेठारु जाइण गंगा शंखनदी तीरे प्रबेशिण चलिजिब शारदा पाशरे
पूर्बखण्ड़ दरिआरे से जल मिशिब बउला कुम्भीर तहु बाहार होइब
शारदा दर्शन करि लेउटि आसिब काठजोड़ि तट हंसनाथंकु भेटिब
गुप्ते तहु चाण्ड़े ग्राइ रत्नजोड़ि तीर भक्तगणे भेटि जिबे चित्रोत्पला धार
चितल माछ कुम्भीर भेटण देखिण छतिआबटरे जाइ प्राण हराइण
सेहि स्थाने मृत्यु लभि होइब कारण अमराबती आज्ञा ए नोहिबटि आन
से मत्स्यर अस्थि तहिं कबाट होइब युग युगान्तरकु कथागोटि थिब
से कुम्भीर अस्थि तहिं मुर्धना होइब अमराबती कटक नाम जारि हेब
महोदधि सेहिकाले माड़िण आसिब महाप्रलय बोलिण जगत जाणिब
नीलाचल बाञ्छाबट कम्पिण उठिब ध्वज बज्रांकुश पद चिह्न दृश्य हेब



××××

पूर्ब समुद्ररु लबण उठिब कम्पिब प्राणींक हिआ
आगे कृषिकारी बिनाश होइबे तदन्ते धनीक लोक
राज सेबायत ता परे बिनाश पड़िब घोर मड़क
मधु मास प्रान्त शुक्ल एकादशी बृहस्पति मीन शनि
देबी नदी कूल कुशभद्रा जाए भांगिब त्रिकोण भूमि
कुजंग अञ्चल जले बुड़ाइब नृप सिंहासन जिब
पाराद्वीपठारे आम्भर समाधि सेदिन पूजा पाइब
धारेक फिटिब चित्रोत्पला जाए दामोदर पुरे दोष
भीष्मकुण्ड़ी ठारु गण्डुकी पर्य्यन्त नदी बहिब से रोष
गण्ड़ नाम सात कोशिआ होइछि जिल्ला नाम ढ़ेंकानाल
जाउंळि बन्धर पश्चिम भागरे कुम्भीर रहिछि काल
पूर्बभाग माछ चितल रहिछि सेदिन दर्शन ग़ोग
शारदा मण्ड़ले दर्शन मागिबे सेदिन कूल भांगिब
रत्नबट मूले धारेक फिटिब रत्नाबती नाम हेब
छतिआ बटरे उभये मिलिबे बचन अटइ ध्रुब
एरुण्ड़ि बन्ध से चितल कण्ठ तटे पञ्चमुखी देउलरे
कुम्भीर हाड़रे शूलकाठ हेब मणिनाग गुम्फाठारे



××××

से बे बेलरे चित्तल माछ आसिबटि जाण । कुम्भीर अस्ति होइब बन्ध जे प्रमाण ॥
सेहिबेले जगन्नाथ पुरीरु आसिबे । झाड़ेश्वर कड़ेइरे प्रभु अटकिबे ॥
सेतेबेले आम्भे जिबु प्रभुंकु आणिण। आणिण रखिबु आम्भे छतिआबटेण ॥
हरिहर ब्रह्मा मूर्ति पूजिबु पयरे । अणस्तरि अंके हे हेब मने रख बारे ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिव कल्प एवं आगत भविष्य मालिका में लिखते हैं कि मधु मास के अंत में, शुक्ल पक्ष की एकादशी, बृहस्पतिवार, मीन-शनि योग के समय देवी नदी से लेकर कुशभद्रा तक का त्रिकोणीय भूभाग टूट जाएगा। कुजंग अंचल जलमग्न हो जाएगा। उस समय पाराद्वीप में महापुरुष की समाधि पूजा पाएगा। महापुरुष अच्युतानंद बताते हैं कि जाउँली बाँध के पश्चिम भाग में एक विशाल मगरमच्छ है और पूर्व भाग में चितल मछली (भारतीय फ़ेदरबैक) है, उस दिन उनके दर्शन का योग होगा। उस समय वे माता शारदा का दर्शन माँगेंगे और तट टूट जाएगा। चितल मछली माता शारदा का दर्शन कर प्रस्थान करेगी। रत्नवट के मूल से एक धारा प्रकट होगी जिसका नाम रत्नावती होगा। वहाँ रत्नजोड़ी में मिलकर विशाल चितल मछली अनेक नगरों को बहा ले जाएगी। महापुरुष बताते हैं कि विशाल मगरमच्छ भी बाहर निकलेगा और माता शारदा का दर्शन कर लौटेगा तथा काठजोड़ि के तट पर प्रभु हंसनाथ का दर्शन करेगा। भक्तजन रत्नजोड़ि के तट पर चितल मछली और मगरमच्छ का मिलन देखेंगे। वहाँ से वह मगरमच्छ और चितल मछली छतिआ बट पर आकर मृत्यु को प्राप्त होंगे। महापुरुष बताते हैं कि उस मछली की अस्थियों से और उस मगरमच्छ की हड्डियों से मंदिर के द्वार (कबाट) तैयार होगा। और यह कथा युग-युगांतर तक बना रहेगा। उस समय जब पूर्व से महोदधि (समुद्र) की लहरें उठेंगी, तब समस्त प्राणी भयभीत हो जाएँगे और उनके हृदय कम्पित होंगे। उस समय नीलाचल बांचाबट काँप उठेंगे और ध्वज, वज्र, अंकुश तथा चरणचिह्न दृश्य होंगे। महापुरुष बताते हैं कि उस समय सबसे पहले कृषक वर्ग का विनाश होगा, उसके बाद धनी वर्ग का और उसके पश्चात राजसेवकों का। इसके बाद घोर मड़क (व्यापक मृत्यु अथवा महामारी) का प्रकोप होगा। महापुरुष हाड़ी दास जी भी प्रमाण देते हैं कि उस समय जगन्नाथ महाप्रभु पुरी से प्रस्थान करेंगे और बैरी स्टेशन के पास झाडेश्वर महादेव के समीप ठहरेंगे। तत्पश्चात महापुरुष भक्तगणों के साथ दारु विग्रहों को छतिआबट लाएँगे। और वहाँ ६९ अंक में वे हरि (जगन्नाथ महाप्रभु), हर (बलराम) एवं ब्रह्मा (सुभद्रा) जी की पूजा करेंगे।

देवदत्त अश्व एवं नन्दक खड्ग

कल्की नामरे अबतार । होइबे परम ईश्वर ॥१३५॥
से पुणि सहस्र बरष । तपज्ञान ग़ोगे प्रबेश ॥१३६॥
से अन्ते ईश्बर प्रसन्न । अग्निरु अश्व समर्पिण ॥१३७॥
नन्दक नामे खड्ग देब । ग़ोजने बिस्तार होइब ॥१३८॥
खड्‌ से धरि देबदत्त । अश्ब चढ़िबे बेगबन्त ॥१३९॥
से अश्व चढ़ि खड्ग घेनि । अष्ट ऐश्बर्य्य रसदानी ॥१४०॥
पृथ्बीरे बुलिबे प्रकोपे । म्लेच्छ नाशने महादर्पे ॥१४१॥

अर्थात — अतिबड़ी जगन्नाथ दास अपने ग्रंथ 'ओड़िआ भागवत' में प्रमाण देते हैं कि प्रभु कल्कि की तपस्या से प्रसन्न होकर ईश्वर अग्नि से उन्हें 'देवदत्त' नामक अश्व प्रदान करेंगे, जिसका अर्थ है देवताओं द्वारा दिया गया अश्व, जो वेगवान अर्थात् द्रुतगति-संपन्न होगा। साथ ही वे 'नन्दक' नामक खड्ग भी देंगे। उस खड्ग का विस्तार एक योजन तक होगा। उस अश्व पर चढ़कर, खड्ग हाथ में

लेकर, आठों ऐश्वर्यों से युक्त होकर कल्कि अवतार पृथ्वी पर विचरण करेंगे और अदम्य तेज में म्लेच्छों का संहार करेंगे। **(ओड़िया भागवत, महापुरुष जगन्नाथ दास)**

प्रभु अनंत किशोर की सभा



भकतंक सुख बेल बहि आसुअछि स्रोत प्रबल, लो जाइफुल
आसे पाषाण्ड़ंक दुःख बेल
कल्ंकी उदये हेबे म्लेच्छगण सर्बे बिनाश हेबे, लो जाइफुल
सेहि अनन्त किशोर थिबे
बिरजा मण्ड़ल पूर्बे सभा आरम्भिबे प्रभु सेठाबे, लो
जाइफुल पञ्चसखा भक्त संगे थिबे
कर तुहि सत शिक्षा श्रीगुरु चरणे कर तु भिक्षा, लो
जाइफुल निअ सदग्ररु ठारु दीक्षा
कलियुगं निस्तरिब एकाक्षर जप लीला देखिब, लो जाइफुल
सत्य धर्मे बिहन होइब
भकतमानंक सार कल्ंकी ढ़ांकिछि बेढ़ि शरीर, लो जाइफुल
तांकु न चिह्निबे मूढ़ नर
नीच लोक उच्च हेबे निगम बचन निन्दा करिबे, लो जाइफुल
सत्य भक्तंकु से न चिह्निबे
भकत निन्दिबा जन प्रभु तांक गर्ब करिबे चूर्ण्ण, लो
जाइफुल अपमृत्यु हेब निश्चे जाण
दुष्ट दलि सन्थ रखि क्षितिरे जे बाना थापिबे टेकि, लो
जाइफुल मूढ़ न बुझिबे अबिबेकी
किछिदिन खेलि बुलि अन्तर हेबे बैकुण्ठ बिहारी, लो
जाइफुल दीन अच्युत कहे बिचारि

अर्थात — भक्तों के सुख का समय प्रबल वेग से आ रहा है और दुष्टों का दुःख का समय। कलंकी (कल्कि) अवतार के उदय पर समस्त म्लेच्छगण का विनाश हो जाएगा। प्रभु अनंत किशोर विरजा मंडल के पूर्व में सभा आरंभ करेंगे। वहाँ प्रभु एवं पंचसखा भक्तों के साथ उपस्थित रहेंगे। अतः तुम सच्ची शिक्षा ग्रहण करो और श्रीगुरु के चरणों में भिक्षा माँगो। सद्गुरु से दीक्षा लो, तभी कलियुग से पार हो सकोगे। एकाक्षर मंत्र का जप करो, तब तुम लीलाओं का दर्शन करोगे। सत्य धर्म में रहने वाले ही बीज बनेंगे। भक्तों का सार कलंकी ने अपने शरीर से आवृत कर रखा है, किंतु मूढ़ लोग उन्हें पहचान नहीं पाएंगे। अधम और नीच लोग ऊँचे पद पर बैठेंगे और वेद-वचनों की निंदा करेंगे। ऐसे लोग सच्चे भक्तों को पहचान न सकेंगे। जो लोग भक्तों की निंदा करेंगे, प्रभु उनका गर्व चूर-चूर कर देंगे। उनका अपमृत्यु निश्चित है। दुष्टों का संहार कर प्रभु संतों की रक्षा करेंगे और धरती पर धर्म का ध्वज स्थापित करेंगे। किंतु मूर्ख और अविवेकी लोग इसे समझ नहीं पाएंगे। कुछ दिन लीला खेलकर प्रभु वैकुंठ विहारी अंतर्ध्यान हो जाएँगे, दीन अच्युत यह विचार करके कहता हैं।

(जाईफुल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद दास)

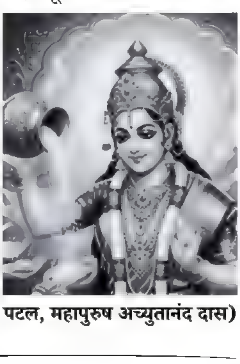
सिद्ध अमर अन्न

आदिकि कहन्ति अनादि । गुपत लीला युगबिधि ॥ शुण हे भकत तु एबे । जे लीला उपुजिब भबे ॥
त्रिपुरे अटइ दुर्ल्लभ । निष्पापि भकतंक भाब ॥ से ब्यास सरोबरे गुप्ते । माणिक्य नित्यद्रब्य जेते ॥
थोइण अहुँ आम्भे तहिँ । मर्त्त्यरे लीला हेबा पाइँ ॥

××××

धबल गिरि तहिँ पुणि । रखा होइछि द्रब्य गणि ॥ माणिक्य झाड़ अछि लक्षे । माणिक्य अर्घ्यथाली लक्षे ॥
लक्षेटि सुबर्ण्ण कलस । लक्षे माणिक्य रत्न सीस ॥ थोइ अछइ पूर्बे गणि । ताहा मो भक्ते जिबे घेनि ॥
सकले होइ एकमेलि । जिबे पश्चिम दिगे चलि ॥ रत्न हान्दोला दिब्य शोभा । करिण जोड़ि पुण्य आभा ॥
मुँ रघुनाथ बेश धरि । हन्दोला मध्ये बिजे करि ॥ कल्की बेश भक्त मोर । देखि मोहित तिनिपुर ॥
गहणे घेनाइ सकल । मिलिबुँ मर्त्त्ये नित्यस्थल ॥ समाधि देबी पूर्बद्वारे । प्रबेश कमला सेठारे ॥
से देबी सिद्ध अन्न धरि । थिबेटी एकान्ते उभारि ॥ भक्तंकु ताहा देबे बाण्टि । जिब पचिश अंक कटि ॥
आम्भेटि बिजे नित्यपुरे । सेइ सताइश अंकरे ॥ हान्दोला बिमान बइठि । सपत फेणि परे उठि ॥
भकतजन थिबे पाशे । त्रिपुरे महाशोभा दिशे ॥ तरके सर्ब देबा देबी । थिबे मो चउपाशे सेबि ॥
गन्धर्ब अपसरा मेळे । नृत्य करिबे भूमण्डले ॥ श्रीगुरु मुखुँ शुणि भाबे । बोले गोबिन्द शुण एबे ॥
श्री मुखे आज्ञा हेला हरि । कमला सिद्ध अन्न धरि ॥ भकत जनंकु देबे ता । एमन्त हेला असरन्ता ॥
काहिँ से अन्नथुब रहि। काहुँ आणिबे महामाई ॥ ताहा कि करिबे भकत । ए प्रति कहिबा भो नाथ ॥
गोबिन्द मुखुँ ताहा शुणि । पुणि श्री गुरु दया घेनि ॥ बोलन्ति शुणरे कुमर । महागुपत ए बिचार ॥
पूर्बे अखण्ड यज्ञ करि । थिले से आदि माहेश्वरी ॥ सहस्र मुख प्रजापति । आबर निराकार यति ॥
यज्ञ कुण्ड़रु धान्य बृक्ष । उत्पत्ति होइला प्रत्यक्ष ॥ से धान्य तेणु लिभिगले । आदि ता अन्न पाक कले ॥
आम्भंकु कहिले बारता । आम्भे कहिहुँ उद्देश्यता ॥ भागेक भुञ्ज देबगण । भागेक रखाअ गुप्तेण ॥
सुबाहु कलियुग अन्ते । कल्की बेश हेबे मर्भे ॥ निष्कामी भक्त हेब गोष्ठी । सेबेले तांकु देब बाण्टि ॥
ए स्वामी उपदेश पाइ । आदि ता यत्नछन्ति थोइ ॥ शेषे ता देबु जे भक्तंकु । भकते लभिबे ताहाकु ॥
अमर अन्न से अटइ । खाइबे अज्रामर होइ ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानन्द दास आदि एवं अनादि के संवाद को प्रस्तुत करते हैं, जहाँ आदि ब्रह्म, अनादि ब्रह्म से कलियुग में घटित होने वाली कल्कि लीला के विषय में कहते हैं। वे कहते हैं कि व्यास सरोवर में मैंने माणिक्य एवं धन गुप्त रूप से कल्कि लीला के लिए रखा है। फिर धवलगिरि में भी अनेकों द्रव्य, माणिक्य, लाखों माणिक्य निर्मित अर्घ्य-थालियाँ, लाखों स्वर्ण कलश तथा माणिक्य-रत्न रखे गए हैं, जिन्हें भक्त अपने साथ लेकर पश्चिम दिशा की ओर चलेंगे। और रत्न-जड़ित दिव्य शोभायुक्त विमान में मैं रघुनाथ-वेश धारण कर विराजमान रहूँगा। तब तीनों पुर मेरे कल्कि रूप का दर्शन करके मोहित हो जाएँगे। सभी को अपने साथ लेकर मैं समाधि देवी के पूर्व द्वार पर मिलूँगा, जहाँ देवी कमला प्रवेश करेंगी और अपने साथ सिद्ध अन्न लेकर भक्तों में उसका वितरण करेंगी। हम विमान में बैठकर सत्ताईसवें अंक में नित्यपुर जाएँगे और भक्तगण मेरे समीप रहेंगे। तीनों पुरों में महाशोभित दृश्य प्रकट होगा। चारों ओर से घिरी हुई देवियाँ और देवता मेरी सेवा करेंगे। गंधर्व और अप्सराएँ भूमण्डल में नृत्य-गान करेंगी। इसके पश्चात गोविन्द बाबा ने महिमा स्वामी से सिद्ध अन्न के विषय में प्रश्न किया। तब महिमा स्वामी ने उत्तर दिया – "यह अति महागुप्त रहस्य है। पूर्वकाल में आदि महेश्वरी ने सहस्रमुख प्रजापति तथा निराकार यति के साथ अखंड यज्ञ किया था। उस यज्ञकुण्ड से धान्य-वृक्ष की उत्पत्ति हुई थी। तब आदि महेश्वरी ने उसका उद्देश्य पूछा, तो मैंने कहा कि एक भाग देवगणों को प्रदान किया जाए और दूसरा भाग गुप्त रखा जाए। कलियुग के अंत में, जब मेरा मर्त्यलोक में कल्कि-वेश होगा, तब निष्कामी भक्त-गोष्ठियाँ (भक्त समूह) होंगी। उस समय उन्हें यह सिद्ध अन्न प्रदान किया जाएगा। इसी कारण आदि महेश्वरी ने उस सिद्ध अन्न को सुरक्षित रखा है। अंत में वही अन्न भक्तों को दिया जाएगा और उस अमर-अन्न को ग्रहण कर भक्तजन अजरामर हो जाएँगे।"



(२४ पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)

विश्वामित्र आश्रम में दिव्य शस्त्रों की शिक्षा



बेनिभाइ बिजे हेबु सेठारे । मकर मास शुक्ल सप्तमीरे ॥
बिश्वामित्र जगि पाइबे भेट । गुम्फारे ऋषि करिथिबे मठ ॥
सबु शास्त्र बिद्या यन्त्र जेतेक । उपदेश धनु सहस्र जाक ॥
जेउं शरकु जेउं मन्त्र अछि । मुनि देबे दुइ भाइंकि बाछि ॥
सातदिने सबु शिक्षा घेनिबु । धनु खड़ग हस्तरे धरिबु ॥
सुदर्शन चक्र थिब आज्ञारे । आसिण भेटिबु बिन्दु सागरे ॥
आम्भे पादरे करिबु गमन । थोके भगत संगते घेनिण ॥
बिन्दु सागर थाट उहाड़े थिब । रथ अश्व सहित हे बासेब ॥
दिन आदित्य सातघड़ि ठारे । पुष्या नक्षत्र चक्र रोहिणीरे ॥
तेर सुआरि थिबे संगतर । बारहात खण्ड़ा हेब बाहार ॥
अनन्त केशरी राजा सहिते । बेनि अश्व चढ़िण बेनि भ्राते ॥
थाट सहिते घेनि संगतरे । बाहिआसिबु जे बेनि पहरे ॥
थाट चलाइ आसिबु जे खरे । ओगालन्ता के नथिबे पृथरे ॥
केशरी राजा पाञ्चअंके जाण । नूआ आरम्भटि सेहि दिनेण ॥
आम्भे बाहि आसिबु हो बासब । आसि रहिबु पद्मबन ठाब ॥
जेते भगत छन्ति पृथिबीरे । सर्बे भेट हेबे आम्भ छामुरे ॥
सबु भगतकु आम्भे डाइबु । जण जणके शान्ति दिआइबु ॥

अर्थात् — श्री जगन्नाथ महाप्रभु देवराज इन्द्र से कहते हैं — "हे वासव (इन्द्र)! हम दोनों भाई मकर मास की शुक्ल सप्तमी को उस स्थान (खण्डगिरि की गुफा में) पर जाएँगे। वहाँ महर्षि विश्वामित्र हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, जिन्होंने गुफा के भीतर अपना मठ स्थापित किया होगा। वे ऋषि हमें समस्त शास्त्र, यन्त्र तथा धनुष (धनुष-बाण) की विद्या प्रदान करेंगे और प्रत्येक बाण के लिए विशिष्ट मन्त्र भी देंगे। हम सात दिनों के भीतर यह सम्पूर्ण शिक्षा ग्रहण करेंगे और हाथों में धनुष तथा खड्ग (तलवार) धारण करूंगा। उस समय सुदर्शन चक्र हमारी आज्ञा में रहेगा, और तुम आकर हमें बिन्दु सागर के तट पर मिलोगे। हम (प्रभु) स्वयं कुछ भक्तों को साथ लेकर पैदल ही वहाँ तक जाएँगे। हे वासव! बिन्दु सागर के तट पर रथ और अश्वों सहित तुम्हारा सारा सैन्य-समूह (गुप्त रूप से) रहेगा। पुष्य और रोहिणी नक्षत्रों के चक्र में, जब दिन के सात घड़ी होंगे, तब हमारे साथ तेरह अश्वारोही होंगी, और बारह हाथ लंबी खड्ग (तलवार) बाहर निकलेगी। राजा अनंत केशरी के साथ, हम दोनों भाई श्वेत और कृष्ण अश्वों पर आरूढ़ होकर, तुम्हारे सैन्य-समूह को साथ लेकर दोपहर तक वहाँ से प्रस्थान करेंगे। हम उस सैन्य-समूह को तीव्र गति से आगे बढ़ाएँगे, और पृथ्वी पर कोई भी हमें रोकने वाला नहीं होगा। तुम यह भी जान लो कि केशरी राजा के पाँचवें अंक में ही यह नया आरंभ होगा। हे वासव! हम वहाँ से चलकर पद्मवन नामक स्थान पर आकर ठहरेंगे। पृथ्वी पर जितने भी भक्तजन हैं, वे सब हमारे सम्मुख आकर मिलेंगे। हम सभी भक्तों को पुकारेंगे (बुलाएँगे), और जन-जन को शांति प्रदान करेंगे।"

(इंद्रगोविंद गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

दुर्भिक्ष द्वारा दुष्टों के नाश की लीला

झिण्टिका नामेण पोक आसिब । शंखचक्र चिह्न ता देहे थिब ॥

××××

आहुरि कथाए शुणरे बला । थोके रंगबर्ण्ण थोकाए कला ॥
शुक्ल बर्णरि जे थोकाए थिबे । ए रूपे झिण्टिका बहि आसिबे ॥

आसिबे झिण्टिका खाइबे शस्य । प्राणींकि नथिब जीबने आश ॥
से दिन जाणिबु कुमर मणि । आहान्तिक भाव धरिबे प्राणी ॥
कहिबे साहस धरिबे माण्डु । पादरु प्राण छाड़िजिब पिण्डु ॥
शुण रामचन्द्र कहिबा तोते । पचिश आगम छबिश जेते ॥
भाद्रबमास दशमीर दिन । शुक्लपक्षरे होइब एमान ॥



××××

ए कलियुगे सुर नर । आबर अनादि असुर ॥
सकल होइछन्ति जात । नर मनुष्य ए जगत ॥
एहांक मधे भक्त मोर । अछन्ति होइण किंकर ॥
मो भक्त बारण निमन्ते । दुर्भिक्ष हेब ए जगते ॥
दुष्टंकु दुर्भिक्षे नाशिबु । भक्तंकु अन्नछत्र देहुँ ॥
जे जहिं चिन्तिलाटि जाहा । प्रापत कराइगुँ ताहा ॥
भक्त हृदरे जेणु मुहिं । ताहांक मन मुँ जाणइ ॥

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानंद दास अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि — एक टिड्डी नामक कीट आएगा, जिसके शरीर पर शंख और चक्र के चिह्न अंकित होंगे। ये टिड्डी कुछ रंगीन, कुछ काले, और कुछ सफेद वर्ण के होंगे। इस प्रकार ये टिड्डी आकर फसलों (शस्य) को खा जाएँगे, जिससे प्राणियों को जीवन की कोई आशा नहीं बचेगी। हे कुमार (पुत्र)! उस दिन तुम जानना कि प्राणी अत्यंत दुख का भाव धारण कर लेंगे। यह समस्त घटना भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन घटित होगी। (तत्वबोधिनी मालिका से उद्धृत)

इसी प्रकार, महापुरुष अच्युतानंद दास अपने चौबीस पटल मालिका ग्रंथ में अलेख स्वामी एवं गोविंद बाबा के संवाद को प्रस्तुत करते हैं, जहाँ अलेख स्वामी गोविंद बाबा से कहते हैं: "इस कलियुग में सुर (देवता), नर (मनुष्य), और असुर—ये सभी इस मनुष्य जगत में उत्पन्न हुए हैं। इन सब के बीच, मेरे भक्तजन सेवक बनकर विद्यमान हैं। मेरे भक्तों की रक्षा के निमित्त ही इस जगत में भयंकर अकाल (दुर्भिक्ष) पड़ेगा। हम दुष्टों को दुर्भिक्ष द्वारा नष्ट कर देंगे, और भक्तों को अन्न और छत्र (आश्रय/सुरक्षा) प्रदान करेंगे। भक्त जो कुछ भी चाहेंगे, हम उसे वह प्राप्त करवाएँगे। चूँकि मैं भक्तों के हृदय में निवास करता हूँ, इसलिए मैं उनके मन की बात जानता हूँ।"

त्रेतया युगरे राबण ये पुण देबंकु कला कषण । धर्म पुराण सकल जाणि करि कला जे अधर्म पुण ।१०२।
कपट छन्द मिछ दोष बुझिण दिबस रात्ररे दोष । एहि कारणे माइलु आम्भे तांकु देब लगाइले दोष ।
से रुधिरे पुण सन्तोष नोहिला चण्डिकंकालिंक मन । युगकु युग कपट खेल मोर न जाणन्ति मूढ़ जन ।१०४।
द्वापर युगरे कंस जे असुर अनेक अनीति कला । गोप भुबनकु कपट मिछरे जेते असुर पेषिला ।१०५।
मिछ कपट दोषे ताकु नाशिलु मथुरारे नूआ राजा । द्वारकापुरे रे रहि लीला बिहिलु कलिकाल प्रदेशिला ।१०६।
कोकुआ स्वरूप धरि कलियुग द्वारकापुररे आसि । ममता पणे यादब नाशगले एरका बनरे पशि ।१०७।
भारत समर अति महाघोर कुरु पाण्ड़बंक गोल । सत्यबन्त मुखे मिछ कुहाइण सोदर बञ्चिले काल ।१०८।
भारत युद्धरे सन्तोष नोहिला चण्डी चामण्ड़ांक मन । एबे एहांक सन्तोष देबा श्रद्ध शोणित करि यतन ।१०९।
ललाटे थिब हरि जपा मन्दिर हस्ते थिब जपा मालि । धर्म पुराण मुखे कहिण अधर्मे होइबे मेलि ।११०।
परधन पर रमणी हरिबे मिछ बेश्यारे पीरति । एमन्त शुद्ध शोणित ये भक्षिबे बिरजाइगण प्रीति ।१११।
उत्तम चित्तरे धर्म न करिबे कुहिते करिबे धर्म ।

अर्थात — भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि— त्रेतायुग में रावण ने देवताओं को कष्ट दिया। धर्म और पुराणों को भली-भाँति जानकर भी उसने अधर्म किया। कपट, छल और असत्य के दोषों को समझकर भी दिन-रात वही करता रहा। इसी कारण हमने उसे मार डाला और देवताओं ने मुझ पर दोष लगाया। परन्तु उसके रक्त से भी चण्डी और काली का मन तृप्त नहीं हुआ। मूर्ख लोग युग-युगांतर से मेरे कपटपूर्ण खेल को नहीं समझ पाते। द्वापरयुग में कंस ने भी अनेक अनीतियाँ कीं। गोप-भुवन में मिथ्या और कपट के द्वारा असुरों को भेजा। उसी मिथ्या और कपट के कारण उसका नाश कर मथुरा में नया राजा स्थापित किया। उसके पश्चात द्वारका में रहकर मैंने लीला की और कलियुग का प्रवेश हुआ। कलियुग ने कोकुआ का स्वरूप धारण कर द्वारका में प्रवेश किया और ममता वश यादवों का एरका वन में जाकर नाश हुआ। महाभारत के युद्ध में कौरव और पाण्डवों के बीच महाघोर युद्ध हुआ, परन्तु उस युद्ध से भी चण्डी और चामुण्डा का मन तृप्त नहीं हुआ। इसीलिए अब इन्हें मैं शुद्ध मांस प्रदान करूँगा। कलियुग में लोग गले से हरिनाम जपेंगे, हाथ में जपमाला होगी, मुख से धर्म और पुराणों की बातें करेंगे, किन्तु आचरण में वे अधर्म से मिलेंगे (यानी धर्म का ढोंग होगा, परन्तु जीवनशैली पापमय होगा। वे परधन और परस्त्री का हरण करेंगे तथा वेश्याओं के साथ मिथ्या प्रीति करेंगे (बाहर से भक्त दिखेंगे, पर भीतर से वासना और लोभ से भरे रहेंगे।)। ऐसे ही शुद्ध मांस का भक्षण करके बिरजा देवी प्रसन्न होंगी। उत्तम चित्त से धर्म का पालन नहीं करेंगे, केवल कहने में धर्म का आचरण प्रकट करेंगे। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

माछखिआ दास अपारु अपार हाण हेबे माल माल ।२७।
धूआँखिआ जन अपार सेठारे नाश होइबेटि पुण ।
पर रमणी हरिला जनमाने सेठारे हेबे मरण ।२८।
दण्ड़ि तण्ड़ि छन्दि राजा जे बहुत सेठारे मरिबे याइँ ।
सन्ध्या भ्रष्ट बिप्र बहुत मरिबे कलियुग कूट होइ ।२०।
गोबध कलिन्द्र बहुत मरिबे मिछुआ जेते पठाण ।
सत कलिन्द्र रहिबे थोके थोकाए कथा अर्जुन शुण ।३०।

××××

सत लेखिलारे करणी रहिब सत्यबन्त राजा थिबे ।

सत्य कलि पादे बिहन होइबे आम्भर संगे खेलिबे ३३।

××××

विधबा स्तिरीकि रमिला पुरुष बालहत्या दोष हुए ।

ए बंशरु थोके मरिबे सेठारे एथिरे नाहिँ संशये ।३६।

अर्थात — भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मछली खाने वाले दास अपार संख्या में मारे जाएँगे। धुआँ (बीड़ी, सिगरेट आदि) खींचने वाले भी असंख्य संख्या में नष्ट होंगे। जो भ्रष्ट शासक बिना दोष के दण्ड देंगे, अधिक कर वसूलेंगे, वे भी मारे जाएँगे। कुटनीति से अनेक संख्या में संध्या-भ्रष्ट विप्र मारे जाएँगे। गौवध करने वाले शासक एवं पठान सभी मारे जाएँगे। किन्तु कुछ सत्य शासक भी रहेंगे। सत्य-बन्त शासक सत्यकलि के लिये बीज होंगे और वे हमारे साथ खेलेंगे। विधवा स्त्री के साथ रमण करने से बाल-हत्या का दोष होता है, इस कारण उस वंश के कुछ लोग नष्ट हो जाएँगे — इसमें कोई संशय नहीं है। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

मिछुआ पर रमणी हरा नर संसारे हेबे अपार ।

बिरजा हाणरे पड़िबा निमन्ते धर्मकु न थिब ड़र ।२६२।

××××

श्राद्ध शुद्धि बिभा गृहे जे प्रबेश उत्सबमान करिबे ।

दुःखी दरिद्रंकु पेजपाणि देइ मुहँ छुआ खुआइबे ।

सन्थ महोत्सब मो य़ात्रा परब प्राणीमाने जे करिण ।

थोके जनमाने उत्तम खाइबे थोके करिबे बारण ।

महोत्सब कला बारण दास ग्रे थोके बिरजांकु देबी ।

अर्थात — भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मिथ्यावादी प्राणी तथा पर-स्त्री का हरण करने वाले नर संसार में अपार संख्या में होंगे। ये लोग बिरजा द्वारा संहार को प्राप्त होंगे, क्योंकि उनमें धर्म का भय नहीं होगा। कुछ लोग श्राद्ध, शुद्धि, विवाह और गृह-प्रवेश जैसे उत्सव करेंगे, और दुःखी तथा दरिद्रों को चावल उबालने के बाद बचा गाढ़ा पानी तथा जूठन, अर्थात् किसी के खाकर छोड़े हुए अंश, खिलाएँगे। संत-महोत्सव, मेरी यात्रा और पर्व का आयोजन करेंगे, किन्तु कुछ लोगों को उत्तम भोजन कराएँगे और कुछ को वंचित रखेंगे। जो ऐसा आचरण करेंगे, उन्हें मैं बिरजा को दूँगा— अर्थात् वे माता बिरजा द्वारा संहार को प्राप्त होंगे। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

गुरुंकु दक्षिणा दिअन्ति जे जन अतिथि मुखे भुञ्जइ ।

ए मानरु थोके रहिबे से काले एथिरे संशय नाहिँ ॥

गुरुंकु बिमुख अतिथि निराश हरषे कुटुम्ब पोषे ।

एणु ए थोकाए मरण होइबे बिरजा मण्ड़ल देशे ।

अर्थात — जो लोग गुरु को दक्षिणा देते हैं और अतिथि को भोजन कराते हैं, उनमें से कुछ अवश्य सत्यकलियुग में रहेंगे, इसमें कोई संशय नहीं है। परन्तु जो गुरु से विमुख होंगे और अतिथि को निराश करेंगे, उनमें से कुछ बिरजा मण्डल देश में मृत्यु को प्राप्त होंगे।

(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)

द्वापरे चण्ड़ी युद्ध योगमाया प्रभुंकु मनाइ रखिछ एहा ।५१।

शुद्ध मांस देबि कलि युगरे भकतकु मोर छाड़ युद्धरे ।५२।

जोषामणि तहुँ प्रबोध पाइ भक्तंकु छाड़ि देला महामायी ।

५३।

कलिरे निश्चय से महामाई जगि रहिछि खपर पताइ ।५४।

शुद्ध मांस से करिब आहार तांक रुधिरे पुरिब खपर ।५५।

बोलन्ति राम गुरुपादे पड़ि संशय रहिला कहन्तु फेड़ि ।५६।
शुद्ध मांस केहु काहाकु देब सेकथा मोते बुझाइ कहिब ।५७।
शुण बाबु तुहि कुमर मणि पूर्बर कथा कहिबा बखाणि ।५८।
हेतु चित्ते धरि शुणरे पोये कलिरे भक्त करिबे अन्याये ।५९।
गुरुद्रोही हेबे जेतेक भक्त तांकु गुरुद्रोही नदेबे मुक्त ।६०।
शुद्धमांसरे गणना होइबे बिरोजा ताहांकु बाछि खाइबे ।६१।
नाम आश्रे करि भक्त मोहर माछमांसरे पुराइ उदर ।६२।
एमाने अटन्ति शुद्ध मांयेस ताहांकु देबि करिबेटि ग्रास ।६३।
नाम आश्रारे ये थिबेटि भक्त भोजन करिबे चाण्ड़ाल भात ।६४।
बिना आज्ञारे मन मूर्ख पण परस्त्री हरिण नाम बखाण ।६५।
पितामाता आउ केते भकत देबता साधु बैष्णब निन्दित ।६६।
पुराण निन्दा आत्मा बढ़िथिब बिश्वासघातक अक्रिया भाब ।६७।
मायामोह बिषयरे जे रत एमन्त होइब शुद्ध आइँस ।६८।
तांकु य़ोगमाया करिबे ग्रास शुण बाबु तु रामचन्द्र दास ।६९।
नाम पाइ चोरि करुणथिबे गुपते मारुणी स्तिरी मारिबे ।७०।
नामर लेसन जाणन्ति सेहु काया शुद्धिटि होइथाए तहुँ ।७१।
एमन्त रकत शुद्ध अटइ एहांकु देबींकि किछि देबइँ ।७२।
एहिमाने शुद्ध मांसरे लेखा एहिमानंकु करिबु परीक्षा ।७३।
मन्त्र यन्त्रमान परीक्षा देइ एकाक्षर भेद जेहु जाणइ ।७४।
ताहांकु बाछि रखिबे अनन्त बोलिबे एमाने आहे अच्युत ।७५।
जेउँ भकत एहा न कहिबे गुला पकाइ तांकु बाण्टि देबे ।७६।
ताङ्कु बेक मोड़ि खाइबे देबी पलाइ जिबाकु नथिब बुद्धि ।७७।



अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि द्वापर युग में चण्डियों को प्रभु श्रीकृष्ण ने कहा था कि कलियुग में मैं तुम्हें शुद्ध मांस दूँगा, इसलिए मेरे भक्तों को छोड़ देना। इसी कारण कलियुग में महामाई खप्पर (रक्त-पात्र) फैलाकर प्रतीक्षा में है। वह शुद्ध मांस का आहार करके अपने खप्पर को रक्त से पूर्ण करेगी। महापुरुष अच्युतानंद के शिष्य रामदास अपने गुरुदेव के चरणों में गिरकर पूछते हैं—हे गुरुदेव! शुद्ध मांस किसे कहा जाता है? महापुरुष अच्युतानंद कहते हैं —हे रामदास! कलियुग में भक्त अन्याय करेंगे। जितने भी गुरुद्रोही भक्त होंगे, वे मुक्त नहीं होंगे। वे शुद्ध मांस में गिने जाएँगे और बिरजा देवी उन्हें चुन-चुनकर खाएँगी। भक्तगण नाम के आश्रय में रहकर मांस और मछली खाकर अपना पेट भरेंगे, यही लोग शुद्ध मांस होंगे जिन्हें देवी ग्रास करेगी। जो भक्त नाम के आड़ में चाण्डालों का भोजन करेंगे, बिना आज्ञा के मूर्खतापूर्वक परस्त्रियों का हरण करेंगे, अपने पिता-माता, देवताओं, साधु, वैष्णवों और पुराणों की निन्दा करेंगे, जो विश्वासघात करेंगे, जो क्रिया या कर्म न करते होंगे, वे सब शुद्ध मांस होंगे। जो माया-मोह और विषय-वासना में रत रहेंगे, वही शुद्ध मांस होंगे जिन्हें योगमाया ग्रास करेगी। जो लोग नाम लेकर चोरी करेंगे और गुप्त रूप से स्त्रियों को मार मारेंगे, वे शुद्ध मांस होंगे। ये नाम के महत्व को जानते हैं, इसी कारण उनका शरीर शुद्ध होगा, उनका रक्त शुद्ध होगा, और उनमें से कुछ का रक्त देवी को अर्पित किया जाएगा। इन शुद्ध मांसों की मन्त्र-यन्त्र के द्वारा परीक्षा होगी, और जो एकाक्षर का भेद जानेगा, उसे अनन्त चुनकर सुरक्षित रखेगा। जो भक्त यह नहीं कहेंगे, उनका गला काटकर उन्हें बाँट दिया जाएगा। देवी उनका गला काटकर खा जाएगी और भागने के लिए भी उनके पास बुद्धि कार्य नहीं करेगी।

(कलिकल्प गीता, महापुरुष अच्युतानंद दास)

न्याय धर्म पथे थिबे प्राणीमाने अन्याय करिबे जेबे
आहे बीरबर मने रखिथाअ निश्चे कषण लभिबे ।
बिचारे न चालि अनाचारी हेबे जेते संसार मध्यरे
अल्प समयरे पड़िबे सेमाने नाना रोग यन्त्रणारे ।३।
निर्दोषी प्राणींकु बधिबे जे सबु सेमानंकु बाछि बाछि
चाहिँब चामुण्ड़ा तो आगे कहिलि एथि मिथ्या नाहिँ किछि ।
पर घर बुड़ा कपटी खचुआ मिछुआ जे सबु थिबे
सभारे बसिण सत्य जे न कहे पुणि पक्षपात करे
जाण धनञ्जय सेहि प्राणीमाने जिबे बिरजा खर्परे
परकु बिपद उद्धार जे करि दण्डे निमिषे मो नाम
जपकरे ताकु निर्भये मुँ रखे सेहि पुरुष उत्तम ।७।

××××

निजस्तिरी थाउँ थाउँ देखि आननारी । पुरुषमाने कामरे हेउथिबे घारि ।४८।
स्तिरी लम्पटी बहुत होइबे कलिरे । एणे नाम भजुथिबे तुलसी मातरे ।४९।
सेमाने देबी खर्परे परीक्षा बेलरे । प्रथमरे पड़िबेटि जाइँ स्वइच्छारे ।५०।
अनलकु देखि जेह्ने धामन्ति पतंग । सेइ परकारे जाइँ पड़िबेटि आग ।

अर्थात — भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं — "हे धनंजय! न्याय और धर्म के पथ पर रहने वाला प्राणी जब अन्याय करेगा तो निश्चय ही वह कष्ट भोगेगा। संसार में जितने भी विचारहीन होकर आचरणहीन होंगे, वे अल्प समय में ही नाना प्रकार के रोग और यातना में पड़ेंगे। जो निर्दोष प्राणियों का वध करेगा, उन्हें चुन-चुनकर चामुंडा संहार करेंगी, इसमें कोई संशय नहीं है। जितने भी दूसरे के घर को उजाड़ते हैं, कपटी, परनिन्दक, मिथ्यावादी हैं, सभा में बैठकर जो सत्य नहीं कहते तथा पक्षपात करते हैं — जान लो कि ऐसे प्राणी बिरजा देवी के खप्पर (रक्तपान पात्र) में पड़ेंगे। किन्तु जो दूसरों को विपत्ति से उद्धार कर हर क्षण मेरे नाम का जप करता है, उसे मैं निर्भय रखता हूँ, वही उत्तम पुरुष है।"

"अपनी स्त्री होते हुए भी पुरुष परस्त्रियों को देखकर कामवासना में डूबकर मोहित होंगे। कलियुग में बहुत सी स्त्रियाँ लम्पट होंगी। उनमें से कुछ तुलसीमाला धारण करके नामजप का आडम्बर करेंगी। ये लोग देवी के खप्पर (रक्तपान पात्र) में परीक्षा के समय सबसे पहले स्वेच्छा से उसमें गिरेंगी। जिस प्रकार पतंग अग्नि को देखकर उसी की ओर दौड़ पड़ता है, उसी प्रकार वे भी उसमें जाकर गिरेंगी।" **(चउषठि पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

अधर्माचार-विवेचनम्

अघ्न्या यजमानस्य पशून्पाहि

हे मनुष्यों ! पशु अघ्न्य हैं – कभी न मारने योग्य, पशुओं की रक्षा करो ।

(यजुर्वेद १।१)

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी । संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः

जो अनुमति देने वाला, जो वध करने वाला, जो मारने वाला, जो मांस का क्रय-विक्रय करने वाला, जो मांस पकाने वाला, जो उसे परोसने वाला और जो उसे खाने वाला है — ये सभी हत्यारे और पापी हैं । **(मनु० ५।५१)**

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि

जो लोग कच्चा मांस खाते हैं, नर-मांस का भक्षण करते हैं, या भ्रूण (अंडा) का नाश/भक्षण करते हैं

ऐसे कपटी केशधारी पाखण्डी मनुष्यों को हमे यहाँ से नष्ट कर देना चाहिए ।

(अथर्ववेद ८।६।२३)

ये नर पशुपक्षीमान । प्राण थाउँ करे रन्धन ॥५६॥
राक्षगुँ बलि सेहि होइ । कुम्भीपाकरे से पड़इ ॥५७॥
तपत-तइले ताहार । रन्धन हुअइ शरीर ॥५८॥

अर्थात — जो मनुष्य पशु-पक्षियों का प्राण रहते हुए ही वध करके उन्हें पकाता है, वह राक्षस तुल्य होता है और कुम्भीपाक नरक में गिरता है। उसके शरीर का पकाना तपते हुए तेल में होता है।

(ओड़िआ भागवत, अतिबड़ी जगन्नाथ दास, ५.२६)

इमे वै मानवा लोके नृशंसा मांसगृद्धिनः । विसृज्य विविधान् भक्ष्यान् महारक्षोगणा इव ॥१॥

युधिष्ठिर ने कहा — ये मनुष्य इस संसार में निश्चय ही निर्दयी और क्रूर हैं, जो अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थों को छोड़कर मांस के लोभी बनते हैं। ऐसे मनुष्य महा-राक्षसों के समान हैं। **(महाभारत, ११६.१)**

ये त्वनेवंविदोऽसन्तः स्तब्धाः सदभिमानिनः । पशून् द्रुह्यन्ति विश्रब्धाः प्रेत्य खादन्ति ते च तान् ॥१४॥

जो लोग वास्तविक धर्मज्ञान से रहित, असुर-स्वभाव वाले, अहंकारी और अपने को धर्मात्मा मानने वाले होते हैं, वे विश्वास करने वाले निर्दोष पशुओं पर हिंसा करते हैं। परन्तु मृत्यु के पश्चात उन्हीं पशुओं द्वारा वे लोग खा लिये जाते हैं। **(श्रीमद्भागवत महापुराण ११.५.१४)**

कलियुगे धूम्र पान समस्ते करिबे । धूम्र पान कले गुरु जल न पाइबे ।२८।
पितृलोकमाने तार न खाइबे जल । दुर्गन्ध अटइ सेहु करिथिब पर ।२९।

अर्थात — कलियुग में लोग धूम्रपान करेंगे। जो धूम्रपान करेगा उसे गुरु का जल प्राप्त नहीं होगा। पितृलोक भी उसके जल को ग्रहण नहीं करेंगे, और धूम्रपान करने के कारण उससे दुर्गन्ध आती रहेगी, जिसके कारण पितृगण उसे पराया कर देंगे। **(गुरुभक्ति गीता, ३य खण्ड, महापुरुष अच्युतानंद)**

सत्य कलिकि से बिहन अटन्ति निरामिष सेहु दास । १५२।
मिछुआ माछुआ खचुआ तण्डुआ कपटिआ जेहु जन ।
माउसी पिउसी खुड़ेइ जेठेइ भग्निकि हरिला मान ।
आपुधूआँ खिआ बरर पतर माउँस मदिरा खाइ ।
कलियुगर ए अगाड़ि असुर खाइब जे महामायी ।१५४।

अर्थात — भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सत्यकलि के लिए वे लोग बीज होंगे जो शाकाहारी होंगे। जो मिथ्यावादी होंगे, मछली खाने वाले, चुगली करने वाले, अकारण दंड देने वाले, कपटी, जो मौसी, बुआ, काकी, भाभी अथवा बहन का हरण करने वाले होंगे, जो अफ़ीम और तंबाकू उत्पादों का सेवन करने वाले होंगे, तथा मांस, मछली और मदिरा का सेवन करने वाले होंगे— ये सब कलियुग के असुर हैं। इन्हें महामाई भक्षण करेगी। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

हेला हेला बोलि मही उछुलिब हेलारे काटिबे दिन हरि भाब रस केहि न जाणिबे कर्मकाण्ड हेब लीन ।

भावार्थ — महापुरुष अच्युतानन्द अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि — पृथ्वी के लोग 'होगा-होगा' 'हुआ-हुआ' बोलकर घटनाओं में दिन बेपरवाही में व्यतीत करेंगे। वे हरि-भाव और रस को नहीं जानेंगे और हरि-भक्ति से विमुख होकर अकर्मण्य होंगे। **(शिव कल्प, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

जे ग्रन्थकरि अछि सबुठार सार गुप्त भण्डारटि अटे जाणिथिबु मोर ।
निष्टा करी ड़ाकिले जे बुझी से पारइ छन्द कुटिलंक कथा सेठारे नुहइ ।
नोहिला कहुथिबे न जाणिबे केहि होइला बेलकु लोक जाणिबाक रहि ।
तेरछ बेले चमकि जाउथिबा बेले खण्ड प्रलयमान जे होइब से काले ।

पुरी राजा अंक छतिसरे माहालिआ । से बेले खण्ड़ प्रलयमान हेउथिब
होइगलाणि बोलिण लोकंकर भाव।

अर्थात — महापुरुष अच्युतानन्द अपने शिष्य रामदास से कहते हैं कि — जो मालिका ग्रन्थ रचा गया है, वह भविष्यवाणियों और दिव्य रहस्यों का गुप्त खजाना है, जिसे संकेतों में लिखा गया है और जिसे केवल श्रद्धा व निष्ठा से पढ़ने पर ही समझा जा सकता है; यह कपटी कुटिल लोगों के लिए नहीं है। लोग 'नहीं हुआ' कहकर बोलेंगे, क्योंकि वे सही समय को नहीं पहचानेंगे। पुरी के राजा माहालिआ (मुकुन्ददेव चतुर्थ) के छत्तीस अंक में खण्ड-प्रलय होगा। किन्तु लोग यह समझेंगे कि घटनाएँ पहले ही घट चुकी हैं। **(पद्मकल्प टीका, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

सत भकतकु पथ जे होइब कलि अन्धारकु दीप । थोके जनंकु ए बिष प्राये होइ मनकु लागिब ताप ।८७।

अर्थात —सच्चे भक्तों के लिए मालिका के वचन मार्ग होगा, जो कलियुग के अन्धकार में दीपक के समान प्रकाश करेगा। परन्तु कुछ लोगों के लिए यह विष के समान प्रतीत होगा और उनके मन को ताप लगेगा। **(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

सदाव्रत जन सत जे बचन स्वदारा करन्ति रति । एमानंकु तहिँ बाछिण रखिबु कलंकि करि राजुति ।२५१।
बउद्ध कपट रूपकाले मोर एमन्त होइबे जन । मोहर जे कूट जाणि न पारिबे मूरुख पण्ड़ित पुण ।
देखादेखि होइ समस्ते कहिबे एककु आरेक चाहिँ । जेउँ जनमाने बिहन होइबे अकर्मे पशिबे नाहिँ ।

अर्थात् — भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि— सदाव्रतधारी जन और सत्यवचन का पालन करने वाले, जो अपने आचरण में सत्यनिष्ठ रहते हैं, उन्हें मैं चुनकर मेरे कल्कि अवतार के शासन–काल में रखूँगा। बउद्ध रूप के कपट समय में ऐसे मेरे जन होंगे। मेरी कूटनीति को मूर्ख पण्डित समझ नहीं पाएँगे। सभी लोग एक-दूसरे को देखकर बातें दोहराएंगे, किन्तु जो भक्त–बीज होंगे — अर्थात् जो आने वाले युग के लिए सुरक्षित रखे जाएँगे — वे कभी भी अकर्म में नहीं पड़ेंगे।
(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)

ग्रामकरे एकएक पुण्यबन्त सतदया आचरिण । शहे पाञ्चशरु एक एक जण नामरे थिबे शरण ॥
एहांक निमन्ते सत्य कलि बोलि पादे रखिछु गुपत । एहांकु घेनि आम्भे लीला करिबु बिरजा मुखुँ रखित ॥
दया न करन्ति सत न कहन्ति छन्दरे कहि बचन । अभक्षमान मुखरे भक्षुथान्ति मणिष अगाड़ि हीन ॥

अर्थात् — गाँव-गाँव में केवल एक-एक पुण्यवान व्यक्ति होंगे, जो सत्य और दया का आचरण करेंगे। सौ–पाँच सौ में से केवल एक ही नाम के शरणागत होंगे। इन्हीं के लिए मैंने 'सत्यकलि' नामक युग को गुप्त रखा है। इन्हें लेकर ही मैं अपनी लीला करूँगा। जो लोग दया नहीं करते, सत्य नहीं कहते, छल से वचन बोलते और मुख से अभक्ष्य (निषिद्ध भोजन) भक्षण करते हैं, वे हीन मनुष्य वैसे ही छाँट दिए जाएँगे जैसे अन्न को छाँटते समय निकला हुआ कचरा।
(कलियुग कलि कहानी, महापुरुष अच्युतानंद दास)

समभाव (समानता का भाव)

सिद्ध गोबर्द्धन शुण मो बाणी, समभावे हिंसा नथाए पुणि ।
समभावे सेबा हुअइ प्राप्ति, सेबा मिलिले मिले कृष्णभक्ति ।

अर्थात् — महापुरुष अच्युतानन्द अपने शिष्य सिद्ध गोवर्धन से कहते हैं कि — हे सिद्ध गोवर्धन! मेरी वाणी सुनो। समानता भाव से हिंसा नहीं होता। समभाव से सेवा प्राप्ति होता है, और सेवा से ही कृष्ण-भक्ति मिलता है। **(वर्ण टिका, महापुरुष अच्युतानंद)**

विचारणन्तु निर्वेदात् साम्यावस्था विचारणात्। साम्यावस्थासु सम्बोधः सम्बोधाद्धर्मशीलता ॥५८.१००॥
तासुपगमयुक्तासु कलिशिष्टासु वै स्वयम्। अहोरात्रं तदा तासां युगन्तु परिवर्त्तते ॥५८.१०१॥
चित्तसम्मोहनं कृत्वा तासान्तैः सप्तमन्तु तत्। भाविनोऽर्थस्य च बलात्ततः कृतमवर्तत ॥५८.१०२॥

प्रवृत्ते तु पुनस्तस्मिंस्ततः कृतयुगे तु वै। उत्पन्नाः कलिशिष्टास्तु कार्तयुग्यः प्रजाम्तदा ॥५८.१०३॥

वायु पुराण में वर्णित है कि स्वयम्भु मन्वन्तर के कलियुग के अन्त में अराजकता और गहन अनावृष्टि से पीड़ित होकर मनुष्य जंगलों और पहाड़ों में फल-मूल खाकर जीवन यापन किए थे। इस कष्ट की अंतिम सीमा तक पहुँचकर, व्याधि और भूख की पीड़ा से अत्यंत संतप्त होकर, दुःख के प्रभाव से वे जीवन से विरक्त हो जाते हैं। जीवन से विरक्त होने पर उनमें विवेक उत्पन्न होता है। इस विवेक से वे सभी जीवों पर समानता का व्यवहार करते हैं। इस साम्यावस्था में उन्हें संबोध (वास्तविक ज्ञान) की प्राप्ति होती है और संबोध के द्वारा उनकी प्रवृत्तियाँ धर्म की ओर उन्मुख होती हैं। इस प्रकार, कलियुग की उन अल्पधर्मशील प्रजाओं से ही सतयुग की प्रजाओं की उत्पत्ति होती हैं।

गौ माहात्म्य

श्रीकृष्णंकर बचन शुणि एहिपरि आबर पुच्छा करिइ से गाण्ड़िबधारी ।१।
गोरुंक देहरे जेबे देबता सकल बास करि रहिछन्ति आहे आ आदिमूल ।
से गोरु माहात्म्य मोते बिस्तारि कहिब शुणिबाकु आग्रह बलिछि हे माधव ।
श्रीकृष्ण बोलन्ति तेबे शुण बीरबर पशुमानंक मध्यरे गोरुजाति सार ।
गोरु परि उपकारी ब्रह्माण्ड़रे नाहिँ तिनिमाता मधु एक माता से अटइ ।५।
तिनि माता कथा आग कहुअछि मुहिँ से बिषय धनञ्जय शुण मन देइ ।
प्रथमरे माता सन्तानकु जन्म कला आपणा स्तनरु क्षीर देइ बढ़ाइला ।
क्रमे क्रमे ये़तेबेळे बालक बढ़िला स्तनरु से माता क्षीर देइ नपारिला ।८।
गो माताकु समर्पण कला माता नेइ बोइला एणिकि पोषि न पारिबि मुहिँ ।
दयारे त परिपूर्ण्ण गो माता हृदय पोषिला आग्रहे सेहु दुइगोटि पुअ ।१०।
गोटिए निजर आर गोटि मनुष्यर पात्र अन्तर मनरे न हेला ताहार ।११।
निज शिशु पोषि अन्य शिशुकु पोषिला एथिरे ताहार दुइपुअ कि न हेला ।१२।
केतेकाल परे शुखिबारु तार क्षीर आपणा पुत्र, पिइबा पाइँ हरबर ।
पर कुमरकु पोषि न पारिण सेहि धरणीकि समर्पिला पोष तुहि नेइ ।
निज गर्भरु धरणी अन्न जल देइ से बालक गोटिकि पोषिला तोष होइ ।
जगतरे तिनिमाता अटे मानबर ता ठारे तिनि मातार अछि अधिकार ।१६।
पुत्र होइ मातार न कले उपकार सेहि पुत्र गोटिकि कहन्ति कुलंगार ।
दुगुध देइ गोरु शिशु बढ़ाइला जेबे तार उपकार करिबार बिधि तेबे ।
सेहि गोरु शिशु नरे हल करि ये़ाचि जमि उत्पन्न शस्यरु प्राणे थान्ति बञ्चि ।
सेहि गोरु मल मूत्रपड़िले क्षेत्ररे उर्बर होइण जमि भल शस्य धरे ।२०।
सबुदिने -दुगुध पान ये़ ब्यक्ति करइ बलकान्ति आयुः तार बर्द्धन हुअइ ।
गोमूत्र गोमय गोक्षीरादि पञ्चगब्य पान कले खण्ड़न हुअइ पाप रोग ।
पृथिबीरे गोरुसेबा ये़उँ लोक करेश अन्तःकाले सेहि लोक बसइ स्वर्गरे ।२३।
गोरु सेबा ये़उँपरि शुण मन देइ बिधिमत तो आगरे कहुछि बुझाइ ।२४।
प्रभातरु उठि गोरु गुहालकु यिब सप्तबार दण्ड़बत गोरुकु होइब ।
मलमूत्र लागिथिब ये़ाहा ता देहरे पोछिदेब ये़तनरे नूआ बसनरे ।
गुहाल खण्ड़िक पोछि चन्दन सिञ्जिब जेउँपरि गोशाळारे माछि न बसिब ।
खाइब पाइँ कोमल घास देब आणि तृषा ये़तेबेले हेब पिआइब पाणि ।
गन्ध पुष्प धूप दीप पूजा आचरिब सन्ध्या समये गुहाळे बती बसाइब ।
दिनकरे कुटुम्बरे खर्च्च हुए जाहा चारि भागरु भागे रखि ये़त्रे ताहा ।३०।
ढ़िंकिरे कुटि पाणि देइण सिझाइब निर्मल पात्ररे ताकु खाइबाकु देब ।
से गोरुर सन्तोष होइब जेबे मन ता गृह मध्यरे ये़ बढ़िब धन धान्य ।



अतुट हो होइण लक्ष्मी बिजे करिथिब नारी बन्ध्या होइथिले सुसन्तान हेबे ।
अन्तःकाले मुक्ति होइ स्वर्गरे बसिब भक्तियुक्त मने जेहु गो सेबा करिब ।
गोरु सेबाठारु बलि पुण्य आउ नाहिं गोरु प्रसादरु गृहे शान्ति बिराजइ ।३५।
आहे धनञ्जय तुहि गोरु सेबा कर यश श्री आयु सर्बदा बढ़िब तोहर ।३६।
गोरु अटइ गृहीत प्रथा सम्पद गृहे लेखा नुहें न पड़िले गोरु पाद ।३७।
गो पाद रज जा देहे निति पड़ुथाइ गो सेबा तोह आगरे कहिलि बुझाइ ।३८।
मुनिमाने गोरुसेबा करिथान्ते आगे । अष्टत्रिंश पटलकु शेष कलि आणि
बासुदेब दास कहे ध्यायि चक्रपाणि ।४०।

गाण्डीवधारी अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया – "हे माधव! गौ के शरीर में सभी देवता वास करते हैं, तो आप मुझसे उसका महात्म्य विस्तारपूर्वक कहें, मैं सुनने के लिए उत्सुक हूँ।" तब श्रीकृष्ण बोले – "हे वीरश्रेष्ठ! पशुओं में गौ जाति श्रेष्ठ है। इस ब्रह्माण्ड में गौ के समान उपकारी कोई नहीं। तीन माताओं में से एक माता गौ है। अब मैं तीन माताओं के विषय में विस्तार से समझाता हूँ। पहली माता वह होती है, जो संतान को जन्म देती है और स्तनपान कराकर उसका पालन-पोषण करती है। क्रमशः जब बालक बड़ा होता है और वह माता स्तन से दूध पिलाने में असमर्थ हो जाती है, तब वह उसे गौ माता को सौंप देती है, दया से पूर्ण हृदयवाली गौमाता तब अपने क्षीर से अपने बछड़े के साथ मनुष्य के शिशु को भी पोषित करती है। वह जैसे अपने बछड़े को पोषित करती है, वैसे ही दूसरे के बालक को भी पोषित करती है। इस प्रकार क्या वह उसके भी दो पुत्र नहीं हुए? कुछ काल पश्चात् जब उसका दूध सूख जाता है, तब उसका अपना बछड़ा उसे पीने के लिए व्याकुल होता है। परंतु वह अब पराए बालक को पोषित नहीं कर पाती, अतः उसे धरती माता को सौंप देती है। तब धरती माता प्रसन्नता से अपने गर्भ से उत्पन्न अन्न और जल द्वारा उस बालक का पोषण करती है। इस प्रकार जगत में मनुष्य के तीन माताएँ होते हैं — जननी माता, गौमाता, और धरती माता। और उन तीनों माताओं का उस पर अधिकार है। जो पुत्र होकर भी माता का उपकार नहीं करता, उसे कुलंगार कहा जाता है। जब गौ ने दुग्ध देकर शिशु को बढ़ाया, तब उसका उपकार करना भी विधान हुआ। नर गाय हल जोतकर भूमि से उत्पन्न अन्न द्वारा प्राणियों का पालन करता है। उसी गौ का मल-मूत्र जब खेतों में गिरता है, तब भूमि उर्वर होकर उत्तम अन्न उपजाती है। जो मनुष्य प्रतिदिन दुग्ध का पान करता है, उसका आयुष्य बढ़ता है। दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र आदि पंचगव्य का सेवन करने से पाप और रोग नष्ट होते हैं। इस पृथ्वी पर जो व्यक्ति गौसेवा करता है, वह अन्तकाल में स्वर्ग में निवास करता है। अब ध्यानपूर्वक सुनो कि गौसेवा किस प्रकार करनी चाहिए, मैं तुम्हें विधिपूर्वक समझाकर कहता हूँ। प्रातःकाल उठकर गौशाला जाकर सात बार गौ को दण्डवत प्रणाम करना चाहिए। यदि उसके शरीर पर मल-मूत्र लगा हो तो उसे नये वस्त्र से सावधानीपूर्वक पोंछ देना चाहिए। गौशाला को स्वच्छ करके उसमें चन्दन छिड़कना चाहिए ताकि वहाँ मक्खियाँ न बैठें। खाने के लिए कोमल घास लाकर देना चाहिए और जब उसे प्यास लगे तो जल पिलाना चाहिए। संध्याकाल समय पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप से उसकी पूजा करना और गौशाला में दीपक जलाकर रखना चाहिए। दिनभर के खर्च का चौथा भाग गाय की सेवा के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। ढिंकी (ओखली) में कूटकर, उसमें जल डालकर पकाना चाहिए और निर्मल पात्र में रखकर उसे (गौ को) खाने के लिए देना चाहिए। जब वो गौ मन से संतुष्ट होगी, तब गृह में धन-धान्य की वृद्धि होती है। लक्ष्मी अटूट होकर निवास करती है और यदि स्त्री बाँझ हो, तो वह भी सु-संतान प्राप्त करती है। जो व्यक्ति भक्तिपूर्ण मन से गौसेवा करता है, उसे अन्तकाल में मुक्ति प्राप्त होती है और वह स्वर्गलोक

में निवास करता है। गौसेवा से बढ़कर और कोई पुण्य नहीं है तथा गौप्रसाद से घर में शान्ति का वास होता है। हे धनंजय! तुम गौसेवा करो, जिससे तुम्हारा यश, लक्ष्मी और आयु सदा बढ़े। गौ ही गृह की प्राप्त परम्परा और सम्पदा है; यदि गृह में गौ के चरण नहीं पड़ते, तो वह संपन्नता गिनी नहीं जाती। गौ के चरणों की रज जब नित्य शरीर पर पड़ती है, तब वह पवित्र करती है। इस प्रकार मैंने तुम्हें गौसेवा का महत्व समझाकर कहा है। मुनिगण भी पूर्वकाल में गौसेवा किया करते थे।

(चउषठि पटल, ३८, महापुरुष अच्युतानंद)

नाम-महिमा

तुलारे पड़िले जेह्ने दहइ बहनि । पापतुला पबितक दहे नाम अग्नि ॥
नाम आश्रिकर तोर किछि भय नाहिँ । सरगकु बोलि बाट चाट फिटिण अछइ ॥

अर्थात — जैसे कपास में अग्नि पड़ने पर वह जलता है, वैसे ही पापरूपी कपास को नामरूपी अग्नि जलता है। समस्त भय त्यागकर नाम का आश्रय लो। स्वर्ग को जानेवाला मार्ग सर्वथा खुला हुआ है।

(मन्मथ चन्द्रिका, महापुरुष अच्युतानंद)

चेतुआ भकत जेतेक थिबे । नामरे से पुणि चेता रखिबे ॥

अर्थात — जितने भी चेतनाशील भक्त होंगे, वे केवल नाम में ही अपनी चेतना स्थित रखेंगे।

(तत्वबोधिनी, महापुरुष अच्युतानंद दास)

लो कोइलि– संसाररु तरिबार पाइँ, नाम भज नाम भज उद्धार मिलइ लो कोइलि ।१७३।

अर्थात — संसार से पार होने के लिए नाम का भजन करो, नाम का भजन करो, तभी उद्धार मिलेगा।

(कोइली मालिका, महापुरुष यशोवंत दास)

नाम बले साधुसन्थ भेदिले ब्रह्मकु नामबले भक्तबृन्द गले बैकुण्ठकु।
नामरु भाबर ढ़ेउ खेलिला जगते से शून्य नाम भाबर क्रिया अटे एते।
नामरि महिमा न जाणन्ति मूर्खजने मन बलिथाए सदा कामिनी काञ्चने।

अर्थात — नाम के बल से साधु–संतों ने ब्रह्म को भेद लिया, नाम के बल से भक्तगण वैकुण्ठ को गए। नाम से ही भाव की तरंगें जगत में खेल रही हैं, वही शून्य नाम भाव की क्रिया है। नाम की महिमा को मूर्ख जन नहीं समझते, उनका मन सदा कामिनी (स्त्री) और काञ्चन (सोना) में लगा रहता है।

(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)

नाम मात्र कलि युगरे सार आउ कथामान सबु असार ॥

अर्थात — कलियुग में केवल नाम ही सार है और अन्य सभी बातें असार (व्यर्थ) हैं।

(नित्य महिमा भजन, महापुरुष अच्युतानंद दास)

खण्ड गुड़ चिनि फेणी नबात शाकर । नाम स्वाद लागिले एमाने ह्बन्ति दूर ॥
य़ाहार जिह्वारे नाम स्वाद लागिथाइ । जिह्वाकु य़े अन्यद्रब्य स्वाद न लागइ ॥

अर्थात — मिश्री, गुड़, चीनी, फेनी, नवात, शक्कर — नाम का स्वाद लगने पर ये सब दूर हो जाते हैं। जिसकी जिह्वा पर नाम का स्वाद लग जाता है, उसकी जिह्वा को अन्य द्रव्यों का स्वाद नहीं भाता।

(मन्मथ चन्द्रिका, महापुरुष अच्युतानंद)

मन मन्दिरकु नाम न कले आश्रय बुझिबा बड़ कठिन नाम ब्रह्मज्ञान।
जे काले प्राणीर मन नामरे मज्जिब से काले माया बन्धन फिटिण जे जिब।
रोग शोक दुःख कष्ट सहिथिब रहि नामरे मज्जिले केहि न पाइबे छुइँ।

अर्थात — यदि मन रूपी मन्दिर में नाम का आश्रय न किया जाए, तो नाम-ब्रह्मज्ञान को समझना अत्यन्त कठिन है। जब किसी प्राणी का मन नाम में मग्न हो जाता है, तब उस समय माया का बन्धन टूट जाता है। रोग, शोक, दुःख और कष्ट चाहे कितने भी उपस्थित हों, यदि कोई नाम में निमग्न हो जाए तो उन्हें कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता। **(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

सदा गुरुनाम हृदे भाबिबु । श्रीगुरु आज्ञाकु हेला न करिबु ॥
श्रीगुरु नाम जे अटइ सार । ध्यायि भूषण्ड होइछि अमर ॥
गुरुनाम भबार्ण्णबे नउका । गुरुनाम ध्यायि हुअ निशंका ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद अपने शिष्य राम दास से कहते हैं कि — सदा गुरुनाम को हृदय में स्मरण करना। श्रीगुरु की आज्ञा की कभी अवहेलना न करना। श्रीगुरुनाम ही सार है; उसी का ध्यान करके भूसुण्ड अमर हो गया। गुरुनाम भवसागर में नौका है; गुरुनाम का ध्यान कर शंका रहित हो जाओ। **(दशपटल मालिका, महापुरुष अच्युतानंद)**

शुणिहे मुकुन्द दास उथान पबन । रामधर्मआदिकरि पञ्च महाजन ॥
पचारिल जाहा तुम्भे नामर बृत्तान्त । सुबुद्धि सुज्ञानी सन्थ जाणन्ति बिबेक ॥
नामकु भजिले सिना गतिमुक्ति पाइ । पिण्ड़कु कारणनाम बिनु अन्य नाहिँ ॥
संसार जे महाघोर य़ातना जञ्जान । सदगुरु सेबाकले नाशहुएकाल ॥
नामकु चिह्लिले जीब परमेमिशइ । सोलभेला प्राये भबसिन्धुरे भासइ ॥

अर्थात — महापुरुष अच्युतानन्द अपने शिष्य मुकुन्द, उथान, पवन, राम और धर्म से कह रहे हैं कि— तुमने जो नाम का वृत्तान्त पूछा है, उसका वास्तविक ज्ञान केवल सत्बुद्धि, सत्ज्ञानी और विवेकी संत ही रखते हैं। नाम का भजन करने से गति और मुक्ति प्राप्त होती है। इस पिण्ड (शरीर) का कारण भी नाम के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। संसार महाघोर यातना और जंजाल से भरा है, किन्तु सद्गुरु की सेवा करने से काल का नाश हो जाता है। नाम को पहचान लेने से जीव परम में मिल जाता है, और वह भवसिन्धु (संसार रूपी सागर) में सोलह नौकाओं के समान तैरता है।

(शून्य संहिता, महापुरुष अच्युतानंद)

सत्यरे राजा प्रजाए सत्य कले सार। नारायण मन्त्र बले होइले उद्धार॥
त्रेतायुगे पाप मात्रा बढ़िला किञ्चिते। राम तारक मन्त्रकु भजिले समस्ते ॥
द्वापर युगरे पुणि बृद्धि हेला पाप। श्री गोपाल मन्त्र जपि निबारिले ताप ॥
कलियुगरे पापर मात्रा दिनुदिन। बढ़ि बढ़ि चारिपाद होइब सम्पूर्ण॥
महामन्त्र जेउँ जन करिबे भजन। कलि कराल कबलु उद्धरिबे पुण॥
सत्य युगरे मुँ हेलि नरसिंह मूर्त्ति। मुर दारुणकु नाशि रखुलि कीरति॥
त्रेतारे श्रीराम रूपे जनम होइण। राबण कुम्भकर्णकु करिलि निधन॥
द्वापर युगरे पुणि कृष्ण अबतारे। कंस केशी बिनाशि मुँ आसिलि स्व - पुरे॥
कलिरे कलि दइत होइब प्रबल ।कल्की रूप धरि मुँ भांगिबि ता बल॥

अर्थात — निराकार महापुरुष अच्युतानन्द से कहते हैं कि— सतयुग में राजा और प्रजा सभी सत्य का आचरण करते थे, और नारायण मन्त्र के बल से उद्धार हुए। त्रेतायुग में पाप की मात्रा कुछ बढ़ी, तब सभी ने रामतारक मन्त्र का भजन किया। द्वापरयुग में पाप और अधिक बढ़ गया, तब श्रीगोपाल मन्त्र का जप कर ताप का निवारण हुआ। कलियुग में पाप की मात्रा दिन–प्रतिदिन बढ़ती जाएगी और चारों पाद पूर्ण हो जाएगा। ऐसे समय में जो महामन्त्र (१६ नाम ३२ अक्षर) का भजन करेगा, उसे कलिकाल की प्रचण्डता से उद्धार मिलेगा। सतयुग में मैं नरसिंह रूप में प्रकट हुआ और दारुण असुर हिरण्यकशिपु का नाश कर अपनी कीर्ति स्थापित की। त्रेतायुग में श्रीराम रूप में अवतरित होकर रावण और कुम्भकर्ण का संहार किया। द्वापरयुग में मैं श्रीकृष्ण अवतार लेकर कंस और केशी का वध कर अपने पूर आया। कलियुग में जब दैत्य–कलि अत्यन्त प्रबल होगा, तब मैं कल्कि रूप धारण कर उसके बल को तोड़ दूँगा। **(छयालिश पटल, महापुरुष अच्युतानंद दास)**

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

अर्थात — कलियुग में भगवद्प्राप्ति का एकमात्र साधन केवल हरिनाम है, केवल हरिनाम है, केवल

हरिनाम है। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इसलिए बार–बार हरे कृष्ण महामंत्र का जप और कीर्तन करने की ही महिमा बताई गई है, क्योंकि यही इस युग का महामंत्र है। **(श्रीनारदपुराण)**

कल्कि महामंत्र

कल्कि महामन्त्र महामन्त्र तत्व निश्चे प्रभु शिखाइबे सत्य धर्म पालि दुष्टजन मारि प्रभु श्री स्थानकु जिबे।

अर्थात — महापुरुष अच्युतानंद दास कहते हैं कि — कल्कि महामन्त्र तथा उसके तत्त्व को प्रभु निश्चित रूप से सिखाएँगे; वे सत्यधर्म की रक्षा कर दुष्टों का नाश करेंगे और अंत में अपने श्रीस्थान को लौट जाएँगे। **(शिवकल्प, महापुरुष अच्युतानंद)**

खण्डप्रलयकाल में रक्षा का साधन

सखाभावे देखा होइब एमन्त एकाक्षर तत्त्व सार रामतारककु भजुथिबे जेहि से होइबे अज्रामर ।

××××

सर्ब मन्त्र परे अभिशाप हेब मन्त्र बोल न मानिब जपि जपि नरे थकिजिबे परा केबे सिद्ध न होइब ।
जे दश संस्कार मन्त्रराज सार अष्टादशाक्षरे स्थिति सिद्धि हिं रहिब से रामतारक आउ न रहिबे क्षिति ।

××××

ठिकणाबेलकु एहि मन्त्रसार प्रकाश होइब य़हिं जे भजिब सेहि हेबे अज्रामर कलिकि छाति देखाइ ।
प्रळय आसिब सकल बुड़िब एहि मन्त्र हेब ध्रुब नरकार्ण्णबरु उद्धरिबा पाइँ ए रामतारक नाब ।

××××

ब्रह्म एकाक्षर श्रीराम तारक मर्त्त्य मण्डलरे स्थिति अभिशाप नोहु श्रीमुखरे आज्ञा देइछन्ति दाशरथि ।

××××

दश ग्रामकरे जणे रहिथिबे किए करे कारबार । जे कालरे मीन खेलिब श्रीक्षेत्रे बाइशि पाबछे जाइ
पाहाड़ पराए सागर आसिब नर न रहिबे केहि । भकत शकत होइण बसिब बेनि पाशे जलजिब
श्रीरामतारक ब्रह्म एकाक्षर जेहि जन जाणिथिब ।

××××

भकत बेलकु शकत सेहिटि पूर्ब तप जा'र थिब कहन्ति अनन्त शुणरे कुमर ब्रह्मज्ञानबाणी ध्रुब ।

××××

शुणरे बारंग दिब्य अबतार ब्रह्मर्षिमानंक लीला । सर्बमन्त्रराज अभिशाप पाइ बुड़ाइ देब त भेला ।
दिब्य एकाक्षर श्रीरामतारक ब्रह्म नामे जहिं क्षात आश्रित जनकु बिपद नोहिब कहन्ति दीन अनन्त ।

××××

श्री ओंकार एकाक्षर त रहिब सर्बमन्त्र हेब हत ठकि नजिबु तु ठेकि रहिथिबु चेतना भक्त आगत ।

××××

से राम तारक मन्त्र षड़ाक्षर पछकु होइब सखा । आउ जेते सखा तुच्छारे होइबे केहित न देबे देखा ।५।

××××

ब्रह्म एकाक्षर नाम अटे सार आउ सर्ब मिथ्या हेब । श्रीराम तारक निस्तार करिब सकल भकत ध्रुब ।५।

भावार्थ — महापुरुष शिशु अनन्त दास अपने ग्रन्थ 'पट्टामड़ान' में लिखते हैं कि स्वयं प्रभु श्रीरामचन्द्र ने अपने श्रीमुख से आज्ञा दी है कि ओंकार ब्रह्म एकाक्षर एवं श्रीराम तारक मन्त्र जो मृत्युलोक में स्थित है, वह कभी अभिशप्त नहीं होगा। यथासमय आने पर यही मन्त्र–सार प्रकाशित होगा। अन्य सभी मन्त्र अभिशप्त हो जाएँगे, मन्त्र बोल नहीं मानेगा, लोग जपते–जपते थक जाएँगे किन्तु कभी सिद्ध नहीं होगा। जब खण्ड प्रलय आएगा एवं जब पर्वत के समान समुद्र की लहरें तट को लाँघकर आएँगी तथा पुरी में स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर की २२ सीढ़ियों में मछलियाँ खेलेंगी, तब अनेक लोग डूब जाएँगे। उस नरक–सागर से उद्धार करने के लिए यही श्रीराम तारक मन्त्र नौका के समान होगा।

जो भक्त ब्रह्म एकाक्षर एवं श्रीराम तारक मन्त्र को जानेंगे और स्थिर होकर बैठेंगे, उनके दोनों ओर से जल चला जाएगा — "भकता शक्त होइण बसिब बेनि पाशे जलजिब, श्रीराम तारक ब्रह्म एकाक्षर येहि जन जाणीथिब।" जो ब्रह्म एकाक्षर एवं श्रीराम तारक मन्त्र में आश्रित होंगे, उन पर विपत्ति का स्पर्श भी नहीं होगा। महापुरुष अच्युतानन्द दास अपनी 'तेरह जन्म शरण' मालिका में लिखते हैं कि जो छः अक्षर वाला श्रीराम तारक मन्त्र है, वह आगे चलकर सखा होगा, किन्तु अन्य सखाएँ (अन्य मन्त्र) कार्य नहीं करेंगी। ब्रह्म एकाक्षर एवं श्रीराम तारक ही सार होगा, शेष सब मिथ्या सिद्ध होगा। श्रीराम तारक मंत्र समस्त भक्तों का निस्तार करेगा।

निवेदन

• नाम जप कीजिए, परन्तु यह ध्यान रहे कि नाम पर आश्रित होकर हमें कोई भी पापकर्म नहीं करना चाहिए। अब तक जो भी पाप किए गए हैं, उनके लिए प्रभु से क्षमा याचना करनी चाहिए और सत्य के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। यदि हम मालिका की सतर्क वाणी को सुनकर भी दुर्योधन की भाँति आत्मपरिवर्तन का प्रयास नहीं करेंगे, तो विनाश अनिवार्य है।

• **"सत शान्ति दया क्षमा जा हृदरे नाहिं । से मुर्ख पामर मोते पाइब बा काहिं।"** अर्थात्, प्रभु कहते हैं — "जिसके हृदय में सत्य, शान्ति, दया और क्षमा जैसे गुण नहीं हैं, वह मूर्ख अधम मुझे कैसे प्राप्त कर सकेगा?" (चकड़ा मड़ाण)

– सत्य : वाणी और आचरण में सत्यता लाना चाहिए। किसी भी प्रकार की अश्लील भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए और न ही जुए जैसे अधर्म में लिप्त होना चाहिए।

– शान्ति : मन और हृदय को सदा शान्त रखना चाहिए तथा कलह, ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना चाहिए।

– दया : किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सभी पर दया रखनी चाहिए और मांस, मछली तथा अण्डों का परित्याग करना चाहिए। **अहिंसा परमो धर्मः**

– क्षमा : दूसरों की भूलों को क्षमा करना सीखना चाहिए।

– सभी के प्रति समान भावना रखनी चाहिए। किसी को ऊँच-नीच, बड़ा-छोटा इस दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥" (ईशोपनिषद्)

अर्थात्, जो सब प्राणियों को अपने आत्मा में और अपने आत्मा को सब प्राणियों में देखता है, वह किसी से घृणा नहीं करता।

• – धूम्रपान, मद्यपान अथवा किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों से दूर रहना चाहिए। विवाह के बाहर कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।

• जैसा हम देखते हैं, सुनते हैं और पढ़ते हैं, वैसा ही बनते हैं। इसलिए अश्लील, हिंसक और नकारात्मक चलचित्रों को त्यागकर केवल सकारात्मक और सात्त्विक विषयों को देखना, सुनना और पढ़ना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीमद्भागवत महापुराण का अध्ययन करना चाहिए और सात्त्विकता को अपनाना चाहिए।

• कलियुग के प्रभाव से बचने के लिए नल दमयंती की कथा पूरा सुने।

साथ ही इस मालिका ग्रन्थ का संदेश जन-जन तक पहुँचाएँ, ताकि वे समय रहते सतर्क हो सकें।

अच्युत जोड़इ गीत एकाक्षर जप जेते भगत जे
अवश्य लीला देखिबे से नेत्र । सुजने हे ।१५।

अच्युत यह गीत जोड़कर कहते हैं, कि जितने भी भक्त एकाक्षर का जाप करेंगे, हे सज्जनों! वे अवश्य ही लीला को अपनी आँखों से देखेंगे।

~ सुमरणा चउतिशा, महापुरुष अच्युतानंद

कर एकाक्षर भजन कलि लीला देखिब
क्षति मध्ये प्रभु जनम भक्ते करिबे ठाब ।१।

एकाक्षर का भजन करो, तभी कलियुग में लीला देख पाओगे। पृथ्वी के मध्य प्रभु जन्म लेंगे और केवल भक्त ही पता लगाएंगे।

~ कलि लीला चउतिशा, महापुरुष अच्युतानंद